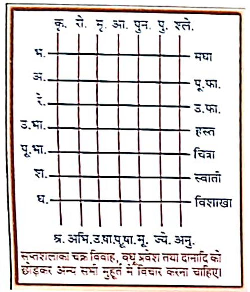
श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग
रुपेश महावीर पञ्चाङ्ग

विवाहेतर सप्तशलाका चक्र



सप्तशलाका चक्र विवाह, वधू प्रवेश तथा दानादि को छोड़कर अन्य सभी मुहूर्त में विचार करना चाहिए।

ग्रहों का अनिष्ट निवारण

राहु का दोष बुध से नष्ट होता है। राहु व बुध का दोष शनि से नष्ट होता है। राहु, बुध व शनि का दोष मंगल से। राहु, बुध, शनि व मंगल का दोष शुक्र से। राहु, बुध, शनि, मंगल व शुक्र का दोष गुरु से। राहु, बुध, शनि, मंगल, शुक्र व गुरु का दोष चन्द्रमा से। राहु, बुध, शनि, मंगल, शुक्र,गुरु व चन्द्रमा का दोष रवि से तथा सभी ग्रहों का दोष सूर्य के उत्तरायण होने पर नष्ट हो जाता है।

स्थानविशेष में ग्रहों की विफलता- लग्न, रवि व चन्द्र से बुध चतुर्थ में, गुरु पञ्चम-स्थान में, मंगल द्वितीय स्थान में, शुक्र षष्ठ स्थान में एवं शनि सप्तम स्थान में होने से अपना फल नहीं देते हैं।

॥श्री महावीराय नमः॥



॥श्री गणेशाय नमः॥



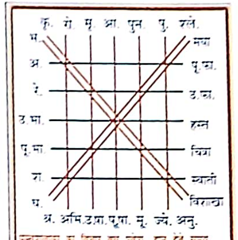
॥श्री काशीविश्वनाथाय नमः॥



वाण-पञ्चक विचार

सूर्य के अंश में क्रम से
रोग वाण- ३।१२।२१।२७ उपनयन में।
अग्नि वाण- ०।३।१२।२१।२२ गृह निर्माण में।
नृप वाण- ५।१४।२३ नौकरी में।
चौर वाण- ७।१६।२५ यात्रा में।
मृत्यु वाण- २।११।२०।२९ विवाह में निषिद्ध है।

विवाह में पञ्चशलाका चक्र



श्रीसंवत् २०८२। शक १९४७। ईस्वीय सन् २०२५-२६। फसली १४३२-३३। बंगला संवत् १४३१-३२। हिजरी १४४६-४७।

इस वर्ष राजा-रवि, मंत्री-रवि, सस्येश-बुध, दुर्गेश-रवि, धनेश-बुध, रसेश-शुक्र, धान्येश-मंगल, नीरसेश-बुध, फलेश-शनि, मेधेश-रवि। रोहिणी निवास समुद्र में, वर्षविंशा १२ सुभिक्षकर, गतकलि ५१२६।

विंध्य से उत्तर निवासियों के लिए विंशोत्तरी आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	योग
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	१२३
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२	७५

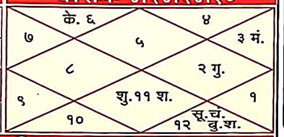
आय-व्यय फल विचार

आय-व्यय को जोड़कर उसमें से १ घटाकर ८ से भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल- १ लाभ, २ सौख्य, ३ क्लेश, ४ रोग, ५ लोकापवाद, ६ सम्मान, ७ विजय, ८ हानि होगी।

आर्द्रा से भूमि पर वर्षा का प्रमाण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा
५	२॥	३	५	३॥
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
३॥	६	२॥	४	३

वर्ष लग्न- ४।२४।२४।१०



श्रीसंवत् २०८२ वर्ष की समय शुद्धि

गुरु	ज्येष्ठ शुक्ल ति.१५ बुधवार (११-६-२०२५) पश्चिमास्त। आषाढ़ शुक्ल ति.१२ सोमवार (७-७-२०२५) पूर्वोदय।	शनि	वर्षारंभ कुम्भराशि पू.भा.२ चरण। वैशाख शुक्ल ति.७ रविवार (४-५-२०२५ मीन राशि। श्रावन कृष्ण ति.४ सोमवार (१४-७-२०२५) वक्री॥ आश्विन कृष्ण ति.११ बुधवार (१०-९-२०२५ कुम्भ राशि। मार्ग कृष्ण ति.१३ मंगलवार (१८-११-२०-२५) मार्गी। माघ शुक्ल ति.५ शुक्रवार (२३-१-२०२६) मीन राशि।
शुक्र	पौष कृष्ण ति.८ शुक्रवार (१२।१२।२०२५) पूर्वास्त। माघ शुक्ल ति.१५ रविवार (१-२-२०२६ पश्चिमोदय।	राहु केतु	मीन राशि पू.भा.४ चरण। ज्येष्ठ कृष्ण ति.३ गुरुवार (१४-७-२०२५) कुम्भ पू.भा. ३ चरण। कन्या राशि उ.फा. २ चरण। सिंह राशि उ.फा.१ चरण॥

वर्ष आरंभ में

कालयुक्त

नामक संवत्सर का संकल्पादि में वर्ष पर्यन्त विनियोग करें

यह पंचांग व्रत, पर्व, मुण्डन (चौल), उपनयन, विवाहादि मुहूर्त एवं मांगलिक कार्यों के लिए विद्वज्जनों की सर्वसम्मति से अतिसुगम रूप में प्रस्तुत किया गया है, अतः ''श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग रुपेश महावीर पञ्चाङ्ग'' ही खरीदें।

सम्पादक-
ज्योतिषाचार्य : डॉ. श्रीकान्त तिवारी, सामनेघाट, वाराणसी। पं० पुनीत मिश्र, पाण्डेयपुर, वाराणसी।
गणित सहयोग- पं० विशाल उपाध्याय
सलाहकार : प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

काशी का शुद्ध पञ्चाङ्ग

प्रकाशक : **रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन**
कचौड़ीगली, वाराणसी- २२१००१
✆ (०५४२) २३९२५४३, २३९२४७१ मो.७२३३०१३५४४

मूल्य : ९०/-

अग्रिम सम्वत्सर

सिद्धार्थ

का वैशाखकृष्ण ति.२ भौम से प्रवेश

विंध्य से दक्षिण निवासियों के लिए अष्टोत्तरी आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	योग
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	९९
व्यय	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५	९३

जन्म-लग्न से जगल्लग्न फल

१	देह सुख	७	स्त्री सुख
२	धन लाभ	८	रोग भय
३	कुटुम्ब वृद्धि	९	धर्म लाभ
४	मित्र प्राप्ति	१०	कर्म-मान-सम्मान
५	पुत्र प्राप्ति	११	लाभ सुख
६	शत्रु जय	१२	व्यय दुःख

जगतलग्न- ११।२५।१३।३८



सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल द्वारा वृष्टि विचार

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों यदि सूर्य के नक्षत्र में हों तो वायुवेग, चन्द्र नक्षत्र में हो तो अनावृष्टि एवं एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्र के नक्षत्र में स्थित हो तो सुवृष्टि होती है।

अन्य प्रकार- जिस समय बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु एक नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित होते हैं, उस समय अवश्य ही वृष्टि होती है।

इस पंचांग में देशान्तर १।९, अक्षांश २५।१८, पलभा ५।४५। तिथि, नक्षत्र, योग मकरन्द से। सूर्यभौमादिग्रह ग्रहलाघवीय। अयनांश-केतकीय मत से।



स्व0 बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

जन्म जिला आरा शुभ सुन्दर चेनारी ग्राम,
सम्प्रति परिवार काशी धाम में आवाद है।
अग्रवाल कुल के दिवाकर प्रकाशक हैं,
भक्तों में जैसे सुन्दर भक्त प्रह्लाद हैं।।
भोजपुरी भाषा के सच्चे समुद्धारक,
दर्शन से जिनके सदा मिटते विषाद हैं।
ऐसे धर्म-प्राण सहकारिता उदारता के,
अमर स्वर्गीय वावू ठाकुर प्रसाद हैं।।
अनुदिन नित वढ़ता रहे, श्री ठाकुर परिवार।
प्रभु से 'श्रीशिवदत्त' यह विनवत वारहिं वार।।

औद्योगिक संस्थानों की समुन्नति के सन्दर्भ में जिस प्रकार यशस्वी उद्योगपतियों के नाम अविस्मरणीय हैं, ठीक उसी प्रकार जन-साहित्य के प्रशस्त प्रकाशन से सम्बन्धित विमल व्यवसाय में **स्व. वावू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त** का नाम शिक्षित-समुदाय के हृदय-पटल पर अंकित है।

भोजपुरी भाषा के सरस प्रकाशन को जन-जन तक पहुँचाने का एक मात्र श्रेय वावू साहव को ही है। इनके समान सम्पूर्ण भारत का कोई दूसरा भोजपुरी साहित्य का प्रकाशक दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः इस सन्दर्भ में **स्व० वावू साहव** को यदि भोजपुरी साहित्य का समुद्धारक कहा जाये, तो सम्भवतः कोई अतिशयोक्ति न होगी। व्यावहारिकता, उदारता एवं सौजन्यता की तो आप प्रतिमूर्ति ही थे।

आप अपने पीछे पुत्रों एवं पौत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। आप ही के पूर्व प्रशिक्षण एवं निर्देशानुसार आपके द्वारा संस्थापित व्यापारिक संस्थान को उत्तराधिकारी कुशलता के साथ संचालित कर रहे हैं। हम इस परिवार तथा संस्थान की सुख-समृद्धि हेतु जगज्जननी माँ से अनवरत प्रार्थना करते हैं।

—सम्पादक

।।श्रीगणेशाय नमः, श्रीविश्वनाथाय नमः, श्रीअन्नपूर्णादिव्यै नमः।।

संवत्सर फल संवत् २०८२

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।।१।।
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्।
संवत्सरफलं वक्ष्ये जगतां हितकाम्यया।।२।।
अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्त जगदाधारमूर्त्तये ब्रह्मणे नमः।।३।।

तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण ये पञ्चाङ्ग के पाँच अङ्ग होते हैं। इनके फल के श्रवण मात्र से मनुष्य को गङ्गा स्नान का लाभ होता है। नवीनसंवत्सर के आगमन काल में प्रत्येक घरों में ध्वजारोपण कर ब्राह्मणों के साथ पूजनादि मंगल कार्यों का आयोजन करना चाहिये। देवता, गुरु, स्त्री व बालक का वस्त्रालंकार आदि से पूजन कर, पूजित दैवज्ञ द्वारा पञ्चाङ्गफल श्रवण करना चाहिये। तिथिफल श्रवण से राज्य अचल, मंत्रीफल श्रवण से कौशल, धान्येश से स्थिर लक्ष्मी, मेघेश से सरस वाणी, रसेश से धर्मबुद्धि तथा दीर्घायु एवं सस्येश के फल श्रवण से विमल बुद्धि एवं शुभफल की प्राप्ति होती है। वर्ष के प्रथम दिन निम्ब के कोमल पत्रों को पुष्प के साथ चूर्ण बनावें तथा उस चूर्ण को काली मिर्च, नमक, हिंग, जीरा एवं अजवाइन मिश्रित कर रोगशान्त्यर्थ भक्षण करें.

पुराण पुरुष ब्रह्माजी की ब्रह्ममान से परमायु १०० वर्ष है। **ब्रह्मादि देवताओं का दिनमान**—१००० महायुग का एक ब्रह्मदिन तथा ब्रह्मदिनमान से १०० वर्ष की ब्रह्मा की पूर्णायु होती है। १००० ब्रह्मदिन की १ विष्णुघटी तथा १२००००० विष्णुदिन का रुद्र की आधी कला तथा १०००००००००० रुद्र दिन का १ ब्रह्माक्षर होता है। **प्रसङ्गानुसार चतुर्युग व्यवस्था**—**कार्तिकशुक्ल नवमी** प्रथमप्रहर श्रवण नक्षत्र एवं वृद्धियोग में कृतयुग की उत्पत्ति है। सन्ध्या सन्ध्यांश सहित कृतयुग का मान १७२८००० सौर वर्ष है। इस युग में भगवान के मत्स्य, कूर्म, वराह एवं नरसिंह अवतार हुये हैं। पाप-० तथा पुण्य-२० था। इस युग में हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद, बलि, बाणासुर आदि धर्मनिष्ठ राजा थे। **वैशाखशुक्ल तृतीया** में सोमवार रोहिणीनक्षत्र द्वितीय प्रहर एवं शोभन योग में त्रेता युग का प्रारंभ हुआ।। सन्ध्या एवं सन्ध्यांश सहित त्रेता युग का मान १२९६०००।। इस युग में वामन, परशुराम, राम तीन अवतार हुये थे। पाप ५।। पुण्य १५।। इस युग में विश्वामित्र, भगीरथ, दिलीप, मकरध्वज, दशरथ, राम, लवकुश इत्यादि धर्मनिष्ठ राजा हुये। **माघकृष्ण अमावस्या** शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र एवं वरीयान योग में द्वापरयुग आरम्भ हुआ। सन्ध्या एवं सन्ध्यांश सहित द्वापरयुग का मान ८६४०००।। इस युग में कृष्ण, बुद्ध ये दो अवतार हुये।। पाप १०।। पुण्य १०। अङ्गपाण्डु, युधिष्ठिर, परीक्षित आदि धर्मनिष्ठ राजा हुये थे।। **भाद्रपदकृष्ण त्रयोदशी** रविवार, कृत्तिका नक्षत्र एवं व्यतिपातयोग में कलियुग का प्रारंभ हुआ था। सन्ध्या एवं सन्ध्यांश सहित कलियुग का मान ४३२०००।। पाप १५।। पुण्य ५।। इस युग में वर्णव्यवस्था नहीं रहेगी। बीजहीन भूमि होगी। **कलियुग का स्वरूप**—पिशाच वदन, क्रूर, कलहप्रिय।। वाम हस्त से लिङ्ग एवं दायें हस्त से जिह्वा पकड़ कर नृत्य करता है। **कलियुग में गङ्गा की स्थिति**—कलियुग के अंत में पृथ्वी गङ्गा विहीन हो जायेगी। तथा विष्णु भी पृथ्वी का त्याग कर देंगे। **भागीरथ के प्रति गङ्गा का वचन**—जब तक गुरु, आकाश, देवता एवं तुलसी की पृथ्वी पर पूजा होगी। समुद्र में बड़वालन रहेगा तब तक मैं तुम्हारे चले मार्गों में पृथ्वी पर रहूँगी। ऊपर कथित परिस्थितियाँ कलियुगान्त में उत्पन्न होंगी। समग्र कलियुग में नहीं। **कलियुग में माहात्म्य**—धर्म से विरक्त तप होगा, सत्य का लोप। पृथ्वी अल्प फलादि उत्पन्न करेगी। मनुष्य कपटी हृदय तथा मूर्ख होंगे। राजा प्रजा के रक्षक नहीं अपितु धनलोलुप होंगे। पुत्र पिता से बैर करेगा तथा दुर्जन सज्जनों को कष्ट देंगे।

चौरासी लाख योनियों की व्यवस्था—जल में नव लाख, पृथ्वी पर निवास करने वाले २० लाख, ११ लाख, कीड़े, १० लाख पक्षियाँ, ३० लाख पशु तथा ४ लाख मानव योनियाँ हैं। कलियुग में मनुष्य तथा गज की आयु वर्ष १२० दिन ५। महल, तालाब, कुँआ, नगर, वृक्ष, काक, सिंहों की आयु १०००। घर तथा ग्रामों की ५०००। पिङ्गलों की १५०। कच्छ व मकर १५०। व्याघ्र ६४।। शूकर १०।। गायों की २५।। मृग २४।। अश्व ३२।। रीछ, वानर, मण्डूक ३०।। गर्दभ एवं ऊँटों की २५।। पक्षियों की २०।। बिल्ली तथा शृगाल १२।। कुकुट ८।। मूषक ४।। चिटियों की १।। मक्षिक ३१ दिन।। **कलियुग में छः शक तथा स्थापकों के सौरवर्षनाम**—कलियुगारम्भ के पूर्व इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर का ३०४४।। उसके बाद उज्जैन में विक्रमादित्य का १३५। नर्मदा के दक्षिण में शालिवाहन का १८०००।। भविष्य में विजय अभिनन्दन १००००।। नागार्जुन ४०००००।। इसके बाद ८२१ शेष कलियुग रहने पर सम्भल क्षेत्र के गौड़ ब्राह्मण के गृह में कल्कि अवतार होगा। पृथ्वी पर क्षार सिन्धु के उत्तर में जम्बूद्वीप, दक्षिण में शाक, शाल्मल, कुश, क्रौञ्च, गोमेद पुष्कर सप्तद्वीप हैं। जम्बूद्वीप में भारतवर्ष हरिवर्ष, भद्राश्व, केतुमाल रम्यक हिरण्यवर्ष, कुरुवर्ष, कुशकिन्नर एवं इलावृत्त वर्ष से आवृत्त है। समग्र पृथ्वी लवण क्षीर, दधि, घृत, इक्षुरस, मद्य एवं स्वादु जलरूप सप्त समुद्र से घिरी हुई है। इस भूमि के अन्तःपट में तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल एवं पाताल ये सात विभाग हैं। सम्प्रति ब्रह्मा की आधी आयु समाप्त हो चुकी है। उत्तरार्द्ध में प्रथम वर्ष प्रथम दिन एवं सूर्योदय से १३घटी ४२ पल व्यतीत हो चुके हैं। इसी क्रम में वर्तमान सहस्रवर्षात्मक कल्प के स्वयंभु १, स्वारोचित २, उत्तम ३, तामस ४, रैवत ५ एवं चाक्षुष ६ ये छः मनु तथा वर्तमान वैवस्वत मनु के २७ महायुग तथा अठाइसवें महायुग के कृत, त्रेता तथा द्वापर नामक तीन पाद व्यतीत होकर वर्तमान कलियुग चल रहा है। कल्पारंभ से १९५५८८५१२६ वर्ष कलियुगादि से ५१२६ महाराजधिराज विक्रमादित्य के शासनारूढ़काल से २०८२ तथा शकारंभ से १९४७ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। इस वर्ष के प्रारंभ में **'कालयुक्त'** नामक संवत्सर रहेगा। सौरमास १।१२।४५।३६ भोग्यमास ११।१७।१४।२४।

संवत्सर कालयुक्त फल—

प्रजानां जायते रोगः कालयुक्ते विशेषतः।
राजयुद्धं भवेद्घोरं प्रजानाशो वरानने।।

अर्थ—जनता में रोग होगा, युद्ध की विभिषिका तथा जनक्षति होगी।

अग्रिम संवत्सर सिद्धार्थ फल—

तोयपूर्णो भवेन्मेघो बहुसस्या वसुन्धरा।
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे शृणु सुन्दरी।।

अर्थ--उत्तम वर्षा फसल का उत्पादन उत्तम, शासक प्रसन्न रहें।

राजा रवि फल—

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्च मेघाः स्वल्पं धान्यमल्पफलाश्च वृक्षाः।
स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्निबाधा निधनं नृपाणम्।।

अर्थ—अल्प वर्षा तथा अन्न व फल दुग्ध का उत्पादन कम होता है। जनता को पीड़ा, चोर तथा अग्नि भय रहेगा। शासकों को क्षति होती है।

मंत्री रवि फल—

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुर धान्य-धनानि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।।

अर्थ—जनता में रोग, चोरों से तथा राजभय होगा। अन्न का प्रचुर उत्पादन, रस पदार्थ सस्ते होंगे।

सस्येश (कृषि उपज) बुध फल—

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने।।

अर्थ—मेघ अधिक वर्षाकारक, देश में सुख समृद्धि, उपद्रव रहित, द्विज लोग शांतिपरक तथा भक्ति में तत्पर रहेंगे।

रसेश (रस पदार्थ) शुक्र फल—

भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलतोषितमानसाः।
सुखसुभिक्षप्रमोदवती धराधरणिपानरपालनतत्पराः।।

अर्थ—उत्तम वृष्टि से जनता प्रसन्न, सुख समृद्धि तथा शासक जन सेवा हेतु तत्पर होंगे।

नीरसेश (खनिज व धातु पदार्थ) बुध फल—

चित्रवस्त्रादिकं चैव शंख-चन्दन-पूर्वकम्।
अर्घवृद्धि-प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि।।

अर्थ—चित्रवस्त्र शंख तथा चन्दन का मूल्य महँगा होगा।

मेघेश (वर्षा विचार) रवि फल—

रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोय प्रदा घनाः।
स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा।।

अर्थ—मेघ अल्प वर्षा कारक होंगे। स्वल्प अन्न का उत्पादन होगा तथा संसार में भय व्याप्त होगा।

धान्येश (खाद्य पदार्थ) भौम फल—

गोधूमसर्षपा-मुद्गतिलमाषप्रवालकाः।
महर्घं जायते घोरं भौमे धान्याधिपे सति।।

अर्थ—गेहूँ, सरसो, मूँग, तिल, उरद तथा मूँगा के भावों में वृद्धि होगी।।

दुर्गेश (सुरक्षा) रवि फल—

नयविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया नरराजपुरोगमाः।
समधिकेन तदा नृपतोन्यतः पथिषु सव्रजतां न भये क्वचित्।।

अर्थ—शासन द्वारा नीति सम्पन्न व्यवहार, निर्भीकता, यात्री भय रहित यात्रा, सुव्यस्थित शासन होता है।

धनेश (वित्त) बुध फल—

द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधसंग्रहवस्तुफला तदा।
द्विजवरा जपयज्ञसु संयुताः कृषिविशेष विशेषितमानसाः।।

अर्थ—विविध वस्तुओं का संग्रह करे। विप्रवर्ग यज्ञादि में तल्लीन हों कृषकों द्वारा कृषि पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

फलेश (फल, शाक, उद्यान) शनि फल—

यदि शनिः फलपः कलहो भवेज्जनितपुष्प गणास्तरवः सदा।
द्विजभयं नरतस्करजं तदा जनपदा जनराशिसमाकुला।।

अर्थ—कलह तथा जंगली फल, पुष्पों की अधिकता, दुष्टों से जनसामान्य को कष्ट, नगरों पर जनभार होगा।

रोहिणी निवास-समुद्र में महावृष्टि।।

अर्थ—समुद्र में अतिवृष्टि। **संवत्सर निवास**-माली गृह का **फल-समर्घता**।।

अर्थ—सस्तीकारक।।

समय वाहन गज फल—

गजारुढो वत्सराश्च सुभिक्षं च प्रजासुखम्।
वर्षाकाले सुवृष्टिः सुखिनः।

अर्थ—सुभिक्ष, सुख, वर्षाकाल में उत्तम वर्षा हो।

नवमेघ में नील का फल-क्षिप्रं तु वर्षाति।।

अर्थ—नील से शीघ्र वर्षा।। **द्वादश मेघ में वासुकी का फल**-महावृष्टि।

अर्थ—द्वादश मेघ वासुकी से अतिवृष्टि।

वृष्टिप्रमाण-१०० वर्षा प्रमाण से पर्वत पर ५०, समुद्र में २५, भूमि पर १२।। **आर्द्रा प्रवेश फल**—आषाढ़कृष्ण। तिथि १२ फल—शुभ। **रविवार फल**—पशुनाश। **भरणी नक्षत्र फल**—अशुभ। **सुकर्मा योग फल**—धर्म आचरण।। **दिन बेला फल**—कृषिविनाश।।

विश्व तथा भारत का फल

संवत् २०८२ शक १९४७ में कालयुक्त नामक संवत्सर होगा। **वैशाखकृष्ण २ मंगलवार (१५/०४/२०२५) को सिद्धार्थ** नामक संवत्सर का प्रवेश होगा। लेकिन नित्य संकल्पादि विनियोग में कालयुक्त नामक संवत्सर का प्रयोग होगा। इस वर्ष **राजा व मंत्री** दोनों **रवि** है। अतः केन्द्र सत्ता व राज्यों के मध्य सामन्जस्य रहेगा।

जगल्लग्न के विचार से विश्व में सामरिक गतिविधियां तेज होंगी। प्रमुख राष्ट्रों की विदेश नीति प्रतिकूल होगी। विकसित देशों में सत्ता परिवर्तन होगा। पश्चिम में तथा पूर्वी भाग में सामाजिक व नस्लीय संघर्ष होगा। प्रमुख राष्ट्राध्यक्षों तथा संस्थानों पर आरोप-प्रत्यारोप होगा। कल्याणकारी संस्थाओं तथा वित्तप्रदायी संस्थानों में धन की कमी होगी। पश्चिम भूभाग पर विशेषकर फारस के यवन राष्ट्रों में सैन्यसंघर्ष, सत्तादखल तथा स्त्रीयों तथा बच्चों के प्रति अपराध तथा उत्पीड़न की घटनायें घटित होंगी। किसी पर्यटन स्थल पर अग्निकाण्ड तथा अव्यवस्था से जनक्षति संभव है। अनैतिक आचरण तथा बाल अपराधों के प्रति जनाक्रोश होगा। पत्र-पत्रिकाओं, संचार माध्यमों पर सरकारी नियंत्रण रहेगा। पूर्वोत्तर भूभाग में मंगोल शासित राष्ट्र चीन तथा रुस में मानवाधिकार उल्लंघन तथा दमनकारी घटनायें होंगी। प्रमुख शेयर बाजारों में अल्पकालीन निवेश में उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं होगा। सट्टा बाजार में क्षति, किसी वित्तीय अपराध का विषय प्रभावित करेगा। स्वर्ण में मंदी तथा चांदी तथा लौह पदार्थो के भावों में अल्प वृद्धि पश्चात मंदी होगी। विलासिता की वस्तुओं का उत्पादन अधिक होगा। कारागृहों में अराजकता होगी। किसी संचारी रोग का प्रभाव दिखाई पड़ेगा। स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों का प्रसार होगा। भारत में धार्मिक विषयों पर तेजी दिखेगी। विदेशी व्यापार में प्रगति घरेलू उद्योगों में प्रगति होगी। अन्तरिक्ष विज्ञान तथा तकनीकि ज्ञान का प्रसार होगा। संचार माध्यमों पर सरकारी नियंत्रण होगा। प्रकाशन के क्षेत्र में मंदी होगी। किसी अवांक्षनीय घटना का प्रभाव विदेशी संबंधों पर पड़ेगा, जिससे व्यापारिक साख पर अल्पकालीन प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। सरकार अपना कार्य दायित्व निष्ठापूर्वक करेगी। किसी प्रसिद्ध महिला राजनेता का वियोग होगा। सत्तापक्ष के समक्ष विपक्ष निर्बल होगा। किसी प्रमुख राष्ट्रीय दल में नेतृत्व परिवर्तन तथा विघटन का संकेत है। शेयरों तथा सट्टा बाजार में अस्थिरता होगी। किसी वित्तीय अपराध का प्रभाव होगा। लौह, धातुओं, स्वर्ण, रजत में मंदी होगी। सर्राफा बाजार में तेजी होगी। उत्तरपूर्वी तथा दक्षिण में सैन्य संघर्ष तथा जातीय संघर्ष संभव है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप तथा भूकम्पादि से क्षति होगी। बजट में नवीन करारोपण का तथा आवास तथा स्वास्थ्य, चिकित्सा संबंधी नीति पर विशेष प्रस्ताव होगा।

आर्द्राप्रवेशाङ्ग के विचार से वर्षा सामान्य है। पश्चिमोत्तर भाग में चक्रवाती प्रकोप रहेगा। वातावरण में उष्णता अधिक होगी। देश के कुछ भागों में जल संकट तथा अकाल पड़ेगा। देश के मध्यभाग में वर्षा की अधिकता तथा पूर्वी भाग के कुछ क्षेत्रों शुष्कता से फसल की क्षति होगी। दक्षिण समुद्रीय तटीय भाग में तूफान का प्रकोप रहेगा। **शारदधान्य** के विचार से खरीफ की फसल का उत्पादन उत्तम रहेगा। सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न होंगे। अन्न में सस्ती रहेगी। **ग्रैष्मिकधान्योत्तपत्ति** के विचार से रवी की फसल में साधारण हानि संभव है, तत्पश्चात उत्पादन संतोषप्रद रहेगा। रोग तथा कीटों से उपज को क्षति होगी। अनाज के भावो में प्रायः स्थिरता होगी।

मेषादि राशियों का वार्षिक फल संवत् २०८२

मेष राशि—यह वर्ष मिश्रित फलदायी है। स्वास्थ्य संवंधी व्याधि, मानसिक कष्ट, अस्थि रोग से पीड़ित होंगे। धन संचय में कमी, व्यय की अधिकता, कुटुम्वीय क्लेश, भौतिक सुख साधनों में कमी होगी। शत्रुपक्ष प्रवल होंगे। भाग्य पक्ष में कमी, पराक्रम से कार्य सिद्धि होगी। ४ मई सन् २०२५ से शनि की **साढ़ेसाती** के प्रारंभ होने से कष्ट होगा। किसी धन निवेश में हानि संभव है। विद्यार्थी वर्ग को उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं होंगे। अविवाहितों हेतु शुभ अवसर है। वर्ष के ३,६,८,१२ मास नेष्ट है।

वृष राशि—यह वर्ष अति शुभदायक है। उत्तम स्वास्थ्य, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि, कुटुम्व में माङ्गलिक कार्य होंगे। व्यापार में वृद्धि, धनसंचय, उत्तम भाग्य शासन प्रशासन से लाभ, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, नौकरी पेशा से जुड़े लोगों को पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। दाम्पत्य सौख्य में वृद्धि। सौन्दर्य प्रसाधन, कला व्यावसाय से जुड़े लोगों को उत्तम लाभ होगा। पैतृक सम्पत्ति के पक्ष में समाधान संभव है। कार्य क्षेत्र में प्रगति का योग है। उत्तरार्द्ध में सन्तान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा। वर्ष के ३,६,११,१२ मास नेष्ट है।

मिथुन राशि—वर्ष सामान्य रहेगा। उत्तम स्वास्थ्य होगा। किन्तु अनावश्यक मानसिक चिंता एवं भय होगा। सन्तान सौख्य में वृद्धि, उत्तम भाग्य पक्ष, अविवाहितों हेतु विवाह के अवसर, विद्यार्थीयों एवं प्रतियोगीयों को शैक्षणिक एवं प्रतियोगी परिक्षाओं में विशेष सफलता प्राप्त होगी। दाम्पत्य सौख्य में वृद्धि होगी। नौकरी पेशा एवं व्यापार, उद्योग से जुड़े लोगों को सफलता प्राप्त होगी। शासन प्रशासन से सहयोग, राजनैतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। आय के नवीन स्रोत होंगे। सुरक्षा कार्यों से जुड़े व्यक्तियों के समक्ष कठिन परिस्तिथियां उत्पन्न होगीं। वर्ष के ३,६,९,११,१२ मास नेष्ट है।

कर्क राशि—यह वर्ष प्रतिकूल होगा। उदर तथा आन्त्र संवंधी व्याधि, न्यायिक कार्यों में सफलता, घर, भूमि, वाहन से लाभ, आकस्मिक धन प्राप्ति के योग, परिश्रम से कार्यों में सफलता मिलेगी, धार्मिक स्थानों की यात्रा तथा धनव्यय होगा। भाग्य पक्ष में कमी, शैक्षणिक एवं प्रतियोगी परिक्षार्थियों को परिश्रम उपरान्त सफलता प्राप्त होगी। नौकरी पेशा वालों को कार्य भार में वृद्धि तथा कार्य की चिंता होगी। व्यापार में हानि होगी। दाम्पत्य सौख्य में कमी होगी। मातृपक्ष से चिंता होगी। वर्ष के ३,६,७,११,१२, मास नेष्ट है।

सिंह राशि—यह वर्ष मिश्रित फलदायी है। ४ मई सन् २०२५ से **शनि की ढैय्या** के प्रभाव से कष्ट होगा। स्वास्थ्य संवंधी कष्ट, कार्य भार, मानसिक कष्ट होगा। संतान की उन्नति, अध्ययन अध्यापन कार्य से जुड़े लोगों को विशेष सफलता, सन्तान की उन्नति, कार्य व्यवसाय में लाभ, अविवाहितों के लिये विवाह के अवसर प्राप्त होंगे, धार्मिक यात्रायें, कुटुम्व में विवाहादि माङ्गलिक कार्य होंगे। विद्यार्थीयों एवं प्रतियोगी परिक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। शेयर सट्टा से जुड़े लोगों को हानि व आय में अस्थिरता होगी। वर्ष के ५,६,८,१२ मास नेष्ट है।

कन्या राशि— यह वर्ष सामान्य फलदायी है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। अस्थि संवंधी पीड़ा तथा उदर तथा नेत्ररोग से कष्ट होगा। भौतिक सुख साधनों में वृद्धि, न्यायिक कार्यों में सफलता, शत्रु पक्ष निर्वल होंगे। विद्यार्थीयों एवं प्रतियोगी परिक्षार्थियों को सामान्य सफलता प्राप्त होगी। पराक्रम में वृद्धि होगी। भाग्य पक्ष निर्वल होने से अथक परिश्रम होगा। खनिज, लौह, संचार, भवन निर्माण से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा। साझेदारी व्यापार में मनमुटाव तथा निवेशधारकों को हानि होगी। वर्ष के ५, ६,९,११,१२ मास नेष्ट है।

तुला राशि—यह वर्ष शुभदायी है। उत्तम स्वास्थ्य, कुटुम्वीय सौख्य, परिवार में माङ्गलिक कृत्य होंगे। उत्तम आय, सन्तान सौख्य, न्यायिक कार्यों में सफलता, शत्रु पक्ष निर्वल, विद्यार्थीयों एवं प्रतियोगीयों हेतु सफलता का योग है। कार्य व्यसवसाय से जुड़े लोगों को मध्यम लाभ संभव है। सरकारी कर्मीयों पर कार्य भार की अधिकता होगी। नौकरी में स्थानान्तरण का योग है। माता-पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। सर्राफा व्यापारियों को हानि। इष्ट मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। वर्ष के ३,६,७,११,१२ मास नेष्ट है।

वृश्चिक राशि— यह वर्ष मीश्रित फलदायी है। ४ मई सन् २०२५ से **शनि की ढैया** का प्रभाव समाप्त हो रहा है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। कंठ, कर्ण पीड़ा तथा आन्त्र संवंधी व्याधि, वहुप्रतिक्षित कार्यों में गति, मनोवल में वृद्धि, कुटुम्व सौख्य, धन संचय में कमी, धार्मिक कार्यों में धन व्यय, आध्यात्मिक विषयों में रुचि, भाग्य पक्ष में कमी। भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी। भूमि-वाहन आदि से लाभ का योग है। कृषि क्षेत्र में लाभ, नौकरी में पदोन्नति होगी। स्त्री से सहयोग की प्राप्ति होगी। वर्ष के ३,६, ११,१२, मास नेष्ट है।

धनु राशि—वर्ष मिश्रित फलदायी है। ४ मई सन् २०२५ से **शनि की ढैय्या** का प्रभाव तथा वक्री तथा मार्गी शनि से मानसिक कष्ट, महत्वपूर्ण कार्यों में वाधा, अनावश्यक भय, स्नायु एवं अस्थि संवंधित व्याधि, अपव्यय संभव है, विद्यार्थीयों को विशेष सफलता का योग है। नौकरी पेशा से जुड़े लोगों में कार्य की अधिकता होगी। पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे व्यवसाय में सामान्य लाभ, अविवाहितों को विवाह के अवसर प्राप्त होंगे। यात्रा में हानि संभव है। चिकित्सा तथा औषधि क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिये वर्ष लाभप्रद है। वर्ष के ३,५,६,११,१२ मास नेष्ट है।

मकर राशि—यह वर्ष शुभ फलदायी है। ४ मई सन् २०२५ से **शनि की ढैय्या** का प्रभाव समाप्त हो रहा है, किंतु वक्री तथा मार्गी शनि होने से वर्ष में शुभ तथा अशुभ दोनों परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। उत्तम स्वास्थ्य,महत्वपूर्ण कार्यों में गति, आकस्मिक धन लाभ किन्तु व्यय की अधिकता होगी। पराक्रम में वृद्धि, इष्ट मित्रों एवं कुटुम्वीय सौख्य, विद्यार्थीयों एवं परिक्षार्थियों को सामान्य सफलता का योग है। नौकरी पेशा से जुड़े लोगो में पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। सामाजिक अपयश संभव है। सम्पत्ति के कार्यों में वाधा होगी। नवव्यवसाय की योजना वनेगी। न्यायालीय कार्यों में स्थिरता रहेगी। वर्ष के १,३,५,११,१२, मास नेष्ट है।

कुम्भ राशि—यह वर्ष सामान्य है। ४ मई सन् २०२५ को **शनि की साढ़ेसाती** का अंतिम चरण है। किंतु वक्री तथा मार्गी शनि होने पर भी स्वयं राशिस्थ होने से अधिकांशत: शुभता रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार किंतु मानसिक कष्ट संभव है। उत्तम भाग्य पक्ष, परिवार में माङ्गलिक कृत्य होंगे। प्रतियोगी एवं छात्रों को विशेष सफलता का योग है, नौकरी पेशा लोगों में पदोन्नति के अवसर व व्यावसाय में लाभ होगा। नवीन सम्पर्क द्वारा लाभ प्राप्ति होगी। निवेश संवंधी हानि संभव है। वर्ष के ३,६,११,१२ मास नेष्ट है।

मीन राशि—यह वर्ष शनि की **साढेसाती** का उग्र प्रभाव होने से प्रतिकूल है। कार्यों में वाधा, मानसिक कष्ट, आरोग्य तथा सुख में कमी, उदररोग, अस्थि संधि में पीड़ा, अनावश्यक व्यय, परिश्रम से कार्यों में सफलता, किंतु अल्प लाभ संभव है। माता को कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना संभव है। भाग्य पक्ष निर्वल है। कार्य व्यवसाय में हानि। शत्रु पक्ष सक्रिय होंगे, भूमि भवन संवंधी विवाद, भौतिक सुख साधनों के सुख में कमी होगी। ऋण संवंधी कार्य में हानि होगी। नौकरी में स्थानान्तरण का योग है, किन्तु लाभ कम है। वर्ष के ३,६,७,११,१२ मास नेष्ट है।

चैत्रादि मासफल संवत् २०८२

चैत्रशुक्ल से वैशाखकृष्ण तक (३० मार्च से २७ अप्रैल तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्यपदार्थों के मूल्य सामान्य रहेगा। उत्पादन तथा विदेश व्यापार में वृद्धि। किसी धार्मिक विषयों पर तीव्र मतभेद। पूर्वोत्तर भूभाग पर राजनैतिक अस्थिरता, अग्निकाण्ड संभव है। प्राकृतिक आपदा, भूकम्प आदि से क्षति होगी। विश्व में गुप्तचरी तथा छद्म युद्ध जैसी परिस्तिथियां उत्पन्न होंगी। किसी संचारी रोग का प्रभाव उत्पन्न होगा। समुद्री भाग में दुर्घटना संभव है। किसी विशिष्ट व्यक्ति का वियोग। **तेजी मंदी**—गेहूँ, जौ, चना, चावल में अस्थिरता। किराना, औषधि, रसायन, मीठे पदार्थ तथा सूती वस्त्रों में तेजी रहेगी। प्रारंभ में शेयर वाजार, सोना, चाँदी, कागज, लौह व कलपुर्जों में तेजी पश्चात मंदी रहेगी। मूँग, मोठ, दालवान तेज, तेलों में तेजी, ताँवा, पीतल, स्टील सामान तेज होंगे। **आकाशीय लक्षण**—पश्चिम तथा पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा का योग है। ओलावृष्टि से फसलों को क्षति। दक्षिण व पूर्वी प्रान्तों में चक्रवाती वर्षा संभव है। **चैत्रशुक्ल** की १,३,८,११,१५ तथा **वैशाखकृष्ण** की ३,६,९,१२ तिथियां नेष्ट है।

वैशाखशुक्ल से ज्येष्ठकृष्ण तक (२८ अप्रैल से २७ मई तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्यपदार्थो के मूल्य सामान्य रहेंगे। वौद्धिक, शिक्षण तथा तकनीकी ज्ञान का प्रसार होगा। विदेशी राजनयिको का आगमन,व्यापारिक अनुवंध तथा संधीवार्त्ता होगी। रोगादि का प्रभाव रहेगा। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रमुख को क्षति होगी। सुरक्षा संवंधी प्रश्न होंगे। वायुमण्डल में उष्णता में वृद्धि होगी। पूर्वोत्तर भाग तथा मंगोल राष्ट्रों में भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से क्षति होगी। दक्षिण में वाहन दुर्घटना तथा अग्निकाण्ड होंगे। **तेजी मंदी**—मूँग, मोठ, गेहूँ, जौ, चावल में तेजी पश्चात मंदी होगी। मूँगफली, सोयावीन में तेजी आयेगी। रुई, कपास आदि में मंदी। शेयर वाजार में प्राय: तेजी। लोहा सोना ताँवा, चाँदी में मंदी का रुख रहेगा। रवड़,प्लास्टिक में तेजी। मेवादि, मीठे तथा रसपदार्थ तेज। ईंधन, पेट्रोल, डीजल, गैस में वृद्धि। **आकाशीय लक्षण**—पूर्वार्द्ध में गर्मी का प्रकोप। पश्चिमी क्षेत्रों में सामान्य वर्षा, पर्वतीय क्षेत्रो तथा दक्षिण में वर्षा होगी। **वैशाखशु.**की २,७,९,१४ तथा **ज्येष्ठकृ.**की १,४,८,१२,३० तिथियां नेष्ट हैं।

ज्येष्ठशुक्ल से आषाढ़कृष्ण तक (२८ मई से २५ जून तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्यपदार्थों के मूल्य सामान्य रहेंगे। प्रकाशन, शिक्षण संस्थानों तथा उद्योगों की उन्नति। विदेशी व्यापार तथा विलासितापूर्ण उत्पादों में वृद्धि। पश्चिमीराष्ट्रों से संवंधों में कटुता। कल्याणकारी प्रयास होंगे। किसी प्रमुख विवादित आन्दोलन का समापन होगा। किसी रोग के प्रभाव से जनपीड़ा होगी। मुस्लिम राष्ट्रों में आतंक में वृद्धि,राजनीतिक हत्यायें होंगी। सैन्य संघर्ष,सत्ता परिवर्तन संभव है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किसी राष्ट्र के विरुद्ध कड़े निर्णय लिये जायेंगे। **तेजी मंदी**—गुड़, चीनी, शक्कर आदि रसपदार्थ मंदी वाद तेज होंगे। लोहा, चाय, काफी, नशीले पदार्थ, रेशम में तेजी। चना, वाजरा, जौ, ज्वार में तेजी पश्चात मंदी होगी। घी, तेलों में तेजी तथा गेहूँ, मूँग, मोठ तथा दालों में तेजी। चाँदी, सोना, धातुओं में तेजी। शेयरों में अस्थिरता। **आकाशीय लक्षण**—दक्षिणी व पूर्वी प्रान्तों में तूफान अथवा चक्रवात का भय रहेगा। पश्चिम क्षेत्रों में लू से चौपायों को कष्ट। वंगाल की खाड़ी तथा अरव सागर के तटीय क्षेत्रों में वृष्टि संभव है। पक्ष के मध्य में दक्षिण पश्चिम के कुछ क्षेत्रों में अतिवृष्टि होगी। **ज्येष्ठशुक्ल** की ४,६,८,१२, १४ तथा **आषाढ़कृष्ण** की ३,६,११,१४ नेष्ट हैं।

आषाढ़शुक्ल से श्रावणकृष्ण तक (२६ जून से २४ जुलाई तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों में सस्ती। आर्थिक व व्यापारिक गतिविधि तेज होंगी। भारत के पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र तथा दक्षिण में संघर्ष होगा। मंत्री मण्डल में परिवर्तन होगा। उत्तर में साम्प्रदायी तनाव। संचार सेवा तथा पत्रकारिता पर सरकारी हस्तक्षेप। राजस्व में वृद्धि। भूसंपदा तथा सम्पति में गिरावट, निर्माण कार्यों में वाधा। कृषि को प्राकृतिक प्रकोप से क्षति। पश्चमी राष्ट्रों में आतंकी हिंसा होगी। कुछ राष्ट्रों की मुद्रा में अवमूल्यन तथा आर्थिक मंदी होगी। **तेजी मंदी**—जौ, ज्वार में मंदी। चना, सरसों में मंदी वाद तेजी। मीठे पदार्थ, कपास, मूंगफली में तेजी। रसायनिक पदार्थ, ताँवा, सोना व चाँदी में तेजी। शेयरों में मंदी होगी। पक्षान्त में धान में मंदी, सोना, पीतल में तेजी। मेवादि सामान, प्लास्टिक सामान, रवड़ के सामानों में अस्थिरता। **आकाशीय लक्षण**—मेघ वृष्टि होगी। अरव सागर तथा वंगाल क्षेत्र में अच्छी वर्षा होगी। मध्य तथा पश्चिम में वर्षा में अवरोध। विहार, कर्नाटक में अतिवृष्टि से वाढ़, पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन होगा। **आषाढ़शुक्ल** की ४, ६,११, १३ तथा **श्रावणकृष्ण** की २,५,९,१२ तिथियां नेष्ट हैं।

श्रावणशुक्ल से भाद्रपदकृष्ण तक (२५ जुलाई से २३ अगस्त तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के भाव सामान्य। अर्थव्यवस्था मंद रहेगी। आयात में वृद्धि होगी। सैन्य सुरक्षा संवंधी उपकरणों पर व्यय होगा। समुद्री क्षेत्र में आपदा अथवा दुर्घटना संभव है। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से क्षति। मंगोल राष्ट्रों में भूकम्प की पुनरावृत्ति। यवन राष्ट्रों में आर्थिक तंगी राजनैतिक अस्थिरता होगी। किसी धार्मिक स्थल पर साम्प्रदायिक तनाव, धर्माचार्यों के मध्य मतभेद होगा। **तेजी मंदी**—सोना, चाँदी, लोहा, ताँवा, उत्तरार्द्ध में धातुओं में तेजी। रुई, वस्त्र महँगे होंगे। गेहूँ, मूंग, मोठ, चावल, चना में अस्थिरता। तेलों में तेजी। मीठे पदार्थ तथा शेयरों में अस्थिरता पश्चात मंदी होगी। कागज व रवड़ के सामान,प्लास्टिक वस्तुओं में मंदी। **आकाशीय लक्षण**—दक्षिणी पूर्वी प्रान्तों में चक्रवाती वर्षा। पर्वतीय क्षेत्रों, उत्तर तथा पश्चिम में उत्तम वर्षा का योग है। उत्तरार्द्ध में पूर्वी प्रान्तों में प्रलयकारी वर्षा होगी। वादल फटना, भूस्खलन से क्षति होगी। **श्रावणशुक्ल** की ३,५,८,११,१५ तथा **भाद्रपदकृष्ण** की १,३,५,८,११ तिथियां नेष्ट हैं।

भाद्रपदशुक्ल से आश्विनकृष्ण तक (२४ अगस्त से २१ सितम्वर तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार खाद्य पदार्थों के भावों में सामान्य वृद्धि। अर्थव्यवस्था में स्थिरता, आयात में वृद्धि, व्यापारिक अनुवन्ध होंगे। किसी प्रमुख व्यक्ति को कारावास संभव है। पाश्चात्य राष्ट्रों में आतंक से हानि। यूरोप के कई देशों में जनसंघर्ष। उत्तर पूर्वी प्रान्तों में उपद्रव तथा अग्नि काण्ड से हानि होगी। पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा मंगोल राष्ट्रों तथा रुस में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से क्षति होगी। उत्तर पूर्व तथा दक्षिण प्रान्त में जातीय संघर्ष तथा उग्रवादी घटनायें राजनैतिक षडयंत्र होंगे। किसी संचारी रोग का प्रभाव होगा। अल्पव्यस्कों पर अत्याचार तथा प्रताड़ना की घटनायें होंगी। राजस्व में कमी होगी। **तेजी मंदी**—मीठे तथा रसपदार्थ, मेवादि में तेजी होगी। शेयरों में अस्थिरता। रसायनिक और प्लास्टिक सामान, रुई, सूत, कपास में तेजी। चाँदी, सोना में एकाएक तेजी, पक्षान्त मंदी होगी, पक्षान्त में तेलों में तेजी होगी। गेहूँ, जौ, चावल, ज्वार में मंदी। मूंग, मोठ, ज्वार, मक्का में मंदी आयेगी। **आकाशीय लक्षण**—पश्चिम में आकाश निर्मल रहेगा। गुजरात, महाराष्ट्र, तथा पर्वतीय क्षेत्रों में वायुवेग वर्षा होगी। विहार तथा वंगाल प्रान्त में कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। उत्तरार्द्ध में पश्चिम में खण्ड वृष्टि तथा तापमान में वृद्धि तथा उमस होगी। **भाद्रपदशुक्ल** की १,३,८,१०,१४ तथा **आश्विनकृष्ण** की २,६,१०,१४ तिथियाँ नेष्ट हैं।

आश्विनशुक्ल से कार्तिककृष्ण तक (२२ सितम्वर से २१ अक्टूवर तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के भाव सामान्य रहेंगे। अर्थव्यवस्था में मंद वृद्धि होगी। सीमाओं पर संघर्षपूर्ण स्थिति होगी। पूर्वी प्रान्तों में भूकम्प, भूस्खलन, अति वृष्टि आदि प्राकृतिक आपदा आयेगी। संवेदनशील सीमा क्षेत्रों में

अशान्ति तथा सैन्यसंघर्ष होगा। राष्ट्र प्रबल रहेगा। आक्रमणकारी देश को क्षति होगी। अरब तथा मुस्लिम राष्ट्रों में शासकों में सैन्य गतिविधियां तेज होंगी। मंगोल तथा उत्तरी राष्ट्रो में दमनकारी नीतियां प्रगट होंगी। जनता स्थानान्तरण के लिये विवश होगी। प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। चौपायों को रोग होंगे। **तेजी मंदी**—मसालो, किराना, मेवादि में तेजी रहेगी। गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूंग, मोठ, बाजरा के भावों में अस्थिरता रहेगी। मीठे पदार्थों में तेजी रहेगी। उत्तरार्द्ध मे तेलों, वनस्पति घी में तेजी आयेगी। शेयरो में मंद गति से वृद्धि, पूंजी बाजार में स्थिरता रहेगी। **आकाशीय लक्षण**—उत्तर पश्चिम प्रान्तों में सामान्य वर्षा मध्य तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र मेघाच्छादित रहेंगे। बंगाल की खाड़ी, पूर्वी प्रान्तों में तथा समुद्र तटीय नगरों में चक्रवाती वर्षा होगी। उत्तरार्द्ध में उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश में खण्डवर्षा एवं तापमान में गिरावट होगी। **आश्विनशुक्ल** की २,४,८,१२,१५ तथा **कार्तिककृष्ण** की १,५,८,१२ तिथियाँ नेष्ट है।

कार्तिकशुक्ल से मार्गशीर्षकृष्ण तक (२२ अक्टूबर से २० नवम्बर तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्यों में सस्ती। व्यापार उद्योगों तथा राष्ट्रीय व्यय में वृद्धि होगी। निर्यात में कमी आयेगी। वित्त संस्थानों पर ऋणभार होगा। यूरोप के राष्ट्रों में आर्थिक क्षति होगी। पश्चिमोत्तर में हिंसा तथा अग्निकाण्ड होंगे। विपक्ष द्वारा आन्दोलन होगा। पूर्वोत्तर प्रान्तों तथा पश्चिमोत्तर बिहार के सीमा में साम्प्रदायिक वातावरण तथा अशान्ति होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य गतिरोध तथा संघर्ष संभव है। किसी संचारी रोग का प्रसार होगा। **तेजी मंदी**-बाजरा,ज्वार,मूंगफली,तिल में तेजी रहेगी। चना, सरसो, अलसी, सोयाबीन, सूत, कपास, रुई, बिनौला में मंदी होगी। मीठे पदार्थ तथा घी में अस्थिरता पश्चात मंदी होगी। मशीनरी सामान व रेशमी वस्त्र, ईंधन, तेल, पेट्रोल, पशुओं के चारे में तेजी रहेगी। पक्षान्त में सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा तेज होंगे। दलहन व अनाजों में मंदी रहेगी। नशीले पदार्थ, कॉफी, चाय, तम्बाकू में तेजी आयेगी। **आकाशीय लक्षण**—पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात अथवा ओला वृष्टि होगी। मध्य भारत में वायु वेग। पश्चिमोत्तर में शीत वृद्धि होगी। मध्य भाग में वायु जनित खण्डवृष्टि होगी। **कार्तिकशुक्ल** की ४,७,११,१४ तथा **मार्गशीर्षकृष्ण** की ३,७,११,१३ तिथियाँ नेष्ट हैं।

मार्गशीर्षशुक्ल से पौषकृष्ण तक (२१ नवम्बर से १९ दिसम्बर तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्यों में महँगी रहेगी। अर्थव्यवस्था में प्रगति तथा कृषि की उन्नति होगी। धार्मिक आस्था प्रबल होगी। पश्चिम भाग में हड़ताल तथा श्रमिकों का आन्दोलन होगा। पूर्वी तथा पश्चिम दक्षिण भाग में साम्प्रदायिक तनाव तथा प्रमुख धर्मचार्यों के मध्य मतभेद होगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा संभव है। पूर्वी राष्ट्रों में भूकम्प से क्षति होगी। यूरोप, मंगोल राष्ट्रों तथा रुस में सत्ता परिवर्तन संभव हैं तथा पश्चिम में किसी प्रमुख व्यक्ति विशेष पर प्राणघातक प्रहार तथा वियोग होगा। अग्नि काण्ड, यान दुर्घटना संभव है। फारस क्षेत्रों में तनाव होगा। **तेजी मंदी**—रसायनिक पदार्थ,वाहनादि तथा मशीनरी सामान तेज होंगे। मेवादि,किराना में तेजी। चना,सरसों,मूंगफली तथा सोना, चाँदी, पीतल एवं पीली धातु में तेजी आयेगी। शेयरो में तेजी उपरान्त उत्तरार्द्ध में गिरावट तथा गेहूँ, चावल, मूँग, मोठ, गुड़, शक्कर में भी गिरावट होगी। **आकाशीय लक्षण**—पश्चिमोत्तर भाग में वर्षा होगी। मध्य तथा पश्चिम में सामान्य खण्डवृष्टि संभव है। उत्तर भारत में कुहासे एवं शीत में वृद्धि होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात एवं वायुवेग होगा। **मार्गशीर्षशुक्ल** की २,५,९,१२ तथा **पौषकृष्ण** की ३,५,९,१२ तिथियाँ नेष्ट हैं।

पौषशुक्ल से माघकृष्ण तक (२०दिसम्बर से १८ जनवरी २०२५-२६ तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों में सामान्य रहेंगे। अर्थव्यवस्था में स्थिरता तथा शिक्षण संस्थानों तथा सट्टा बाजार में हानि होगी। कल्याणकारी योजनाओं में धन की कमी। विपक्ष द्वारा अपव्यय पर प्रश्न करेंगे। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में परिवर्तन संभव है। किसी धार्मिक विषय पर न्यायालीय निर्णय का विरोध होगा। पश्चिम राष्ट्रों में जनसंघर्ष तथा युद्ध संभव है। पूर्वी देशों, अरब तथा मुस्लिम राष्ट्रों में सैन्य अनुशासन हीनता तथा सत्ता परिवर्तन होगा। इन राष्ट्रों में आन्तरिक मतभेद होंगे। किसी रोग व महामारी का प्रकोप होगा। कारागृहों में अराजकता होगी।

तेजी मंदी—ज्वार, चावल, मूँग, मोठ में अस्थिरता रहेगी। मीठे पदार्थ के भावों में तेजी। चाँदी में गिरावट, स्वर्ण तेज होंगे। खड़, प्लास्टिक के सामानों में तेजी। मेवादि तथा किराना, सब्जी, फल तेज होंगे। पक्षान्त में शेयर बाजार में तेजी पश्चात मंदी तथा लोहा, सोना, ताँबा में मंदी। दाल, धान, गुड़, शक्कर में मंदी होगी। **आकाशीय लक्षण**—उत्तरी पूर्वी प्रान्तों शीतलहर तथा हिमपात होगा। मध्य तथा उत्तर भाग में मेघ रहेंगे। उत्तरार्द्ध में समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों पर तूफान व चक्रवात का प्रकोप होगा। पूर्वोत्तर राज्यों में कुहासा एवं धुन्ध होगी। **पौषशुक्ल** की १,३,८,११ तथा **माघकृष्ण** की १,३,७,१० तिथियाँ नेष्ट हैं।

माघशुक्ल से फाल्गुनकृष्ण तक (१९जनवरी से १७ फरवरी तक)—चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य सामान्य रहेंगे। अर्थव्यवस्था, कृषि, खनन उद्योगों तथा निर्माण क्षेत्र में तेजी रहेगी। बजट में किसी नवीन करारोपण का भार होगा। पश्चिम राष्ट्रों तथा अरब क्षेत्र में धार्मिक विषयों पर उपद्रव संभव हैं। भारत में जातीय संघर्ष तथा उत्तरी भाग में प्राकृतिक प्रकोप से हानि, फसलों को क्षति होगी। किसी प्रसिद्ध अधिकारी अथवा राजनेता पर आरोप होंगे, किसी प्रमुख दल में नेतृत्त्व परिवर्तन या विघटन होगा। सीमा प्रान्तों पर सैन्य कार्यवाही संभव है। पूर्वोत्तर में यान दुर्घटना, भूकम्प तथा दक्षिण में जलप्लावन से हानि के योग है। समुद्र तटीय क्षेत्रों में जलीय संकट होगा। **तेजी मंदी**—लाल पदार्थ, मसाले, मीठे पदार्थ, घी, ऊनीवस्त्र तेज होंगे। मोठ, मूँग, ज्वार, बाजरा के भावों में अस्थिरता। चना, गेहूँ, जौ तथा तेलों, वनस्पति घी; प्लास्टिक, किराना में तेजी। शेयरों में तेजी रहेगी। पशुओं के आहार तथा चौपायों में तेजी होगी। लौह सामान, स्वर्ण में तीव्र तेजी, चाँदी में मंदी रहेगी। **आकाशीय लक्षण**—पूर्वोत्तर तथा पर्वतीय क्षेत्रों में मेघ तथा वायुवेग के साथ ओला वृष्टि। कुछ भागों में सामान्य वर्षा। देश के मध्य भाग में शीत वृद्धि। पश्चिमोत्तर प्रान्तों में आकाशीय तड़ित प्रकोप द्वारा क्षति होगी। **माघशुक्ल** की २,६,९,१३ तथा **फाल्गुनकृष्ण** की २,६,८,१३,३० तिथियाँ नेष्ट हैं।

फाल्गुनशुक्ल से चैत्रकृष्ण तक (१८ फरवरी १९ मार्च तक)-चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों में महँगी रहेगी। घरेलु अर्थव्यवस्था तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में मंदी होगी। राजस्व तथा निर्यात में कमी आयेगी। भारत सबल रहेगा। सत्तापक्ष की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्तर तथा पश्चिमी राष्ट्रों में सैन्य संघर्ष, सत्ता परिवर्तन, राजनैतिक अस्थिरता, जन पलायन संभव है। उत्तर पर्वतीय भूभाग में संघर्ष तथा अराजकता तथा भूस्खलन होगा। पूर्वी तथा दक्षिण प्रान्त में सत्ता परिवर्तन होगा। जल संकट का प्रभाव दृश्य होगा। पश्चिम भाग में अकाल तथा फसलों को क्षति होगी। अरब क्षेत्र में पश्चिमी राष्ट्रों का राजनैतिक दखल होगा। **तेजी मंदी**-गेहूँ, चना, चावल, ज्वार, मूंग,मोठ में तेजी उत्तरार्द्ध में मंदी होगी। मीठे तथा रस पदार्थों में मंदी होगी। लोहा, चाय, कॉफी, नशीले पदार्थ, रेशमी वस्त्रों में तेजी होगी। ईंधन, पेट्रोल, डीजल में तेजी तथा शेयरों में अस्थिरता पश्चात तेजी। पक्षान्त में लोहा, सोना, चाँदी में मंदी रहेगी। मशीनरी कलपुर्जे एवं वाहनादि महंगे होंगे। **आकाशीय लक्षण**-दक्षिण पश्चिम तथा मध्य भाग में मौसम शुष्क रहेगा। उत्तरार्द्ध में वर्षा का योग है। पश्चिमोत्तर में सामान्य वर्षा होगी। तापमान में वृद्धि होगी। **फाल्गुनशुक्ल** की ४,७,१२,१५ तथा **चैत्रकृष्ण** की ४,७,११,१३ तिथियाँ नेष्ट हैं।

ग्रहण विवरण

संवत् २०८२ शाके १९४७ (सन् २०२५-२६ ई.) में विश्व में कुल ४ ग्रहण लग रहे हैं। जिसमें २ सूर्यग्रहण तथा २ चन्द्रग्रहण हैं। भारत में दोनों चन्द्रग्रहण दृश्य होंगे।

१. खग्रासचन्द्रग्रहण—भाद्रपदशुक्ल १५ रविवार (दिनांक ७ सितम्बर २०२५) यह खग्रासचन्द्रग्रहण सम्पूर्ण भारत दृश्य होगा। यह भारत के अलावा यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका के पश्चिम भाग में, दक्षिण अमेरिका के पूर्व में, रुस, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, अटलांटिक, पैसफिक आर्कटिक, अन्टार्कटिका आदि क्षेत्रों में दृश्य होगा। भारतीयसमयानुसार चन्द्रास्त के समय आस्ट्रेलिया महाद्वीप के पश्चिम भाग में **ग्रस्तास्त खण्डचन्द्रग्रहण** के रूप में इसका **प्रारंभ घं.२१मि.५७** से होगा तथा चन्द्रोदय के समय अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम भाग में **खण्डचन्द्रग्रहण मोक्ष घं.१ मि.२६** पर होगा। खग्रासचन्द्रग्रहण के रूप में यह भारतीय महाद्वीप, अरब क्षेत्र, चीन, आस्ट्रेलिया, रुस, चीन, जापान में दृश्य होगा। **खग्रासचन्द्रग्रहण का प्रारंभ घं.२३मि.०१** से होगा तथा **मोक्ष घं.२४ मि.२३** पर होगा। इस ग्रहण का **मध्य घं.२३ मि.४२** पर होगा इसका **ग्रासमान १.३६२** होगा।

संवत् २०८२ शक १९४७ भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार (७ सितम्बर २०२५) काशी में खग्रास चन्द्रग्रहण।



काशी	घटी	पल	घंटा मिनट	भा०मा०रा० घं० मि०
स्पर्श	४०	२३	रा ९।५७	२१।५७
सम्मिलन	४३	२	रा ११।१	२३।०१
मध्य	४४	४५	रा ११।४२	२३।४२
उन्मीलन	४६	२८	रा १२।२३	२४।२३
मोक्ष	४९	५	रा १।२६	२५।२६

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
लाभ	सुख	माननाश	मृत्यु तुल्य कष्ट	स्त्रीपीड़ा	सौख्य
तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चिंता	व्यथा	श्री	क्षति	घात	हानि

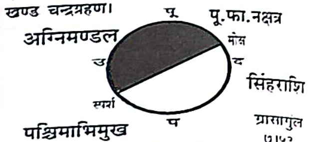
२. खण्डसूर्यग्रहण—दिनांक २१ सितम्बर २०२५ ई.। यह **खग्राससूर्यग्रहण भारत दृश्य नहीं है।** यह सूर्यग्रहण केवल दक्षिण गोलार्द्ध में आस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिण भाग, अटलांटिक क्षेत्र, अन्टार्कटिका क्षेत्र में यह सूर्योदय के समय दृश्य होगा। यूनिवर्सलसमयानुसार खण्डसूर्यग्रहण का **प्रारंभ घं.१७मि.२९** से फिजी द्वीपसूमह के सूदूर उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र से होगा तथा अटार्कटिका क्षेत्र के सूदूर दक्षिण पूर्वक्षेत्र में इसका **मोक्ष घं.२१मि.५४** पर होगा। यूनिवर्सलसमयानुसार इस ग्रहण का **मध्य घं.१९मि.४२** होगा। इसका **ग्रासमान ०.८५५०** होगा।

३. कंकड़ाकृतसूर्यग्रहण—दिनांक १७ फरवरी २०२६ ई.। यह **कंकड़ाकृत-सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं है।** यह ग्रहण चिली, दक्षिण अमेरिका, अटलांटिक क्षेत्र, पैसफिक क्षेत्र में, अन्टार्कटिका हिन्द महासागर, दक्षिणी अफ्रीका में दृश्य होगा। यूनिवर्सलसमयानुसार **खण्डसूर्यग्रहण** के रूप में इसका **प्रारंभ घं.९मि.५६** से दक्षिण अमेरिका के सूदूर दक्षिणी क्षेत्र से होगा तथा इसका **मोक्ष घं.१४ मि.२८** पर आस्ट्रेलिया महाद्वीप के सूदूर पश्चिम में ग्रस्तास्त खण्डसूर्यग्रहण के रूप में सूर्यास्त के समय होगा। यूनिवर्सलसमयानुसार **कंकड़ाकृत-सूर्यग्रहण** का **प्रारंभ घं.११ मि.४२** पर होगा तथा इसका **मोक्ष घं.१२ मि.४१** पर होगा। इस ग्रहण का **मध्य घं.१२ मि.१३** पर होगा। इसका **ग्रासमान ०.९६३०** होगा

४. खग्रासचन्द्रग्रहण—फाल्गुनकृष्ण १५ मंगलवार (दिनांक ३मार्च २०२६) यह खग्रासचन्द्रग्रहण भारत में **ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण के रूप** में दृश्य होगा तथा चन्द्रोदय के समय केवल इसका **मोक्ष** दृश्य होगा। भारत के सूदूर पूर्वोत्तर के कुछ भागों में **खग्रासचन्द्रग्रहण** का **मोक्ष** दृश्य होगा। भारत के अलावा यह ग्रहण पूर्वी यूरोप,एशिया महाद्वीप, आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणीअमेरिका, अटलांटिक पैसफिक, अन्टार्कटिका आदि क्षेत्रों में दृश्य होगा। भारतीयसमयानुसार **खण्डचन्द्रग्रहण** का **प्रारंभ घं.१५मि.१९** पर होगा तथा इसका **मोक्ष घं.१८मि.४७** पर होगा।

भारतीयसमयानुसार **खग्रासचन्द्रग्रहण** का **प्रारंभ घं.१६ मि.३४** पर होगा तथा इसका मोक्ष घं.१७ मि.३३ पर होगा। यह खग्रासचन्द्रग्रहण आस्ट्रेलिया, जापान, कोरिया, रुस आदि क्षेत्र में दृश्य होगा। इसकी कुल अवधि घं.१ मि.१९ की होगी तथा **खण्डचन्द्रग्रहण** की कुल अवधि **घं.३ मि.२८** की है। ग्रहण का **मध्य घं.१७ मि.४** पर होगा। इसका **ग्रासमान १.१५२६** होगा।

संवत् २०८२ शक १९४७ फाल्गुन शुक्ल १५ मंगलवार (३ मार्च २०२६) काशी में ग्रस्तोदित खण्ड चन्द्रग्रहण।



काशी	घटी	पल	घंटा मिनट	भा०मा०रा० घं० मि०
मध्य	२९	३०	रा ६।१२	१८।०७
मोक्ष	३१	२३	रा ६।४७	१८।४७
चन्द्रोदय	.-	-	रा ५।५९	१७।५९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
चिंता	व्यथा	श्री	क्षति	घात	हानि
तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	सुख	माननाश	मृत्यु तुल्य कष्ट	स्त्रीपीड़ा	सौख्य

ग्रहणविशेष : केवल दृश्यग्रहण के स्पर्श से मोक्ष काल तक देवालयों में दर्शनादि वर्जित है। संपूर्ण ग्रहणकाल नहीं।

सूतक विचार—धर्मशास्त्र के अनुसार चन्द्रग्रहण में ९ घण्टा पूर्व तथा सूर्य ग्रहण में १२ घण्टा पूर्व ग्रहण का सूतक होता है। इसमें बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों को भोजन आदि नहीं करना चाहिए।

विंशोपक फल

वर्षा ११, धान्य ११, तृण ५, शीत १३, उष्ण १७, वायु १३, वृद्धि १५, विनाश १५, विग्रह ११, क्षुधा ९, तृष्णा ७, निद्रा १३, आलस्य १३, उद्यम ११, शान्ति १३, क्रोध ११, दम्भ ३, भेद १, मैत्री १३, रसनिष्पत्ति ७, फलनिष्पत्ति ११, उत्साह ९, उग्रप्रवृत्ति १५, सौम्यप्रवृत्ति १७, पापप्रवृत्ति ७, पुण्य ७, व्याधि ५, भैषज्य ५, उग्रता ११, आचार ९, अनाचार १९, मरण ९, जन्म १५, देशोपद्रव ५, देशस्वा. १५, चौरभय १३, चौरशम १७, अग्निभय ११, अग्निनाश १३, विषभय ७, विषभयनाश ११, सेवकत्व ९, स्वामित्व १९, निजधन ७, परधन ७, शलभा ९, शुक १३, मूषक ११, अतिवृष्टि १५, अनावृष्टि ३, स्वचक्र ५, परचक्र ११, नायकत्व १७, रत्न ११, वस्त्र ९, घृत ९, तैल ५, दुकूल ५, ऊनीवस्त्र ३, सौक्ष्म ३।

विवाह एवं विविध मुहूर्त्त संवत् २०८२

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

काशी से प्रकाशित **रुपेश महावीर पञ्चाङ्ग** देखने की विधि यहाँ दी जा रही है। इस विधि को लिखने की आवश्यकता न होते हुए भी पाठकों की सुविधा के लिए अत्यन्त सरल ढंग से दी जा रही है। पञ्चाङ्ग को मुख्यत: दो खण्डों में विभाजित किया गया है। (१) स्थिर विषय जिसे पृष्ठ–९ से १४ एवं ३९ से ५१ व ५४ पर दिया जा रहा है। (२) परिवर्तनीय विषय–१-८ एवं १५ से ३८ तथा ५२ व ५३वें पृष्ठ पर दिया जा रहा है। चैत्रादि पक्ष- पृष्ठ १५ से ३८ तक के पृष्ठों में दिये जा रहे हैं।

पञ्चांग के क्रम में दि.(दिनमान), ति.(तिथि), वार (वारों के नाम), घ.(घटी), प.(पल), घं.(घण्टा), मि.(मिनट), रा.(रात्रि), दि.(दिन), प्रा. (प्रात:), सा.(सायं), वव-वालव इत्यादि करणों का मान घटी पल में दिया गया है। औदायिक कालम के अन्तर्गत आनन्दादि योग दिये गये हैं। अं.(अंग्रेजी), फा. (फारसी, मुस्लिम), फ. (फसली), सौ. (सौर), रा. (राष्ट्रीय मास) दिनाङ्क हैं। चं. (चन्द्रराशि प्रवेश) तथा पंचांग में सूर्योदय से सूर्यास्त तक के सभी घं. मि. काशी के स्पष्टमान से दिये जा रहे हैं। इसी तरह तिथि, नक्षत्र आदि का मान घ. प. तथा घं. मि. में दिया गया है।

'स्पष्ट-सूर्य' के स्तम्भ में सूर्योदयकालिक स्पष्ट सूर्य काशी का दिया गया है। इसके वगल में रविक्रान्ति है र. (रवि), का. (क्रांति), द. से (दक्षिणा.) उ.(उत्तरा.) के संकेत दिये गये हैं।

रेलवे टाइम संस्कार- रे. (रेलवे), अं. (अन्तर) पंचांग में सभी समय स्थानीय (काशी के सूर्य घड़ी से) समय दिया गया है। इसको स्टैं. समय वनाने के लिए रे. अं. ऋण (—) हो तो स्थानीय समय में घटाने पर भारतीय स्टैं. समय होगा तथा (+) होने पर स्थानीय समय में जोड़ने से भारतीय स्टैं. समय होगा। इसी को स्टैं. समय में विलोम संस्कार करने पर काशी का स्थानीय समय होगा। जैसे— रे. अं. ऋण (—) होने पर स्टैं. टाइम में धन (+) करने से तथा धन (+) होने पर ऋण (—) करने से स्थानीय समय होगा।

इसके वाद की पंक्ति में भ. (भद्रा), सूर्य का नक्षत्र व राशि प्रवेश काल का समय दिया गया है। इसी पंक्ति में सभी व्रतोपवास, पर्व, जयन्ती, सर्वार्थसिद्धियोग, अमृत योग, त्रिपुष्कर योग, द्विपुष्कर योग, रवियोग तथा यायीस्थायीयोग दिया गया है।

इसके वाद नीचे की पंक्ति में सूर्योदय कालिक दैनिक स्पष्ट ग्रह योग मंगल, वुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं राहु का है। इसके वाद पक्ष की अष्टमी को सूर्योदय कालिक अहर्गण, अयनांश तथा चक्र सहित स्पष्ट ग्रहों की तालिका दी गयी है। पुन: दैनिक लग्न सारिणी घं. मि. में लग्नांत दिया गया है। तत्पश्चात् विविध मुहूर्त दिया गया है। वगल में पूर्णिमा या अमावस्या को सूर्योदय कालिक अहर्गण, अयनांश तथा चक्र सहित स्पष्ट ग्रहों की तालिका दी गयी है।

विवाह मुहूर्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

ति.१ सोम (१४।४।२५) प्रा.६।०से स्वाती में मृत्युवाण।

ति.२ मंगल (१५।४।२५) अनुराधा मृत्युवाण।

ति.३ बुध (१६।४।२५) रा.१०।३ व्यतिपात बाद अनु.रे.९ ल.१० (रा.१२।४६से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। ७वाँ भौमदान।

ति.५ शुक्र (१८।४।२५) मूल रे.७ दिवा ल.२ (दि.७।३ उषा ५ ग्र.व. वि.१० वा ल.गोधूलि (सूर्यास्त) ल.११ (रा.२।२४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। ।

ति.६ शनि (१९।४।२५) मूल रे.७ (ल.२ प्रा.७।० से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (८वाँ चंद्र) अशुभ।

ति.७ रवि (२०।४।२५) प्रा.७।२६ से उ.षा. रे.८ दिन ल.२ (प्रा.७।२६से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (८वाँ चन्द्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.११(रा.२।१७ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.८ सोम (२१।४।२५) प्रा.७।५२ तक उ.षा.में रे.७ दिन ल.२ (प्रा.६।५२से दि.७।५२ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।

ति.१२ शुक्र (२५।४।२५) दि.७।५६ तक (१२वां) उ. भा. में मृत्युवाणदोष। **पश्चात मासान्त दोष।**

वैशाख शुक्ल पक्ष

ति.२ मंगल (२९।४।२५) रा.९।२६से रोहिणी रे.१० ल.११ (रा.१।४३से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.३ बुध (३०।४।२५) रोहिणी रे.१० दिन ल.२ (प्रा.६।१८ से दि.८।१४ तक) इष्ट५ग्र.व.वि. १०(लग्न चंद्रदान) या ल.४ (दि. १०।२८ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या रा.८।२ से मृग. रे.९ल.११ (रा. १।३९से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.४ गुरु (१।५।२५) रा.६।५०तक मृग. रे.१०दिन ल.२ (प्रा. ६।१४ से दि.८।१०तक) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६ या ल.४ (दि.१०।२४ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१२ या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

ति.८ सोम (५।५।२५) सा.५।५५से मघा में रे.८ ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.११ (रा.१।२१ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.९ मंगल (६।५।२५) मघा में रे.८ दिन ल.२ (प्रा. ५।५६से दि.७।५२ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि. ९।। या दिन ल.४ (दि.१०।६ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१३।। या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

ति.१० बुध (७।५।२५) रा.८।१९ से उ.फा. में रे.७ ल.११ (रा.१।९) इष्टा ६ ग्र.व.वि.३।१ (७ मस्थ चंद्रदान)।

ति.११ गुरु (८।५।२५) रा.१०।१२ से हस्त रे.६ ल.११ (रा.१।९ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (८वाँ चंद्र अशुभ) उ.फा. में रे.७ ल.गोधूलि (सूर्यास्त)।

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) रा.१२।२८ तक हस्त रे.६ दिन ल.२(प्रा.५।४५ से दि.७।४१ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.९।। या दिन ल.५ (दि.१२।१३से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२(८वाँ शुक्र दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.८ (रा.६।५६से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१४ (८वाँ गुरु दान)।

ति.१३ शनि (१०।५।२५) रा.२।५९ से स्वाती रे.८ व्यतिपात व पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१४ रवि (११।५।२५) रा.शे. ४।४१ व्यतिपात वाद स्वाती में रे.८ रात्रि पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१५ सोम (१२।५।२५) प्रा.५।३७ तक स्वा.में रे.८पञ्चेष्टलग्न अभाव।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ति.१ मंगल (१३।५।२५) रा.२।५५ मृत्युवाण उपरान्त अनुराधा रे.७ ल.१२ (रा.२।५५ उ. इष्ट २ ग्र.व.वि.१२। सूर्यवेध किंतु चन्द्र अभुक्त से अशुभ।

ति.२ बुध (१४।५।२५) दि.१०।३० या अनु.दिवा पंचेष्ट लग्नाभाव।

ति.३ गुरु (१५।५।२५) दि.१२।३० से मूल में भौममुक्त चन्द्र अभुक्त से अशुभ। रा.७।५३ से (चन्द्रशुद्धि) रा.शे.४।५१ मृत्युवाण-पूर्व मूल में रे.९ ल.८ (रा. ७।५३ से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१३।। (७वाँ सूर्य दान) या ल.११ (रा.१२।४४ से) इष्ट ६ ग्र.व. वि.१५।

ति.४ शुक्र (१६।५।२५) मूल में मृत्युवाणदोष।

ति.५ शनि (१७।५।२५) दि.३।६ मृत्युवाण बाद उ.षा.में ल.७ (सा.४।९ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (१०वाँ भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) ल.९ (रा.८।४२ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ (८वाँ भौम अशुभ) या ल.१२ (रा.२।६ से)इष्ट ६ ग्र. व.वि.१७।

ति.६ रवि (१८।५।२५) दि.३।४० तक उ.षा.में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१० गुरु (२२।५।२५) दि.१।२९ से उ.भा.में रे.७ ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.१० (दि.१०।२७से) इष्ट ५ग्र.व.वि. १३ (७वाँ भौमदान) या ल.१२ (रा. १।४५से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (लग्न का चंद्र दान)।

ति.११ शुक्र (२३।५।२५) दि.१२।६ तक उ.भा.में रे.७ दिन में ल.२ (प्रा.६।४५ तक) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५। दि.१२।६ से रेवती रे.१० ल.गोधूलि वा ल.२ (रा.११।४१ उ.) इष्टा ५ ग्र.व.वि.१२ (ल.चंद्रदान)।

ति.१२ शनि (२४।५।२५) दि.१०।३४ या रेवती ल.२ (प्रा.६।४० या) इ.६ ग्र.व. वि.१५।

पश्चात मासान्त दोष है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ति.१ बुध (२५।५।२५) रा.२।५७ या मृग. रे.१० ल.२ (प्रा.६) २५ या) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१४।। वा ल.७ (दि.३।४३ उ.) इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११ (६ शुक्र अशुभ) वा ल.गोधूलि।

ति.६ रवि (१।६।२५) रा.१।४१ से मघा रे.५ (अल्प रेखा) पंचेष्ट लग्नाभाव। दिवा ल.४ (दि.१०।३७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४ वा ल.७ (दि.३।४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (१०मस्थ भौम अशुभ) वा ल.गोधूलि वा ल.१० (रा.९।४० उ) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (७मस्थ भौमदान)।

ति.७ सोम (२।६।२५) मघा में पूर्वदोष ।

ति.९ वुध (४।६।२५) उ.फा.में केतुयुति मृत्युवाण।

ति.१० गुरु (५।६।२५) उ.फा.में पूर्वदोष। प्रा.५।४१ या केतुयुति पंचेष्ट लग्नाभाव से दि.११।२९ व्यतिपात पूर्व हस्त रे.८ दिन ल.४ (दि.८।७ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१४ या दिन ल.५ (दि.१०।२५ से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१३।। (लग्न का केतुदान)

ति.११ शुक्र (६।६।२५) दि.७।५३ तक रे.७ पंचेष्ट लग्नभाव।

ति.१२ शनि (७।६।२५) दि.१०।२१ से स्वाती में रे.८ दिनल.५ (दि.१०।२१ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (७वां राहु दान) या दिनल.६ (दि.१२।३१ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३ (७ वां शनि दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.९ (रा.७।१७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४ (८वां भौम अशुभ) या ल.१० (रा.९।२३से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (७वां भौम अशुभ) या ल.१२ (रा.१२।४१ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८वां चन्द्र अशुभ)।

ति.१२ रवि (८।६।२५) दि.१२।५८ तक स्वाती मे रे.७ दिन ल.५ (दि.१०।१३ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (७वां राहु दान) या दिन ल.६ (दि.१२।२७से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५(७ वां शनि दान) **पश्चात गुरुवृद्धत्व दोष प्रारंभ।**

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

ति.१ शुक्र (२१।११।२५) दि.१।१९ या अनुराधा सूर्य युति दिवा ल.१० (दि.१०।४३) इष्ट६ ग्र.व.वि.१५।। (७मस्थ गु.दा.)।

ति.२ शनि (२२।११।२५) सा.३।४८ से मूल रे.१० ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।५७ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।। (७वां चन्द्र अशुभ) या ल.४ (रा.९।११से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१० (६वां चन्द्र अशुभ) या ल.६ (रा.१।४३ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१५ या ल.७ (रा.३।५६ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१४।

ति.३ रवि (२३।११।२५) रा.६।१ तक मूल में रे.८ दिवाल.१० (दि.१०।३४ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१०।। (७वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

ति.४ सोम (२४।११।२५) रा.७।५१ से उ.षा.में रे.७ या ल.३ (रा.६।४९से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।। (७ वां चन्द्र अशुभ) या ल.४ (रा.९।३ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (६वां चन्द्र अशुभ) या ल.६(रा.१।३५ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१५।

ति.५ मंगल (२५।११।२५) रा.९।१५तक उ.षा. में रे.७ दिन ल.९ (दि.८।२०से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१२।। (८वां गुरु दान) या दिन ल.१०(दि.१०।२६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।। (लग्नस्थ चंद्रदान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।४५से) इष्ट६ ग्र.व.वि.१३।। (८वां चन्द्रअशुभ) या ल.४ (रा.८।५९से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।। (७वां चंद्रअशुभ)

ति.९ शनि (२९।११।२५) रा.९।५०से उ.भा.रे.७ ल.४ (रा.९।५०से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१०या ल.६ (रा.१।२४ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१५ (३स्थ शुक्र अशुभ)।

ति.१०रवि (३०।११।२५) उ.भा.में रे.८ दिवा ल.१० (दि.१०।४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५।। (७वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।२३ से)इष्ट ५ग्र.व.वि.१३।। (६वां शुक्र अशुभ) या ल.४(रा.८।३७ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१० रा.८।५७ से रा.१।१७ व्यतिपात पूर्व रे.९रेवती में ल.६ (रा.१।१९ से)इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ (३स्थ शुक्र अशुभ)।

ति.११ सोम (१।१२।२५) रेवती में रे.९ व्यतिपात। ति.१४ गुरु दि.३।२ से रोहिणी में रे.८दिन ल.१ (दि.२।३४ से)इष्ट ५ग्र.व.वि.१४।। (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (६स्थ शुक्र अशुभ) या ल.४ (रा.८।२१से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१०।

पौष कृष्ण पक्ष

ति.१ शुक्र (५।१२।२५) रा.७।१ मृत्युवाण पूर्व रोहिणी में रे.८ दिन ल.१० (दि.९।४४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०(७वां गु.दा.) या दि.१।२२ उ.मृग दिन ल.१ (दि.२।३० से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १५।। (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३(रा.६।३से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (६वां शुक्र अशुभ)।

ति.२ शनि (६।१२।२५) मृगशिर में मृत्युवाण।

पश्चात शुक्रवृद्धत्व दोषारंभ।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

ति.३ वुध (४।२।२६) रा.११।३४ उ. उ.फा.में रे.७ ल.७ (रा.११।३४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५।

ति.४ गुरु (५।२।२६) उ.फा. रे.७ दिनल.१०(प्रा.७।० तक) इष्ट ५ग्र.व.वि.१० (लग्न के सूर्यदान) या दि.ल.१२(दि.८।३१ से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.११।। (७वां चंद्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.५(रा.६।४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (६स्थ शुक्र अशुभ) या ल.७ (रा.१०।३१से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० या रा.१२।२० से हस्त रे.९ रात्रि पञ्चेष्टलग्न अभाव।

ति.५ शुक्र (६।२।२६) रा.१।३७ तक हस्त रे.९ दिन ल.१० (प्रा.६।५५ तक)इष्ट ५ ग्र.व.वि.१५ (लग्नस्थ सूर्यदान)या दिन ल.१२ (दि.८।२६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। (७वां चन्द्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.७ (रा.१०।२६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।

ति.७ रवि (८।२।२६) स्वाती में राहुवेध रे.७ दिवा ल.१० (प्रा.६:४७ या) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०, वा दि.ल.३ (दि.१।१९ उ.) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८मस्थ भौम अशुभ) वा ल.५ (सा.५:५१ उ.) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (७मस्थ राहुदान) वा ल.७ (रा.१०।१८ उ.) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१०।

ति.८ मंगल (१०।२।२६) प्रा.७।५५ से अनु. रे.९ दिन ल.३ (दि.१।१०से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.७ (रा.१०।९ से) इष्ट५ ग्र.व. वि.१३।। ।

ति.९ वुध (११।२।२६) दि.१।४ मृत्युवाण पूर्व अनुराधा दिन ल.१० (प्रा.६।३४तक) इष्ट ६ग्र.व.वि.१५ (लग्न का सूर्यदान)।

ति.१० गुरु (१२।२।२६) मृत्युवाण वाद दि.१।७ से मूल रे.७ दिन ल.३ (दि.१।२ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.७ (रा.१०।१ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ या ल.८(रा.१२।१७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।

ति.११ शुक्र (१३।२।२६) दि.३।३२ तक संक्रांति पुण्यकाल उपरान्त मूल रे.७ दिन में पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१२ शनि (१४।२।२६) दि.३।२०से पश्चात मासान्त दोष।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

ति.२ गुरु (१९।२।२६) रा.९।१८ से उ.भा. शनियुति, रे.८ वा.१० (रा.शे.४।१४ उ.) इष्ट ६ग्र.व. वि.१५।

ति.३ शुक्र (२०।२।२६) उ.भा.पूर्वदोष। रा.८।३९से रेवती रे.८ ल.७ (रा.९।३२से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१० (६स्थ चंद्र अशुभ) या ल.१० (रा.शे.४।१० से) इष्ट ६ ग्र. व.वि.१५, उ.भा. में शनियुति। रे.८ दिवा ल.१ (दि.८।५९) इष्ट ५ग्र.व.वि.१२ (१०मस्थ भौम अशुभ) वा दि.ल.२ (दि.१०।३६) इष्ट ५ग्र.व.वि.१३।। वा ल. गोधूलि।

ति.४ शनि (२१।२।२६) रा.७।४१ तक रेवती में रे.८ दिन ल.१ (दि.८।५५ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (१२स्थ शनि अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

ति.७ मंगल (२४।२।२६) दि.३।१६ से रोहिणी में वैधृति रे.९ ल.गोधूलि ल. (सूर्यास्त) वा ल.१० (रा. ३।५५) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५।

ति.९ वुध (२५।२।२६) रोहिणी में रे.९ दिन ल.१ (दि.८।४० से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१८।। (१२स्थ शनि अशुभ) या दि.१।३५ से मृग रे.९ ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.६ (रा.६।५९ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। (६वां शुक्र अशुभ) या ल.७(रा.९।१२ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (८वां चंद्र अशुभ) या ल.१० (रा.शे.३।५१ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।

ति.१०गुरु (२६।२।२६) दि.११।५६तक मृग में रे.९ दिन ल.१ (दि.८।३६ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१३।। (१२वां शनि अशुभ) या दिन ल.२ (दि.१०।१३ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१८।। (१० वां भौम अशुभ)।

ति.१४ सोम (२।३।२६) प्रा.७।२० से मघा में भौममुक्त रे.८ दिवा.ल.३ (दि.११।५४) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।। वा ल.गोधूलि, वा ल.६ (सा.६।४४) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। ।

ति.१५ मंगल (३।३।२६) प्रा.७।३ या.मघा में पूर्वदोष (ग्रस्तोदितचन्द्रग्रहण)।

चैत्र कृष्ण पक्ष

ति.१ वुध (४।३।२६) प्रा.७।१२ से उ.फा. में मृत्युवाण। रा.शे.३।५८ मृत्युवाण वाद रात्रि पञ्चेष्ट-लग्नाभाव।

ति.२ गुरु (५।३।२६) प्रा.७।५२ से हस्त शनिवेध रे.८ दिवा.ल.१

वधूप्रवेश/द्विरागमन (गौना) मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती में वधूप्रवेश (ल.२प्रा.७।१९ से या ल.८ रा.८।३० से) द्विरागमन (ल.३ दि.९।१५से)।

ति.८ सोम (२१।४।२५) उ.षा. वधूप्र./द्विरा. (ल.२ प्रा.६।५४ से)।

ति.१० बुध (२३।४।२५) शत. द्विरा. (ल.७ सा.५।४२ से ८वाँ गु.दा. या ल.८ रा.७।५८से या ल.१२ रा.३।३९ से लग्न के राहुदान)।

वैशाख शुक्ल

ति.३ बुध (३०।४।२५) रोहिणी द्विरा.(ल.२ प्रा.६।१८ से या ल.३ प्रा.८।१४ से)।

ति.४ गुरु (१।५।२५) मृगशिरा द्विरा.५मी (ल.७ सा.५।९से८वाँ गु.दा.)।

ति.११ गुरु (८।५।२५) हस्त वधूप्र. (ल.१२ रा.२।४०से लग्न के रा.दा.)।

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त में वधूप्रवेश (ल.२प्रा.५।४५ से या ल.८ रा.६।५६ से ८वाँ गु.दा.) द्विरागमन (ल.२ प्रा. ५।४५ से या ल.३ दि.७।४१ से या ल.७ सा.४।४०से)।

मार्गशीर्ष शुक्ल

ति.७ गुरु (२७।११।२५) धनि.वधूप्रवे./द्विरा. (ल.२ सा.४।४० से) द्विरागमन (ल.३ सा.६।३६ से)।

पौष कृष्ण

ति.१ शुक्र (५।१२।२५) दि.१।२३ से मृग वधूप्रवेश (ल.२ दि.४।७ से या ल.३ सा.६।३ से या ल.७रा.३।२ से) द्विरागमन (ल.२सा.४।७ से या ल.६ रा.१२।४९ से)।

ति.४ सोम (८।१२।२५) रिक्तावाद पुष्य द्विरा. (ल.६ रा.१२।३५ से) वधूप्रवेश(ल.७ रा.२।४८ से)।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृग वधूप्रवे./द्विरा. (ल.२दि.१०।१३से)।

ति.११ शुक्र (२७।२।२६) पुर्न. द्विरागमन (ल.२ दि.१०।२५से)।

चैत्र कृष्ण

ति.२ गुरु (५।३।२६) हस्त द्विरागमन (ल.२ दि.९।४७ से या ल. ३ दि.११।४३ से या ल.६ रा.६।२९से)।

ति.६ सोम(९।३।२६) अनु. द्विरा.ल.६ सा.६।१४ से या ल.७ रा.८।२७ से।

ति.८ बुध (११।३।२६) मूल द्विरागमन (ल.७ रा.८।२० से)।

सगाई (वर कन्या वरण मुहूर्त)

वैशाख कृष्ण

ति.१ रवि (१३।४।२५) रा.७।४३ से स्वाती में।

ति.५ शुक्र (१८।४।२५) मूल में।

ति.८ सोम (२१।४।२५) दि.१।४० तक उ.षा.।

ति.१२ शुक्र (२५।४।२५) उ.भा.।

वैशाख शुक्ल

ति.३ बुध (३०।४।२५) सा.५।५७ तक रोहिणी।

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.२ बुध (१४।५।२५) अनुराधा।

ति.३ गुरु (१५।५।२५) ज्येष्ठा।

ति.७ सोम (१९।५।२५) दि.३।४४ से धनिष्ठा।

ति.११ शुक्र (२३।५।२५) दि.१२।६ तक उ.भा.।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.१० गुरु (५।६।२५) प्रा.५।४१से हस्त।

ति.११ शुक्र (६।६।२५) चित्रा।

आषाढ़ मास गुरु अस्त दोष, पश्चात हरिशयन से दोष है।

मार्गशीर्ष शुक्ल

ति.६ बुध (२६।११।२५) श्रवण।

ति.७ गुरु (२७।११।२५) धनिष्ठा।

ति.१४ गुरु (४।१२।२५) सा.६।३० से रोहिणी।

पौष कृष्ण

ति.१ शुक्र (५।१२।२५) रोहिणी में। पुनः दि.१।२२ से मृगशिरा में।

ति.७ गुरु (११।१२।२५) प्रा.६।५९ से मघा।

आगे शुक्रास्त प्रारंभ।

फाल्गुन कृष्ण

ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त।

ति.१० गुरु (१२।२।२६) दि.१।७ से मूल।

ति.११ शुक्र (१३।२।२६) मूल।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा में।

ति.११ शुक्र (२७।२।२६) दि.१०।२५ से दि.११।१ तक पुनर्वसु।

चैत्र कृष्ण

ति.१ बुध (४।३।२६) प्रा.७।१२ से उ.फा.।

ति.२ गुरु (५।३।२६) उ.फा. में प्रा.७।५२ से हस्त।

ति.१० शुक्र (१३।३।२६) पू.षा. में। पश्चात् खरमास प्रारंभ।

उपनयन मुहूर्त

चैत्र शुक्ल

ति.७ शुक्र (४।४।२५) मृगशिरा विप्र.उपनयन ल.३ दि.९।५१ से।

ति.१० सोम (७।४।२५) पुष्य विप्र.उपनयन ल.३दि.९।४० से।

ति.१२ बुध (९।४।२५) पू.फा. विप्र.उपनयन ल.३ दि.९।३३ से।

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१३।४।२५) स्वाती उपनयन ल.३ दि.९।१५ से।

वैशाख शुक्ल

ति.३ बुध (३०।४।२५) रोहिणी उपनयन ल.२ प्रा.६।१८ से दि.८।१४ तक ५वाँ के.दा.।

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त उप.ल.३ दि.७।४१ से दि.९।५५ तक।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.३ गुरु (१५।५।२५) मूल उप.ल.५ दि.१२।३० से लग्न का के.दा.।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.३ गुरु (२९।५।२५) आर्द्रा उप.ल.३ प्रा.६।२१से दि.८।३५ तक।

ति.१२ रवि (८।६।२५) स्वाती उप.ल.३ प्रा.५।४१ से प्रा.७।२ तक।

फाल्गुन कृष्ण

ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त उपनयन ल.२ दि.११।३१ से।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा उप.ल.२ दि.१०।१३ से या ल.३ दि.१२।१९ से।

ति.११ शुक्र (२७।२।२६) आर्द्रा उपनयन ल.२ दि.१०।१०से।

चैत्र कृष्ण

ति.२ गुरु (५।३।२६) उ.फा. उपनयन ल.१२ प्रा.६।४२ से दि.८।१० तक या हस्त ल.२ दि.९।४७ से।

चौल (मुण्डन)/कर्णविध (कर्णछेदन) मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती चौल ल.२ प्रा.७।१९से या ल.३दि.९।१५ से।

वैशाख शुक्ल

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) कर्ण. ल.२प्रा.५।४५ से या ल.३ दि.७।४१ से।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.२ बुध (१४।५।२५) अनुराधा कर्ण.ल.२ दि.७।२२से दि.९।३६तक।

ति.७ सोम (१९।५।२५) धनिष्ठा चौल (ल.६ दि.४।९ से)।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.१० गुरु (५।६।२५) हस्त चौल/कर्ण (ल.३ प्रा.७।५३से)।

फाल्गुन कृष्ण

ति.१० गुरु (१२।२।२६) ज्येष्ठा चौल (ल.२ दि.११।३२ से)।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृग. चौल/कर्ण (ल.१२प्रा.७।३८से शनि दान या ल.२ दि.१०।१३ से)।

अक्षरारम्भ / विद्यारम्भ मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति. १ सोम (१४।४।२५) स्वाती अक्ष./विद्या.ल.२ प्रा.७।१९ से या ल.३ दि.९।१५ से।

वैशाख शुक्ल

ति. ५ शुक्र (२।५।२५) आर्द्रा अक्षरारंभ/विद्यारंभ (ल.२ प्रा.६।११ से या ल.३ दि.८।७ से)।

ति. १२ शुक्र (९।५।२५) हस्त अक्षरारंभ विद्यारंभ (ल.२ प्रा.५।४५ से या ल.३ दि.७।४१ से)।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.३ गुरु (२९।५।२५) आर्द्रा अक्षरा./विद्या. (ल.३ प्रा.६।२१ से दि.८।३५तक)।

फाल्गुन कृष्ण

ति. ५ शुक्र (६।२।२६) हस्त अक्षरारंभ (ल.२ दि.११।३१ से या ल.१२ दि.८।३६ से)।

फाल्गुन शुक्ल

ति. १० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा विद्या.(ल.२ दि.१०।१३ से)।

चैत्र कृष्ण

ति. २ गुरु (५।३।२६) उ.फा. विद्यारंभ (ल.३ दि.११।४३ से)।

ति.५ रवि (९।३।२६) स्वाती विद्या.ल.२ दि. ९।३५ से या ल.३ दि.११।३१ से।

गृहारम्भ (नींव रखना) / गृहप्रवेश मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती गृहारंभ (ल.३ दि.९।१५ से या ल.८ रा.८।३० से)।

ति.१२ शुक्र (२५।४।२५) उ.भा.में गृहप्रवेश (ल.२प्रा.६।४४ से दि.७।५६ तक)।

वैशाख शुक्ल

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त गृहारंभ (ल.३ दि.७।४१से)।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.११ शुक्र (२३।५।२५) उ.भा. गृहप्रवेश (ल.३ प्रा.६।४५से दि.८।५९ तक)

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.१० गुरु (५।६।२५) हस्त गृहा.ल.३ दि.७।५३ से दि.८।७ तक।

श्रावण कृष्ण

ति.११ सोम (२१।७।२५) रोहिणी जीर्णादि-गृहप्रवेश (ल.६ दि.९।३३ से) रा.८।३७ से मृग. जीर्णादिगृहप्रवेश(ल.१२ रा.९।४३ से लग्न में शनिदान)।

श्रावण शुक्ल

ति.१५ शनि (९।८।२५) श्रवण गृहारंभ (च. शु.)।

भाद्रपद कृष्ण

ति.२ सोम (११।८।२५) शतभिषा गृहारंभ (ल.८ दि.१२।४५ से) सौर कर्क में ग्राह्य है।

भाद्रपद शुक्ल

ति.१२ गुरु (४।९।२५) उ.षा.में गृहारंभ (ल.८ दि.११।१३ से ८वां गु.दा. या ल.८ दि.११।१३ से ८वां गु.दा.या ल.९ दि.१।३० से ८वां शुक्रदान सौर सिंह में ग्राह्य है।

ति.१३ शुक्र (५।९।२५) श्रवण गृहारंभ (ल.८ दि.११।१० से ८वां गु.दा.या ल.९ दि. १।२७ से ८वां शु.दा.) सौर सिंह में ग्राह्य है।

कार्तिक कृष्ण

ति.९ बुध (१५।१०।२५) पुष्य में जीर्णादिगृह प्रवेश (१०मी) ल.१२ सा.४।२५ से।

मार्गशीर्ष शुक्ल

ति.७ गुरु (२७।११।२५) धनिष्ठा गृहारंभ (ल.११ दि.१२।४ से लग्न का रा.दा.या ल.२ दि.४।४० से या ल.३ सा.६।३६ से) जीर्णादिगृह-प्रवेश (ल.९ प्रा.८।११ से या ल.११ दि.१२।४ से ४र्थ रा.दा. या ल. १२ दि.१।३५ से ८वां बुध दान या ल.३ रा.६।३६ से)।

ति.९ शनि (२९।११।२५) उ.भा.जीर्णा.गृहप्र. (१०मी) (च.शु.)।

ति.१४ गुरु (४।१२।२५) रिक्तावाद सा.६।३० से रोहिणी में गृहारंभ (ल.३ सा.६।३० से)।

फाल्गुन कृष्ण

ति.५ शुक्र (६।२।२६) गृहप्रवेश (ल.१२ दि.९।२३ से)।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा गृहारंभ (ल.२ दि.१०।१३ से)।

ति.१२ शनि (२८।२।२६) पुष्य गृहारंभ (ल.२ दि.१०।६से या ल.३ दि.१२।२ से)। गृहप्रवेश (ल.२ दि.१०।६से ४र्थ के.दा. या ल.३ दि.१२।२ से)।

चैत्र कृष्ण

ति. २ गुरु (५।३।२६) हस्त में गृहारंभ (ल.२ दि.९।४७ से या ल.३ दि.११।४३ से)।

भूमि क्रय-विक्रय मुहूर्त

चैत्र शुक्ल

ति.६ गुरु (३।४।२५) दि.११।५८ से मृगशिरा।

वैशाख शुक्ल

ति.४ गुरु (१।५।२५) दि.३।५७ से मृगशिरा।

आषाढ़ कृष्ण

ति.१ गुरु (१२।६।२५) मूल में।

आषाढ़ शुक्ल

ति.१५ गुरु (१०।७।२५) दि.१।२७ से पू.षा.।

भाद्रपद शुक्ल

ति.६ शुक्र (२९।८।२५) दि.१०।४५ से विशाखा।

आश्विन शुक्ल

ति.४ शुक्र (२६।९।२५) प्रा.६।४० से विशाखा।

कार्तिक कृष्ण

ति.१० गुरु (१६।१०।२५) दि.१।४६ तक श्लेषा।

ति.११ शुक्र (१७।१०।२५) सा.४।४६ तक मघा।

पौष कृष्ण

ति.१ शुक्र (५।१२।२५) दि.१।२३ से मृगशिरा।

फाल्गुन कृष्ण

ति.११ शुक्र (१३।२।२६) मूल।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा।

ति.११ शुक्र (२७।२।२६) दि.१०।२५ से दि.११।१ तक पुनर्वसु।

चैत्र कृष्ण

ति.१० शुक्र (१३।३।२६) दि.८।५४ से सा.५।० तक पू.षा.।

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती (ल.३ दि. ९।१५ से)।

वैशाख शुक्ल

ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त (ल.३ दि. ७।४१ से दि.९।५५ तक)।

फाल्गुन कृष्ण

ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त (ल.२ दि.११।३१ से)।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा (ल.२ दि.१०।१३ से)।

ति.१२ शनि (२८।२।२६) पुष्य (ल.२ दि. १०।६ से या ल.३ दि.१२।२ से)।

ति.१३ रवि (१।३।२६) पुष्य (ल.३ दि.१०।२३से)।

चैत्र कृष्ण

ति.२ गुरु (५।३।२६) हस्त ल.२ दि.९।४७ से या ल.३ दि.३ दि.११।४३ से।

ति. ५ रवि (८।३।२६) स्वाती (ल.२ दि.९।३५ से या ल.३ दि.११।३१ से)।

नलकूप-कूप (बोरिंग) मुहूर्त

चैत्र शुक्ल

ति.२ मंगल (३१।३।२५) सा.४।३२ से अश्विनी।

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) में प्रा.६।२० से।

ति.१० बुध (२३।४।२५) दि.११।३३ से शतभिषा।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.२ बुध (१४।५।२५) अनुराधा।

आषाढ़ शुक्ल

ति. ७ बुध (२।७।२५) दि.१।१२ तक उ.फा.।

कार्तिक कृष्ण

ति.९ बुध (१५।१०।२५) दि.२।४४ से पुष्य।

कार्तिक शुक्ल

ति.१० शुक्र (३१।१०।२५) धनिष्ठा।

मार्गशीर्ष शुक्ल

ति.७ गुरु (२७।११।२५) रा.७।२४ तक धनिष्टा।

पौष शुक्ल

ति.२ सोम (२२।१२।२६) उ.षा.।

फाल्गुन शुक्ल

ति.१० गुरु (२६।१२।२६) मृगशिरा।

चैत्र कृष्ण

ति.२ गुरु (५।३।२६) उ.फा.।

ति.१० शुक्र (१३।३।२६) पू.षा.।

हलप्रवहण/बीजोप्ति मुहूर्त

वैशाख कृष्ण

ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती बीजोप्ति।

ति.९ मंगल (२२।४।२५) श्रवण हल. (१०मी)

ति.१० बुध (२३।४।२५) शत. हलप्रवहण।

ति.११ गुरु (२४।४।२५) शत. हलप्रवहण।

ति.१२ शुक्र (२५।४।२५) उ.भा. हलप्रवहण।

वैशाख शुक्ल

ति.४ गुरु (१।५।२५) मृगशिरा हलप्रवहण।

ति.५ शुक्र (२।५।२५) आर्द्रा हलप्रवहण।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.२ बुध (१४।५।२५) अनु. बीजोप्ति।

ति.५ शनि (१७।५।२५) उ.षा. बीजोप्ति।

ति.७ सोम (१९।५।२५) धनिष्ठा हल./बीजो.।

ति.११शुक्र (२३।५।२५) उ.भा.हलप्रवहण।

ति.१२ शनि (२४।५।२५) अश्विनी हल प्रवहण।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.११ शुक्र (६।६।२५) चित्रा हलप्रवहण।

माघ कृष्ण

ति.४ बुध (७।१।२६) मघा बीजोप्ति (५मी)।

ति.७ शनि (१०।१।२६) हस्त बीजो.।

ति.१० मंगल (१३।१।२६) विशाखा हलप्र.।

ति.११ बुध (१४।१।२६) अनु. हलप्र.।

माघ शुक्ल

ति.५ शुक्र (२३।१।२६) उ.भा.हलप्र.

ति.१० बुध (२८।१।२६) रोहिणी हल./बीजो.।

ति.१५ रवि (१।२।२६) पुष्य बीजोप्ति

फाल्गुन कृष्ण

ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त बीजोप्ति।

ति.१० गुरु (१२।२।२६) मूल हल प्रवहण।

ति.११ शुक्र (१२।२।२६) मूल हल.।

फाल्गुन शुक्ल

ति.७ मंगल (२४।२।२६) रोहिणी हलप्रवहण।

ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृग. हलप्रवहण।

ति.११ शुक्र (२७।२।२६) पुर्न. हल.।

चैत्र कृष्ण

ति.२ गुरु (५।३।२६) उ.फा.हल./बीजो.।

ति.१२ सोम (१६।३।२६) धनिष्ठा हल.

विपणि (दुकान प्रारंभ)/व्यापार मुहूर्त

चैत्र शुक्ल

ति.२ सोम (३१।३।२५) अश्वि.विपणि/व्यापार।

ति.४ बुध (२।४।२५) रोहि.विपणि (५मी)।

ति.६ गुरु (३।४।२५) रोहिणी विपणि। दि.११।५८ से मृग. विपणि/व्यापार।

ति.७ शुक्र (४।४।२५) मृग. विपणि/व्यापार।

ति.१० सोम (७।४।२५) पुष्य विपणि/व्यापार।

वैशाख कृष्ण

ति. १ सोम (१४।४।२५) स्वाती विपणि/व्यापार।

ति.१२ शुक्र (२५।४।२५) उ.भा.विपणि।

वैशाख शुक्ल

ति.३ बुध (३०।४।२५) रोहिणी विपणि।

ति.४ गुरु (१।५।२५) मृग.विपणि/व्यापार (५मी)।

ति. १२ शुक्र (९।५।२५) हस्त विपणि/व्यापार।

ज्येष्ठ कृष्ण

ति.२ बुध (१४।५।२५) अनुराधा विपणि।

ति.३ गुरु (१५।५।२५) मूल विपणि।

ति.११ शुक्र (२३।५।२५) उ.भा. विपणि।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.१० गुरु (५।६।२५) हस्त विपणि/व्यापार।

ज्येष्ठ शुक्ल

ति.११ शुक्र (६।६।२५) चित्रा विपणि/व्यापार।

ति.१२ रवि (७।६।२५) स्वाती विपणि।

आषाढ़ कृष्ण

ति.१ गुरु (१२।६।२५) मूल विपणि।

ति.८ गुरु (१९।६।२५) उ.भा.विपणि।

आषाढ़ शुक्ल

ति.७ बुध (२।७।२५) उ.फा.विपणि।

ति.८ गुरु (३।७।२५) हस्त विपणि व्यापार।

ति.१२ सोम (७।७।२५) अनु.विपणि/व्यापार।

श्रावण कृष्ण

ति.११ सोम (२१।७।२५) रोहि.विपणि।

श्रावण शुक्ल

ति.८ शुक्र (१।८।२५) स्वाती विपणि/व्यापार।

ति.१२ बुध (६।८।२५) मूल विपणि।

भाद्रपद कृष्ण

ति.१० सोम (१८।८।२५) मृग. विपणि/व्यापार।

भाद्रपद शुक्ल

ति.६ शुक्र (२९।८।२५) स्वाती विपणि/व्यापार।

आश्विन कृष्ण

ति.३ बुध (१०।९।२५) रेवती विपणि।

ति.७ रवि (१४।९।२५) रोहिणी विपणि।

ति.८ सोम (१५।९।२५) मृग विपणि व्यापार।

ति.१२ गुरु (१८।९।२५) पुष्य विपणि व्यापार

आश्विन शुक्ल

ति.५ शनि (२७।९।२५) अनु. विपणि।

ति.७ सोम (२९।९।२५) मूल विपणि व्यापार।

कार्तिक कृष्ण
ति.१ बुध (८।१०।२५) अश्वि.विपणि।
ति.३ गुरु (९।१०।२५) भरणी विपणि व्यापार।
ति.६ रवि (१२।१०।२५) मृग विपणि।
कार्तिक शुक्ल
ति.५ रवि (२६।१०।२५) ज्येष्ठा विपणि।
ति.६ सोम (२७।१०।२५) मूल विपणि।
ति.१२ रवि (२।११।२५) उ.भा.विपणि।
ति.१३ सोम (३।११।२५) उ.भा.विपणि।
मार्गशीर्ष कृष्ण
ति. २ शुक्र (७।११।२५) रोहिणी विपणि।
ति.१२ रवि (१६।११।२५) हस्त विपणि।
मार्गशीर्ष शुक्ल
ति.३ रवि (२३।११।२५) मूल विपणि।
ति.१० रवि (३०।११।२५) उ.भा.विपणि।
पौष कृष्ण
ति.१ शुक्र (५।१२।२५) रोहिणी विपणि।
ति.८ शुक्र (१२।१२।२५) उ.फा.विपणि।
ति.१० रवि (१४।१२।२५) हस्त विपणि/व्यापार।
पौष शुक्ल
ति. ८ रवि (२८।१२।२५) रेवती विपणि।
ति.१३ गुरु (१।१।२६) रोहिणी विपणि/व्यापार।
माघ कृष्ण
ति. २ सोम (५।१।२६) पुष्य विपणि/व्यापार।
ति.६ शुक्र (९।१।२६) उ.भा.विपणि।
ति.११ बुध (१४।१।२६) अनु. विपणि।
माघ शुक्ल
ति.५ शुक्र (२३।१।२६) उ.भा. विपणि।
ति.७ रवि (२५।१।२६) रेवती विपणि।
ति.१० बुध (२८।१।२६) रोहिणी विपणि।
ति.१३ रवि (३१।१।२६) पुष्य विपणि।
फाल्गुन कृष्ण
ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त विपणि/व्यापार।
ति.११ शुक्र (१३।२।२६) मूल विपणि/व्यापार।
फाल्गुन शुक्ल
ति.१० गुरु (२६।६।२७) मृग विपणि।
ति.१३ रवि (१।३।२६) पुष्य विपणि।
चैत्र कृष्ण
ति.१ बुध (४।३।२६) उ.फा. विपणि।
ति.२ गुरु (५।३।२६) उ.फा. विपणि। प्रा.७।५२ से हस्त विपणि।
ति.५ रवि (८।३।२६) स्वाती विपणि।

मुकदमा दायर करना मुहूर्त

चैत्र शुक्ल
ति. ३ मंगल (१।४।२५) दिन २:५५ से
ति. ४ बुध (२।४।२५) दिन १:२१ तक।
ति. ६ गुरु (३।४।२५) दिन ११:५८ से
ति. ७ शुक्र (४।४।२५) दिन १०:५२ तक।
ति. ९ रवि (६।४।२५) दिन ९:४२ से
ति. १० सोम (७।४।२५) समस्त दिन।
ति. ११ मंगल (८।४।२५) दिन १०:१८ तक।
ति. १२ बुध (९।४।२५) दिन २:५५ से
ति. १३ गुरु (१०।४।२५) दिन १२:५४ से
ति. १४ शुक्र (११।४।२५) दिन २:५३ तक।
वैशाख कृष्ण
ति. ५ शुक्र (१८।४।२५) समस्त दिन
ति. ६ शनि (१९।४।२५) प्रातः६:५० से
ति. ७ रवि (२०।४।२५) प्रातः७:२६ तक।
वैशाख शुक्ल
ति. ३ बुध (३०।४।२५) रात ८:२ से
ति. ४ गुरु (१।५।२५) सायं ६:५० तक।
ति. ५ शुक्र (२।५।२५) सायं ६:१ से
ति. ६ शनि (३।५।२५) सायं ५:३२ तक।
ति. ८ सोम ५।५।२५) सायं ५:५५ से
ति. ९ मंगल (६।५।२५) समस्त दिन
ति. १० बुध (७।५।२५) रात ८:१९ तक।
ति. १२ शुक्र (९।५।२५) रात १२:२८ से
ति. १३ शनि (१०।५।२५) रात २:५९ तक।
ज्येष्ठ कृष्ण
ति. ४ शुक्र (१६।५।२५) दिन २:३ तक।
ति. ६ रवि (१८।५।२५) दिन ३:४० से
ति. ७ सोम (१९।५।२५) दिन ३:४४ तक।
ज्येष्ठ शुक्ल
ति. ३ गुरु (२९।५।२५) रात २:४ से
ति. ४ शुक्र (३०।५।२५) रात १:२९ तक।
ति. ५ शनि (३१।५।२५) रात १:२० से
ति. ६ रवि (१।६।२५) रात १:४१ तक।
ति. ८ मंगल (३।६।२५) रात ३:५३ से
ति. ९ बुध (४।६।२५) समस्त दिन।
ति. १० गुरु (५।६।२५) समस्त दिन।
ति. ११ शुक्र (६।६।२५) प्रातः ७:५३ तक।
ति. १३ सोम (९।६।२५) दिन ३:३३ तक।
ति. १४ मंगल (१०।६।२५) सायं ५:५८ तक।
आषाढ़ कृष्ण
ति. ५ सोम (१६।६।२५) रात ११:२३ से
ति. ६ मंगल (१७।६।२५) रात १०:४१ तक।
ति. ३० बुध (२५।६।२५) दिन ११:६ से
आषाढ़ शुक्ल
ति. ३ शनि (२८।६।२५) दिन ९:१२ से
ति. ४ रवि (२९।६।२५) दिन ९:२७ तक।
ति. ५ सोम (३०।६।२५) दिन १०:९ से
ति. ६ मंगल (१।७।२५) दिन ११:२४ तक।
ति. ८ गुरु (३।७।२५) दिन ३:१३ से
ति. ९ शुक्र (४।७।२५) समस्त दिन।
ति. १० शनि (५।७।२५) रात ८:१४ तक।
ति. १३ मंगल (८।७।२५) रात ३:२८ से
ति. १४ बुध (९।७।२५) रा.शे.५:११ तक।
श्रावण कृष्ण
ति. ६ बुध (१६।७।२५) रा.शे.४:३२ से
श्रावण शुक्ल
ति. ३ रवि (२७।७।२५) सायं ५:५१ से
ति. ४ सोम (२८।७।२५) सायं ६:५८ तक।
ति. ५ मंगल (२९।७।२५) रात ८:३४ से
ति. ६ बुध (३०।७।२५) रात १०:३६ तक।
ति. ८ शुक्र (१।८।२५) रात ३:३१ से
ति. ८ शनि (२।८।२५) समस्त दिन।
ति. ९ रवि (३।८।२५) प्रातः६:१० तक।
पुनः सायं ५:३४ से
ति. १० सोम (४।८।२५) समस्त दिन।
ति. ११ मंगल (५।८।२५) दिन १०:५३ तक।
ति. १३ गुरु (७।८।२५) दिन २:९ से
ति. १४ शुक्र (८।८।२५) दिन ३:२ तक।
भाद्रपद कृष्ण
ति. ५ गुरु (१४।८।२५) दिन ११:२० से
ति. ७ शुक्र (१५।८।२५) दिन ९:४३ तक।
भाद्रपद शुक्ल
ति. २ सोम (२५।८।२५) रात ४:० से
ति. ३ मंगल (२६।८।२५) समस्त दिन।
ति. ४ बुध (२७।८।२५) प्रातः ५:५६ तक।
ति. ५ गुरु (२८।८।२५) दिन ८:१३ से
ति. ६ शुक्र (२९।८।२५) दिन १०:४५ तक।
ति. ८ रवि (३१।८।२५) समस्त दिन।
ति. ९ सोम (१।९।२५) सायं ६:१३ से
ति. १० मंगल (२।९।२५) समस्त दिन।
ति. ११ बुध (३।९।२५) रात ९:४१ तक।
ति. १३ शुक्र (५।९।२५) रात ११:१२ से
ति. १४ शनि (६।९।२५) रात ११:१३ तक।
आश्विन कृष्ण
ति. ५ शुक्र (१२।९।२५) दिन ४:१५ से
ति. ६ शनि (१३।९।२५) दिन २:३४ तक।
आश्विन शुक्ल
ति. ३ बुध (२४।९।२५) दिन ३:२२ से
ति. ४ गुरु (२५।९।२५) सायं ५:५१ तक।
ति. ४ शुक्र (२६।९।२५) रात ८:२८ से
ति. ५ शनि (२७।९।२५) समस्त दिन।
ति. ६ रवि (२८।९।२५) रात १:२४ तक।
ति. ८ मंगल (३०।९।२५) रा.शे. ५:५ से
ति. ९ बुध (१।१०।२५) समस्त दिन।
ति. १० गुरु (२।१०।२५) समस्त दिन।
ति. ११ शुक्र (३।१०।२५) प्रातः ६:५३ तक।
ति. १३ रवि (५।१०।२५) प्रातः ६:४३ से रा.शे. ५:५९ तक।
कार्तिक कृष्ण
ति. ५ शनि (११।१०।२५) रात ९:९ से
ति. ६ रवि (१२।१०।२५) रात ७:४० तक।
कार्तिक शुक्ल
ति. २ गुरु (२३।१०।२५) रात ३:३८ से
ति. ३ शुक्र (२४।६।२५) समस्त दिन।
ति. ४ शनि (२५।१०।२५) समस्त दिन।
ति. ५ रवि (२६।१०।२५) दिन ८:४१ तक।
ति. ६ सोम (२७।१०।२५) दिन १०:४९ से
ति. ७ मंगल (२८।१०।२५) दिन १२:३२ तक।
ति. ९ गुरु (३०।१०।२५) दिन २:३४ से
ति. १० शुक्र (३१।१०।२५) समस्त दिन।
ति. ११ शनि (१।११।२५) दिन २:३७ तक।
ति. १३ सोम (३।११।२५) दिन १:१ से
ति. १४ मंगल (१४।११।२५) दिन ११:४५ तक।
मार्गशीर्ष कृष्ण
ति. ५ सोम (१०।११।२५) रात १:२१ से
ति. ७ मंगल (११।११।२५) रात १२:३७ तक।
मार्गशीर्ष शुक्ल
ति. ३ रवि (२३।११।२५) सायं ६:१ से
ति. ४ सोम (२४।११।२५) रात ७:५१ तक।
ति. ५ मंगल (२५।११।२५) रात ९:१५ से
ति. ६ बुध (२६।११।२५) रात १०:७ तक।
ति. ८ शुक्र (२८।११।२५) रात १०:२२ से
ति. ९ शनि (२९।११।२५) समस्त दिन
ति. १० रवि (३०।११।२५) रात ८:५७ तक।
ति. १२ मंगल (२।१२।२५) सायं ६:१८ से
ति. १३ बुध (३।१२।२५) सायं ४:४१ तक।
पौष कृष्ण
ति. ६ बुध (१०।१२।२५) प्रातः ७:५८ से।
ति. ७ गुरु (११।१२।२५) प्रातः ७:५८ तक।
पौष शुक्ल
ति. २ सोम (२२।१२।२५) रात ४:३६ से
ति. ३ मंगल (२३।१२।२५) रात ५:३७ तक।
ति. ४ बुध (२४।१२।२५) रा.शे. ६:५ से
ति. ५ गुरु (२५।१२।२५) रा.शे. ६:७ तक।
ति. ७ शनि (२७।१२।२५) रा.शे.४:५२।
ति. १० सोम (२९।१२।२५) समस्त दिन।
ति. ११ मंगल (३०।१२।२५) १२:४६ तक।
माघ कृष्ण
ति.७ शनि (१०।१।२६) दि.११:५ तक।
ति.९ सोम (१२।१।२६) दि.१:५४ तक।
माघ शुक्ल
ति.१ सोम (१९।१।२६) दि.१२:० तक।
ति.१० बुध (२८।१।२६) दि.२:० से।
ति.१३ शनि (३१।१।२६) प्रा.७:१४ तक।
फाल्गुन कृष्ण
ति.१ सोम (२।२।२६) रा.११:३१ तक।
फाल्गुन शुक्ल
ति.४ शनि (२१।२।२६) दि.१:३० से।
ति.६ सोम (२३।२।२६) दि.९:२६ से।
ति.१२ शनि (२८।१।२६) दि.९:६ तक।
चैत्र कृष्ण
ति.२ गुरु (५।३।२६) प्रा.७:५७ से।
ति.११ शनि (१४।३।२६) रा.२:४० तक।
ति.१२ सोम (१६।३।२६) प्रा.७:४० से।

प्रतिवादी मुहूर्त

चैत्र शुक्ल
ति.३ मंगल (१।४।२५) दि.२:५५ से।
ज्येष्ठ शुक्ल
ति.८ मंगल (३।६।२५) रा.१२:३७ तक।
आषाढ़ कृष्ण
ति.१४ मंगल (२४।६।२५) दि.१२:२३ से।
श्रावण कृष्ण
ति.१२ मंगल (२२।७।२५) प्रा.५:४८ तक।
भाद्रपद कृष्ण
ति.३ मंगल (१२।८।२५) दि.९:५१ से।
आश्विन शुक्ल
ति.८ मंगल (३०।९।२५) दि.१:४४ तक।
कार्तिक कृष्ण
ति.४ शुक्र (१०।१०।२५) रा.१०:४६ तक।
ति.११ शुक्र (१७।१०।२५) सा.४:४६ से।
कार्तिक शुक्ल
ति.१४ मंगल (४।११।२५) दि.११:४५ तक।
मार्गशीर्ष शुक्ल
ति.१२ मंगल (२।१२।२५) दि.१२:१६ तक।
पौष कृष्ण
ति.१२ मंगल (१६।१२।२५) दि.३:९ से।
पौष शुक्ल
ति.३ मंगल (२३।१२।२५) दि.१०:३३ से।
ति.११ मंगल (३०।१२।२५) रा.१२:४६ तक।
ति.१४ शुक्र (२।१।२६) प्रा.६:१२ तक।
फाल्गुल कृष्ण
ति.११ शुक्र (१३।२।२६) दि.३:३२ से।
चैत्र कृष्ण
ति.३ शुक्र (६।३।२६) सा.५:१५ से।

सर्वकार्य सिद्धि मुहूर्त

चैत्र शुक्ल
ति.१ रवि (३०।३।२५) दि.६:१७ से।
ति.४ बुध (२।४।२५) प्रा.७:६ से दि.१:२१ तक।
ति.९ रवि (६।४।२५) दि.९:४२ से।
ति.१० सोम (७।४।२५) दि.१०:४६ तक।
वैशाख कृष्ण
ति.७ रवि (२०।४।२५) प्रा. ७:२६ से।
ति.८ सोम (२१।४।२५) प्रा.७:५२ से।
ति.३० रवि (२७।४।२५) रा.१२:४२ तक।
वैशाख शुक्ल
ति.३ बुध (३०।४।२५) रात ८:२ तक।
ति.५ शुक्र (२।५।२५) सा.६:१ से।
ति.७ रवि (४।५।२५) दि. १२:९ तक।
ज्येष्ठ कृष्ण
ति.२ बुध (१४।५।२५) दि.१०:३० तक।
ति.६ रवि (१८।५।२५) दि.३:४० तक।
ति.७ सोम (१९।५।२५) दि.१:४५ से दि.३:४४ तक।
ति.११ शुक्र (२३।५।२५) दि.१२:६ से
ति.१३ रवि (२५।५।२५) दि.८:५५ तक।
ज्येष्ठ शुक्ल
ति.१ बुध (२८।५।२५) रा.२:५७ तक।
ति.१२ शनि (७।६।२५) दि.१०:२१ से
ति.१३ सोम (९।६।२५) दि.३:३३ से।
आषाढ़ कृष्ण
ति.३ शनि (१४।६।२५) दि.२:२६ से।
ति.१३ सोम (२३।६।२५) दि.१।५३ से।
ति.३० बुध (२५।६।२५) दि.११:६ तक।
आषाढ़ शुक्ल
ति.१ गुरु (२६।६।२५) दि.१०:७ से।
ति.२ शुक्र (२७।६।२५) दि. ९:२७ तक।
ति.७ बुध (२।७।२५) दि.१:५ से।
ति.१० शनि (५।७।२५) रात ८:१४ तक।
श्रावण कृष्ण
ति.२ रवि (१२।७।२५) प्रा.७:११ से।
ति.७ गुरु (१७।७।२५) रात ३:४ तक।
ति.८ शुक्र (१८।७।२५) रा.१:२७ तक।
श्रावण शुक्ल
ति.१० सोम (४।८।२५) दि.८:३९ तक।
ति.१४ शुक्र (८।८।२५) दि.३:२ से।
भाद्रपद कृष्ण
ति.५ गुरु (१४।८।२५) दि.११:२० तक।
ति.७ शुक्र (१५।८।२५) दि.९:४३ तक।
ति.१० सोम (१८।८।२५) सा.५:५० से।
भाद्रपद शुक्ल
ति.१३ शुक्र (५।९।२५) रा.११:१२ तक।
आश्विन कृष्ण
ति.४ गुरु (११।९।२५) सा.५:५४ तक।
ति.३० रवि (२१।९।२५) दि.९:५६ से।
आश्विन शुक्ल
ति.७ सोम (२९।९।२५) दि.१:४४ तक।
ति.११ शुक्र (३।१०।२५) प्रा.६:५३ से।
कार्तिक कृष्ण
ति.४ शुक्र (१०।१०।२५) रात १०:४६ तक।
ति.५ शनि (११।१०।२५) रा.९:९ तक।
ति.११ शुक्र (१७।१०।२५) सा.४:४६ से।
ति.१३ रवि (१९।१०।२५) रात ६:४६ से।
कार्तिक शुक्ल
ति.१२ रवि (२।११।२५) दि.१:५८ से।
मार्गशीर्ष कृष्ण
ति. २ शुक्र (७।११।२५) प्रा.६:५७ से।
ति.३० गुरु (२०।११।२५) दि.१०:४२ से।
मार्गशीर्ष शुक्ल
ति.१ शुक्र (२१।११।२५) दि.१:१९ तक।
ति.३ रवि (२३।११।२५) रा.६:१ तक।
ति.१० रवि (३०।११।२५) रा.८:५ तक।
ति.१३ बुध (३।१२।२५) सा.४:४१ तक।
पौष कृष्ण
ति.५ मंगल (९।१२।२५) दि.९:१४ से।
ति.८ शुक्र (१२।१२।२५) दि.८:२६ तक।
ति.१० रवि (१४।१२।२५) दि.१०:५६ तक।
ति.१३ बुध (१७।१२।२५) सा.५:४१ से।
पौष शुक्ल
ति.१२ बुध (३१।१२।२५) रा.११:७ तक।
ति.१४ शुक्र (२।१।२६) प्रा.६:१२ तक।
माघ कृष्ण
ति.१ रवि (४।१।२६) सा.५:४५ तक।
ति.११ बुध (१४।१।२६) रा.३:२७ तक।
ति.३० रवि (१८।१।२६) दि.१०:२४ से।
माघ शुक्ल
ति.१ सोम (१९।१।२६) दि.१२:० से
ति.१५ रवि (१।२।२६) रा.१२:१० तक।
फाल्गुन कृष्ण
ति.११ शुक्र (१३।२।२६) दि.३:३२ से।
ति.१३ रवि (१५।२।२६) रा.७:२१ तक।
फाल्गुन शुक्ल
ति.५ रवि (२२।२।२६) सा.६:२३ तक।
चैत्र कृष्ण
ति.३ शुक्र (६।३।२६) सा.५:१५ से।
ति.४ शनि (७।३।२६) दि.१०:४० से।
ति.६ सोम (९।३।२६) दि.३:७ से।

गर्भाधान मुहूर्त

(कृत्रिम गर्भाधान IVF हेतु प्रशस्त)

चैत्र शुक्ल
ति. २ सोम (३१।३।२५) भरणी।
ति.४ बुध (२।४।२५) रोहिणी।
ति.७ शुक्र (४।४।२५) मृगशिरा।
ति.१० सोम (७।४।२५) पुष्य दि.९।४६ तक।
वैशाख कृष्ण
ति.१ सोम (१४।४।२५) स्वाती।
ति.१० बुध (२३।४।२५) शतभिषा।
ति.११ गुरु (२४।४।२५) शतभिषा।
वैशाख शुक्ल
ति.३ बुध ३०।४।२५) रोहिणी।
ति.४ गुरु (१।५।२५) मृगशिरा।
ति.१२ शुक्र (९।५।२५) हस्त।
ज्येष्ठ कृष्ण
ति. २ बुध (२३।५।२५) अनुराधा।
ति.७ सोम (१९।५।२५) धनिष्ठा शतभिषा।
आषाढ़ कृष्ण
ति.५ सोम (१६।६।२५) धनिष्ठा।
आषाढ़ शुक्ल
ति.७ बुध (२।७।२५) उ.फा.।
ति.१२ सोम (७।७।२५) अनुराधा।
श्रावण कृष्ण
ति.११ सोम(२१।७।२५) रोहिणी।
भाद्रपद कृष्ण
ति.२ सोम (११।८।२५) शतभिषा।
ति.१० सोम (१८।८।२५) मृगशिरा।
ति.१२ बुध (२०।८।२५) पुनर्वसु।
भाद्रपद शुक्ल
ति.५ गुरु (२८।८।२५) स्वाती।
ति.१२ शुक्र (४।९।२५) श्रवण।
आश्विन कृष्ण
ति.११ बुध (१७।९।२५) पुनर्वसु।
ति.१२ गुरु (१८।९।२५) पुष्य।
आश्विन शुक्ल
ति.११ शुक्र (३।१०।२५) श्रवण।
कार्तिक कृष्ण
ति.९ बुध (१५।१०।२५) पुष्य।
कार्तिक शुक्ल
ति.१० शुक्र (३१।१०।२५) धनिष्ठा।
मार्गशीर्ष कृष्ण
ति. २ शुक्र (७।११।२५) रोहिणी।
माघ कृष्ण
ति. २ सोम (५।१।२६) पुष्य।
ति.५ गुरु (८।१।२६) उ.फा.।
ति.११ बुध (१३।१।२६) अनुराधा।
माघ शुक्ल
ति.१० बुध (२८।१।२६) रोहिणी।
फाल्गुन कृष्ण
ति.५ शुक्र (६।२।२६) हस्त।
फाल्गुन शुक्ल
ति.१० गुरु (२६।२।२६) मृगशिरा।
ति.११ शुक्र (२७।२।२६) मृगशिरा।
चैत्र कृष्ण
ति. २ गुरु (५।३।२६) उ.फा.।

चैत्रादिपक्ष विचार का शेषांश

☛(पृष्ठ १५ चैत्र शुक्ल पक्ष का शेषांश) में रामचरित मानस की रचना आरम्भ की थी, अत: **मानस जयन्ती** भी आज मनाई जाती है। जो संपूर्ण नवरात्र उपवास न कर सके वह **सप्तमी, अष्टमी** (सम्पूर्ण नवरात्र में प्रमुख व्रत) तथा नवमी तिथियों को उपवास करे तो उसकी समस्त कामना सिद्ध होती है। समस्त **नवमी** तिथि में हवन करें। **नवरात्र में अशौच विचार**–यदि नवरात्र में अशौच पड़ जाय तो ब्राह्मण के द्वारा ही पूजा कार्य करायें तथा अशौच की समाप्ति के पश्चात् ही ब्राह्मण को भोजनादि करायें। आज **अष्टमी व्रत का पारण** होगा। **७ अप्रैल को** नौ दिन **नवरात्र व्रत का दशमी में पारण** होगा। **८ अप्रैल** को **कामदा एकादशी व्रत सबका है। १० अप्रैल** को सर्व कामनापूर्ति हेतु **प्रदोषव्रत** किया जायेगा। जैन धर्मावलम्बी जनो का महत्त्वपूर्ण एवं परम पवित्र पर्व **श्रीअनङ्गत्रयोदशी** तथा **महावीर जयंती** मनाई जायेगी। **११ अप्रैल** को आज प्रदोषकाल में चतुर्दशी में **शिव** तथा **नृसिंह भगवान् का दमनक** से पूजन किया जायेगा। **१२ अप्रैल को स्नान दान व्रत की चैत्रपूर्णिमा** होगी। आज मन्वादि है। **शनिवार युक्त पूर्णिमा** में **स्नान-श्राद्ध** से अश्वमेध समान फल प्राप्ति होती है। आज दाक्षिणात्यमत से **हनुमान् जयंती** मनाई जायेगी। इस दिन हनुमानजी की प्रतिमा का सविधि षोडशोपचार पूजा करनी चाहिये। इस दिन रामायण या सुन्दरकाण्ड अथवा हनुमान चालीसा के अखण्ड पाठ का आयोजन करें।

☛(पृष्ठ १६ वैशाख कृष्ण पक्ष का शेषांश) एक बार भोजन करना चाहिए। ऐसा इकतीस दिन तक करने से अनेक प्रकार के रोग व दोष दूर होते हैं तथा प्रभाव व पुण्य की वृद्धि होती है। वैशाख मास के प्रारंभ से मास पर्यन्त पौसरा दान करें, असमर्थता में जलपूर्ण घट का दान करें। पीपल के मूल (जड़) में जलदान तथा तुलसीदल से विष्णुजी का पूजन करें। **१६ अप्रैल को संकष्टी गणेश चतुर्थी** का व्रत कर रात्रि ९:२७ के बाद चन्द्र को अर्घ्य दिया जायेगा। **२० अप्रैल** को रात्रि में शीतला माता का पूजनकर **२१ अप्रैल** को **शीतलाष्टमी व्रत बसिअउरा** होगा, आज बासी भोजन करना शास्त्र विहित है। **२४ अप्रैल को वरुथिनी एकादशी का व्रत** सबके लिये है। **२५ अप्रैल** को **दिन ७।५६** तक एकादशी का **पारण** करें। आज सर्व कामनापूर्ति हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२६ अप्रैल** को **मास शिवरात्रि व्रत** होगा। **२७ अप्रैल को स्नान-दान-श्राद्ध** की **अमावास्या** मनाई जायेगी। अशुभवार से भय होता है।

☛(पृष्ठ २४ भाद्रपद कृष्ण पक्ष का शेषांश) मनसापूजा (प्रधान दिन) होगा तथा आज मनसापूजा की समाप्ति हो जायेगी। **विशेष**—तिथि, नक्षत्र के समय भेद के अनुसार **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** व्रत मनाया जाता है। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि रोहिणी नक्षत्र से संयुक्त होने पर बालरूपी चतुर्भुज भगवान् श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे। यह तिथि समस्त पापों को हरण करने वाली होती है। **जन्माष्टमी व्रत का पारण**–स्मार्तजन तिथि के अन्त में या तिथि एवं नक्षत्र के अंत में व्रत का पारण करें। किन्तु द्वितीय दिन दो याम (प्रहर) से अधिक अष्टमी रहने पर भी प्रात:काल में स्मार्तजनों को जन्माष्टमी व्रत का पारण कर लेना चाहिये। **१९ अगस्त जया एकादशी व्रत सबका** होगा। यह एकादशी व्रत करने से मोक्ष प्राप्ति होती है। **२० अगस्त** को सर्वकामनार्थ **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **२१ अगस्त** को **मासशिवरात्रि व्रत** तथा प्रदोपकाल में **अघोर चतुर्दशी** मनाई जायेगी। **२२ अगस्त** को **श्राद्ध की अमावस्या** होगी। **२३ अगस्त** को **स्नानदान की अमावस्या** तथा **कुशोत्पाटिनी अमावस्या** भी मनाई जायेगी। **विशेष**—"ॐ हुं फट्" मंत्र द्वारा कुशाग्रहण कर शुद्ध करके बांध लें। वर्षपर्यन्त इसी कुशाकाल प्रयोग करें। अशुभवार से भय व कष्ट होता है।

☛(पृष्ठ २५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष का शेषांश) **५ सितम्बर** को सर्वकामानार्थ **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **६ सितम्बर** को **अनंत चतुर्दशी** व्रत नमक रहित भोजन करें। आज **गणपति विसर्जन** है। **७ सितम्बर** को **स्नान-दान-व्रत पूर्णिमा** मनाई जायेगी। अपराह्न पूर्णिमा तिथि में पार्वणविधि **नान्दी मातामह श्राद्ध** होगा। यह पूर्णिमा अमावस्या तुल्य मानी गयी है तथा इसमें त्रिपुरुषों का सपिण्डनश्राद्ध करना चाहिये। यह समृद्धिनान्दीश्राद्ध कहलाता है। पूर्वाह्न में **लोकपाल पूजा** करना चाहिए। आज भारत में **खग्रास चन्द्रग्रहण** दृश्य होगा।

☛(पृष्ठ २७ आश्विन शुक्ल पक्ष का शेषांश) नेत्र हेतु अंजन का अर्पण करें। **२६ सितंबर** को पंचमी में अङ्गराग तथा शक्तिनुसार आभूषण अर्पण करें। आज मध्याह्न पंचमी में **उपाङ्गललिता पूजा** महाराष्ट्र में होगी। **२७ सितंबर** आज प्रातःकाल **बेल वृक्ष को निमंत्रण** तथा **सायं षष्ठी तिथि** में बेल वृक्ष को साक्षात दुर्गा मान कर देवी को शयन से जगाने हेतु **मंत्रों** द्वारा **बोधन** करें। षष्ठी के दिन माँ का पंडाल में आगमन होता है। **२८ सितंबर** को **दुर्गाषष्ठी** व्रत किया जायेगा। **२९ सितंबर को दुर्गा सप्तमी** को पत्रिका प्रवेशन, पुस्तकादि का पूजन दशमी तक करें। आज से दुर्गा पण्डालों में देवी का आवाहन, स्थापन तथा पूजन का कार्य आरंभ हो जायेगा। दिन में **मूल** के प्रथम चरण में **सरस्वती का आवाहन** करें, आज **दि.१२।२६** से अष्टमी में **अन्नपूर्णा परिक्रमा** प्रारंभ होगी। **निशीथ अष्टमी** (रा.१२।२६ से रा.१२।१३ तक) में **महानिशा पूजा** तथा उससे संबंधित बलिदानादि कृत्य सम्पन्न होंगे। **३० सितंबर** को सूर्योदयकाल अष्टमी तिथि में **महाष्टमी व्रत** होगा। आज सायं छत्र चामर सहित देवी पूजन करें। कुमारी कन्या व बटुक तथा ब्राह्मणों का पूजन करें। दिन में पू.षा. नक्षत्र के प्रथम चरण में **सरस्वती पूजा** होगी। आज दि.१।४४ तक **अन्नपूर्णा परिक्रमा** होगी। आज सायं त्रिमुहूर्त प्राप्त अष्टमी युक्त नवमी में महानवमी व्रत तथा समस्त नवमी में हवन आदि कार्य होगा। अष्टमी में **लौहाभिसारिका** होगी। **विशेषः**-आज अष्टमी तथा नवमी दोनों का पूजन करें तथा नवमी का समस्त कृत्य भी आज होगा। आज अष्टमी युक्त नवमी की संधि में तन्त्रोक्त पूजा करें। **१ अक्टूबर** को **अष्टमी व्रत** का पारण, मध्याह्न पूर्व **नवमी में कन्यापूजन** तथा **नवरात्र व्रत का पारण**, नवमी युक्त दशमी में **अपराह्न में बलिदानादि** कार्य संपन्न होगा। समस्त नवमी में **हवनादि** का कार्य सम्पन्न करें। दशमी में **शावरोत्सव** (वनवासी नृत्य) तथा **दुर्गाविसर्जन** होगा। देवी का वाहन-गजवाहन, फल **सुवृष्टि** है। आज मुख्यकाल अपराह्न तथा गोधूलकाल प्रदोष (तारकोदय) में **विजयादशमी** (दशहरा) मनाया जायेगा। देवी को द्रव्य चिह्न प्रदान करें तथा प्रस्थान पूर्व अपराह्न में **अपराजिता पूजन** कर (दशमी का उल्लंघन न करें) ग्यारहवां मुहूर्त (विजय मुहूर्त) में नगर सीमा का लंघन, जयंती ग्रहण, संध्या नीलकण्ठ दर्शन तथा शमी पूजन करें। **२ अक्टूबर** उदयकाल में **दशमी** युक्त **श्रवण** नक्षत्र में राजाओं का पट्टाभिषेक योग्य **विजयदशमी** आज मनाई जायेगी। **३ अक्टूबर** सभी पापों का नाश करने वाली **पापांकुशा एकादशी व्रत सबका** मनाया जायेगा। आज काशी में नाटी इमली का विश्व प्रसिद्ध **भरत मिलाप** काशीराज की गौरवमयी उपस्थिति में मनाया जायेगा। **४ अक्टूबर** को सन्तान सुख हेतु **शनिप्रदोष** व्रत किया जायेगा। **६ अक्टूबर को व्रत की पूर्णिमा** है, आज संपूर्ण रात्रिव्यापिनि पूर्णिमा में **शरदपूर्णिमा** एवं **कोजागरी** मनाई जायेगी। आज खीर बनाकर रात्रि में चन्द्रमा की रोशनी में रातभर रखने के बाद प्रातःकाल ग्रहण करना चाहिए। **७ अक्टूबर** को **स्नान-दान की पूर्णिमा** है। आज संस्कृत रामायण के आदि कवि **महर्षि वाल्मीकि की जयंती** भी मनाई जायेगी।

☛(पृष्ठ २८ कार्तिक कृष्ण पक्ष का शेषांश) वंशपात्र (सूप) बजाकर दरिद्रता का नि:सारण किया जाता है। **२१ अक्टुबर** को **स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या** है। अशुभवार से भय व कष्ट होता है। **भौमवती अमावस्या** के दिन गंगा स्नान करने से सहस्र गोदान के समान फल प्राप्त होता है।

☛(पृष्ठ २९ कार्तिक शुक्ल पक्ष का शेषांश) **युधाष्टमी योग** है जो कि **सूर्यग्रहण समान** है। **३०अक्टूयर** को **अक्षय नवमी** में आज कुष्माण्ड में रत्नादि का दान, आँवला वृक्ष के मूल में भोजन करना चाहिए। नवमी में अयोध्या मथुरा की प्ररिक्रमा करें। आज से तीन दिनों तक विष्णुरात्रि प्रारंभ होगा। आज से तीन दिनों तक विष्णु की स्वर्णमयी प्रतिमा का पूजन तुलसीदल से करें। **१ नवम्बर** को **हरि (विष्णु) प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबका** होगा। भगवान् का प्रबोधन करें। **दिन ३।३० भद्रा पूर्व** ईख का रसपान करें। **२ नवम्बर विवाह नक्षत्र उ.भा.में तुलसी विवाह** भी सम्पन्न करना चाहिए। **विषेश-तुलसी विवाह** एकादशी से पूर्णिमा पर्यंत होता है। धर्मसिन्धुकार ने तुलसी विवाह हेतु विवाह नक्षत्र ग्राह्य किया है। आज चातुर्मास व्रत की समाप्ति हो जायेगी। **३ नवम्बर** को सन्तान सुख हेतु **सोमप्रदोष** व्रत किया जायेगा। निशीथ चतुर्दशी में **वैकुण्ठ चतुर्दशी** व्रत में उपवास कर **अरुणोदय** बेला में काशी के मणिकर्णिका कुण्ड का स्नान अत्यन्त पुण्य दायक माना गया है। स्नान कर श्रीविष्णुजी का पूजन करें। आज के दिन शिवजी विश्वनाथजी को तुलसी पत्र एवं विष्णुजी को विल्वपत्र चढ़ाया जाता है। यह हरिहर के एकाकार का दिन है। आज विष्णु व शिवजी का पूजन करना चहिए। **४ नवम्बर** को **श्रीकाशी विश्वनाथ का प्रतिष्ठा दिवस** मनाया जायेगा। अरुणोदय में महाविष्णु पूजन कर व्रत का पारण होगा। निशीथ में रासयात्रा होगी। **५ नवम्बर** को **स्नान-दान-व्रत की कार्तिक पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती** एवं **त्रिपुरोत्सव, काशी में देव दीपावली** महोत्सव मनाया जायेगा।

☛(पृष्ठ ३४ माघकृष्ण पक्ष का शेषांश) किन्तु **शुक्रास्त** से विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। आज **षट्तिला एकादशी व्रत सबका** है। आज तिलयुक्त जल द्वारा स्नान, उबटन, होम, जलग्रहण, भोजन तथा दान छः प्रकार से व्यवहार करें। **१६ जनवरी** को **प्रदोष व्रत** तथा **मासशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१७ जनवरी** को रात्रि चतुर्दशी में **रटन्तीकलिका पूजन** बङ्गाल में होगा तथा अरुणोदय में यम को तर्पण करें। **१८ जनवरी** को **स्नान-दान-श्राद्ध की मौनी अमावस्या** मनाई जायेगी। प्रयाग में माघ मास का मुख्य स्नान आज होगा। अशुभवार से दु:ख की वृद्धि होती है।

☛(पृष्ठ ३६ फाल्गुन कृष्ण पक्ष का शेषांश) काशी का कण-कण, कोना-कोना शिवभक्ति में लीन हो जाती है। शास्त्रों में कहा गया है कि आज के दिन शिवजी का विवाह माता पार्वती के साथ हुआ था। इस उपलक्ष्य में जगह-जगह शिवालयों से शिव-बारात निकलती है। **१६ फरवरी** को शिवरात्रि व्रत का पारण। **१७ फरवरी** को **स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या** मनाई जायेगी अशुभवार से भय व कष्ट होता है। **भौमवती अमावस्या** के दिन गंगा स्नान करने से सहस्र गोदान के समान फल प्राप्त होता है।

☛(पृष्ठ ३८ चैत्र कृष्ण पक्ष का शेषांश) जायेगी तथा दूसरे दिन सूर्योदय स्पर्श द्वादशी में पारण लाभ भी प्राप्त होगा। अत स्मार्त्त तथा वैष्णवों का पारण सूर्योदय स्पर्श द्वादशी में होगा। **१६ मार्च** को सन्तान लाभ हेतु **सोमप्रदोष व्रत** किया जायेगा। **प्रात:७।४० तक एकादशी का पारण** होगा। **१७ मार्च** को **मासशिवरात्रि व्रत** होगा। आज **प्रातः ७।५१** तक **त्रयोदशी तिथि व शतभिषा** योग से **वारुणी पर्व** है। इस योग में गंगा स्नान से करोड़ों सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। आज के दिन जो मनुष्य शिवसानिध्य में गंगास्नान करता है, उसे कभी प्रेतयोनि प्राप्त नहीं होती। आज काशी की परम्परा का महान् पर्व वृद्धं अंगारकर (वुढ़वा मंगल) मनाया जायेगा। यह काशी की सांस्कृतिक परिवेश प्रदर्शन का द्योतक पर्व है। **१८ मार्च** को **श्राद्ध की अमावस्या** होगी। **१९ मार्च** को **स्नान-दान की** अमावस्या है। शुभवार से सुख होगा। आज **१९ मार्च गुरुवार को प्रात:६।४०** से प्रतिपदा तिथि में **चान्द्रसंवत्सर वासन्तिक नवरात्र संवत् २०८३** का प्रारंभ होगा आज **'सिद्धार्थ'** नामक नव संवत्सर प्रारंभ हो रहा है। जिस वार में संवत्सर प्रारंभ होता है वही वर्ष का राजा होता है। इस वर्ष **गुरु राजा** है। नववर्ष के प्रथम दिन तेल, उबटन आदि लगाकर स्नान करके नया वस्त्र धारण कर घर के ऊपर ध्वजारोहण करें तथा विद्वान् ब्राह्मण से पंचांग का फल श्रवण कर पंचांग का दान करें। आज मिश्री, काली मिर्च एवं नीम के पत्तों का सेवन करना त्रिदोषघ्न व सर्वरोग निवारक है। कृषकगण प्रतिपदा में सूर्योदय पूर्व ग्राम की समतल भूमि पर पताका का विन्यास कर पूजन एवं प्रार्थना कर वायु के दिशानुसार नये वर्ष के मौसम का पूर्वानुमान लगाकर कृषिकार्य प्रतिपादित करें। चैत्र **शुक्ल प्रतिपदा** से प्रारंभ कर नवमी तक माँ जगदम्बा (दुर्गा) का **नवरात्र** नाम से प्रसिद्ध उपासना काल आरम्भ हो रहा है। आज से भगवती दुर्गा के नवरूपों के साथ ही नव गौरी का दर्शन-पूजन भी प्रतिदिन क्रमानुसार किया जाता है। कलश-स्थापन का कार्य प्रात:काल में करें। यह पूजा परम सिद्धिदायी है। जो संपूर्ण नवरात्र उपवास न कर सके वह सप्तमी,अष्टमी (सम्पूर्ण नवरात्र में प्रमुख व्रत) तथा नवमी तिथियों को उपवास करे तो उसकी कामना सिद्ध होती है। **नवरात्र में अशौच विचार**-यदि नवरात्र में अशौच पड़ जाय तो ब्राह्मण के द्वारा ही पूजा कार्य करायें तथा अशौच की समाप्ति के पश्चात् ही ब्राह्मण को भोजनादि करायें।

करक (करवा) संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत १० अक्टूबर २०२५ शुक्रवार को भारत के प्रमुख शहरों का चन्द्रोदय घं.मि. में।

कोहिमा रा.७।११, इम्फाल रा.७।१४, तिनसुकिया रा.७।५, गुवहाटी रा.७।१६, अगरतला रा.७।२८, पटना रा.७।४८, आरा रा.७।५३, गया रा.७।५१, वक्सर रा.७।५४, बलिया रा.७।४८, सासाराम रा.७।५५, छपरा रा.७।४६, मुज्जफरपुर रा.७।४६, मुंगेर रा.७।४३, भागलपुर रा.७।५८, जमशेदपुर रा.७।५१, रांची रा.७।५३, धनबाद रा.७।४७, डाल्टनगंज रा.७।५७, देवघर रा.७।४५, हजारीबाग रा.७।४१, कोलकाता रा.७।४२, सिलिगुड़ी रा.७।३२, राउरकेला रा.७।५८, भुवनेश्वर रा.८।८, पुरी रा.८।०, मिर्जापुर रा.८।०, प्रयागराज रा.८।२, जौनपुर रा.७।५८, अयोध्या रा.७।५७, लखनऊ रा.८।२, बरेली रा.८।५, कानपूर रा.८।६, मुज्जफरनगर रा.८।६, मथुरा रा.८।१६, मेरठ रा.८।१०, गाजीयाबाद रा.८।१३, मुरादाबाद रा.७।५६, हल्द्वानी रा.८।२, हरिद्वार रा.८।६, बांदा रा.८।६, ग्वालीयर रा.८।१६, गोरखपुर रा.७।५३, रायपुर रा.८।१४, जबलपुर रा.८।१६, बिलासपुररा.८।१०, कटनी रा.८।१२, इन्दौर रा.८।३४, उज्जैन रा.८।३३, भोपाल रा.८।२६, सतना रा.८।६, सागर रा.८।३६, दिल्ली रा.८।१३, आगरा रा.८।१४, चंड़ीगढ रा.८।८, अम्बाला रा.८।१०, अमृतसर रा.८।१४, शिमला रा.८।७, जयपुर रा.८।२३, जोधपुर रा.८।३६, अहमदाबाद रा.८।४७, बडोदरा रा.८।४६, मुंबई रा.८।५६, पूना रा.८।५२, नागपुर रा.८।२४, नासिक रा.८।४८, पणजी रा.८।५६, चेन्नई रा.८।३८, हैदराबाद रा.८।३५, बेंगलूर रा.८।४६, जम्मू रा.८।११।

माघकृष्ण संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत ४ जनवरी २०२६ मंगलवार को भारत के प्रमुख शहरों का चन्द्रोदय घं.मि. में।

अगरतला रा.५।५३, पटना रा.६।१४, आरा रा.६।१६, सासाराम रा.६।२०, गया रा.६।१६, बक्सर रा.६।१६, बलिया रा.६।१८, छपरा रा.६।१५, मुज्जफरपुर रा.६।१२, भागलपुर रा.६।७, दरभंगा रा.६।१०, रांची रा.६।१८, धनबाद रा.६।१२, डाल्टनगंज रा.६।२२, हजारीबाग रा.६।१७, देवघर रा.६।१०, कोलकाता रा.६।७, सिलिगुड़ी रा.५।५८, तिनसुकिया रा.५।२८, गुवहाटी रा.५।४५, भुवनेश्वर रा.६।२३, प्रयागराज रा.६।२८, अयोध्या रा.६।२३, लखनऊ रा.६।२६, बरेली रा.६।३२, कानपुर रा.६।३२, मिर्जापुर रा.६।२६, मुज्जफरनगर रा.६।३६, मथुरा रा.६।४१, बांदा रा.६।३५,ग्वालीयर रा.६।४२, गोरखपुर रा.६।१६, आजमगढ़ रा.६।२१, उज्जैन रायपुर रा.६।३८, सतना रा.६।३४, जबलपुर रा.६।४१, बिलासपुर रा.६।३४, चंड़ीगढ रा.६।३६, रा.६।५६, भोपाल रा.६।५२, सागर रा.६।४६, दिल्ली रा.६।३६, चंड़ीगढ रा.६।३६, जयपुर रा.६।५०, अहमदाबाद रा.७।१३, गाँधीनगर रा.७।११, बडोदरा रा.७।१२, मुंबई रा.७।२०, पणजी रा.७।२३, हरिद्वार रा.६।३३, चेन्नई रा.७।१,बैंगलूर रा.७।१२, जम्मू रा.६।४०।

दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त

कार्तिककृष्ण १४ सोमवार (दिनांक २० अक्टूबर २०२५) को अमावस्या तिथि का मान प्रदोपकाल तथा सम्पूर्ण रात्रि में व्याप्त है, अत: दीपावली का शुभ पर्व आज होगा। दीपावली पूजन का मुख्यकाल *प्रदोषकाल* है। *इसके साथ स्वाती नक्षत्र* तथा स्थिरलग्न वृष (रा.७।२२ से रा.९।१८ तक) की प्रधानता होती है। इस वर्ष दिन का स्थिरलग्न कुम्भ (दि.२।३६ से दि.४।७ तक) तथा रात्रि स्थिरलग्न सिंह राशि (रा.१।४० से रा.३।५४) तक है। दिनांक २० अक्टूबर २०२५ सोमवार को *सूर्यास्तोत्तर त्रिमुहूर्त प्रदोष* अत.प्रदोषकाल में वृष लग्न प्राप्त है। *अत: दीपावली पूजन प्रदोषकाल तथा स्थिर लग्न वृष में करना उत्तम है।* पूजन हेतु निशियकाल (मध्यरात्रि) रात्रि घट्यादि ४३।५ (रात्रि घं.११मि.३३) से घट्यादि ४५।२१ (रात्रि घं.१२ मि.२३) तक है। इसमें दूसरा रात्रि स्थिरलग्न *सिंह* प्राप्त नहीं है। अत: *निशीथकाल (मध्यरात्रि) महाकाली* पूजन हेतु उत्तम है। इसके अतिरिक्त दिन में स्थिर कुम्भ लग्न है। *प्रदोषकाल तथा* इन स्थिर लग्नों में लक्ष्मी, गणेश, कुबेरादि देवताओं का दीपावली पूजन होगा।

१) **श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत**-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत भाद्रपदकृष्ण **अष्टमी को निशीथकाल (अर्द्धरात्रि)** में मनाया जाता है। इसवर्ष दिनांक **१५अगस्त २०२५ शुक्रवार** को अष्टमीतिथि **घट्यादि ४८।३५ (रा.१२।५८)** से प्रारंभ होकर दूसरे **दिन दिनांक १६ अगस्त २०२५ शनिवार को घट्यादि ४२।२२ (रा.१०।२९)** तक व्याप्त है तथा **इस वर्ष दोनों दिन निशीथकाल में अष्टमी तिथि व्याप्त अथवा स्पर्श नही करती।** स्थूल व सूक्ष्म दृष्टि से अष्टम मुहूर्त्त निशिय (अर्द्धरात्रि) कहलाता है। **निशीथकाल का मान दोनो दिन-पूर्वदिन दिनांक १५।८।२०२५ शुक्रवार** को घट्यादि ४५।१५ **(रात्रि ११।३८)** से घट्यादि ४७।६ **(रात्रि १२।२२)** तक तथा दूसरे **दिन दिनांक १६ अगस्त २०२५ शनिवार** को घट्यादि ४५।१२ **(रात्रि ११।३८)** से घट्यादि ४७।३ **(रात्रि १२।२२)** तक निशीथकाल का मान है। जिसमें अष्टमी तिथि के व्याप्ति तथा स्पर्श का दोनों दिन अभाव है। अत: **अष्टमी तिथि का निशीथकाल में व्याप्ति तथा अव्याप्ति के आधार पर श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत का निर्णय-** १) अष्टमी तिथि पूर्व दिन ही निशीथ व्यापिनि हो--पूर्वदिन ही जन्माष्टमी मनायी जायेगी। २) अष्टमी तिथि दोनो दिन निशियव्यापिनि हो--दो दिन यदि अष्टमी निशीथकाल (अर्द्धरात्रिव्यापिनि) हो तो परा का ही ग्रहण होगा अर्थात दूसरे दिन जन्माष्टमी मनायी जायेगी। ३) अष्टमी तिथि दोनों दिन निशीथव्यापिनि न हो--दो दिन अव्याप्ति रहने आशिंक रूप से रहने समान रूप से रहने पर परा का ग्राह्य होता है। "दिनद्वये निशीथव्याप्ताव्याप्तौ वा परैवेति।" प्रातः संकल्पे काले सत्वाद्विरात्रियोगात् ॥ वैषम्येण व्याप्ति में अधिकमान वाली अष्टमी लेनी चाहिये। **दोनों दिन रात्रि निशीथकाल में अष्टमी का सवन्ध होने से परा का ग्राह्य होता है। अन्तिम दोनों पक्षों में भी प्रातः संकल्प के समय अष्टमी होने से और अधिक्यवती होने से परा को ही ग्रहण करनी चाहिये। अतः इस आधार पर दिनांक १६ अगस्त २०२५ शनिवार को श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत समस्त जनों द्वारा मनाया जायेगा तथा दिनांक १७** अगस्त २०२५ रविवार को सूर्योदयकालीन शुद्ध रोहिणी नक्षत्र [illegible] के वैष्णवजन का श्रीकृष्णजन्मव्रत होगा।

(२) **आश्विनशुक्ल महानवमी तथा पारण**- संवत् २०८२ [illegible] अष्टमी (दिनांक ३०।९।२०२५) मंगलवार को घट्यादि [illegible] नवमी तिथि स्पर्श कर रही तथा दूसरे दिन औदयिक [illegible] १।१०।२०२५ बुधवार को घट्यादि २१।२७ (दि.३।३६) [illegible] है। *"महानवमी तु बलिदानव्यतिरिक्त-विषये पूजोपोष्या-[illegible] महानवमी।"* अर्थात पूजा तथा उपवास में अष्टमीविद्ध नवमी [illegible] युक्त दशमी बलिदान हेतु प्रशस्त है। *"अष्टमी नवम्यां मध्याह्ने [illegible] नवमी पूजावारप्यंका दिने.......तन्त्रेण करिष्ये॥"* अष्टमीविद्ध नवमी [illegible] या अपराह्न के संधिकाल में तंत्र पूजन उस दिन होगा। अतः दिनांक ३० सितम्बर **२०२५ मंगलवार को महानवमी उपवास पूजन तथा अष्टमी** तथा नवमी **संधि में तन्त्रोक्त संधिपूजन होमादि होगा। नवरात्र पारण** तथा महानवमी [illegible] नवरात्र शब्द का समष्टिवाचक है। इसका संबंध नव तिथियों से है। नवमी [illegible] **दिन निश्चित होता है। उसके दूसरे दिन पारण होता है।** चाहे नवमी हो [illegible] **नहीं हो। दिनांक ३० सितम्बर २०२५ मंगल वार** को नवमी [illegible] कृत्य होगा। दूसरे दिन **दिनांक १।१०।२०२५ बुधवार** को नवमी [illegible] उपरान्त मध्याह्न तक **व्रत का पारण** होगा। "नवमी प्रयुक्ते महा बलिदान [illegible] **दशमी विद्धा"** इसी नवमी युक्त दशमी में अपराह्न नवमी तक बलिदान [illegible] लोगों का नवमी में पारण का आचार हो उनका पारण व विसर्जन [illegible] अथवा नवमी में पारण कर दशमी में अभिषेक कर प्रतिमा का विसर्जन [illegible] *"प्रतिपदादि क्रमेणैव यावच्च नवमी भवेत् ॥ त्रिरात्रं वापि कर्तव्यं [illegible] यथाक्रमम्॥"* हेममाद्रि के अनुसार प्रतिपदादि क्रम (प्रतिपदा से नवमी तक) [illegible] त्रिरात्र (सप्तमी से नवमी) जब तक नवमी व्याप्त हो तब यथाक्रम से व्रत रहने [illegible] का पारण दशमी मे होगा। जिन लोगों का पारण व विसर्जन का आचार हो [illegible] प्रात: दशमी में विसर्जन पश्चात पारण होगा।

३) **दीपावली**-कार्त्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रदोष काल में दीपावली [illegible] जाती है। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी कार्तिक कृष्ण १४ सोमवार दिनांक २०।१०।२५ को घट्यादि २१।३२ (दि.२।५५) से अमावस्या प्राप्त है तथा दूसरे दिन दिनांक २१।१०।२५ मंगलवार को अमावस्या घट्यादि [illegible] (सा.४।२६) तक है तथा प्रदोष में अमावस्या तिथि प्राप्त नहीं है। अत: कार्तिक **कृष्ण १४, दिनांक २०अक्टूबर २०२५ सोमवार को दीपावली मनायी जायेगी।**

४) **चैत्र नवसंवत्सरारंभः-संवत् २०८३-** चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से नवसंवत्सर प्रारंभ होता है। **"अत्रप्रतिपदौदयिकी ग्राह्या"** इस वर्ष संवत् २०८३ में प्रतिपदा क्षय होने से पूर्वदिन का ही ग्रहण होगा। **"दिनद्वये उदयकाले** [illegible] **असत्वे च पूर्वैव।"** अर्थात दोनों दिन सूर्योदयकाल मे प्रतिपदा रहने या न रहने [illegible] पूर्व दिन का ग्राह्य होता है। चैत्रकृष्ण ३० गुरुवार को दिनांक १९ मार्च २०२६ को घट्यादि १।३६ (प्रा.६।४०) पर अमावस्या समाप्ति पर प्रतिपदा प्रारंभ होकर रात्रिशेष रहते घट्यादि ५६।५० (रा.५।२४) पर समाप्त हो जाती है। सूर्योदय [illegible] स्पर्श नहीं होती। अतः दिनांक **१९ मार्च २०२६ गुरुवार** को ही चैत्र नव **संवत्सर सवंत् २०८३** का प्रारंभ होगा तथा **नवसंवत्सर** निमित्त समस्त कृत्य के साथ **वासन्तिक नवरात्रि प्रा.६।४० से प्रारंभ** हो जायेगा।

भोजन द्वारा रोगों का उपचार

डाईबिटीज का घरेलू उपचार– १. एक चम्मच मेथी या दो आम की पत्ती, आधा गिलास पानी में रात को भिंगोकर सुबह खाली पेट पीयें। २.दालचीनी, सेब व जामुन का सिरका, जामुन व जामुन के बीज का चूर्ण। **३.फल-** सन्तरा, अमरूद, आँवला, आड़ू, चकोतरा। **४.सब्जी-**करेला, नींबू, भिण्डी, प्याज, खीरा, टमाटर व अन्य हरी सब्जी खायें। **५.चावल-** ब्राउन राइस, कुट्टू का चावल व सभी छिलके वाली दालों का प्रयोग करें।

कंधा, पीठ एवं जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-D एवं कैल्शियम की कमी से होता है। सुबह की धूप, काली तिल, मशरूम, दही, सन्तरा, शकरकन्द, कीवी, शिमला मिर्च। काडलीवर आयल (दवा की दुकान पर मिलता है), अण्डा, मछली (सैलमन, मैक्रील, सारडीन, टूना), कूलर एवं Ac के सामने न सोएँ, ठण्डी चीजों का सेवन न करें।

कोलेस्ट्राल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे– अखरोट, बादाम, अलसी (तीसी), दालचीनी, ग्रीन-टी, काली तिल, लहसुन, सेब, तरबूज, केला, सन्तरा, कीवी, अवैकाडो, गाजर, टमाटर, पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, खीरा, लालमिर्च, हरी मटर, बीन्स– ये सभी चीजें मोटाई व चिकनाई को काटती हैं। (बिस्कुट, नमकीन, कोल्डड्रिंक्स एवं तली हुई चीजों का परहेज करें।) सभी सब्जियों का कच्चा सलाद खाना ज्यादा फायदेमन्द है।

हाई-वी.पी. के लिए घरेलू उपचार– तीसी (अलसी), मेथी या अड़हुल का फूल पानी में रात को भिगोकर सुबह पीये, नारियल का पानी, दही, लहसुन, किशमिश, अमरूद, केला, तरबूज, सन्तरा, नींबू, आँवला, अवैकाडो, प्याज, टमाटर, कीवी, शकरकन्द, ब्रोकली, करेला, सहजन। (कच्चा नमक एवं तली चीजें न खाएँ। अलग से नमक भी न खाएँ।)

नोट- धूम्रपान, शराब, पान-मसाला न खायें क्योंकि इन सबसे वी.पी. बढ़ता है।

दिमागी ताकत के लिए– अखरोट, बादाम, अनार, सफेद तिल, कद्दू का बीज, दही, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, काली तिल। (रात में बरफ वाली व ठंढी चीजें न खायें-पीये। जिनको नींद की शिकायत हो)।

अनिद्रा के लिए–मछली, अलसी (तीसी), कद्दू का बीज, दही, शहद, बादाम, गरम दूध।

थाइराइड के लिए– नारियल, काडलीवर आयल, (अश्वगन्धा जड़ी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें)। पत्तागोभी, हरी गोभी (ब्रोकली) कच्चा न खाएँ।

पैरालाइसिस (लकवा)– लहसुन, काली तिल, बैंगन, मूली। (किसी एक्सपर्ट की राय से नियमित व्यायाम करें)।

स्त्री रोग– सन्तरा, नीबू, करौंदा, अमरख व अन्य सभी खट्टे फल तथा ठंढई-(खरबूजा के बीज-१०० ग्राम, तरबूजा के बीज-१०० ग्राम, छोटी इलायची व गोल मिर्च स्वादानुसार, मोटी सौंफ-१०० ग्राम, पोस्ता दाना-१०० ग्राम, गुलाब की पत्ती-५० ग्राम)।

चर्म रोगों के लिए घरेलू उपचार– ये रोग विटामिन-C की कमी से होते हैं। सन्तरा, शिमला मिर्च, दही, अखरोट, नीम की पत्ती, कीवी, शकरकन्द, नीबू व सभी खट्टे फल मुँहासें व अन्य सभी चर्म रोग में लाभदायक है। **न खाएँ–**कच्चा नमक, चाय, चाकलेट, कोल्ड्रिंक, तली चीजें, मलाई, खोवा, अजवाइन एवं मांस इत्यादि। पानी ज्यादा पीयें।

शरीर के विकार को दूर करने वाले भोजन– सभी खट्टे फल जैसे- नीबू, संतरा इत्यादि, शलजम, शिमला मिर्च, अखरोट, हल्दी, काली मिर्च, लहसुन, खीरा, हरी गोभी (ब्रोकली), छिलके वाली दाल, गेहूँ की दलिया।

शरीर को ठंडा रखने वाले फल एवं सब्जियाँ– नारियल, खरबूजा, तरबूजा, संतरा, नीबू, आम, कीवी, सेब, खीरा, टमाटर, पत्तागोभी, ब्रोकली, कटहल, गेहूँ के ज्वार इत्यादि।

नोट- ऊपर लिखी चीजों को नित्य भोजन में शामिल कर बदल-बदल कर लेने से रोग जल्द ही दूर हो जायेंगे।

पञ्चाङ्ग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रूप से पाँच प्रकार की गणना होती है—सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियों में सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष कहते हैं तथा जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करे उसे सौर मास तथा जितने समय में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते हैं। जिस दिन चन्द्रमा सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के समय को चान्द्रमास कहते हैं। एक इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच को सावन दिन कहते हैं। नक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। १ वर्ष=३६५ दिन, १५ घटी ३० पल, २२॥ विपल का होता है। तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण नामक पांच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते हैं। सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। इससे भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान—सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि—जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२×१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है तथा १६वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती है, जब फिर अमावस्या होती है तब ३० तिथियाँ बीत चुकती हैं। इसलिए अमावस्या की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि—सूर्य चन्द्रमा की गतियाँ सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का मान भी सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है। कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही वार में पूरी होती हैं और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस वार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वही मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवहार में नहीं मानी जाती है। ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अधम कहते हैं। प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो वार मानी जाती है। इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं। इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षों के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत के लिये अनिष्ट कर होता है। शुक्ल पक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण—आधी तिथि जितने समय में बीतती है इसको करण कहते हैं। करण कुल ११ होते हैं। इसके नाम ये हैं—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र—तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीखता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं। इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन, १९ घटी, १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन—आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायँ कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या—ये छः राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मकर, मीन—ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं—उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भ होता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण—किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्टयादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है।

योग—अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हों उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आने वाला वर्तमान योग होता है। योग कुल २७ योग होते हैं—१. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए महामृत्युंजय वैदिकमंत्र जप की विधि ॥

आचमन कर प्राणायाम करके शान्तिपाठ, गणेशस्मरण करने के पश्चात् संकल्प, विनियोग, न्यास, ध्यान करने के अनन्तर महामृत्युञ्जयमंत्र का जप करना चाहिए। **संकल्प–**देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यं सततारोग्यताप्राप्त्यर्थं अमुकसंख्यापरिमित-श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये॥ **विनियोग–**अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः, पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं, महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यास–** ॐ वामदेव कहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे। ॐ श्रीं बीजाय नमः पादयोः॥ **करन्यास–**ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ **हृदयादिन्यास–** ॐ ह्रौं जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्। **पदन्यास–** त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं दृशोः। पुष्टिवर्धनम् मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः। इव हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय उर्वोः। मा जान्वोः अमृतात् पादयोः। मूलमंत्र से व्यापक कर ध्यान करना चाहिए। **ध्यान–** हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाऽक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्। अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभान्तं त्रिनेत्रं भजे॥ ध्यान के पश्चात् मानसोपचार पूजन करके मूलमन्त्र का जप करना चाहिए। **मानसोपचारपूजन–** ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। **जपार्थमंत्र–**ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ॥ जप करके देवता के दक्षिणकर में जप समर्पण करते हुए निम्न प्रकार मन्त्र बोलना चाहिए। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥१॥ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥२॥ तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदामृड। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रञ्च त्र्यम्बकम् ॥३॥ जपसाङ्गता संसिद्धि हेतु कामना के अनुसार वस्तु से, दूध-घृत से संसिक्त अपामार्ग (चिचिड़ा या लटजीरा) की समिधा से जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिए।

॥ अरिष्टशान्ति के लिए शताक्षरागायत्री मंत्र की जप विधि ॥

ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठा ऋषयो गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवित्रिजात वेदस्त्र्यम्बको देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः॥ **ऋष्यादिन्यास–** विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। सवित्रिजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानिगुह्ये। त्रिष्टुबक्षराणिशक्तये नमः पादयोः॥ **हृदयादिन्यास–** ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहातिवेदः शिखायै वषट्। ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः कवचाय हुम्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्राय फट्॥ **ध्यान-** स्मर्तव्याखिललोकवर्त्तिसततं यज्जङ्गमस्थावरं व्याप्तं येन च यत्रपञ्चविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते तद्वतकृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥ **होमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्र–** ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

सन्तानप्रद मंत्र– ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ॐ कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा। यथा वरेण देवानामदितिर्वज्रपाणिना॥

बाल रक्षा के लिए धूप–लाख, नीम के पत्ते, बाँस का छिलका, शिवजी पर चढ़े फूल, राई, लहसुन, गाय का घी, अगर इन सबको एक में मिलाकर धूप देने से पूतना तथा अन्य बाल ग्रह का प्रकोप नष्ट हो जाता है। धूप देने के समय **'खुं, खुर्दनं, हुं फट् स्वाहा'** इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

मृतसंजीवनी मंत्र– ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूँ हौं ॐ।

द्वादशाक्षर मृत्युञ्ज मंत्र– ॐ जूँ सः पालय पालय सः जूँ ॐ।

पुराणोक्त-मृत्युञ्जय मंत्र– ॐ मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥

अथ वर-कन्या नक्षत्र-मेलापक विचारोपयोगी होड़ा चक्र

अक्षर	चू,चे, चो,ला	ली,लू, ले,लो	अ,ई, उ,ए	ओ,वा, वी,वु	वे,वो, का,की	कु,घ, ङ,छ	के,को, हा,ही	हू, हे, हो, डा	डी,डू, डे,डो	मा,मी मू,मे	मो,टा, टी,टू	टे,टो, पा,पी	पू,ष, ण,ठ	पे,पो, रा,री
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा०	उ०फा०	हस्त	चित्रा
राशि	मेष	मेष	मेष१ वृष३	वृष	वृष२ मिथुन२	मिथुन	मिथुन३ कर्क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह१ कन्या३	कन्या	कन्या२ तुला२
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु.२ मानव२	मानव	मानव३ जल.१	जलचर	जलचर	चतुष्पद (वनचर)	चतुष्पद (वनचर)	चतु.१ (वनचर) मानव३	मानव	मानव
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ
राशीश	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल१ शुक्र३	शुक्र	शुक्र२ बुध२	बुध	बुध३ चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य१ बुध३	बुध	बु.२ शुक्र२
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

अक्षर	रू,रे, रो,ता	ती,तू, ते,तो	ना,नी, नू,ने	नो,या, यी,यू	ये,यो, भा,भी	भू,धा, फा,ढा	भे,भो, जा,जी	खी,खू, खे,खो	गा,गी, गू,गे	गो,सा, सी,सू	से,सो, दा,दी	दू,थ, झ,ञ	दे,दो, चा,ची
नक्षत्र	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
राशि	तुला	तुला३ वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु१ मकर३	मकर	मकर२ कुम्भ२	कुम्भ	कुम्भ३ मीन१	मीन	मीन
वर्ण	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मानव३ कीट१	कीट	कीट	मानव	मानव।। चतु३।।	चतुष्पद	चतु१।। जल२।।	जलचर२ मानव२	मानव	मानव३ जलचर१	जलचर	जलचर
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
योनिवैर	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	शुक्र	शुक्र३ भौम१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गुरु१ शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३ गुरु१	गुरु	गुरु
गण	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१-।।वर्णगुणचक्र।। वर का वर्ण

	वर्ण	ब्रा०	क्ष०	वै०	शूद्र
कन्या का वर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

२-वश्यगुण । वर का वश्य

	वश्य	च०	मा०	ज०	व०	की०
कन्या का वश्य	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	॥	०	१
	जलचर	१	॥	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

६-गण-गुण । वर का गण

	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या का गण	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

३-तारागुण/ऊपर वर-तारा, पार्श्व में कन्या-तारा

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५-ग्रहमैत्रीगुण । ऊपर वर का ग्रह, पार्श्व में कन्या का

ग्रह	सू०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
सू०	५	५	५	४	५	०	०
च०	५	५	४	१	४	॥	॥
मं०	५	४	५	॥	५	३	॥
बु०	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ०	५	४	५	॥	५	॥	३
शु०	०	॥	३	५	॥	५	५
श०	०	॥	॥	४	३	५	५

४-योनिगुण । ऊपर वर की योनि, पार्श्व में कन्या की योनि

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

वर्ग तथा वर्गेशचक्र

वर्ग	अ	क	च	ट
स्वामी	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्ग	त	प	य	श
स्वामी	सर्प	मूषक	मृग	मेष

उक्त वर्गों में अपने से पाँचवें वर्ग को परस्पर सभी वर्ग शत्रु मानते हैं। चक्र में जो ऊपर-नीचे हैं, परस्पर शत्रु हैं।

७-भकूटगुण। ऊपर वर राशि, पार्श्व में कन्या राशि

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिंह	क०	तुला	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

युञ्जाप्रीतिबोधक चक्र

पतिश्रेष्ठ	दोनों में सुमति	कन्या श्रेष्ठ
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा	ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा

८ नाड़ीगुण। वर की नाड़ी

	नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
कन्या की नाड़ी	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

कुज (मंगली) दोष

१-जन्मकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में से एक या एक से अधिक में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से कोई पापग्रह अकेले या साथ-साथ स्थित हो।

२-चन्द्रकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भावों में मङ्गल, शनि, राहु और केतु में से एक या अनेक पापग्रह एक या अनेक स्थानों में स्थित हों। उपरोक्त स्थितियाँ वर-कन्या जिसकी कुण्डली में होंगी वह कुजदोष से युक्त होगा।

वर की कुण्डली में शुक्र के द्वितीय-द्वादश दोनों स्थानों में पापग्रह हों, या शुक्र पापयुक्त हो, अथवा शुक्र से सप्तम-अष्टम-द्वादश में से किसी में पापग्रह हों तो उसकी पत्नी के लिए मारक स्थिति बनती है।

विवाहलग्न में ग्रहों के विंशोपक बल और शुभस्थान बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्रमा	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥	विंशोपकबल

विवाह लग्न से-सूर्य, शनि, राहु, केतु ३।६।८।११ में, मङ्गल ३।६।११ में, चन्द्रमा २।३।११ में, बुध और गुरु १।२।३।४।५।६।९।१०।११ में तथा शुक्र १।२।४।५। ९।१०।११में स्थित हो तो शुभद होते हैं। उक्त शुभद स्थानों में स्थित ग्रहों के चक्राङ्कित विंशोपक बलों का योग करने से लग्न का विंशोपक बल ज्ञात होता है। यद्यपि ग्रहों के चक्र में उल्लिखित बलों का योग करने पर २१॥ विश्वा है, जो २० विश्वा से अधिक है। विंशोपक बल २० विश्वा ही कहा है, राहु-केतु में से कोई एक ही ग्रह उपरोक्त स्थान में रहेगा, दूसरा नहीं, इस कारण २० विश्वा से अधिक बल नहीं होगा। विंशोपक बलों का योग ५ विश्वा से अल्प त्याज्य है। ५ से १० तक साधारण, १० से ऊपर १५ तक मध्यम तथा उससे ऊपर २० तक उत्तम होता है। यदि और कोई लग्न न मिल सके तो साधारण विंशोपक बल वाली लग्न को भी ग्रहण किया जा सकता है।

कुण्डली मिलाने की रीति

स्त्री-नाशक या पति नाशक जो योग है, उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पाप-ग्रह का होना प्रायः पति-नाशक या पत्नी नाशक है। इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। इसके लिए पण्डितों का अनुभव है कि, सबसे अधिक उपकारक मंगल, उससे कम बाकी पाप-ग्रह होते हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए।

द्वितीय, सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश-अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तमेश में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग भी प्रायः वैधव्य-सूचक होते हैं। एकादश या पञ्चम में भी विशेष पाप योग वैधव्यसूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो वह विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठवें या आठवें चन्द्रमा हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें पाप ग्रह हों, लग्न में चन्द्रमा और साँतवें में मंगल हो तो भी वैधव्य कारक योग होता है।

यदि कन्या का प्रबल वैधव्य योग हो तो अश्वस्थ विवाह, कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाए तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता है, ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है। लग्न को शरीर चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है।

गणना जन्म नाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण (मुण्डन), गोचर विचार, मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म नाम ही प्रधान है, जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहणकर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हों और दूसरे का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म नाम ग्रहणकर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्रायः प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिए माता-पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित **"कात्यायिनी देवी"** का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धा पूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं एवं विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि–

यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठकर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कड़ुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिए।

जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जपकाल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस मंत्र का जप जपकर्ता को पान खाते हुए करना चाहिए। इस मंत्र का ४१ हजार पुरश्चरण है। प्रथम दिन मंत्र का १ हजार जाप करें व इसके बाद २० दिनों तक प्रतिदिन दो हजार मंत्र का जाप करें। जपकाल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिए। अनुष्ठान के अंत में दशांश हवन, तर्पण तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।

भोजन में पीले रंग की मिठाई अवश्य रखें।

मंत्र—

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोप सुतः देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥

गणनागुणैक्य (मेलापक) सारिणी

वर के नक्षत्र (ऊपर) — कन्या के नक्षत्र (बाएँ)

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.१	कृ.३	रोहि.	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	ऽश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.॥	पू.षा.३॥	उ.षाढ़१	उ.षाढ़३	श्र.१॥	श्र.२॥	धनि.२	धनि.२	शत	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भाद्र.	रेवती
अश्वनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१९	२३॥	३१॥	२८	२१	२५	१५॥	११	९	१३	२२॥	२७॥	२२॥	१८॥	२५॥	१४	१३	२५	२६	२४॥	२६	२७	२६	२०	२०	१५	१६	१४॥	२८॥	२६
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३१॥	२३॥	२५॥	२०	१८	२६	२१॥	२०	४	१३॥	२९॥	२१॥	१७॥	१६॥	१८॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२७	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२६॥
कृत्तिका१	२७॥	२९	२८	१८	११	१७॥	२१	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१४॥	१८	२०	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१५॥	१९॥	२५॥	२४॥	१७॥	१९	१४	१५॥	१२॥	११॥	२५	२५	२७	१९	१७॥	१९॥	११॥
कृत्तिका३	१८॥	२०	१९	२८	२१	२७॥	१८॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२०	२२	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२०॥	२४॥	३०॥	२०	१३	१४॥	९॥	१४	११	१०	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२३॥	२३॥	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	१०॥	२४॥	२६	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१५॥	२९॥	२३॥	१४	१९॥	२१	१२॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृगशिरा२	२३॥	१४॥	१९॥	२८॥	३५	२८	१९	२४	२३॥	२७	२०	२२	१९॥	१५॥	२३॥	२२॥	२६	१३	१२	२५	१८॥	२४॥	२१॥	२४॥	१५	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२६	१३	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७
मृगशिरा२	२७	१८	२३	२०॥	२७	२०	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५	२३॥	१९॥	२७॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१५	१२	१५	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२४॥	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१६॥	२६॥
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१२॥	२०	१३	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१४॥	१८	४	१६	२८	२७	२७	२३॥	२३॥	२३	१७॥	१९	१२	१७	१९	२६॥	२६॥
पुनर्वसु३	१९	२६	२३	२०॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥	१९॥	२७	२१	१५॥	२१॥	७	१४	२७	२६	२६	२२॥	२३॥	२३	१८	१९॥	१३	१७	१९	२७	२६॥
पुनर्वसु१	२१॥	२८॥	२५॥	२२	२५	२६	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥	१६॥	२०॥	१५॥	१७	१८	२०	१९॥	२७	२१	१९	२५	१०॥	८	२१	२१॥	२१॥	२५	२६	२७	२२	१३॥	७	११	१७	२५	२४॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२६	१९	१२	१८	२१॥	३५	२८	३०	१७॥	१३॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	१९	१८	२१	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२०	१३	१२	१५	२८॥	२९	२८	१५	१५॥	१७॥	२०	२०	२५	२४॥	११॥	१६॥	१४॥	१९	२५	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१२	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	१९	१९	१५॥	१६॥	९॥	१७॥	२१॥	२१॥	२०॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१५॥	१५॥	२१॥	२४॥	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	३२	२४	१९	१९	९॥	३॥	३॥	४॥	१७॥	२३॥	२४॥	१७॥	१७॥	१८॥	१२
पू.फाल्गुनी	२५	१७	१९	२०	२३॥	१५॥	१९॥	२७॥	२६॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२३	२१॥	७॥	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	१८	१७	१७	२५	१९	१७॥	१८॥	३॥	९॥	१८॥	२३॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फाल्गु.१	१६॥	२५	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१७	१६	१३॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥	२५	२५	२६	२०	१९	२०	११॥	१७॥	११॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फाल्गु.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९	२८	२१	१६॥	२४	१८	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१९	२८	१४	१४	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२४॥	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२६॥
हस्त	१०	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२३॥	१९	२८	२२	१७॥	२१॥	१६	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२२	२७	१४	१५	२७	२६	२७॥	२४	२५	२४॥	१८॥	१९	८॥	१३॥	१६॥	२६॥	२७॥
चित्रा २	१३	६	१९	२३॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०	१२	२६	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२९	१३	२६	२७	१३	१२	२१	१७॥	१८	१७॥	१६॥	१७	२४	१७॥	२०॥	१०॥	२०॥
चित्रा २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	१९॥	११॥	२५॥	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२७	१३	१२	२१	२५॥	२६	२५॥	२४॥	१९	२६	१९॥	१३॥	३॥	१३॥
स्वाती	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८	२७॥	१३॥	१२॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२१	२०	२५	१९	१९॥	१२॥
विशाखा३	२२॥	२३॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२०	२०	२१	२१	१७॥	१७॥	१९॥	१७॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१९	२८	१८	१७	२१॥	२७	२१	२०	१३	१७॥	१६॥	१६	३१	२५॥	२६	२१	१५	१३	५॥
विशाखा१	१६॥	१७॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१३॥	१३॥	१८	१८	१४॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२२॥	१५॥	१६॥	९॥	१२	११	११	२६	२६	२६॥	२१॥	२०	१८	२०॥
अनुराधा	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२०॥	२५	१८	२०	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२६	१२	७॥	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	११॥	१४॥	२२॥	२५	२६	२६	१३	१३	२२	२६॥	२५	१८	२६
ज्येष्ठा	१२	१७॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	५	९॥	२०	२५	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५	२०॥	१५॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१६॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२६	१९	१२	१०॥	२१	२०
मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७	२३॥	२४	१८	९॥	१३	१३	२६	२६	२१	२६	२३॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५	२०	२८॥	२१॥	१४॥	१६	२५	२६॥
पूर्वाषाढ़॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१७॥	१६॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३	७	१५॥	२३॥	३०॥	३१	२३	३२
पूर्वाषाढ़३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	१९	१७	२५	२७॥	२६	११	११	२६	१९	१७॥	१६॥	१८॥	२७	२६॥	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	७॥	१४॥	२२॥	२८॥	३१॥	२३॥	३२॥
उत्तराषाढ़१	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	९॥	९॥	२५	२६	२८॥	२७॥	२०	२०	१८	१२	१०॥	२४॥	१८॥	२५॥	३२॥	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उत्तराषाढ़ ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२३॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	१३	४॥	२०	२१	२६	२५	१७॥	२४॥	२२॥	१६॥	१३	२७	२१	१६॥	२३॥	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	२९॥	३०॥	२१॥
श्रवण १॥	२८	२८	१४॥	१२	१८	२७	२४	२१॥	२२॥	२७	२५	१४	५॥	१७॥	१९	२४	२५	१९	२६	२२॥	१६॥	१३	२७	२२	१७॥	२३	२४॥	१६	२५	२८	२७	२८	२०	१८॥	२२॥	२८॥	२८॥	२२॥
श्रवण २॥	२७	२७	१३॥	११	१७	२६	२३॥	२१	२२	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२२	१६	१३	२७	२२	१७	२३	२३॥	१५	२४	२७	२८	२९	१९॥	१८	२२	२९॥	२९॥	२३॥
धनिष्ठा२	२०	११	२६	२३॥	२०	१२	९॥	१६॥	१६	२२	१३	२८	१८॥	४॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२३॥	२४॥	३०	२७	१२	२६	२१	७	८॥	१६॥	२५॥	२७	२८	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
धनिष्ठा२	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१२	१९	१८॥	१३॥	४॥	१९॥	२४॥	१०॥	१८॥	१७॥	१९	१८	१९	२०	२५॥	२७	१२	२६	२९॥	१५॥	१५॥	२३॥	१८॥	२०	१९॥	१९॥	२८	३३	२८॥	१८	७	१४
शततारका	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२७	२०	१२	१३	८	१४॥	२०॥	२६॥	२०॥	१२॥	११॥	८॥	२५	२६	१९	२६	२७॥	२२	२०	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८	२४॥	३३	२८	१९	८॥	१७	१६
पू.भाद्रपदा३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१८	१३	२०	१३॥	१८॥	२४॥	१६॥	१५॥	१५॥	१८॥	१९॥	२६	२१	२२॥	२७॥	१२	१५॥	२९॥	२९॥	२९॥	२४॥	२४॥	२४	२०	२८॥	१९	२८	१७॥	२२॥	२०
पू.भाद्रपदा१	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१९	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१६॥	१९॥	१२॥	१९	१४	२०	२५	९॥	१५	२९	३०॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उत्तराभाद्रपदा	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥	२॥	१९॥	१२	१८	१९	२१	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥	२७	१४	१३	२३॥	२३॥	२५॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	४॥	१०॥	२६	२१	२६॥	३०	२९॥	२१॥	१९॥	२०॥	२१॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८

यज्ञोपवीत-विवाहादि हेतु सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्धि विचार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	गुरु
शुभ स्थान	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्य	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१
निन्दितस्थान	४।८।१२	४।८।१२	३।४।६।१०

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार में वटु का सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्ध तथा विवाह में वर का सूर्य, कन्या का गुरु तथा दोनों का चन्द्र शुद्ध होना चाहिए। उच्च राशि (मेष) में सूर्य और उच्च राशि (कर्क) में बृहस्पति जब रहे तब ४।८।१२ वें में होने पर भी शुभ माने गये हैं।

जन्मराशि से २।५।९वें में सूर्य हो तो, १३दिन छोड़कर शेष दिनों में सूर्य शुभ कहा गया है।

जन्मराशि से अनिष्ट स्थानीय (१।२।४।५।७।८।९।१२वें)सूर्य हो और सूर्यस्थ राशि से आगे वाली राशि शुभ ग्रह की हो तो सूर्यस्थ राशि का प्रारम्भ में १३ दिनों को छोड़कर शेष दिनों का सूर्य शुभ माना गया है।

पूज्य सूर्य होने पर सूर्य की पूजा तथा लाल वस्तुओं का दान करने से शुभ होता है।

गर्भाधान, सीमन्त, युद्ध, दान, व्रतबन्ध, विवाह, रति, अन्नाशन, व्रतोपवास और राज्याभिषेक में १२वां चन्द्र भी ग्राह्य है। २।५।९वां चन्द्र शुक्लपक्ष में तथा ४।८।१२वां चन्द्र कृष्णपक्ष में शुभ होता है।

उच्चस्थ, स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रगृहस्थित, वर्गोत्तमस्थ गुरु ४।८।१२वां भी ग्राह्य है। नीच या शत्रुराशिस्थ हो तो शुभ स्थानों में रहने पर भी त्याज्य है।

रजस्वला होने के पश्चात् यदि कन्या का विवाह हो तो गुरु-शुद्धि देखना आवश्यक नहीं। केवल लग्न, चन्द्रमा और तारा की शुद्धि में विवाह किया जा सकता है। अतः इस प्रकार परिहार और दान-पूजा को विद्वान् द्वारा भली-भाँति समझकर मङ्गल कार्य करना चाहिए।

नूतनवधू-द्वारा पाक कर्म (रसोई) का मुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियां प्रशस्त हैं, तथा ४।९।१४ और ३० तिथियां त्याज्य है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	कृत्तिका, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ है।
लग्न-शुद्धि	स्थिर (२।५।८।११) लग्न में, लग्न से चतुर्थ स्थान शुभग्रह से युक्त अथवा शुद्ध हो। लग्न से ८वां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो। लग्न, से सप्तम स्थान में बलवान ग्रह व्यवस्थित हो। ऐसे समय में (उपरोक्त लग्नों में) नूतन (नई) वधू के द्वारा पाककर्म (रसोई बनाना) शुभ कहा है।

वधूप्रवेश-मुहूर्त

विवाह के दिन से १६ दिनों के अन्तर्गत (२।४।६।८।१०।१२।१४।१६) सम दिनों में से किसी दिन में तथा विषम दिनों (५।७।९) में से किसी दिन में वधूप्रवेश कराना शुभ होता है। यदि वधूप्रवेश १६ दिनों में न हो सके तो प्रथम मास के विषम (१७।१९।२१।२३।२५।२७।२९) दिनों में, यदि प्रथम मास में न हो सके तो प्रथम वर्ष के विषम (३।५।७।९।११) मासों में तथा एक वर्ष की अवधि में भी वधू-प्रवेश न हो सकने की स्थिति में विषम (३।५) वर्षों में वधूप्रवेश शुभ होता है। ५ वर्षों के पश्चात् वर्ष मास के सम-विषम का विचार न करके केवल शुभ मुहूर्त देखकर उसमें कभी नवीन वधूप्रवेश करना चाहिए।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ, पूर्णिमा (१५) तथा कृष्णपक्ष की १ (प्रतिपदा) शुभ होती है।
वार	सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार ग्राह्य है। किसी आचार्य के मत में बुधवार त्याज्य कहा गया है, किन्तु मुहूर्त गणपति में बुधवार को मध्यम कहा है। सूर्य और मङ्गल का वार सर्वथा त्याज्य है। रिक्ता तिथियाँ (४।९।१४) और भद्रा करण भी त्याज्य है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, मघा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती शुभ है किन्तु वेधरहित होना चाहिए।
विशेष	जो वधूप्रवेश विवाह से १६ दिनों तक की अवधि में होने वाला हो, परन्तु १६ दिनों के भीतर ही पौष (धनु का सूर्य) चैत्र (मीन का सूर्य) हरिशयन और मलमास उपस्थित हो जाने पर इनको अवश्य वर्जित करना चाहिए।

विवाहार्थ वर के लिए सूर्यशुद्धि, कन्या के लिए गुरु शुद्धि तथा दोनों के लिए चन्द्रशुद्धि होनी चाहिए।

द्विरागमन-मुहूर्त

वधूप्रवेश के पश्चात् पतिगृह से पिता के घर जाकर, पुनः पतिगृह में दूसरी बार आना ही द्विरागमन कहलाता है। विवाह से (१।३।५) विषम वर्षों में वृश्चिक, कुम्भ और मेष राशिस्थ सूर्य के मासों, अर्थात् पौष मार्गशीर्ष (अगहन), फाल्गुन और वैशाख मासों में पति की सूर्यशुद्धि, पत्नी की गुरुशुद्धि तथा दोनों की चन्द्रशुद्धि होने पर एवं गुरु-शुक्र के उदय रहने पर द्विरागमन शुभ होता है।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा (१) शुभद होती है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र प्रशस्त हैं।
लग्न तथा लग्न शुद्धि	वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला और मीन लग्न शुभद होती है। लग्न से उपचय स्थानों (३।६।१०।११) में से किसी स्थान में बृहस्पति हो, केन्द्र (१।४।७।१०) में शुक्र हो, लग्न शुभग्रह से युक्त अथवा ग्रहरहित हो, केन्द्र में शुभग्रह हो और ३।६।११ भावों में पापग्रह हों तथा अष्टमभाव शुभग्रह से दृष्ट हो तो द्विरागमन शुभ होता है।
त्याज्य	पौष और चैत्र मासों में अर्थात् धनु मीन के सूर्य में, हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल ११से कार्तिक शुक्ल ११ तक) में, मलमास में, गुरु-शुक्र के अस्त में तथा सम्मुख या दाहिने शुक्र की स्थिति में द्विरागमन नहीं होना चाहिए, उक्त सभी समय त्याज्य हैं।
विशेष	यदि सम्मुख या दाहिने शुक्र रहें तो बालक, गर्भिणी और नववधू (द्विरागमन वाली) को एक पग भी नहीं चलना चाहिए, क्योंकि सम्मुख दाहिने शुक्र रहने पर यात्रा करने से बालक की मृत्यु, गर्भिणी का गर्भस्राव तथा नवोढा का वन्ध्या होना कहा है। शुक्र-पीछे और बायें शुभप्रद होता है।

विभाजन (बँटवारा) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा तथा दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार प्रशस्त है। मंगलवार और शनिवार त्याज्य है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती शुभद है।
लग्न शुद्धि	शुभग्रहों की लग्न में तथा लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों की स्थिति में विभाजन शुभ कहा है।

शल्यक्रिया (आपरेशन) का मुहूर्त

तिथि	४।९।१४ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण एवं शततारका नक्षत्र प्रशस्त हैं।

रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

४।९।१४ तिथियों में, रवि, मङ्गल, बुध, गुरु-शनिवारों में; अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा आर्द्रा, पुष्य, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में; १।४।७।१० लग्नों में। लग्न से १।४।५।७।९।१०।११वें स्थानों में पापग्रहों की स्थिति में रोग से मुक्त हुए व्यक्ति को दोनों पक्षों में दिन या रात्रि में भद्रा, वैधृति, व्यतिपात, संक्रान्त्यर्क्ष में; चन्द्र-तारा शुद्धि में, लग्न से १०वें में शुभग्रह तथा ८वें में शुभ-पाप की स्थिति में रोग मुक्त स्नान करके आरोग्यार्थ यथाशक्ति दान करना चाहिए।

रजस्वलास्नान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ श्रेष्ठ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद और रेवती।
विशेष	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती तथा रेवती नक्षत्र में स्नान करने से शीघ्र गर्भधारण होता है।

रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान के पश्चात् अपने पति के स्पर्शयोग्य होती है, परन्तु देवता और पितृ कार्यों के लिए पाँचवें दिन योग्य होती है।

गर्भाधान मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१२।१३
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा उत्तम हैं। अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य तथा चित्रा मध्यम है।
लग्न शुद्धि	गर्भाधान की लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रहों तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर, पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो तथा पुरुष ग्रहों से लग्न दृष्ट हो तो शुभ होता है।

गर्भाधान में त्याज्य

तीनों प्रकार के गण्डान्त, जन्म नक्षत्र, निधन तारा, अश्विनी-भरणी-मघा-मूल-रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, व्यतीपात और वैधृतियोग माता-पिता का श्राद्ध दिन, दिन का समय, परिघ का पूर्वार्द्ध समय, सन्ध्या समय, भद्रा, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टम लग्न, पापयुक्त लग्न, पति-पत्नी की चन्द्र व तारा की अशुद्धि, रिक्ता व पर्वतिथियाँ (४।६।८।९।१४।१५।३०) सूर्य, मङ्गल एवं शनिवार तथा रजोदर्शन से ४रात्रि पर्यन्त का समय गर्भाधान के लिए त्याज्य हैं।

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन का शुभाशुभ समय

मास- वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन। शुक्लपक्ष विशेष श्रेष्ठ।

तिथि- दोनों पक्ष की २।३।५।७।१०।१३ तथा १५ (पूर्णिमा) तिथियाँ और दिन का समय उत्तम होता है।

वार- चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उ० फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षाढ़ श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, उ० भाद्रपद, रेवती श्रेष्ठ हैं।

लग्न- २।३।४।६।७।९।१२ लग्नों में श्वेत वस्त्र में प्रथम रजोदर्शन उत्तम होता है।

मध्यम- १।११ तिथियाँ तथा कृत्तिका, पुनर्वसु, मघा, विशाखा, एवं मूल नक्षत्र मध्यम है।

अशुभ- भद्रा, निद्रा, संक्रान्ति, अमावस्या, रिक्ता, नन्दा, द्वादशी, संध्या, रात्रि, व्यतीपात, वैधृति, रुग्णावस्था, ग्रहण, पिता का गृह, कृष्ण वस्त्र और कुदेश।
शान्ति करने से तथा गुरु व शुक्र से युत दृष्ट लग्न में शुभ होता है।

गर्भ के १० मासों के अधिपति

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भलग्न पति	चन्द्रमा	सूर्य

पुंसवन-सीमान्त संस्कारों का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ शुभ होती हैं। कृष्णपक्ष में दशमी तक।
वार	सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति। मतान्तर से सोम, बुध शुक्रवार प्रशस्त हैं। पूर्व के ३ उत्तम, पर के ३ मध्यम हैं।
नक्षत्र	मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, रोहिणी नक्षत्र शुभ हैं (परन्तु जन्म नक्षत्र से अतिरिक्त होने पर)।
लग्न शुद्धि	पुरुष राशि की लग्न और पुरुष राशि का नवांश हो। लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह स्थित हों ४।८।१२ स्थानों में एक भी पापग्रह न हों। चन्द्रमा १।६।८।१२ के अतिरिक्त स्थान में हो तो श्रेष्ठ होता है।

गर्भ से २।३सरे मास में पुंसवन तथा ४।६।८ वें मास में सीमान्त संस्कार किया जाता है। मासेश पुष्ट हो तथा दम्पति को चन्द्र-तारा बल प्राप्त हो। मिथुन को छोड़कर अन्य विषम राशि की लग्न तथा विषम नवांश होना चाहिए।

जातकर्म-नामकरण मुहूर्त

पुत्र (शिशु) की आयु और श्री की वृद्धि, ग्रह दोष के विनाश हेतु तथा सूतिका के अशुभ विच्छेद, बालग्रह-नाशार्थ और पुंसत्व की वृद्धि के लिए जातकर्म किया जाता है। बालक का जन्म सुनकर पिता सचैल स्नान करे (रात्रि में जन्म हो तो भी तत्काल सचैल स्नान करे) और स्वर्णादिक से (अपने समार्थ्यानुसार) श्राद्धादि करें। यहाँ श्राद्ध से तात्पर्य आभ्युदयिक श्राद्ध (नान्दीश्राद्ध) से है। यदि यह समय व्यतीत हो जाए तो जन्म से ११वें अथवा १२वें दिन जातकर्म तथा नामकर्म दोनों करे। पूर्वाह्न श्रेष्ठ, मध्याह्न मध्यम कहा है। अपराह्न, रात्रि नामकर्म में वर्जित है।

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियाँ भद्रा आदि दोष रहित होने पर शुभ हैं।
वार	सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभि०, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, रेवती शुभ हैं।
लग्न	२।५।८।११ लग्न, शुभग्रहों के नवांश शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ स्थानों में पापग्रह हैं तथा लग्न से ८।१२ स्थानों में शुभाशुभ कोई भी ग्रह न हो तो शुभ होता है।

सूतिका के सूतीगृह प्रवेश का मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ०फा० हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ०षा०, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा तथा शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों में, रिक्ता षष्ठी-अष्टमी को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ लग्नों में, शुभनवांश में, लग्न से केन्द्र में शुभग्रहों तथा लग्न से ३।६।११ स्थानों में पापग्रहों के रहने पर सूतिका को सूतीगृह में प्रवेश कराना चाहिए।

पुत्र-जन्म सुनकर पिता तत्काल वस्त्र सहित स्नान कर वृद्धिश्राद्ध (आभ्युदयिक श्राद्ध) स्वर्णादि से सामर्थ्यानुसार करे। यदि तत्काल न कर सके तो सूतकान्त में भी कर सकता है।

सूतिका को क्वाथ-औषधि पीने-खाने का मुहूर्त

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा अभिजित्, मृगशिरा और रेवती नक्षत्रों में, ३।६।९।१२ लग्नों में, रवि-सोम, गुरु-शुक्रवारों में, लग्न से ७।८।१२ स्थान ग्रहरहित होने पर, रिक्ता और अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में, लग्न में पूर्णचन्द्र के रहने पर सूतिका को औषधि क्वाथादि सेवन कराना चाहिए। जन्मराशि में औषधि सेवन वर्जित है।

खट्वारोहण (खाट पर सुलाने का मुहूर्त)- जन्म के दिन से गिनकर १०।१२।१६।२२ वें दिनों में से किसी दिन में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित् तथा रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तथा अमावस्या से अतिरिक्त तिथियों में और शुभ वारों में पूर्व दिशा में शिर करके बालक को लेटाना चाहिए।

स्तनपान मुहूर्त- तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका नक्षत्रों में, शुभवारों में रिक्ता-अमावस्या छोड़कर अन्य तिथियों में तथा स्थिर लग्न (२।५।८।११) में स्तनपान प्रशस्त होता है।

सूतिका को अन्नप्राशनोक्त तिथि, नक्षत्र, वारों में दुर्योगादि से रहित समय में पथ्य सेवन श्रेयस्कर होगा।

सूतिकास्नानमुहूर्त

तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ उत्तम हैं। ३० (अमावस्या) मध्यम है। शेष तिथियाँ त्याज्य हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार और गुरुवार उत्तम हैं। सोमवार-शुक्रवार मध्यम तथा बुधवार-शनिवार त्याज्य हैं।
नक्षत्र	हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और स्वाती श्रेष्ठ हैं। श्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और ज्येष्ठा मध्यम हैं। शेष त्याज्य हैं।

दोलारोहण मुहूर्त विचार

जन्म के दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिनों में से किसी दिन चन्द्र-तारा की अनुकूलता में २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथियों में, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्रों में, सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गिनने पर संख्या १ से ५ तक या २१ से २७ तक आती हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए शिशु को पूर्व दिशा में शिर करके माता या किसी सुवासिनी द्वारा सुलाया जाना चाहिए। उस समय चर लग्न शुभग्रह से युक्त हो। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा त्रिपडाय में पापग्रहों की स्थिति श्रेष्ठ होती है।

बालक को भूमि पर बैठाने का मुहूर्त

जन्म से पाँचवें मास में, मङ्गल की शुद्धि में वराह और भूमि का पूजन करके, कटिसूत्र बाँधकर बालक को भूमि पर बैठाने के पश्चात् बालक के समक्ष पुस्तक, लेखनी, शस्त्र, चाँदी, सुवर्ण आदि रखकर देखना चाहिए कि बालक किस वस्तु को ग्रहण करता है। जिसको ग्रहण करे उसी से बालक की वृत्ति जीवन में होती है।

शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् भम्यूपवेशन के लिए प्रशस्त हैं।
शुभ तिथि	रिक्ता (४।९।१४) को छोड़कर अन्य तिथियाँ शुभ हैं।
शुभ वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

प्रसूतिका के जलपूजन का मुहूर्त

प्रसव दिन से एक मास (३० दिन) व्यतीत होने पर चन्द्र-बुध-गुरुवारों में रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में (अर्थात् १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में) मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल तथा श्रवण नक्षत्रों में स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुआँ-पूजना) श्रेष्ठ है।

जलपूजन में प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु, शुक्र का अस्त समय, रिक्ता और अमावस्या तिथियाँ त्याज्य हैं।

जन्म से प्रथमादि मासों में बालक के दाँत निकलने का फल

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं का नाश	छोटे भाई का नाश	बहिन का नाश	माता का नाश	बड़े भाई का नाश	अतुल भोग	पिता का सुख	शरीर की पुष्टि	लक्ष्मी	विशेष सुख	विशेष सुख	धन-सम्पत्ति का लाभ

विशेष- जो शिशु दाँत सहित जन्म लेता है, वह अपने माता-पिता के लिए मृत्युसूचक होता है। जिसे जन्म से ५ मास की अवधि में पहले ऊपर वाली दन्त-पंक्ति उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा कुल को नाश करेगा। इसकी विधिवत् शान्ति कराई जानी चाहिए।

अन्नप्राशन-मुहूर्तबोधक चक्र

मास	कन्याओं का जन्म से पाँचवें आदि विषम मासों में तथा पुत्रों का छठें आदि सम मासों में अन्नप्राशन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।१३ तथा पूर्णिमा (१५) तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार प्रशस्त हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा और रेवती शुभ हैं।
शुभ लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१०।११ उत्तम हैं। लग्न से दशम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। शेष केन्द्र-त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ में पापग्रह शुभद होते हैं।
त्याज्य	जन्म लग्न व जन्म राशि से अष्टम राशि की लग्न तथा नवांश, १।६।८ स्थानों में स्थित चन्द्रमा, तिथिक्षय, रात्रि का समय, भद्रा, व्यतिपातादि।

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त

१. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २. वैशाखशुक्ल तृतीया (अक्षयतीज) ३. आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी) ४. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तथा दीपावली प्रदोषवेला चार स्वयं सिद्धि मुहूर्त है। इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांगशुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होने से इन्हें **साढ़े तीन मुहूर्त** कहते हैं।

कन्याओं के नासिकावेध का मुहूर्त

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ और पूर्वाह्न का समय शुभ है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका एवं रेवती नक्षत्र नासिकावेध (नाक छेदने) के लिए उत्तम हैं।

कर्णवेध मुहूर्तबोधक चक्र

तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।१२।१३।१५ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१० तिथियाँ शुभ हैं।
वार	सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न उत्तम हैं एवं इन्हीं के नवांश उत्तम हैं। लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होना चाहिए। लग्न से १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभद होते हैं, लग्नस्थ गुरु श्रेष्ठ कहा है। उत्तरायण में, चन्द्र-तारा की शुद्धि में पूर्वाह्न में, जन्म से १२वें या १६वें दिनों में अथवा ६।७।८ मासों में या विषम वर्षों में कर्णवेध शुभ होता है। समय से उचित ढंग से कर्णवेध होने से व्यक्ति को आन्त्र वृद्धि (हार्निया) जैसे भयानक रोग के होने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।
त्याज्य	जन्ममास, जन्म नक्षत्र, रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ, गुरु-शुक्र का अस्त समय, भद्राकरण, समवर्ष, चैत्र और पौष मास (मीन और धनु में सूर्य के रहने का २ मासका समय अर्थात् दोनों खरमास) हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल के ११से कार्तिक शुक्ल ११ तक) तथा मध्याह्न के पश्चात् का समय अर्थात् दिन का उत्तरार्द्ध कर्णवेध के लिए त्याज्य है।

मुण्डन (चौल) संस्कार का मुहूर्त चक्र

वर्ष-अयन-मास	गर्भाधान समय से अथवा जन्म समय से तीसरे, पाँचवें, सातवें वर्षों में (मनु के मत से प्रथम वर्ष में भी) उत्तरायनसूर्य में परन्तु चैत्रमास को छोड़कर अन्य मासों में मुण्डन श्रेष्ठ होता है।
तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५।७।१०।११ तिथियाँ शुभप्रद है।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, अभिजित श्रवण, धनिष्ठा, शततारका और रेवती शुभ हैं।
लग्न व लग्न शुद्धि	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन राशियों की लग्न एवं इन्हीं के नवांश प्रशस्त हैं, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभप्रद होते हैं। लग्न से केन्द्र में पापग्रह स्थित होकर अशुभ फल देते हैं। अष्टमस्थ सभी ग्रह नेष्ट फल देते हैं, केवल शुक्र शुभप्रद होता है।
त्याज्य ग्राह्य	जन्मलग्न से अष्टम लग्न, भद्रा करण, ३,५,७ तारायें, चैत्र मास, प्रथम सन्तान के मुण्डन के लिए ज्येष्ठ मास भी, बालक जिसका मुण्डन किया जाना हो उसकी अवस्था ५ वर्ष से अल्प हो और बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो उस समय मुण्डन निषिद्ध है। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक वय का हो तो माता के गर्भिणी होने पर भी मुण्डन करने में कोई दोष नहीं होगा। चन्द्रमा उच्च में या मित्र वर्ग में या अपने वर्ग में होते हुए त्रिकोण में हो तो दुष्ट तारा का दोष न होकर शुभफल होता है।

विवाह से पूर्व के कार्यों का मुहूर्त

सामान्य (मुण्डन के अतिरिक्त) क्षौर मुहूर्त

क्षौर-श्मश्रु कर्म (बाल तथा दाढ़ी बनवाने) के लिए,वार-तिथि-नक्षत्र जो मुण्डन के हेतु कहे हैं, वही प्रशस्त हैं। सूर्य,मङ्गल और शनि इन पापग्रहों के वार वर्जित हैं परन्तु ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मङ्गलवार तथा वैश्य और शूद्र के लिए शनिवार शुभ हैं। रात्रि में,बिना आसन के, संग्राम में,यात्रा के दिन,स्नान के पश्चात् शरीर में उबटन लगवाकर, भोजन करने के पश्चात् क्षौरकर्म (बाल,दाढ़ी,नख आदि का निकृन्तन) निषिद्ध कहा है।

विशेष-यज्ञ में, विवाह में, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय दाढ़ी-बाल-नख कटवाया जा सकता है। राजकार्य में नियुक्त व्यक्ति, रूपजीवी (नट,नर्तक, भाँड़, बहरूपिया आदि) किसी दिन किसी समय नख-बाल कटवा (बनवा) सकता है।

अक्षरारम्भमुहूर्तचक्र

तिथि	कुयोगादि रहित २।३।५।६।१०।११। १२ तिथियाँ शुभ हैं।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार तथा शुक्ल पक्ष शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी,आर्द्रा,पुनर्वसु,पुष्य,हस्त,चित्रा, स्वाती,अनुराधा,श्रवण और रेवती शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२लग्न और इन्हीं के नवांश उत्तम कहे गये हैं। लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३।६।११में पापग्रह शुभप्रद कहे गये हैं। बुध, गुरु, शुक्र स्वगृही लग्न में हों या लग्न में बली शुभग्रह हो।

जन्म से पाँचवें वर्ष में उत्तरायण में गणेश-लक्ष्मी, सरस्वती और विष्णु का पूजन करके शिशु से नूतनाक्षर लेखनारम्भ कराना चाहिए।

विद्यारम्भमुहूर्त

अक्षरों का सुपुष्ट ज्ञान हो जाने पर उत्तरायन में कुम्भार्क का एक मास का समय छोड़ कर शेष समय में अर्थात् सौर फाल्गुनमास छोड़कर शेष मासों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में, रवि-बुध-गुरु और शुक्रवारों में, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा,हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा और रेवती नक्षत्रों में और ऐसे लग्न में जिससे केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह हों सभी प्रकार की विद्याओं का प्रारम्भिक अध्ययन कराना चाहिए।

अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी आदि विद्याओं का आरम्भ ४।९।१४ तिथियों में, रवि, मंगल और शनिवारों में ज्येष्ठा, मघा, श्लेषा, तीनोंपूर्वा, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा नक्षत्रों में किया जाना शुभद होता है।

व्रतबन्ध-(उपनयन)काल ज्ञान

व्रतबन्ध (उपनयन) संस्कार के तीन भेद (१) नित्य (२) काम्य (३) गौण कहे गये हैं। श्रौत-स्मार्त कर्म साधन और द्विजत्व प्राप्ति के हेतु उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार किया जाता है। ब्राह्मण कुमारो का जन्म से ५वें सौरवर्ष मे ब्रह्मवर्चस की कामना से किया गया उपनयन काम्य, ८वें वर्ष मे नित्य तथा १६वें वर्ष मे गौण होता है। क्षत्रिय कुमारो का बल की कामना से ६ठवें वर्ष में किया जाने वाला उपनयन काम्य, ११वें वर्ष मे किया जाने वाला नित्य तथा २२वें वर्ष में गौण कहा गया है। वैश्य कुमारों का ८वें वर्ष में धन कामना से किया जाने वाला उपनयन काम्य, १२वें वर्ष में नित्य तथा २४वें वर्ष का उपनयन संस्कार गौण कहा जाता है। इसमें सौर वर्ष ही मान्य है।

उपनयन (व्रतबन्ध) संस्कार-मुहूर्त

अयन व मास	उत्तरायन में माघादि ६ मासो में हरिशयन से पूर्व अर्थात् आषाढ़ शुक्ल दशमी तिथि तक। चन्द्रमा, सूर्य और गुरु की शुद्धि होनी चाहिए।
पक्ष एवं तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियाँ प्रशस्त हैं। दिन का पूर्वाह्न उत्तम, मध्याह्न मध्यम तथा अपराह्न (दिन का तीसरा त्रिभाग) त्याज्य होता है।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ होते हैं, किन्तु यदि बुध अस्त हो तो उसके अस्त रहने तक बुधवार नहीं ग्रहण करना चाहिए। मङ्गलवार यद्यपि पापग्रह का वार होने से सबके लिए ग्राह्य नहीं है, परन्तु शाखाधिपति का वार होने से सामवेदियों के लिए मंगलवार अति प्रशस्त है।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती, इस प्रकार कुल २२नक्षत्र शुभ हैं, परन्तु ऋगवेदी और सामवेदी ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु त्याज्य है।
लग्न शुद्धि	२।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नों में, बुध बली हो तथा चन्द्र-तारा के बलवान (अनुकूल) होने पर, लग्न से केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह, ३।६में पापग्रह, २।३।७।१० में चन्द्रमा, ११वें में शुभाशुभ सभी ग्रह, सर्वशाखाधिप होने से लग्न में सूर्य, वृष-कर्क राशियों का चन्द्रमा, (अन्य राशियों का नहीं) उक्त सभी स्थितियाँ प्रशस्त कही गई हैं।
त्याज्य	गुरु-शुक्र का बाल-वृद्धास्त का समय, सिंहस्थ-मकरस्थ तथा वक्रातिचारी गुरु, दक्षिणायन, शनिवार, भद्राकरण, संक्रान्ति का दिन, रोगवाण, प्रदोष, गलग्रह अनध्याय लग्न से त्रिक् (६।८।१२) स्थानों में चन्द्र-गुरु शुक्र तथा लग्नेश की स्थिति, लग्न से १।५।८ स्थानों में पापग्रहों की स्थिति तथा १२वें स्थान में चन्द्र और शुक्र की स्थितियाँ व्रतबन्ध में नेष्ट होने से त्याज्य हैं।

विशेष-जन्ममास,जन्मतिथि,जन्मनक्षत्र और जन्मलग्न में भी ब्राह्मण के ज्येष्ठपुत्र का तथा क्षत्रिय और वैश्य के ज्येष्ठ पुत्र (प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र) को छोड़कर अन्य पुत्रों का व्रतबन्ध होने से व्रती विद्वान् होता है। इसके विपरीत में अशुभ होता है। गुरु-सूर्य-चन्द्र की शुद्धि न भी हो, गुरु-शुक्र बाल-वृद्ध अस्त हों, गुरु सिंहस्थ या मकरस्थ हो तो भी चैत्र मास में मीन राशि में जब तक सूर्य रहता है तब तक के समय में ब्राह्मण कुमारों का उपनयन संस्कार अतीव प्रशस्त कहा है।

रोगबाण, प्रदोष, गलग्रह और अनध्याय-ज्ञान

रोगबाण	गोचर भ्रमण-वश सूर्य जब-जब किसी भी राशि के ९वें, १८वें तथा २७वें अंशों पर भ्रमण करेगा तब-तब रोगबाण होगा।
प्रदोष	प्रदोष दो प्रकार के हैं (१) नैत्यिक,(२) नैमित्तिक। प्रतिदिन सूर्यास्त के पश्चात् रात का आरम्भिक समय नैत्यिक प्रदोष होता है, नैमित्तिक तिथि भेद से इस प्रकार कहा गया है- १-द्वादशी तिथि में आधी रात से पहले ही त्रयोदशी लग जाय। २- षष्ठी तिथि में डेढ़ प्रहर रात से पहले ही सप्तमी लग जाय तथा ३-तृतीया तिथि में एक पहर रात से पहले चतुर्थी लग जाय तो यह तीनों प्रदोष कहे जाते हैं। यह तीनों नैमित्तिक प्रदोष हैं।
गलग्रह	दोनों पक्षों में १३।१४।१५।३०।१।७। ८।९।४ यह ८ तिथियाँ गलग्रह हैं। (नोट-१५पूर्णिमा तथा ३० अमावस्या सूचक हैं)
अनध्याय	आषाढ़ शुक्ल पक्ष की १०, ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की २, पौषशुक्ल पक्ष की ११ और माघ शुक्ल पक्ष की १२ तिथि तथा प्रत्येक मास के दोनों पक्षों की १।८।१४ तिथियाँ (१५) पूर्णिमा एवं (३०) अमावस्या और संक्रान्ति के दिन उपनयन में अनध्याय होता है।

कन्यावरण मुहूर्त

शुक्ल प्रतिपदा (१),रिक्ता (४।९। १४) और अमावस्या (३०) के अतिरिक्त तिथियों में, शुभवारों में तथा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, मूल, स्वाती, अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों में वस्त्रादि अलंकार एवं फल-पुष्पादि से कन्या का वरण करना चाहिए।

वरवरणमुहूर्त

कन्यावरणोक्त तिथि-वारों में वैवाहिक नक्षत्रों तथा कृत्तिका और तीनों पूर्वा नक्षत्रों में कन्यापक्ष का ब्राह्मण (पुरोहित) अथवा कन्या का सहोदर (भाई) माङ्गलिक उपकरणों के साथ वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, द्रव्य इत्यादि सामग्रियों से वर का वरण करे, अर्थात् वर को तिलक चढ़ाये।

।।स्त्री-पुरुष (कन्या-वर) का विवाह वर्ष।।

जन्म से समसंख्यक वर्षों में कन्या का विवाह होना पुत्र-पौत्र देने वाला तथा पुरुष का विवाह विषम वर्षों में होना श्रीप्रद (धनप्रद) कहा है, इसके विपरीत अर्थात् विषम वर्षों में कन्या का और सम वर्षों में पुरुष का विवाह होना अशुभ कहा है। अत: स्त्री (कन्या) का सम वर्षों में और पुरुष का (वर का) विषम वर्षों में ही विवाह किया जाना चाहिए।

।।विवाह में जन्ममासादि का निषेध।।

जन्म के मास में, जन्म की तिथि में और जन्म के नक्षत्र में प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान (पुत्र या पुत्री जो भी हो) का विवाह शुभ नहीं होता है। प्रथम गर्भ के अतिरिक्त अन्य गर्भ से उत्पन्न सन्तति का विवाह जन्ममास, जन्मतिथि और जन्म नक्षत्र में भी होना शुभ कहा है।

।।जन्ममासादि का परिहार।।

अति आवश्यक होने पर ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या का विवाह जन्म के मास-तिथि-नक्षत्र में ही करना हो तो विपरीतार्ध में अर्थात् पूर्वार्ध में जन्म हो तो उत्तरार्ध में और यदि उत्तरार्द्ध में जन्म हो तो पूर्वार्ध में विवाह करना चाहिए।

।।विवाह में ज्येष्ठमास का निषेध और परिहार।।

वर-कन्या और मास इनमें से १ज्येष्ठ उत्तम २ज्येष्ठ मध्यम और३ज्येष्ठ अधम(अशुभ)कहा है। अत: ३ज्येष्ठ विवाह में कदापि शुभ नहीं हैं। किसी आचार्य का मत है कि जब तक कृत्तिका में सूर्य रहे तभी तक ज्येष्ठमास त्याज्य है। किसीका मत है कि यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा न हो तो ज्येष्ठ मास का दोष नहीं होता है। माता के प्रथम गर्भ से उत्पन्न पुत्र-कन्या ही ज्येष्ठ होते हैं,त्रिज्येष्ठ में इन्हीं की गणना होती है। अन्य गर्भोत्पन्नों की नहीं। किसी आचार्य ने ज्येष्ठ मास की भाँति ही मार्गशीर्ष (अगहन) मास में भी ज्येष्ठ संतानों के विवाहादि का निषेध किया है।

समानगोत्र प्रवर में विवाह करने को महापातक कहा है।

१-समानगोत्र और समान प्रवर की कन्या के साथ विवाह कर उससे उत्पन्न सन्तान की संज्ञा चाण्डाल होती है। ऐसा आपस्तम्ब का कथन है। २-यमस्मृति के अनुसार तीन प्रकार की सन्तानों को चाण्डाल की श्रेणी में गिनाया गया है।

(१) जो व्यक्ति संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् संन्यास का त्यागकर गृहस्थ बनकर संतान उत्पन्न करता है, तो वह सन्तान चाण्डाल होती है।

(२) ब्राह्मणी में शूद्र द्वारा उत्पन्न सन्तान चाण्डाल है।

(३) सगोत्रा से विवाहकर उत्पन्न की गई सन्तान भी चाण्डाल कही गई है।

एक गोत्र और समान प्रवर की तथा मातृगोत्र (अर्थात् नाना के गोत्र) की कन्या से विवाह न करे, क्योंकि वह कन्या भगिनी (बहन) के तुल्य होती है।

।।समानादि क्रिया करने हेतु समय का विचार।।

१-एक माता से उत्पन्न पुत्र और कन्या का एकदिन में (एक वर्ष में) समान क्रिया न करें। अर्थात् वर्ष भेद में करें तो दोष नहीं है। यह वृद्धमनु का वचन ज्योतिर्निबन्ध में उद्धृत है।

२-पुत्र के विवाह के पश्चात् तीन ऋतु (६मास) तक पुत्री का विवाह न करे, परन्तु यदि ६मास के पूर्व ही सम्वत्सर परिवर्तित हो जाय अर्थात् संवत् बदल जाय तो (जैसे फाल्गुन में पुत्र का विवाह करने के पश्चात वैशाख, ज्येष्ठ आदि मासों में) ६मास के भीतर भी कन्या का विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यदि दोनों भिन्न-भिन्न माताओं से उत्पन्न हों तो ६मास का कोई बन्धन नहीं है। कन्या के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह करना शुभप्रद होता है।

३- अपने कुल में तीन पुरुष (पीढ़ी) के भीतर पुत्र के विवाह के पश्चात् ६ मास तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए। कन्या या पुत्र के विवाह से ६ मास के भीतर किसी का उपनयन तथा मुण्डन नहीं करना चाहिए। उपनयन (व्रतबंध) से ६ मास के अन्तर्गत किसी का मुण्डन नहीं करना चाहिए। यह नियम संयुक्त परिवार वालों के लिए है। विभक्त हों तो उन्हें दोष नहीं है। ऐसा कश्यप का वचन है।

४- दो सहोदर भाइयों का दो सहोदरी कन्याओं से विवाह नहीं करना चाहिए।

५- एक वर को दो सहोदरी कन्यायें नहीं देनी चाहिए।

६- दो सहोदर भाइयों या बहनों का विवाह ६ मास के भीतर नहीं करना चाहिए, परन्तु यमल (जुड़वा) रूप में एक गर्भ से उत्पन्न दो भाइयों या दो बहनों का समान संस्कार, (मुण्डन, उपनयन अथवा विवाह) एक साथ एक ही वर्ष में, एक ही दिन और एक ही मण्डप में कर सकते हैं, इस में कोई दोष नहीं है।

७- पुत्रवधू- प्रवेश से ६मास तक कन्या का पतिगृह-गमन भी नहीं होना चाहिए, परंतु यदि वर्ष (संवत्) बदल जाय तो ६मास के भीतर भी शुभ होता है। अर्थात् यदि माघ या फाल्गुन में विवाह हो तो वैशाख मास में (६ मास के अन्तर्गत ही) उपनयन-मुण्डन हो सकते हैं। क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही संवत् बदल जाने से ६ मास का प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

एक घर में एक साथ दो शुभ कार्य करने हेतु व्यवस्था

एक गृह में एक साथ दो शुभ कार्य मङ्गलदायी नहीं होते हैं। एक शुभ कार्य करने के नौ दिन पश्चात् दूसरा शुभकार्य करना चाहिए,आवश्यक होने पर शुभ कार्योत्सव द्वारभेद अथवा आचार्यभेद से होना चाहिए। यह वसिष्ठ का वचन निबन्ध ग्रन्थों में द्रष्टव्य है।

सहोदरों का समान संस्कार और विवाह भी संकट में वर्षभेद से करना चाहिए। अथवा चार दिन या एक दिन के व्यवधान से करना चाहिए। अत्यन्त संकट में एक दिन में कर्ता के भेद से या मण्डपभेद से करना चाहिए। दो कर्ताओं के द्वारा एक लग्न में और एक घर में भी दो भिन्नोदरों का विवाह करना चाहिए।

एक साथ तीन मङ्गलकार्य करने हेतु व्यवस्था

एक उदर से उत्पन्न तीन सन्तानों (तीन सहोदरों) का अग्निकार्य (शुभकार्य अर्थात् विवाहोपनयनादि) नहीं करना चाहिए। यदि तीनों सहोदर न होकर भिन्नोदर हों तो [illegible] नहीं होगा, [illegible] भिन्नोदरों का तीन मङ्गलकार्य एक साथ किया जा सकता है। ऐसा शातातप ने कहा है।

विवाहनिश्चयोपरांत मरणाशौच होने पर विवाह समय निर्धारण

विवाह का निश्चय हो जाने के पश्चात् कन्या या वर के कुल में (तीन पुरुष अर्थात् तीन पीढ़ी के भीतर) किसी की मृत्यु हो जाये तो उसके एक मास के बाद विवाह किया जाना चाहिए। मेधातिथि आदि कितने आचार्यों का यह मत है कि आवश्यक में अशौच समाप्त हो जाने पर (अर्थात मृत व्यक्ति का श्राद्ध आदि कार्य बीत जाने पर) शान्ति करके एक मास के भीतर भी विवाह करना चाहिए।

सपिण्ड में किसी के मरण में एक मास का अशौच समझना चाहिए। पिता के मरने पर १ वर्ष, माता के मरने पर ६ मास, स्त्री के मरने पर ३ मास, भाई तथा पुत्र के मरने पर १॥ मास तक अशौच होता है। परन्तु दुर्भिक्ष में, राष्ट्रविप्लव की आशंका में, माता-पिता के मरने की आशंका में एवं कन्या की प्रौढ़ावस्था में प्रतिकूल का दोष नहीं होता, ऐसा योगी याज्ञवल्क्य ने कहा है।

मृत व्यक्ति का श्राद्धादि कार्य हो जाने पर विधिवत् विनायक शान्ति और कूष्माण्डी हवन द्वारा शान्ति करके विवाह करना चाहिए।

नान्दीश्राद्ध होने के पश्चात यदि रजोदोष तथा जनन-मरणजन्य सूतक आ पड़े तो भी कार्य का आरम्भ हो जाने से विवाह-उपनयनादि की समाप्ति पर्यन्त कार्य होते रहेंगे। कार्य में अवरोध नहीं होगा। विवाह, व्रत, यज्ञ, श्राद्ध, होम, पूजन और जप आरम्भ हो जाने पर सूतक नहीं होता, आरम्भ न होने पर ही सूतक होता है। ऐसा विष्णु का वचन है। प्रारम्भ के विषय में विष्णु ने ही कहा है कि- वरण से (वरणशब्द से मधुपर्क का ग्रहण करें) व्रत एवं यज्ञ में सङ्कल्प से, विवाहादि में नान्दीश्राद्ध से और श्राद्ध में पाक बनने से आरम्भ माना जाता है। रजोदोष और अशौच आदि की सम्भावना में नान्दीश्राद्ध का अपकर्ष कर करने में दिन की संख्यावधि- यज्ञ में २१ दिन, विवाह में १० दिन, उपनयन में ६ दिन तथा मुण्डन में ३ दिन पूर्व में नान्दीश्राद्ध का विधान है। उक्त दिनावधि बीत जाने पर पुन: नान्दीश्राद्ध सिद्ध है।

वर्णादि दोषों का परिहार

१-वर-कन्या के राशीश में मित्रता अथवा एकता होने से [illegible] योनिदोष, [illegible] का परिहार हो जाता है, ऐसा शौनक ने कहा है। २-बृहज्ज्योतिस्सार के अनुसार [illegible] ३-यदि वर-कन्या दोनों के राशीश में मैत्री हो, तो वर्ण, वर्ग, गण, योनि, [illegible] का दोष नहीं होता। ४- यदि वर-कन्या दोनों के नवांशेश में मैत्री हो [illegible] परस्पर मित्र हों तो दम्पति के मृत्यु की इच्छा से विवाह करना चाहिए। [illegible] में उल्लिखित है।

नाड़ी-दोष-परिहार

१- दम्पति (वर-कन्या) की एक ही राशि हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हो तो उनमें गुण-नाड़ी का विचार न करके विवाह करना चाहिए। २- [illegible] और नक्षत्र भिन्न हों अथवा एक ही नक्षत्र हो किन्तु राशियाँ भिन्न हों तो नाड़ी, नृदूर और ग्रहवैर का विचार न करें। ३-वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो अथवा एक नक्षत्र हो और राशियाँ भिन्न हों तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता इस प्रकार राम दैवज्ञ, गणपति आदि ने कहा है। एक-नक्षत्र के एक ही चरण वालों का सम्बन्ध विवाह नेष्ट कहा है। ४- रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, पुष्य, श्रवण, रेवती और उत्तरा भाद्रपदा में दोनों के जन्म नक्षत्र हों तो नाड़ीदोष नहीं होता। ऐसा ज्योतिर्निबन्ध में उद्धृत है।

५- विवाह कुतूहल ग्रन्थ के अनुसार बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक ही ग्रह दोनों (वर-कन्या) के राशीश हों तो नाड़ी दोष नहीं होता। ६- यदि नाड़ी दोष हो तथा उसका परिहार न होता हो और विशेष परिस्थिति में परस्पर विवाह करना आवश्यक हो तो विधिवत् महामृत्युंजय मंत्र का जप, स्वर्णदान, गोदान, अन्नदान तथा वस्त्रदान, दक्षिणा आदि से ब्राह्मण को तृप्त (संतुष्ट) कर विवाह करना कल्याणकारी होता है।

कुजदोष (मङ्गलीदोष) के परिहार

१.मङ्गली कारक ग्रह पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो मङ्गली दोष निरस्त हो जाता है। २.वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में (लग्न कुण्डली और चन्द्र कुण्डली दोनों में देखने पर) पूर्वोक्त मङ्गली दोषोत्पादक पाँचों स्थानों में कहीं भी पाप ग्रह समान संख्या में बैठे हों तो मङ्गली दोष का दुष्प्रभाव नहीं होता है। ३. वर-कन्या दोनों के राशीश में मित्रता हो या दोनों का एक ही गण हो अथवा दोनों के कूटों का गुण मिलान करने पर गुणों की अधिकता हो तो इन स्थितियों में मङ्गली दोष निष्प्रभावी हो जाता है। ४.कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रलग्न से सप्तम अपने स्वामी (शुभग्रह या पापग्रह जो भी हो) से युक्त हो अथवा किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो उस कन्या को वैधव्य-सन्तानाभाव और विषाङ्गना दोष नहीं होता अर्थात् इन तीनों दोषों का नाश होता है।

सद्भकूट और दुष्टभकूट में गुणों का विभाजन

१- वर्ण, २- वश्य, ३- तारा, ४- योनि, ५- ग्रहमैत्री, ६- गणमैत्री, ७- भकूट और ८- नाड़ी, यह आठ प्रकार के कूट हैं, जिनके क्रमशः एक-एक अधिकगुण होते हैं अर्थात् कुल ३६ गुण होते हैं, जिनमें अर्धाधिक (१८ से अधिक) वर-कन्या के गुणों का योग प्राप्त होने पर दोनों का परस्पर विवाह किया जाता है, आधे से अल्प में नहीं, किन्तु ऐसा भी प्रमाण है कि वर-कन्या का भकूट शुद्ध हो तो १६ गुण निन्दित, उससे ऊपर २० तक मध्यम, २० से ऊपर ३० तक उत्तम और उससे ऊपर ३६ तक उत्तमोत्तम होता है। यदि दुष्टभकूट हो तो २० तक निन्दित, उससे ऊपर २५ तक मध्यम, उससे ऊपर ३० तक उत्तम तथा ३० से ऊपर उत्तमोत्तम होता है।

विवाह से पूर्व के कार्यों का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा प्रशस्त हैं।
वार	रवि से शनि पर्यन्त सभी वार ग्राह्य हैं।
नक्षत्र	कृत्तिका,रोहिणी,मृगशिरा, मघा, ३ पूर्वा, ३उत्तरा, हस्त,स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती प्रशस्त हैं।
त्याज्य	चित्रा, विशाखा, शतभिषा, अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा और ज्येष्ठा नक्षत्र तथा भद्राकरण त्याज्य हैं। विवाह पूर्व ३।६।९ दिन त्याज्य है।

इन विवाह से पूर्व के कार्यों के मुहूर्त का तात्पर्य कूटने, पीसने,गीत गाने,कलश,चित्रकारी,वेदी,मण्डप,तोपने, दलने मृदाहरण (मागरमाटी),हरिद्रा लेपन, कङ्कण-बन्धन आदि के मुहूर्त से है। चन्द्रबल विचारणीय नहीं है।

विशेष- उपरोक्त प्रशस्त और त्याज्य नक्षत्र दैवज्ञ मनोहर के अनुसार दिए गये हैं। राम दैवज्ञादि ने उक्त कार्यों को वैवाहिक नक्षत्रों में करने का निर्देश किया है। बृहस्पति, वशिष्ठ, नारद, श्रीपति, खण्डेश्वरादि ने विवाह के लिए मात्र ११ नक्षत्रों को ग्रहण किया है, किन्तु पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार तीनों उत्तरा नक्षत्रों से तीन-तीन नक्षत्र ग्रहण करने से अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा को लेकर १५ नक्षत्र संख्या हो जा रही है, जिनका चलन मिथिला में है। प्राय: सभी स्थानों में ११ नक्षत्र ही प्रचलित हैं।

विवाह-मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १भी
वार	सभी सातों वार
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा ३, हस्त, स्वाती,अनुराधा, मूल तथा रेवती ११ नक्षत्र प्रशस्त हैं। पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार अश्विनी,चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा कुल नक्षत्र ग्राह्य हैं। किन्तु इन १५ नक्षत्रों का चलन केवल मिथिला में है। अन्यत्र उपरोक्त ११ नक्षत्र ही विवाह के लिए ग्रहण की जाती हैं।
वर्ज्य	कृष्ण १३ से चन्द्रक्षय और भद्रा वर्जित हैं।
विवरण	मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर और कुम्भ के सूर्य में विवाह होता है। मेष के सूर्य में [illegible] में, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में तथा मकर के सूर्य में पौष में भी विवाह शुभ होता [illegible] देवशयन वर्जित तथा उत्तरायन विशेष शुभ [illegible]

मण्डपोद्वासन (मण्डप-विसर्जन) मुहूर्त

विवाह के दिन से २,४ आदि सम दिनों में [illegible] छठवां दिन छोड़कर तथा विषम दिनों में ५वें, [illegible] दिन में शुभ नक्षत्रों और भद्रा रहित शुभवा[illegible] मण्डपोद्वासन करना शुभ होता है।

नष्ट वस्तु के लाभालाभ ज्ञानार्थ सुलोचनादि संज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दिशा	लाभालाभ	तारा	स्वरूप
अश्विनी	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	भगाकार
कृत्तिका	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	६	छुरिकाकृति
रोहिणी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	५	शकटाकार
मृगशिरा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	३	मृगमुख
आर्द्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मणिसदृश
पुनर्वसु	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	४	गृहसदृश
पुष्य	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३	बाणाकार
श्लेषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	चक्राकार
मघा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	५	गृहाकार
पू०फाल्गुनी	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	मंचाकार
उ०फाल्गुनी	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	खाट-आकार
हस्त	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	५	हस्ताकार
चित्रा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	१	मौक्तिकाकार
स्वाती	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	१	प्रवालाकार
विशाखा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	तोरणवत्
अनुराधा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	४	मणिसदृश
ज्येष्ठा	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	३	कुण्डलाकार
मूल	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पूर्वाषाढ़	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	२	गजदन्तवत्
उत्तराषाढ़	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	२	मञ्चतुल्य
श्रवण	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	३	विमानसदृश
धनिष्ठा	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	४	मृदङ्गाकार
शतभिषा	मन्द	दक्षिण	यत्न से लाभ	१००	वर्तुलाकार
पू०भाद्रपद	मध्य	पश्चिम	दूर सुनाई देना	२	मञ्चकाकार
उ०भाद्रपद	सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	यमलाकार
रेवती	अन्ध	पूर्व	शीघ्र लाभ	३२	मृदङ्गाकार

नक्षत्रों तथा नक्षत्रचरणों के अनुसार कष्ट का विचार

ज्वरादि रोग होने पर नक्षत्र चरणवश दिन संख्या तथा जपादि विधान

नक्षत्र	दि०सं०	१चरण	२चरण	३चरण	४चरण	दान वस्तु	जपार्थ मंत्र
अश्विनी	दि०९	९	११	१०	२	ब्रा० भोजनदान	मृत्युञ्जयमंत्र
भरणी	११	०	८०	४०	११	गो,अन्न आदि दान	यमायत्वाङ्गिरस्वते०
कृत्तिका	९	९	११	१६	२८	स्वर्णदान	अग्निर्मूर्द्धा दिव:०
रोहिणी	७	३	९	१८	३०	घृतदान	ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं०
मृगशिरा	३०	९	५	७	१०	तिलदान	इमं देवा ऽसपत्न०
आर्द्रा	मृत्यु	०	१८	०	०	गोदान	नमस्ते रुद्र०
पुनर्वसु	७	६	१४	२	२१	पीतलदान	अदितिर्द्यौ०
पुष्य	७	७	७	१०	२१	तिल, अन्नदान	बृहस्पते अति०
श्लेषा	मृत्यु	०	०	४१	०	गाय, बकरीदान	नमोऽस्तु सर्प्पं०
मघा	२०	१५	७	१७	२०	वस्त्र, घृतदान	पितृभ्य: स्वधायि०
पूर्वा फा०	मृत्यु	०	१५	०	३०	भोजनदान	भगप्रणेतर्भग०
उ० फा०	७	७	१४	७	६०	अन्नदान	अर्यमणम्बृहस्पति०
हस्त	१५	१५	१७	१५	०	तेलदान	उदुत्यञ्जातवेदस०
चित्रा	११	११	९	९	१६	दूधदान	त्वष्टातुरीयेऽअद्भुत०
स्वाती	मृत्यु	६०	१७	३०	०	गोघृतदान	वायुरग्रेगायज्ञप्री:०
विशाखा	१५	१५	०	४	१३	स्वर्णदान+गोदान	इन्द्राग्नी ऽअव्यथमा०
अनुराधा	स्थिर	६०	१२	३६	३०	गोघृतदान	नमो मित्रस्यव्वरुणस्य०
ज्येष्ठा	मृत्यु	५९	९	६	४	तिलदान	त्रातारमिन्द्रमवितार०
मूल	९	०	९	१५	६	चाँदी का पात्रदान	मातेवपुत्रम्पृथिवी०
पूर्वाषाढ़	मृत्यु	०	१५	२४	१०	गोदान+मोतीदान	आपोऽ अस्मान्मातर:०
उत्तराषाढ़	३०	३०	२४	२६	१६	भोजनदान	विश्वेदेवा: शृणुतेम०
श्रवण	११	६०	२४	६	९	श्रीफलदान	विष्णोरराटमसि०
धनिष्ठा	१५	१५	४	२०	२१	अश्वदान+अन्नदान	वसो: पवित्रमसि०
शतभिषा	११	०	४५	३	२२	भोजनदान+अन्नदान	वरुणस्योत्तम्भन०
पूर्वाभाद्र०	मृत्यु	०	१२	२१	१९	भोजनदान	अजैकचरण०
उत्तराभाद्र०	७	१०	३	९	१५	अन्नदान	अहिर्बुध्न्य०
रेवती	स्थिर	१८	१०	९	२०	वृषदान	पूषन्तवव्रते०

नक्षत्रों के स्वामी, शुभाशुभ आदि विशेष संज्ञा चक्र

नक्षत्रों के नाम	स्वामी	शुभाशुभ	जाति	संज्ञा	मुख	निम्न घटी के उपरान्त नेष्ट	दोहद
अश्विनी	अश्विनी कुमार	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिर्यक	५०	तिल, तण्डुल
भरणी	यम	नाशक	चाण्डाल	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	साक्षत उड़द
कृत्तिका	अग्नि	अशुभ	ब्राह्मण	मिश्र,साधारण	नीचे	३०	उड़द
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शूद्र	ध्रुव,स्थिर	ऊपर	४०	गव्य
मृगशिरा	चन्द्र	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	१४	गोघृत
आर्द्रा	शिव	अशुभ	क्रूरजाति	तीक्ष्ण,दारुण	ऊपर	२१	दुग्ध
पुनर्वसु	अदिति	शुभ	वैश्य	चर,चल	तिरछा	३०	हरिण मांस
पुष्य	गुरु	शुभ	क्षत्रिय	क्षिप्र, लघु	ऊपर	२०	मृगरक्त
आश्लेषा	सर्प	अशुभ	चाण्डाल	तीक्ष्ण,दारुण	नीचे	३२	पायस
मघा	पितर	शोकप्रद	शूद्र	उग्र, क्रूर	नीचे	३०	चाषमांस
पूर्वा फाल्गुनी	भग	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२०	मृगमांस
उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	१८	शशकमांस
हस्त	सूर्य	शुभ	वैश्य	लघु, क्षिप्र	तिरछा	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभ	कृषक	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	प्रियंगु
स्वाती	वायु	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	तिरछा	१४	अपूप
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभ	चाण्डाल	मिश्र,साधारण	नीचे	१४	नानापक्षीमांस
अनुराधा	मित्र	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	१०	सत्फल
ज्येष्ठा	इन्द्र	शुभ	कृषक	तीक्ष्ण,दारुण	तिरछा	१४	कूर्ममांस
मूल	राक्षस	क्षय	क्रूरजाति	तीक्ष्ण,दारुण	नीचे	५६	सारिकामांस
पूर्वाषाढ़	जल	धनहानि	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	२४	गोधिकामांस
उत्तराषाढ़	विश्वेदेवा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२०	शाल्वमांस
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डाल	चर, चल	ऊपर	१०	कृसरान्न
धनिष्ठा	वसु	शुभ	कृषक	चर, चल	ऊपर	१०	मुद्गमोदक
शतभिषा	वरुण	शुभ	क्रूरजाति	चर, चल	ऊपर	१८	जवपिष्ट
पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद	अशुभ	ब्राह्मण	उग्र, क्रूर	नीचे	१६	मत्स्यान्न
उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	शुभ	क्षत्रिय	ध्रुव, स्थिर	ऊपर	२४	चित्रितान्न
रेवती	पूषा	शुभ	शूद्र	मृदु, मैत्र	तिरछा	२०	दधि-भात

।। पुरुषों की जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	रिपु ६	जाया ७	मृत्यु ८	भाग्य ९	कर्म १०	आय ११	व्यय १२
सूर्य	शौर्यवान्, नीरोग	वक्र, रोगी, अल्पधनी	पराक्रमी, सुखी	दुःखी उद्विग्न	सुखहीन, निर्धन	शत्रुजेता, बलवान	खल, स्त्रीजित्	नेत्ररोगी, अल्पायु	पुत्रवान्, सुखभोगी	सुखी, शौर्यवान्	बहुत धनी	व्यङ्ग, पतित
चन्द्र	रूपवान्, नेत्ररोगी	कुटुम्बवान्, धनी	सात्विक, हिंस्र	सुशील सुखी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु, बहुशत्रु	ईर्ष्यालु, घमंडी	रोगयुक्त, सुखी	भाग्यवान्, धनी	धर्मार्थी प्रतापी	विख्यात, लाभवान्	अङ्गहीन, हिंस्र
मङ्गल	क्रूर, व्रणी	क्रोधी, कुटिल	पराक्रमी, बुद्धिमान	पीड़ित, दुःखी	पुत्रहीन, दरिद्र	सुखी, शत्रुजेता	झगड़ालू, स्त्रीजित	अल्पपुत्र, रोगी	पापरत, दुर्मनोरथी	सुखी, शौर्यवान्	बहुत धनी, सुखी	जातिभ्रष्ट, विधुर
बुध	सुखी, विद्वान्	धनी, गुणी	दुर्जन, शत्रुजेता	पंडित, सुखी	मंत्री, पुत्रहीन	शीलरहित, शत्रुरहित	धर्मज्ञ, यशस्वी	सद्गुणी, धनी	पुत्रवान्, सुखी	सुखी, पराक्रमी	यशस्वी, धनी	अज्ञ, पतित
गुरु	विद्वान्, दीर्घायु	वाग्मी, धनी	पापी, कृपण	धनी, सुखी	बुद्धिमान्, प्रतापी	कामी, अशुभ	पिता से अधिकसुखी	नीच	पुत्रवान्, तपस्वी	सत्कर्मवान्, धनी	लाभवान्, पुत्रवान्	दुष्ट, दरिद्र
शुक्र	कामी, सुखी	सुवक्ता, धनी	पापी, कृपण	बुद्धिमान्, सुखी	सुखी, बुद्धिमान्	रोगी, शत्रुहीन	कलह-प्रिय	दीर्घायु, नीच	पुत्रवान्, धनी, सुखी	सन्मानयुक्त, सद्धनी	लाभवान्, बुद्धिमान्	दुष्ट, बन्धुहीन
शनि	दंड,अस्वस्थ रोगी	वक्र, रोगी,	बुद्धिमान् पराक्रमी	दुःखी	दरिद्र, सन्तानहीन	सुखी, शत्रुजेता	दुःखी, स्त्रीजित	अल्पायु, नेत्र-रोगी	विकल, दीनतायुक्त	सुखी, पराक्रमी	बहुत धनी	पतित, दुःखी
राहु	सुधर्मी, रोगी	अधनी, विरोधी	विक्रमी बुद्धिमान्	मातृसुखहीन, दुःखी	अभागा, दुर्बुद्धि	श्रीमान्, बलवान्	प्रमेहरोगी, अपवित्र	रोगी, गतायु	पापी, अभागा	अभिमानी, सुखी	पुत्रहीन, धनी, विख्यात	कष्टयुक्त, पतित
केतु	कामी, क्षीणायु	कामी	शौर्यवान् पराक्रमी	मातृसुखहीन, दुःखी	पुत्रहीन, मूर्ख	धनी, बली	प्रमेहरोगी, दाम्हा	कष्टयुक्त, व्रणी	पापकर्मी, भाग्यहीन	श्रेष्ठ, पितृहीन	धनवान्	दुर्जन, पतित
गुलिक	मन्द-बुद्धि, रोगी	क्रोधी, विषयी	अभिमानी, शोकरहित	पापकर्मी, रोगी	अल्पसुत, अनायु	विनोदी, रिपुहा	कुदार, कृतघ्न	दुःखी, दरिद्र	पापरत, निर्दयी	सुखयुक्त, दानहीन	सुभग, पुत्रहीन	नीचरत, हीनाङ्ग

।। स्त्रियों की कुण्डली में भावस्थ ग्रहों का फल ।।

ग्रह	तनु१	धन २	सहज ३	सुख ४	सुत ५	शत्रु ६	पति ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	विधवा नष्टांध	दुःखार्ता दरिद्रा	धनिनी पुत्रिणी	दरिद्रा पीड़िता	नष्टात्मजा	सुखयुता धनाढ्या	समस्त सुखों से हीना	विधवा दुःखार्ता	धन, धर्मान्विता	सुकर्मरता	सुलाभा पुत्रान्विता	विधवा रोगिणी
चन्द्र	अल्पायुर्या	बहुधन-पुत्रान्विता	धनी सुखी	सुभगा अर्थयुक्ता	सुपुत्रा सुखयुक्ता	रोगिणी विधवा	सुन्दर शरीर वाली पतिप्रिया	रोगयुक्ता कुनेत्रा	पुत्रान्विता सुखयुक्ता	धन धर्मयुक्ता	भव्या विधिज्ञा	हीनाङ्गी व्ययशीला
भौम	विधवा दुःखिता	बन्ध्या रोगिणी	भ्रातृहीना	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसन्तता	रोगादिरहिता	विधवा कुलटा	रोगार्ता विधर्मा	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ-लाभा	खला रुगार्ता
बुध	[illegible]	धनाढ्या सती	पुत्रवती धनाढ्या	सुखी गृहान्विता	बुद्धिमती कान्तिमती	आयुहीना क्रोधयुक्ता	पतिव्रता विदुषी	कृतघ्ना भययुक्ता	सुभोगा सुधर्मा	सत्कर्मबुद्धि युता	सुलाभा पतिव्रता	कृशाङ्गी सुपुत्रा
गुरु	[illegible]	[illegible]	सहजान्विता	धनिनी सुखयुक्ता	साध्वी सुभगा	बहुआपदा सत्यहन्त्री	सौभाग्यवती यशस्विनी	विशीला रोगिणी	पुत्रवती कृतज्ञा	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुरूपा	सुव्यया रुग्णा
शुक्र	सुखयुक्ता पतिव्रता	धनयुक्ता सुतान्विता	धनाढ्या परहंत्री	यशस्विनी सुखान्विता	पुत्रयुक्ता सुखसम्पन्ना	सुखहीना दरिद्रा	पतिप्रिया शास्त्ररता	प्रमत्ता सुखहीना	सुभगा धर्मपरायणा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्र-धन लाभ युक्ता	सद्व्यया दुःखार्ता
शनि	बन्ध्या दरिद्रा	दुःखयुक्ता धनहीना	सुभगा सुदक्षा	विपुत्रा सुखहीना	विपुत्रा सुखहीना	भाग्ययुक्ता गुणसम्पन्ना	विधवा सरोगा	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या शोकयुक्ता	पापरता सधना	अपुत्रा सुलाभा	रोगार्ता मूढा
राहु	पुत्रहीना दुःखार्ता	दरिद्रा दुःखार्ता	रोगिणी धनवती	रोगार्ता मातृसुखहीना	सुतार्थहीना	रोगहीना धनयुक्ता	दुःखिता विधवा	विधवा दुःखयुक्ता	बन्ध्या शोकार्ता	कुकर्मरता	निरोगी सुभगा	खला सरोगा
केतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

चैत्रशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ९ चैत्र से २२ तिथि तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक ३० मार्च से १२ अप्रैल तक सन् २०२५ ई.।

मीन के सूर्य खरमास है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसंतऋतु।।

दि.मा	घ.प.	तिथि	वार						नक्षत्र						योग						करण						योग
३०	३३	१	र	२०	५३	दि	२	१४	रेवती	३०	५३	सा	६	१४	ऐन्द्र	३४	२७	रा	७	४०	बव	२०	५३	वा	४७	५७	प्रवर्द्धमान
३०	३७	२	चं	१४	५४	दि	११	५१	अश्विनी	२६	४२	सा	४	३४	वैधृति	२६	३८	सा	४	३२	कौ	१४	५४	तै	४१	४४	राक्षस
३०	४०	३	मं	८	५४	दि	९	२६	भरणी	२२	३७	दि	२	५५	विष्कुम्भ	१८	५७	दि	१	२७	गर	८	५४	व	३६	१	मुसल
३०	४४	४	बु	३/५४	८/३४	प्रा	७/४	६/५६	कृत्तिका	१८	४६	दि	१	२१	प्रीति	११	२४	दि	१०	२५	भ	३	८	बव	३०/५७	२५/४२	सिद्धि
३०	४८	६	गु	५२	५०	रा	२	५८	रोहिणी	१५	२१	दि	११	५८	आयुष्मा.	४/५३	१२/१८	प्रा	७/४	३१/५०	कौ	२५	१६	तै	५२	५०	उत्पात
३०	५१	७	शु	४८	४८	रा	१	२१	मृगशिर	१२	३६	दि	१०	५२	शोभन	५१	३१	रा	२	२६	गर	२०	४९	व	४८	४८	मानस
३०	५५	८	श	४५	४०	रा	१२	५	आर्द्रा	१०	४४	दि	१०	७	अतिगण्ड	४६	१६	रा	१२	१९	भ	१७	१४	बव	४५	४०	मुद्गर
३०	५९	९	र	४३	३७	रा	११	१५	पुनर्वसु	९	४४	दि	९	४२	सुकर्मा	४१	५१	रा	१०	३२	वा	१४	३८	कौ	४३	३७	ध्वज
३१	२	१०	चं	४२	४७	रा	१०	५५	पुष्य	९	५५	दि	९	४६	धृति	३८	२५	रा	९	१०	तै	१३	१२	गर	४२	४७	धाता
३१	६	११	मं	४३	१३	रा	११	४	श्लेषा	११	१८	दि	१०	१८	शूल	३६	०	रा	८	११	व	१३	०	भ	४३	१३	आनंद
३१	९	१२	बु	४५	३	रा	११	४८	मघा	१३	५९	दि	११	२२	गण्ड	३४	३८	रा	७	३७	बव	१४	८	वा	४५	३	चर
३१	१२	१३	गु	४७	५६	रा	१२	५५	पू.फा.	१७	५२	दि	१२	५४	वृद्धि	३४	७	रा	७	२४	कौ	१६	२९	तै	४७	५६	गद
३१	१७	१४	शु	५१	५८	रा	२	३२	उ.फा.	२२	५१	दि	२	५३	ध्रुव	३४	३०	रा	७	३३	गर	१९	५७	व	५१	५८	सिद्धि
३१	२१	१५	श	५६	४७	रा	४	२७	हस्त	२८	४२	सा	५	१३	व्याघात	३५	३१	रा	७	५६	भ	२४	२३	बव	५६	४७	मृत्यु

तिथि	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. ±	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	३०	१६	२९	१६	१७	९	मेष	३०।५३	५	५३	६	७	११	१५	१५	२५	५९	१६	३	४५	+	३	७	२१
२	३१	१७	१	१७	१८	१०			५	५३	६	७	११	१६	१४	४२	५९	१४	४	९	+	२	८	३०
३	अप्रै.	१८	२	१८	१९	११	वृष	३६।३९	५	५२	६	८	११	१७	१३	५७	५९	१२	४	३२	+	२	९	४१
४	२	१९	३	१९	२०	१२			५	५१	६	९	११	१८	१३	९	५९	९	४	५५	+	२	१०	५०
६	३	२०	४	२०	२१	१३	मिथुन	४३।५९	५	५०	६	१०	११	१९	१२	१९	५९	८	५	१८	+	१	११	५६
७	४	२१	५	२१	२२	१४			५	५०	६	१०	११	२०	११	२७	५९	४	५	४१	+	१	१२	५५
८	५	२२	६	२२	२३	१५	कर्क	५४।५९	५	४९	६	११	११	२१	१०	३१	५९	३	६	४	+	१	१	४६
९	६	२३	७	२३	२४	१६			५	४८	६	१२	११	२२	९	३५	५९	०	६	२६	+	१	२	२९
१०	७	२४	८	२४	२५	१७			५	४८	६	१२	११	२३	८	३५	५८	५७	६	४९	+	१	३	६
११	८	२५	९	२५	२६	१८	सिंह	११।१८	५	४७	६	१३	११	२४	७	३२	५८	५५	७	१२	+	०	३	३९
१२	९	२६	१०	२६	२७	१९			५	४६	६	१४	११	२५	६	२८	५८	५३	७	३४	-	०	४	८
१३	१०	२७	११	२७	२८	२०	कन्या	३४।७	५	४५	६	१५	११	२६	५	२२	५८	५१	७	५६	-	०	४	३६
१४	११	२८	१२	२८	२९	२१			५	४५	६	१५	११	२७	४	१३	५८	४८	८	१८	-	०	५	४
१५	१२	२९	१३	२९	३०	२२			५	४४	६	१६	११	२८	३	२	५८	४६	८	४०	-	१	५	३३

- ◡ चन्द्रदर्शन। दक्षिणशृंग दुर्भिक्ष। मु.३० सामान्य। मेषराशि (रा.६।१४)। चान्द्रसंवत्सरवसंतनवरात्रारंभ। कलशस्थापन [illegible] ❶
- मु.सव्वाल १०हि.१४४६। ईद उल फितर(ईद)। मत्स्यावतार(अपराह्न)। द्वितीया में ब्रह्मचारिणीदेवीदर्शन। ⊙रेवती में [illegible]। यायीजययोग सा.४।३४ से।
- भ.(रा.८।१६ से) (स्वर्ग)। अप्रैल ४। वृषराशि(रा.८।३२)। मन्वादि ३। अङ्गारक वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। श्रीगणेशदमनकोत्सव। सौभाग्यसुन्दरी व्रत। गनगौर व्रत (राज.)। [illegible] पूजन। ❷
- भ. प्रा.७।६ तक (स्वर्ग)। कल्पादि ५। श्रीरामराज्यमहोत्सव(ल.४)। श्री ५। लक्ष्मी पूजन। कुष्माण्डादेवी दर्शन। [illegible] स्कन्दमातादर्शन। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग [illegible]
- मिथुनराशि(रा.११।२६)। श्रीस्कन्ददमनोकोत्सव। श्रीसूर्यषष्ठी ६व्रत (बिहार)। अशोकषष्ठी(बङ्गाल)। कात्यायनीदेवी दर्शन। यमुना छठ (नेपाल)। रवियोगयमघंटयोग दि.११।०८ से।
- भ.(रा.१।२१ से (स्वर्ग)। श्रीभास्करस्यदमनकपूजा। श्रीअन्नपूर्णापरिक्रमारम्भ ४८।४८ (रा.१।२१ से)। ओलीप्रारंभ (जैन)। कालरात्रिदेवी दर्शन। रवियोग दि.१०।०२ तक।
- भ.(दि.१२।४३) तक (स्वर्ग) कर्कराशि (रा.शे.३।४९)। श्रीदुर्गाष्टमीव्रत। महाष्टमी व्रत। व्रत ८। तारा८। श्रीभवानी उत्पत्ति। महागौरीदर्शन। महानिशापूजा। निशीथव्यापिनि अष्टमी में ❸
- अष्टमी व्रत पारण। आज पुनर्वसुयोग से प्रशस्त श्रीरामनवमी व्रत सबका। रामावतार। मध्याह्न श्रीरामजन्म महोत्सव(ल.४)। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि दर्शन। महानवमी ९व्रत। दुर्गानवमी ९। महाबलिदान। ❹
- धर्मराजदशमी। सम्पूर्ण प्रतिपदा से नवमीतिथि तक व्रतार्थीयों का नवरात्रव्रतपारण। रवियोगायमम्मन्दिन। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।४६ तक।
- भ.(दि.१०।५९) से रा.११।४ तक (मृत्यु)। सिंहराशि (दि.१०।१८)। कामदा ११ एकादशी व्रत सबका। श्रीविष्णुदोलोत्सव। [illegible]
- श्रीविष्णुदमनकोत्सव। मदनद्वादशी। वामनद्वादशी। ❷ सरहुल (बिहार)। चन्द्रघन्टादेवी दर्शन। [illegible]
- कन्याराशि (रा.७।२४)। प्रदोष १३व्रत। श्रीअनङ्गत्रयोदशी १३व्रत। श्रीमहावीरजयंती (जैन)। [illegible] ▲दि.२।०३ तक पूर्वयमघंटयोग।
- भ.(रा.२।३२) से (पाताल)। प्रदोष दमनकचर्तुदशी। सायं दमनकपत्र द्वारा पूजन। श्रीशिवनृसिंहदमनकारोपण पूजन। मदनभञ्जी (बंगाल)। हाटकेश्वरजयंती (गुजरात)। पङ्गुनीउत्तिरम (द.भा.)। रवियोग▲
- भ.(दि.३।२९ तक (पाताल)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। मन्वादि १५। शनिवारयुक्त चैत्रपूर्णिमा में स्नानश्राद्ध में [illegible]। हनुमज्जयंती १५ (द.भा.)। मेलासालासर बालाजी (राज.)। ❺

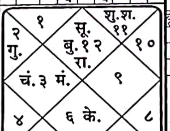
।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				वक्रीशुक्र				गति		शनि				राहु			
१	र	११	२२	३८	५७	८५६	५३	२	२७	१०	११	१९	४	११	१२	२३	२४	५१	२४	१	२२	५९	८	१०	२८	२६	३७	५२	१	१०	२६	१०	४४	११	२	२९	२४
२	चं	०	६	५७	१९	८५९	५७	२	२७	२९	१६	१९	४	११	११	३५	०	५१	२४	१	२३	७	२३	१०	२७	३४	३७	८	३५	१०	२६	१७	४९	११	२	२६	१३
३	मं	०	२१	१६	२५	८५८	२५	२	२७	४८	२१	१९	४	११	१०	४३	३५	५१	२४	१	२३	१५	४१	१०	२७	२६	२	८	३५	१०	२६	२४	५३	११	२	२३	३
४	बु	१	५	३२	३७	८५४	५१	२	२८	७	२६	१९	४	११	९	५२	१०	५१	२४	१	२३	२३	५८	१०	२७	१७	२८	८	३५	१०	२६	३१	५८	११	२	१९	५२
६	गु	१	१९	४२	५८	८४८	१८	२	२८	२६	३१	१९	३	११	९	०	४६	५१	२४	१	२३	३२	१६	१०	२७	८	५३	८	३५	१०	२६	३९	२	११	२	१६	४१
७	शु	२	३	४३	५६	८३८	२५	२	२८	४५	३४	१८	५१	११	८	९	२१	५१	१४	१	२३	४०	३३	१०	२७	०	१९	८	३५	१०	२६	४६	७	११	२	१३	३०
८	श	२	१७	३२	१८	८२५	४१	२	२९	४	२५	१८	५१	११	७	१८	७	२३	२	१	२३	४९	४०	१०	२६	५१	४४	८	३५	१०	२६	५३	११	११	२	१०	१९
९	र	३	१	८	१	८१३	३३	२	२९	२३	१६	१८	५१	११	६	५५	४	२२	३२	१	२३	५९	४५	१०	२६	४३	९	८	३५	१०	२७	०	१५	११	२	७	९
१०	चं	३	१४	२८	११	७९७	३३	२	२९	४२	७	१८	११	११	६	३२	३२	२२	३२	१	२४	९	५०	१०	२६	३४	३५	८	३५	१०	२७	७	१९	११	२	३	५८
११	मं	३	२७	३२	४४	७८१	५८	३	०	०	१९	१८	३९	११	६	९	५९	२२	३६	१	२४	१९	५५	१०	२६	२६	०	८	३५	१०	२७	१४	२३	११	२	०	४७
१२	बु	४	१२	२१	३२	७६५	४५	३	०	१८	५८	१८	०	११	५	४७	३२	१६	१६	१	२४	२९	५९	१०	२६	१७	२६	८	३५	१०	२७	२१	२७	११	१	५७	३६
१३	गु	४	२२	५६	१६	७५१	२२	३	०	३६	५९	१८	०	मा	५	३१	१६	१६	१६	१	२४	४०	४	१०	२६	८	५१	८	२३	१०	२७	२८	३१	११	१	५४	२५
१४	शु	५	५	१८	४२	७३८	३९	३	०	५४	५९	१८	०	११	५	४१	५२	१०	३६	१	२४	५०	९	१०	२६	०	२९	८	५	१०	२७	३५	२९	११	१	५१	१५
१५	श	५	१७	३१	२०	७२८	५५	३	१	१२	५९	२२	४८	११	५	५२	२८	१०	३६	१	२५	०	१४	१०	२५	५२	२३	७	२८	१०	२७	४१	४७	११	१	४८	४

भौमादिग्रहों का सञ्चार। भौम-पुनर्वसु। ति.१० सोम कर्कराशि ५८। ५९ (रा.शे.५।२४)।। वक्रीबुध-मीनराशि उ.भा.। ति.१३ गुरु मार्गी ३६।२० (रा.८।१७)।। गुरु-वृषराशि रोहिणी ४ चरण। ति.३ मंगल मृग में १ चरण ३१।१७ (सा.६।२३)।। वक्रीशुक्र-कुम्भ पू.भा. में।। शनि-कुम्भ पू.भा.२ चरण। ति.६ गुरु पू.भा.३ चरण ८।१० (दि.९।६)।। राहु-मीनराशि पू.भा.में ४ चरण। केतु-कन्याराशि उ.फा.२ चरण।।

१ पं० चैत्रशुक्ल ८ शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २८४४
अयनांश २४।१२।१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	२	११	१	१०	१०	११	५
२१	१७	२९	७	२३	२६	२६	२	२
१०	३२	४	१८	४९	५१	५३	१०	१०
३१	१८	२५	७	४०	४४	११	१९	१९
५९	८२५	१८	२३	१०	८	७	३	३
३	४१	५१	२ व	४	३५ व	४	११	११



चैत्रशुक्लपक्ष विचार—इस पक्ष में पञ्चमी तिथि की हानि होने से यह पक्ष १४ दिनों का है। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार से वायुवेग तथा वर्षा की अधिकता होगी तथा धान्य,फल,पुष्पों को क्षति संभव है। ३० मार्च को दक्षिणशृंग चन्द्रदर्शन से दुर्भिक्षकर है। आज 'कालयुक्त' नामक नव संवत्सर प्रारंभ हो रहा है। जिस दिन संवत्सर प्रारंभ होता है वही वर्ष का राजा होता है। इस वर्ष सूर्य राजा हैं। नववर्ष के प्रथम दिन तेल, उबटन आदि लगाकर स्नान करके नया वस्त्र धारण कर घर के ऊपर ध्वजारोहण करें तथा विद्वान् ब्राह्मण से पंचांग का फल श्रवण कर पंचांग का दान करें। आज मिश्री, काली मिर्च एवं नीम के पत्तों का सेवन करना त्रिदोषघ्न व सर्वरोग निवारक है। कृषकगण ☛

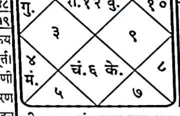
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० चं. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
मीन	६	३६	६	३२	६	२८	६	२५	६	२१	६	१८	६	१४	६	११	६	७	६	४	६	०	५	५७	५	५३	५	५०
मेष	८	१३	८	९	८	५	८	२	७	५८	७	५५	७	५१	७	४८	७	४४	७	४१	७	३७	७	३४	७	३०	७	२७
वृष	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८	९	५४	९	५१	९	४७	९	४४	९	४०	९	३७	९	३३	९	३०	९	२६	९	२३
मिथुन	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	१२	१२	८	१२	५	१२	१	११	५८	११	५४	११	५१	११	४७	११	४४	११	४०	११	३७
कर्क	२	४१	२	३७	२	३३	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९	२	१६	२	१२	२	९	२	५	२	२	१	५८	१	५५
सिंह	४	५५	४	५१	४	४७	४	४४	४	४०	४	३७	४	३३	४	३०	४	२६	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२	४	९
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	८	७	४	७	०	६	५७	६	५३	६	५०	६	४६	६	४३	६	३९	६	३६	६	३२	६	२९	६	२५	६	२२
तुला	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९	९	६	९	२	८	५९	८	५५	८	५२	८	४८	८	४५	८	४१	८	३८
वृश्चिक	११	४१	११	३७	११	३३	११	३०	११	२६	११	२३	११	१९	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	२	१०	५८	१०	५५
धनु	१	४७	१	४३	१	३९	१	३६	१	३२	१	२९	१	२५	१	२२	१	१८	१	१५	१	११	१	८	१	४	१	१
मकर	३	३४	३	३०	३	२६	३	२३	३	१९	३	१६	३	१२	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५५	२	५१	२	४८
कुम्भ	५	५	५	१	४	५७	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३	४	४०	४	३६	४	३३	४	२९	४	२६	४	२२	४	१९

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ रवि रेवती सूर्यभोग्य। ति.२ सोम सा.४।३२ वैधृति बाद अश्विनी दोलारोहण आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधीसेवन विपणि व्यापार वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.३ मंगल दि.९।२६ रिक्ताभद्रापूर्व भरणी रोगविमुक्तस्नान(४थी) शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.४ बुध प्रा.७।६ रिक्ताभद्रा बाद कृत्तिका रोगविमुक्तस्नान धानछेदन मुहूर्त्त। दि.१।२१ से रोहिणी दोलारोहण विपणि मुहूर्त्त। ति.६ गुरु रोहिणी जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण दवंरी धानरोपण विपणि शल्यक्रिया मुहूर्त्त। दि.११।५८से मृगशिर औषधी सेवन विपणि व्यापार वाहनक्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। ति.७ शुक्र रा.१।२१ भद्रा पूर्व मृगशिर पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग पूर्वदिशा की यात्रा शिल्पविद्या विप्रबालकों का उपनयन (ल.३दि.९।५१ से) विपणि व्यापार वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.८ शनि आर्द्रा भौमभुक्त है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। ति.९ रवि पुनर्वसु भौमयुति। दि.९।४२ से पुष्य रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.१० सोम पुष्य जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रय विक्रय कर्क के चन्द्र में उत्तरदिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधीसेवन विप्रबालकों का उपनयन(ल.३दि.९।४०से) विपणि व्यापार वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.११ मंगल दि.१०।५९ भद्रा पूर्व श्लेषा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.१२ बुध मघा दवंरी धानछेदन मुहूर्त्त। दि.११।२२ से पू.फा.में विप्रबालकों का उपनयन(ल.३दि.११।२२ से)। ति.१४ शुक्र रा.२।३२ भद्रा पूर्व उ.फा.में केतुयुति। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.१५ शनि दि.३।२९ भद्रा बाद हस्त कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त।

२ पं० चैत्रशुक्ल १५ शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २८५१
अयनांश २४।१२।२

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	३	११	१	१०	१०	११	५
२८	१७	१	५	२५	२५	२७	१	१
३	३१	१२	५२	०	५२	४१	४८	४८
२	२०	५९	२८	१४	२३	४७	४	४
५८	७२८	२२	१०	१०	७	६	३	३
४६	५५	४८	३६ व	४	२८ व	१९	११	११



❶ आरोग्यविद्या तिलक व्रत। आज प्रातःकाल "कालयुक्त" नामक संवत्सर का संकल्पादि में विनियोग प्रारम्भ करें। शैलपुत्रीदर्शन। कल्पादि १। युगादि १। गुडीपडवा। वायु परीक्षण। श्रीझूलेलाल जयंती(सिन्धीसमाज)। चेटी चांद। यायीजययोग दि.२।१४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.६।१४ से। ❸पद्मादि ४८।२३ (रा.११।३५ से) ४६।२३ या (रा.१२।२३तक)। बलिदानादि। श्रीअन्नपूर्णा परिक्रमा ४५।४० या (रा.१२।५तक)। दि.१०।७ में पुनर्वसु मध्याह्नयुक्त अशोकाष्टमी (बङ्गाल)। भद्रा बाद दि.१२।४३ से अशोककलिकाप्राशन। ब्रह्मपुत्रस्नान। मेलाबहुफोर्ट(जम्मू)। मेलामनसा देवी (हरिद्वार)। स्वामीलीला शाह जयंती। ❹ समस्त नवमी रहते होमादि। सिद्धिरात्रि देवीदर्शन। स्वामीनारायणजयंती (गुजरात)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.९।४२ से पश्चात यायीजययोग। ❺सर्वदेव दमनकोत्सव। ओलीसमापन (जैन)। देवीपूर्णिमा (नेपाल)। त्रिवेन्द्रमआर्ट (द.भा.)। यायीजययोग सा.५।१३ तक।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी-ति.२ सोम सा.४।३४ तक। श्लेषा/मघा-ति.१० सोम दि.९।४६ से। ति.१२ बुध दि.११।२२ तक। पञ्चकविचार-ति.१ रवि सा.६।१४ तक।

☛प्रतिपदा में सूर्योदयपूर्व ग्राम की समतल भूमि पर पताका का विन्यास कर पूजन एवं प्रार्थना कर वायु के दिशानुसार नये वर्ष के मौसम का पूर्वानुमान लगाकर कृषिकार्य प्रतिपादित करें। विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ३० मार्च २०२५ रविवार से शुरू हो रहा है। चैत्र नवरात्र में (दुर्गाजी के नौ रूपों की पूजा) भी आज से ही शुरू हो जायेगी। जिसमें कलश-स्थापन का विशेष महत्त्व होता है। कलश-स्थापन का मुहूर्त प्रातःकाल से मध्याह्न तक स्थापन करें। १ अप्रैल को सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत, मंगलवार युक्त अङ्गारक वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत तथा बिहार का प्रसिद्ध पर्व सरहुल मनाया जायेगा। ३ अप्रैल को सूर्यषष्ठी (चैती छठ) व्रत होगा। ४ अप्रैल को अन्नपूर्णा परिक्रमा रात १।२१ से प्रारंभ होकर ५ अप्रैल को रा.१२।५ अष्टमी तिथि तक होगी। ५ अप्रैल को सूर्योदययुक्त अष्टमी में महाष्टमी व्रत तथा निशीथकाल (रा.११।३५ से रा.१२।२३ तक) में महानिशा पूजा होगी। घर-घर में की जाने वाली नवमी का पूजन ५ अप्रैल को किया जायेगा। इसे भवानी उत्पत्ति एवं वसिअउरा के रूप में मनाया जाता है। ६ अप्रैल को महानवमी व्रत समस्त जन द्वारा मनाई जायेगी। आज नवमी से सम्बन्धित हवन, पूजनादि, कन्या पूजन तथा महाबलिदान का कार्य सम्पन्न किया जायेगा। रामावतार का महापर्व राम नवमी का पर्व समस्त जनों द्वारा सर्वत्र मनाया जायेगा। विशेषकर भगवान् राम की जन्मभूमि अयोध्या में पारम्परिक शास्त्रीय विधान से मनाई जायेगी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने आज (शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसंतऋतु।।

वैशाखकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २३ चैत्र से ७ वैशाख तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक १३ अप्रैल से २७ दिनांक तक सन् २०२५ ई.। खरमास समापन ति.१ सोम(१४-४-२५)

दि.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३१	२५	१	र	६०	०	समस्त			चित्रा	३५	०	रा	७	४३	हर्षण	३६	५६	रा	८	२९	वा	२९	२२	कौ	६०	०	पद्म
३१	२८	१	चं	१	५७	प्रा	६	३०	स्वाती	४१	३६	रा	१०	२०	वज्र	३८	३३	रा	९	७	कौ	१	५७	तै	३४	३३	छत्र
३१	३२	२	मं	७	८	दि	८	३३	विशाखा	४७	५७	रा	१२	५३	सिद्धि	३९	५७	रा	९	४१	गर	७	८	व	३९	३०	श्रीवत्स
३१	३५	३	बु	११	५३	दि	१०	२६	अनुराधा	५३	३८	रा	३	८	व्यतिपात	४०	५४	रा	१०	३	भ	११	५३	वव	४३	५३	सौम्य
३१	३९	४	गु	१५	५२	दि	१२	०	ज्येष्ठा	५८	२३	रा	५	१	वरियान	४१	१०	रा	१०	८	वा	१५	५२	कौ	४७	१८	कालदंड
३१	४२	५	शु	१८	४४	दि	१	९	मूल	६०	०	समस्त			परिघ	४०	३१	रा	९	५२	तै	१८	४४	गर	४९	३८	स्थिर
३१	४५	६	श	२०	३२	दि	१	५२	मूल	२	५७	प्रा	६	५०	शिव	३८	५६	रा	९	१३	व	२०	३२	भ	५०	४५	गद
३१	४९	७	र	२०	५७	दि	२	०	पू.षा.	४	२९	प्रा	७	२६	सिद्ध	३६	२१	रा	८	१०	वव	२०	५७	वा	५०	३१	शुभ
३१	५२	८	चं	२०	५	दि	१	४०	उ.षा.	५	३५	प्रा	७	५२	साध्य	३२	४५	सा	६	४४	कौ	२०	५	तै	४९	३	मृत्यु
३१	५६	९	मं	१८	०	दि	१२	४९	श्रवण	५	३१	प्रा	७	४९	शुभ	२८	१२	सा	४	५४	गर	१८	०	व	४६	२६	लुम्बक
३१	५९	१०	बु	१४	५२	दि	११	३३	धनिष्ठा	४	१९	प्रा	७	२०	शुक्ल	२२	४८	दि	२	४३	भ	१४	५२	वव	४२	५०	मित्र
३२	२	११	गु	१०	४८	दि	९	५५	शतभिष	२ ५७	१८ ५	प्रा	६ ५	३१ २१	ब्रह्म	१६	४४	दि	१२	१८	वा	१०	४८	कौ	३८	२१	वज्र
३२	६	१२	शु	५	५४	दि	७	५६	उ.भा.	५५	५२	रा	३	५६	ऐन्द्र	१०	०	दि	९	३५	तै	५	५४	गर	३३	११	ध्वज
३२	९	१३	श	० ५४	२७ ९	प्रा	५ ३	४५ २४	रेवती	५१	५६	रा	२	२०	वैधृति	२ ५२	४६ २९	प्रा	६ ३	४० ४०	व	०	२७	भ	२७ ५४	३१ ३६	धाता
३२	१२	३०	र	४८	३३	रा	१२	५९	अश्विनी	४७	४९	रा	१२	४२	प्रीति	४७	३४	रा	१२	३६	च	२१	३५	ना	४८	३३	आनंद

तिथि	तारीखें अं.	फ.	हि.	सो.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ +		रे.अं. -	मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.	
१	१३	१	१४	३०	३०	२३	तुला	१।५१	५	४३	६	१७	११	२९	१	४९	५८	४३	९	२	-	२	६	४४
१	१४	२	१५	१	१	२४			५	४२	६	१८	०	०	०	३३	५८	४१	९	२४	-	२	७	३७
२	१५	३	१६	२	२	२५	वृश्चिक	३१।२२	५	४२	६	१८	०	०	५९	१५	५८	३९	९	४५	-	२	८	३१
३	१६	४	१७	३	३	२६			५	४१	६	१९	०	१	५७	५४	५८	३७	१०	७	-	२	९	२८
४	१७	५	१८	४	४	२७	धनु	५८।२३	५	४०	६	२०	०	२	५६	३१	५८	३५	१०	२८	-	२	१०	२४
५	१८	६	१९	५	५	२८			५	४०	६	२०	०	३	५५	६	५८	३३	१०	४९	-	३	११	१९
६	१९	७	२०	६	६	२९			५	३९	६	२१	०	४	५३	३९	५८	३०	११	१०	-	३	१२	१३
७	२०	८	२१	७	७	३०	मकर	१९।४६	५	३८	६	२२	०	५	५२	१०	५८	२८	११	३०	-	३	१२	५७
८	२१	९	२२	८	८	१			५	३८	६	२२	०	६	५०	३८	५८	२६	११	५१	-	३	१	३९
९	२२	१०	२३	९	९	२	कुम्भ	३४।५५	५	३७	६	२३	०	७	४९	५	५८	२४	१२	११	-	३	२	१६
१०	२३	११	२४	१०	१०	३			५	३६	६	२४	०	८	४७	२९	५८	२१	१२	३१	-	४	२	५४
११	२४	१२	२५	११	११	४	मीन	४५।७	५	३६	६	२४	०	९	४५	५१	५८	१९	१२	५१	-	४	३	३०
१२	२५	१३	२६	१२	१२	५			५	३५	६	२५	०	१०	४४	११	५८	१८	१३	११	-	४	४	५
१३	२६	१४	२७	१३	१३	६	मेष	५१।५६	५	३४	६	२६	०	११	४२	३०	५८	१५	१३	३०	-	४	४	४३
३०	२७	१५	२८	१४	१४	७			५	३४	६	२६	०	१२	४०	४५	५८	१२	१३	४९	-	४	५	२६

तुलाराशि (प्रा.६।२७)। मासपर्यन्त प्रपा(पौसरा)दान। अग्रमार्थता में गर्मगलादि का दान। पीपल के मूल में जलदान। तुलसीदल से श्रीविष्णुपूजन। ❶
नेपाली व सौर वैशाखमासारंभ। आज सूर्योदय उपरान्त सक्रान्ति पुण्यकाल। बिशु(केरल)। चड़कपूजा (बङ्गाल)। मेषादि (तमिलनाडु)। चेईरोबा (मणिपुर)। तमिल नववर्षदिन। ❷
भ.रा.९।३०से (स्वर्ग)। वृश्चिकराशि (रा.६।५१)। वैशाखादि (बंगाल)। बहागबिहू(असम)। शिलहेम्बा(मणिपुर)। मृत्युबाण समस्त। त्रिपुष्करयोग दि.८।३३ तक।
भ.दि.१०।२६ तक (स्वर्ग)। संकष्टीश्रीगणेश चौथ व्रत (च.उ.रा.९।२८)। श्रीदुर्गादेवी रथोत्सव (रत्नागिरी)। मृत्युबाण २१९ तक (प्रा.६।३३)।
धनुराशि(रा.शे.५।१)। सतीअनुसूयाजयती। ❷ डा.अम्बेडकर जयंती। मृत्युबाण ०।८५ उ.(प्रा.६।० से)। यायीजययोग प्रा.६।२९ तक। यमघण्टयोग रा.१०।२०से।
गुरुतेगबहादुर जयंती (सिख)। रवियोगसमस्त। गुडफ्राइडे (क्रि.)।
भ.दि.१।५२ से रा.१।५७ तक (पाताल)। कोकिलाषष्ठी(मिथिला)। गुरुअर्जुनदेव जयंती(सिख)। ⊙सायनवृषसूर्य ५४।८(रा.३।३१)। रवियोग प्रा.६।५०से। ईस्टर सटरडे (क्रि.)।
मकरराशि(दि.१।३२)। प्रदोष कालाष्टमी। रवियोग प्रा.७।२६ तक पश्चात यायीजयसर्वार्थसिद्धित्रिपुष्करयोग, ईस्टर सण्डे (क्रि.)।
राष्ट्रियवैशाखमास दि.३१। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज बासी भोजन का ग्रहण शास्त्र विहित है। यात्रा व उत्सवादि। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.७।५२ से।
भ.रा.१२।११से (मृत्यु)। कुम्भराशि:(रा.७।३५)।
भ.दि.११।३३ तक। (मृत्यु)। बाबूकुँवरसिंह जयंती(बिहार)। संधिकरयोग प्रा.७।२०से।
मीनराशि(रा.११।३९)। वरूथिनीएकादशी ११व्रत सबका। श्रीवल्लभाचार्यजयन्ती ११। मृत्युबाण १४।३३ उ.(दि.११।२५ से)।
दि.७।५६तक एकादशी का पारण। प्रदोष १२व्रत। मृत्युबाण १६।९६ या.(दि.१२।५ तक)।
भ.प्रा.५।४५ से दि.४।३४ तक (मृत्यु)। मेषराशि(रा.२।२०)। मासशिवरात्रि १४ व्रत। यायीजययोग प्रा.५।४५ तक।
अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध पुण्य। अशुभवार से भय। मेलापिंजोर(हरियाणा)। ⊙भरणी में सूर्य ४०।२७(रा.९।४५)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१२।४२ तक।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्ट लग्न विमर्श

ति.१ सोम प्रा.६।० से स्वाती में मृत्युबाण।
ति.२ मंगल अनुराधा मृत्युबाण।
ति.३ बुध रा.१०।३ व्यतिपात बाद अनु.९ ल.१० (रा.१२।४६से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३॥ ७वाँ भौमदान।
ति.५ शुक्र मूल रे.७ दिवा ल.२ (दि.७।३ उ.पा.५ ग्र. व.वि.१० वा ल.गोधूलि (सूर्यास्त) ल.११ (रा.२।२४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३॥
ति.६ शनि मूल रे.७ (ल.२ प्रा.७।१० से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (८वाँ चन्द्र अशुभ)।
ति.७ रवि प्रा.७।२६ से उ.पा. रे.८ दिन ल.२ (प्रा.७।२६से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (८वाँ चंद्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.११(रा.२।१७ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३॥
ति.८ सोम प्रा.७।५२ तक उ.पा.में रे.७ दिन ल.२(प्रा.६।५२से दि.७।५२ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०।
ति.१२ शुक्र दि.७।५६ तक (१२वां) उ.भा. में मृत्युवाणदोष। पश्चात मासान्त दोष।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

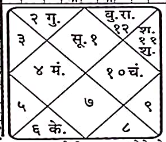
ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		गुरु				वक्रीशुक्र				गति		शनि				राहु			
१	र	५	२९	३७	४१	७२३	५८	३	१	३५	४८	२६	४९	११	६	३	४	१०	४३	१	२५	१०	१९	मा	२५	४४	५६	३०	४९	१०	२७	४८	६	११	१	४४	५३
१	चं	६	११	४०	१८	७२०	४३	३	२	२	३७	२६	४९	११	६	१३	४७	२२	२४	१	२५	२०	२४	१०	२६	१५	४४	३०	४९	१०	२७	५४	२४	११	१	४१	४२
२	मं	६	२३	४१	५१	७२३	२६	३	२	२९	२६	२६	४९	११	६	३६	१२	४०	१	१	२५	३०	२८	१०	२६	४६	३३	३०	४९	१०	२८	०	४२	११	१	३८	३१
३	बु	७	५	४६	४६	७३०	४६	३	२	५६	१५	२६	४९	११	७	१६	१३	४०	१	१	२५	४०	३३	१०	२७	१७	२२	३०	४९	१०	२८	७	१	११	१	३५	२१
४	गु	७	१७	५८	४०	७४१	१८	३	३	२३	५	२६	४९	११	७	५६	१४	४०	१	१	२५	५०	४०	१०	२७	४८	१०	३०	४९	१०	२८	१३	१९	११	१	३२	१०
५	शु	८	०	२०	२	७४३	२५	३	३	४९	५४	२६	४९	११	८	३६	१५	४०	११	१	२६	०	४७	१०	२८	१८	५९	३०	४९	१०	२८	१९	३८	११	१	२८	५९
६	श	८	१३	२०	१८	७५१	४१	३	४	१६	४३	२६	४९	११	९	१६	२७	५३	४८	१	२६	१०	५४	१०	२८	४९	४८	३०	३९	१०	२८	२५	५६	११	१	२५	४८
७	र	८	२५	४१	४३	७८०	३५	३	४	४३	३२	२६	४९	११	१०	१०	१६	६१	५३	१	२६	२१	२	१०	२९	२०	२६	३०	१७	१०	२८	३२	१४	११	१	२२	३७
८	चं	९	८	४६	५४	७८५	५३	३	५	१०	२१	२६	४९	११	११	१२	९	६१	५३	१	२६	३१	९	१०	२९	५०	४३	३०	१७	१०	२८	३८	३३	११	१	१९	२७
९	मं	९	२२	६	२२	८००	१९	३	५	३७	११	२६	४९	११	१२	१४	३	६१	५३	१	२६	४२	१६	११	०	२१	०	३०	१७	१०	२८	४४	५०	११	१	१६	१६
१०	बु	१०	५	४१	१६	८१६	४९	३	६	४	०	२६	४९	११	१३	१५	५७	६२	६	१	२६	५३	४९	११	०	५१	१७	३०	१७	१०	२८	५१	८	११	१	१३	५
११	गु	१०	२०	३२	१४	८४०	५२	३	६	३०	४९	२६	४९	११	१४	१८	४	७६	३०	१	२७	५	२२	११	१	२१	३४	३०	१७	१०	२८	५७	२६	११	१	९	५४
१२	शु	११	३	२८	४४	८४९	४८	३	६	५७	३८	२६	४९	११	१५	३४	३४	७८	४१	१	२७	१६	५५	११	१	५१	५१	३०	१७	१०	२९	३	४४	११	१	६	४३
१३	श	११	१७	३८	५९	८५६	७	३	७	२४	२७	२६	४९	११	१६	५३	१६	७९	११	१	२७	२८	२८	११	२	२२	७	३०	१७	१०	२९	१०	२	११	१	३	३३
३०	र	०	१	५५	२९	८५८	५५	३	७	५१	१७	२६	४९	११	१८	१२	२८	७९	४०	१	२७	४०	१	११	२	५२	२४	३०	१७	१०	२९	१६	३	११	१	०	२२

भौमादिग्रहों का सञ्चार भौम-पुनर्वसु। ति.३ बुध पुष्य ५३।७ (रा.२।५६)॥ मार्गीबुध-उ.भा.में॥ ति.१२ शुक्र रेवती ४९।५४ (रा.१।३३)॥ गुरु-मृगशिर १ चरण। ति.८ सोम मृगशिर २ चरण ४७।४७ (रा.१२।४५)॥ वक्रीशुक्र- पू.भा. में। ति.१ रवि मार्गी ११।४२ (दि.१०।२४)॥ ति.८ सोम मीन १८।२३ (दि.१२।५९)॥ ति.३० रवि उ.भा.मे ५४।४२ (रा.३।२७)॥ शनि-पू.भा.३ चरण॥ राहु-मीनराशि पू.भा. में ४ चरण। केतु-कन्याराशि उ.फा.२ चरण॥

वैशाखकृष्णपक्ष विचार—इस पक्ष में प्रतिपदा तिथि की वृद्धि तथा चतुर्दशी का क्षय होने से यह पक्ष १५ दिनों का है। **वैशाख अमावस्या** को **अश्विनी** होने से पक्ष मध्यम है। **विशेष**—वैशाखकृष्ण एकादशी को मेघ प्रवल हो तो धान का विक्रय कृषि कार्य हेतु करना प्रशस्त है। **१३ अप्रैल** को आज **माँ विन्ध्याचल देवी** का **महाघट अभिषेक** होगा। **१३ अप्रैल** को **सूर्य का अश्विनीमेष राशि में** रात्रि में प्रवेश हो रहा है। अतः दूसरे दिन **१४ अप्रैल** को सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति का पुण्य-काल होगा तथा **खरमास** समाप्त हो जायेगा। इसे सत्तू संक्रांति अथवा **सतुआ संक्रांति** भी कहते हैं। इसमें काशी, हरिद्वार तीर्थ में स्नान का विधान है। सत्तू, पंखा तथा जल-कुम्भादि के दान का महत्त्व है।

३ पं० वैशाखकृष्ण ८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२८६०
अयनांश२४।१२।३

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	३	११	१	१०	१०	११	५
६	८	५	११	२६	२९	२८	१	१
५०	४६	१०	१२	३१	५०	३८	१९	१९
३८	५४	२१	९	९	४३	३३	२७	२७
५८	७८५	२६	६१	११	३०	६	३	३
२६	५३	४१	५३ मा	७	१७ मा	१७	११	११



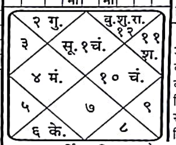
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	१ चं. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	३० र. घं.	मि.
मीन	५	४६	मेष	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	३०
मेष	७	२३	वृष	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६
वृष	९	१९	मिथुन	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०
मिथुन	११	३३	कर्क	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५८
कर्क	१	५१	सिंह	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४२	३	३९	३	३४	३	३०	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	१२
सिंह	४	५	कन्या	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५६	५	५१	५	४७	५	४३	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५
ल.अं.	रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	६	१८	तुला	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४१
तुला	८	३४	वृश्चिक	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८
वृश्चिक	१०	५१	धनु	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४१	१२	३७	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४
धनु	१२	५७	मकर	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	२	१५	२	९	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५१
मकर	२	४४	कुम्भ	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२
कुम्भ	४	१५	मीन	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	५०

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ रवि चित्रा राहुवेध। ति.१ सोम स्वाती जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन शिल्पविद्या औषधीसेवन **बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त्त। प्रा.६।३० से(२या) स्वाती अन्नप्राशन **चौलकेशान्त,अक्षरारम्भ विद्यारंभ(ल.२ प्रा.७।१९ से या ल.३दि.९।१५ से)जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा,उपनयन (ल.३ दि.९।१५ से)वधूप्रवेश (ल.२ प्रा.७।१९ से या ल.८ रा.८।३० से)द्विरागमन(ल.३ दि.९।१५से)गृहारंभ(ल.३ दि.९।१५ से,या ल.८ रा.८।३० से)** मुहूर्त्त। ति.२ मंगल रा.९।३० भद्रा पूर्व विशाखा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.३ बुध अनुराधा व्यतीपात। रा.१०।३ से ज्येष्ठा रिक्तादोष। ति.४ गुरु रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.५ शुक्र मूल भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। ति.६ शनि मूल पूर्वदोष। प्रा.६।५०से पू.षा.में सौभाग्यवती को छोड़कर कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त। ति.७ रवि पू.षा.में नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। प्रा.७।२६ से उ.षा.में पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान मुहूर्त्त। ति.८ सोम दि.१।४० रिक्तापूर्व उ.षा.में शिशुताम्बूलभक्षण शिल्पविद्या नावनिर्माण वधूप्रवेश द्विरागमन(ल.२प्रा.६।५४ से)धानछेदन मुहूर्त्त। ति.९ मंगल श्रवण रिक्तादोष। दि.१२।४९ रिक्तावाद धनिष्ठा रोगविमुक्तस्नान(९मीं) हलप्रवहण वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.१० बुध दि.११।३३ भद्रावाद शतभिष जातकर्म नामकरण अन्नप्राशन चौपायों का क्रय विक्रय धानरोपण शिल्पविद्या द्विरागमन(ल.७ सा.५।४२से,८वां गु.दा.) या (ल.८ रा.७।५८ से) या (ल.१२ रा.३।३९ से लग्न का रा.दा.) हलप्रवहण औषधी सेवन वाहन क्रय मुहूर्त्त। ति.११ गुरु प्रा.६।३१तक ●

४पं० वैशाखकृष्ण३०रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२८६६
अयनांश२४।१२।४

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
०	०	३	११	१	११	१०	११	५
१२	१	७	१८	२७	२	२९	१	१
४०	५५	५१	१२	४०	५२	१६	०	०
४५	२९	१७	२८	१	२४	३	२२	२२
५८	८५८	२६	७९	११	३०	५	३	३
१२	५५	४९	४० मा	३३	१७ मा	३२	११	११



❶ ⊙अश्विनी मेष में सूर्य ५७।२७(रा.शे.५।२९)। मु.१५महँगी। पूर्व व बाद को १० घटि पुण्य। वैशाखी(पंजाब)। **मेषसंक्रान्ति**(उड़ीसा)। **साखुयात्रा** (नेपाल)। **महाघटाभिषेकविन्ध्यवासिनी देवी।** षोडषकारणव्रतसमापन(जैन)। यायीजययोग रा.७।४३से।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.३ बुध रा.३।८ से। ति.६ शनि प्रा.६।५०तक। **रेवती/अश्विनी**-ति.१२ शुक्र रा.शे.३।५६से। ति.३०रवि रा.१२।४२तक। **पञ्चकविचार**-ति.९मंगल रा.७।३५से। ति.१३शनि रा.२।२०तक।

● शतभिष जातकर्म नामकरण धानरोपण हलप्रवहण वाहनक्रय शल्यक्रिया धान्यच्छेदन मुहूर्त्त। प्रा.६।३१ से पू.भा.में राहुयुति। ति.१२ शुक्र दि.७।५६ तक उ.भा.में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण गृहप्रवेश (ल.२ प्रा.६।४४ से दि.७।५६ तक) हलप्रवहण विपणि धानछेदन मुहूर्त्त। पश्चात मासान्त दोष है।

वैशाखमास में देवों की जलाधिवास विधि-वैशाख अथवा ज्येष्ठ मास में जब अधिक गर्मी पड़े तो उसमें प्रातःकाल नित्यपूजन पूर्वक गव जल से पूर्ण पात्र में विष्णु भगवान् को स्थापित कर पञ्चोपचार पूजन कर के सूर्यास्त तक उसी जल से अधिवास करें। पुनः सायं काल जल से बाहर निकालकर पञ्चोपचार पूजन करना चाहिए तथा उस जल से गृहजनों सहित समस्त गृह को पवित्र करना चाहिए। द्वादशी तिथि के दिन विष्णु का जलाधिवास नहीं करें, अपितु सायं काल कुछ समय तक जल में स्थापित कर पूजन करके पुनः स्व स्थान पर स्थापित कर देना चाहिए। **प्रतिदिन के लिए स्मरणीय पाठ**- अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। जयः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।१। सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युर्विनश्यति। २। **वैशाख स्नान**—चैत्रशुक्ल एकादशी अथवा पूर्णिमा से वैशाख स्नान प्रारंभ करना चाहिये। **वैशाखस्नान मंत्र**—वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।१। माधवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदो भवपापहन्। **वैशाख में त्याज्य**-कांसे का पात्र, मांस, मसूर दाल, चना, कोदो (अन्न विशेष), शाक, मधुपरान्न भोजन तथा मैथुन क्रिया का वैशाख में त्याग करना चाहिए।

मेष के सूर्य में दान विशेष-जो मनुष्य मेष के सूर्य में देवों तथा पितरों के उद्देश्य से सत्तू तथा जलपूर्ण घट का दान करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय काल से पूर्व किसी तीर्थ स्थल, नदी, कुंआ, तालाव अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करके भगवान् विष्णु, राम अथवा श्रीकृष्णजी के मन्त्र का यथा-शक्ति जप करें। (शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल वसंतऋतु।।

वैशाखशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ८ वैशाख से २२ तिथि तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक २८ अप्रैल से १२ मई तक सन २०२५ ई.।

दि.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३२	१५	१	चं	४२	२७	रा	१०	३१	भरणी	४३	४१	रा	११	१	आयुष्मा.	३९	५३	रा	९	३०	किं	१५	३०	वव	४२	२७	चर
३२	१८	२	मं	३६	३४	रा	८	९	कृत्तिका	३९	४५	रा	९	२६	सौभाग्य	३२	२१	सा	६	२८	वा	९	३१	कौ	३६	३४	गद
३२	२२	३	बु	३१	४	सा	५	५७	रोहिणी	३६	१५	रा	८	२	शोभन	२५	८	दि	३	३५	तै	३	४९	गर	३१ ५८	४ ३५	शुभ
३२	२५	४	गु	२६	७	दि	३	५७	मृगशिर	३३	१९	रा	६	५०	अतिगण्ड	१८	२३	दि	१२	५२	भ	२६	७	वव	५४	४	मृत्यु
३२	२८	५	शु	२२	१	दि	२	१९	आर्द्रा	३१	१८	सा	६	१	सुकर्मा	१२	१७	दि	१०	२५	वा	२२	१	कौ	५०	२५	पद्म
३२	३१	६	श	१८	४९	दि	१	१	पुनर्वसु	३०	५	सा	५	३२	धृति	६	५३	दि	८	१५	तै	१८	४९	गर	४७	४५	छत्र
३२	३४	७	र	१६	४०	दि	१२	९	पुष्य	२९	५९	सा	५	२८	शूल	२ ५६	१९ २२	प्रा	६ ४	२५ ५७	व	१६	४०	भ	४६	१३	श्रीवत्स
३२	३७	८	चं	१५	४५	दि	११	४७	श्लेषा	३१	५	सा	५	५५	वृद्धि	५६	५	रा	३	५५	वव	१५	४५	वा	४५	५६	सौम्य
३२	४०	९	मं	१६	७	दि	११	५४	मघा	३३	२९	रा	६	५१	ध्रुव	५४	२८	रा	३	१५	कौ	१६	७	तै	४६	५९	कालदंड
३२	४३	१०	बु	१७	५१	दि	१२	३६	पू.फा.	३७	९	रा	८	१९	व्याघात	५३	४९	रा	२	५९	गर	१७	५१	व	४९	१४	स्थिर
३२	४६	११	गु	२०	३८	दि	१	४२	उ.फा.	४१	५४	रा	१०	१२	हर्षण	५४	४	रा	३	४	भ	२०	३८	वव	५२	३६	मातङ्ग
३२	४९	१२	शु	२४	३४	दि	३	१५	हस्त	४७	३५	रा	१२	२८	वज्र	५५	४	रा	३	२८	वा	२४	३४	कौ	५६	५५	अमृत
३२	३५	१३	श	२९	१५	सा	५	८	चित्रा	५३	५४	रा	२	५९	सिद्धि	५६	३२	रा	४	२	तै	२९	१५	गर	६०	०	काण
३२	५४	१४	र	३४	२२	रा	७	९	स्वाती	६०	०	समस्त			व्यतिपात	५८	१२	रा	४	४१	गर	१	४९	व	३४	२२	लुम्बक
३२	५७	१५	चं	३९	३०	रा	९	१३	स्वाती	०	३१	प्रा	५	३७	वरियान	५९	४४	रा	५	१८	भ	६	५६	वव	३९	३०	छत्र

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२८	१६	२९	१५	१५	८	वृष	५७।४२	५	३३	६	२७	०	१३	३८	५८	५८	१०	१४	८	-	५	-	-
२९	१७	३०	१६	१६	९			५	३२	६	२८	०	१४	३७	८	५८	८	१४	२७	-	५	८	२८
३०	१८	१	१७	१७	१०			५	३२	६	२८	०	१५	३५	१७	५८	७	१४	४६	-	५	९	३९
मई	१९	२	१८	१८	११	मिथुन	४।४७	५	३१	६	२९	०	१६	३३	२५	५८	५	१५	४	-	५	१०	४३
२	२०	३	१९	१९	१२			५	३०	६	३०	०	१७	३१	३०	५८	३	१५	२२	-	५	११	३९
३	२१	४	२०	२०	१३	कर्क	१५।२३	५	३०	६	३०	०	१८	२९	३३	५८	१	१५	४०	-	५	१२	२६
४	२२	५	२१	२१	१४			५	२९	६	३१	०	१९	२७	३४	५७	५८	१५	५७	-	५	१	६
५	२३	६	२२	२२	१५	सिंह	३१।५	५	२९	६	३१	०	२०	२५	३३	५७	५७	१६	१५	-	५	१	४०
६	२४	७	२३	२३	१६			५	२८	६	३२	०	२१	२३	३०	५७	५५	१६	३२	-	५	२	११
७	२५	८	२४	२४	१७	कन्या	५३।२०	५	२७	६	३२	०	२२	२१	२६	५७	५२	१६	४८	-	५	२	३९
८	२६	९	२५	२५	१८			५	२७	६	३३	०	२३	१९	१९	५७	५१	१७	५	-	६	३	७
९	२७	१०	२६	२६	१९			५	२६	६	३४	०	२४	१७	१०	५७	५०	१७	२१	-	६	३	३६
१०	२८	११	२७	२७	२०	तुला	२०।४५	५	२६	६	३४	०	२५	१५	१	५७	४७	१७	३७	-	६	४	५
११	२९	१२	२८	२८	२१			५	२५	६	३५	०	२६	१२	४८	५७	४४	१७	५२	-	६	४	३८
१२	३०	१३	२९	२९	२२	वृश्चिक	५०।१९	५	२५	६	३५	०	२७	१०	३३	५७	४३	१८	७	-	६	५	१५

वृषराशि(रा.शे.४।३८)। देवदामोदरतिथि(असम)। यायीजययोग रा.१०।३१तक। ①सर्वार्थसिद्धियोग रा.९।२६ तक त्रिपुष्करयोग रा.८।९तक।
◡ चन्द्रदर्शन। समशृंग समता। मु.३०समान्य। सूर्यास्त बाद तीनमुहूर्त्त प्रदोष में श्रीपरशुरामजयंती। छत्रपतिशिवाजीजयंती(तिथिमत)। ①
भ.रा.शे.४।५८ से (स्वर्ग)। मु. जिल्काद ११ हि.१४४६। रोहिणीयुक्त अक्षय तृतीया व्रत। ग्रीष्म हेतु जलकुम्भ–शक्कर व्यजन(पंखा)का दान। कल्पादि। त्रेतायुगादि। ②
भ.दि.३।५७ तक (स्वर्ग)। मई ५। मईदिवस(श्रमिकदिवस)। मिथुनराशि(प्रा.७।२६)। वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। रवियोग रा.६।५०तक।
आद्यजगद्गुरुशङ्कराचार्य जयन्ती। सूरदासजयंती। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग सा.६।९से। ④ ⊙कृत्तिका में सूर्य २८।१६(रा.८।४३)।
कर्कराशि (दि.११।३९)। श्रीस्कन्दषष्ठी। मध्याह्न में दो दिन सप्तमी ग्राह्य षष्ठीयुक्त अल्पमात्रा में ग्राह्य हेतु प्रशस्त है। श्रीगङ्गासप्तमी। श्रीगङ्गाउत्पत्ति। गङ्गापूजन। ③
भ.दि.१२।९से रा.११।५८तक (मृत्यु)। सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।२८ तक।
सिंहराशि(सा.५।५५)। श्रीबगलामुखीजयंती। रवियोग रा.५।५५ से यायीजययोग दि.११।४७ से।
मध्याह्न में श्रीसीतानवमी। श्रीजानकीजयन्ती। मैथिलदिवस(मिथिला)। त्रिचूरपूरम(केरल)। रवियोग समस्तदिन।
भ.रा.१।९ से (मृत्यु)। कन्याराशि (रा.२।४७)। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती। रवियोग रा.८।९ तक।
भ.दि.१।४२ तक (पाताल)। मोहिनी एकादशी ११व्रत सबका। लक्ष्मीनारायणएकादशी (उड़ीसा)। यायीजययोग रा.१।४२ तक।
प्रदोष १२ व्रत। रुक्मणीद्वादशी। परशुरामद्वादशी। पिपीतकीद्वादशी(बङ्गाल)। रवियोग: रा.१२।२८ से।
तुलाराशि(रा.१।४४)। ओंकारेश्वर यात्रा। रवियोग रा.२।५९तक पश्चातसर्वार्थसिद्धियायीजययोग।
भ.रा.७।१० से (पाताल)। "स्वातीयोग से प्रशस्त" श्रीनृसिंहचतुर्दशी १४ व्रत। सायाह्न में लक्ष्मी संग पूजन। श्रीनृसिंहावतार। प्रदोष में श्रीछिन्नमस्तका जयती। ④
भ.दि.८।११तक (पाताल)। वृश्चिकराशि(रा.१।३३)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। वैशाख व्रतयम नियमादि समाप्ति। कूर्मजयंती१५। पुष्करादेवीजन्म। सप्तगौरीव्रत।⑤

विवाह मुहूर्त्त पञ्चेष्ट लग्न विमर्श

ति.२ मंगल रा.९।२६से रोहिणी रे.१० ल.११(रा.१।४३से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।
ति.३ बुध रोहिणी रे.१० दिन ल.२ (प्रा. ६।१८ से दि.८।१४ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (लग्न चंद्रदान) या ल.४ (दि. १०।२८ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ या ल. गोधूलि (सूर्यास्त काल) या रा.८।२ से मृग. रे.९ल.११ (रा.१।३९से) इष्ट ६ ग्र.व. वि.१३।।
ति.४ गुरु रा.६।५०तक मृग. रे.१०दिन ल.२ (प्रा.६।१४ से दि.८।१०तक) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१६ या ल.४(दि.१०।२४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ या ल.गोधूलि (सूर्यास्त-काल)।।
ति.८ सोम सा.५।५५से मघा में रे.८ ल. गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.११ (रा.१।२१ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।
ति.९ मंगल मघा में रे.८ दिन ल.२ (प्रा. ५।५६से दि.७।५२ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.९।। या दिन ल.४ (दि.१०।६ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१३।। या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।
ति.१० बुध रा.८।१९ से उ.फा. में रे.७ ल.११ (रा.१।१९) इष्टा ६ ग्र.व.वि.३।१ (७ मस्य चंद्रदान)।
ति.११ गुरु रा.१०।१२ से हस्त रे.६ ल.११ (रा.१।९ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (८वाँ चंद्र अशुभ) उ.फा. में रे.७ ल.गोधूलि (सूर्यास्त)।
ति.१२ शुक्र रा.१२।२८ तक हस्त रे.६ दिन ल.२(प्रा.५।४५ से दि.७।४१ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि.९।। या दिन ल.५ (दि. १२।१३से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८वाँ शुक्र दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.८ (रा.६।५६से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१४ (८वाँ गुरु दान)।
ति.१३ शनि रा.२।५९ से स्वाती रे.८ व्यतिपात व पञ्चेष्टलग्न का अभाव।
ति.१४ रवि रा.शे. ४।४१ व्यतिपात बाद स्वाती में रे.८ रात्रि पञ्चेष्टलग्न का अभाव।
ति.१५ सोम प्रा.५।३७ तक स्वा. में रे.८ पञ्चेष्टलग्न अभाव।

मूलविचार-श्लेषा/मघा-
ति.७रवि सा.५।२८ से। ति.९मंगल सा.६।५१ तक।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

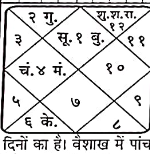
ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				मार्गीशुक्र				गति		शनि				राहु			
१	चं	०	१६	१४	२८	८५९	११	३	८	१८	६	२६	४९	११	१९	३२	८	८१	१४	१	२७	५१	३५	११	३	२२	४१	३०	१७	१०	२९	२१	३५	११	०	५७	११
२	मं	१	०	३२	४९	८५६	७	३	८	४४	५५	२६	४९	११	२०	५३	२३	९०	१०	१	२८	३	८	११	३	५२	५८	३०	१६	१०	२९	२७	८	११	०	५४	०
३	बु	१	१४	४६	४४	८४९	३३	३	९	११	४४	२६	४९	११	२२	२३	३३	९०	१०	१	२८	१४	४१	११	४	२३	१५	३०	१६	१०	२९	३२	४०	११	०	५०	४९
४	गु	१	२८	५२	५७	८४१	७	३	९	३८	३४	२६	४९	११	२३	५३	४३	९०	१०	१	२८	२६	१४	११	४	५३	३२	३०	१६	१०	२९	३८	१२	११	०	४७	३८
५	शु	२	१२	४८	९	८२७	४९	३	१०	५	२३	२६	४९	११	२५	२३	५३	९०	१०	१	२८	३७	४७	११	५	२३	४८	३०	१६	१०	२९	४३	४४	११	०	४४	२८
६	श	२	२६	३०	३५	८१६	३३	३	१०	३२	१२	२६	४९	११	२६	५४	४	९४	७	१	२८	४९	२०	११	५	५४	५	३०	१६	१०	२९	४९	१७	११	०	४१	१७
७	र	३	८	५९	३३	८०१	२०	३	१०	५९	१	२६	४९	११	२८	२८	११	९९	२२	१	२९	०	५६	११	६	२४	२२	३०	१६	१०	२९	५४	४९	११	०	३८	६
८	चं	३	२३	१३	१	७८५	३५	३	११	२५	५०	२६	४९	०	०	७	३४	९९	२२	१	२९	१२	३१	११	६	५४	३९	३०	१६	११	०	०	२१	११	०	३४	५५
९	मं	४	६	१०	४४	७६९	१३	३	११	५२	४०	२६	४९	०	१	४६	५६	९९	२२	१	२९	२४	६	११	७	२४	५६	३०	१६	११	०	५	५३	११	०	३१	४४
१०	बु	४	१८	५३	१२	७५३	५५	३	१२	१९	२९	२६	४९	०	३	२६	१९	९९	२४	१	२९	३५	४२	११	७	५५	१२	४५	४५	११	०	११	२५	११	०	२८	३४
११	गु	५	०	२२	१९	७४१	१८	३	१२	४६	१८	२६	४९	०	५	५	४३	१०४	३८	१	२९	४७	१७	११	८	४०	५८	५४	४१	११	०	१६	५७	११	०	२५	२३
१२	शु	५	१३	४०	२७	७३०	४६	३	१३	१३	७	३१	३२	०	६	५०	२२	१०७	५५	२	०	०	१२	११	९	३५	४०	५४	४१	११	०	२२	२८	११	०	२२	१२
१३	श	५	२५	४९	४७	७२३	४७	३	१३	४४	३९	३१	२४	०	८	३८	१७	१०७	५५	२	०	१३	१३	११	१०	३०	२२	५४	४१	११	०	२८	०	११	०	१९	१
१४	र	६	७	५३	४१	७२४	५३	३	१४	१६	४	३१	१५	०	१०	२६	१२	१०७	५५	२	०	२६	१४	११	११	२५	४	५४	४१	११	०	३३	३२	११	०	१५	५०
१५	चं	६	२०	०	०	७२५	१०	३	१४	४७	२०	३१	१५	०	१२	१४	७	१०८	४	२	०	३९	१६	११	१२	१९	४५	५४	४१	११	०	३९	३	११	०	१२	४०

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पुष्य।। बुध-रेवती।। ति.७ रवि अश्विनीमेष में ५५।२७ (रा.शे.३।४०)। ति.१५ सोम भरणी ३६।३५ (रा.८।३)।। **गुरु-मृग २ चरण।।** ति.११ गुरु मृग ३ चरण मिथुन ५९।८ (रा.शे.५।६)।। **मार्गी शुक्र-उ.भा.में।। शनि-पू.भा.३ चरण।। ति.७ रवि** मीन पू.भा.४ चरण ५६।१५ (रा.शे.३।५९)।। **राहु-** पू.भा.में ४ चरण। **केतु-उ.फा.२ चरण।।**

वैशाखशुक्लपक्ष विचार– सामान्य रूप से यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। वैशाख में पांच रविवार वृष्टि विनाशक है। वैशाख शुक्ल शुक्रवारी पंचमी कष्टदायी है। **२९ अप्रैल** को समशृंग **चंद्रदर्शन** सामान्य है। आज सूर्यास्त उपरान्त ६ घटी तृतीया तिथि प्रदोषकाल में प्राप्त होने से **भगवान् परशुराम की जयंती** मनायी जायेगी। **३०अप्रैल को रोहिणी** प्रशस्त **अक्षय तृतीया** का पर्व है। इसे सतयुग की प्रारंभ-तिथि माना गया है। इस दिन दान अवश्य करना चाहिये, आज के दिन दिया गया दान अक्षय होता है। **१ मई को वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **५ मई को आद्यजगद्गुरु शंकराचार्य** तथा **संत सूरदास की जयन्ती** मनाई जायेगी। ☛

५पं० वैशाखशुक्ल ८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २८७४
अयनांश २४।१२।५

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	३	०	१	११	११	११	५
२०	२३	११	०	२९	६	०	०	०
२५	१३	२५	७	१२	५४	०	३४	३४
३३	१	५०	३४	३१	३९	२१	५५	५५
५७	७८५	२६	९९	११	३०	५	३	३
५७	३५	४९	२२	३५	१६	३२	११	११



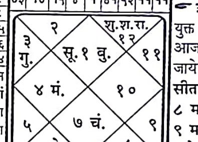
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ चं. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ चं. घं.	मि.
मेष	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	११	६	७	६	३	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४५	५	४१	५	३७	५	३४
वृष	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	७	५९	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४१	७	३७	७	३३	७	३०
मिथुन	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५५	९	५१	९	४७	९	४४
कर्क	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	२
सिंह	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२७	२	२३	२	१९	२	१६
कन्या	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	४०	४	३६	४	३२	४	२९
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१४	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५
वृश्चिक	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९	९	५	९	२
धनु	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१९	११	१५	११	११	११	८
मकर	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	६	१	२	१२	५८	१२	५५
कुम्भ	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३७	२	३३	२	२९	२	२६
मीन	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	५	४	१	३	५७	३	५४

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ सोम भरणी में सूर्ययुति। ति.२ मंगल कृत्तिका सूर्यभोग्य। **ति.३** बुध सा.५।५७ रिक्ता भद्रापूर्व रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन **उपनयन (ल.२ प्रा.६।१८ से दि.८।१४ तक ५वां के.दा.) द्विरागमन (ल.२ प्रा.६।१८ से या ल.३ प्रा.८।१४ से)** विपणि मुहूर्त्त। ति.४ गुरु दि.३।५७ रिक्ताभद्रावाद मृगशिर दोलारोहण सूतीस्नान पूर्वदिशा की यात्रा रोगविमुक्तस्नान (४र्थी) **द्विरागमन (ल.७सा.५।९ से ८वां गु.दा.)** हलप्रवहण विपणि व्यापार शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.५शुक्र आर्द्रा अक्षरारम्भ **विद्यारंभ (ल.२ प्रा.६।११से,या ल.३ दि.८।७ से)** हलप्रवहण धानछेदन मुहूर्त्त। ति.६ शनि पुनर्वसु भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। ति.७ रवि पुष्य भौमयुति। ति.८ सोम दि.११।४७ रिक्तापूर्व श्लेषा धानछेदन मुहूर्त्त। ति.९ मंगल मघा सूर्यवेध। ति.१० बुध पू.फा.में सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। ति.११ गुरु उ.फा.मे केतुयुति। रा.१०।१२ से हस्त **वधूप्रवेश (ल.१२ रा.२।४० से लग्न का राहु दान)।** ति.१२ शुक्र हस्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रयविक्रय **कर्णवेध, अक्षरारम्भ विद्यारंभ (ल.२प्रा.५।४५ से,या ल.३ दि.७।४१से)** जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, **उपनयन (ल.३दि.७।४१से दि.९।५५तक) वधूप्रवेशद्विरागमन (ल.२ प्रा.५।४५से) द्विरागमन (ल.३ दि.७।४१ से या ल.७ सा.४।४० से)वधूप्रवेश(ल.८ रा.६।५६ से ८वां गु.दा.) गृहारंभ (ल.३ दि.७।४१ से)** विपणि व्यापार वाहन क्रय मुहूर्त्त। ति.१३ शनि चित्रा राहुवेध।ति.१४ रवि स्वाती व्यतीपात। ति.१५ सोम स्वाती विष्टिदोष। दि.८।११ भद्रा बाद विशाखा चौपायों का क्रय विक्रय धानछेदन मुहूर्त्त।

६पं० वैशाखशुक्ल१५सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२८८१
अयनांश २४।१२।६

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	३	०	२	११	११	११	५
२७	२०	१४	१२	०	१२	०	०	०
१०	०	४७	१४	३९	१९	३९	१२	१२
३३	०	२०	७	१६	४५	३	४०	४०
५७	७२५	३१	१०८	१३	५४	४	३	३
४३	१०	१५	४	१	४१	५२	११	११



②सागर में स्नान। श्रीविष्णु की चन्दन पूजा। काशी में त्रिलोचन यात्रा। श्रीबद्रीकेदारयात्रा। चन्दनयात्रा त्रेतायुगादि। कल्पादि ३। वर्षीतपा समापन (जैन) रवियोग रा.८।२ से पूर्व सर्वार्थसिद्धियोग। ③चन्दनषष्ठी (बङ्गाल) श्रीरामानुजाचार्य जयती। दादाचेलाराम जयती (सिंध)। दृश्यागस्त्यास्त ६।५१(दि.८।१४)। रवियोग सा ५।३२तक। ⑤ फूलदोलयात्रा (बङ्गाल)। गन्धेश्वरीपूजा (बङ्गाल)। बुद्धजयंती। बुद्धपूर्णिमा। बुद्धसवत २०६९ प्रारंभ। रोटमहोत्सव (नेपाल)। मृत्युबाण ५१।२३ (रा. १।५८ से)। यायीजययोग प्रा.५।३७ तक।

☛ ३ मई आज **गंगा सप्तमी** मध्याह्न में सप्तमी युक्त अल्प मात्रा ग्राह्य अष्टमी में मनाई जायेगी। आज **श्री रामानुजाचार्य की जयंती** मनाई जायेगी। **६ मई** को मध्याह्न युक्त नवमी में **सीतानवमी** तथा **मैथिल दिवस** मनाई जायेगी। **८ मई को मोहिनी एकादशी** व्रत सबका होगा। **९ मई** को सर्व कामनापूर्ति हेतु **प्रदोष व्रत** किया जायेगा। **११ मई को भगवान् श्रीनृसिंह का अवतार पर्व** प्रदोषव्यापिनी स्वाती युक्त चतुर्दशी में मनाया जायेगा। यह व्रत यथाविधि केवल फलाहार करके किया जाता है। सायंकाल में **नृसिंह भगवान् की पूजा लक्ष्मी संग** कर आरती करें। **१२ मई को स्नान-दान व व्रत की वैशाख पूर्णिमा** मनाई जायेगी। आज बौद्ध सम्प्रदाय का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व **बुद्ध पूर्णिमा बुद्ध जयंती** के रूप में मनाया जायेगा। आज ही **कूर्म जयंती** भी मनाई जायेगी। **वैशाख व्रत नियम** की आज समाप्ति हो जायेगी।

श्रीसंवत २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल वसंतऋतु।।

दि.मा घ.प.	तिथि		नक्षत्र	योग	करण	योग	तारीखें अं.	फ. हि. सो. ने. रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति उ +	रे.अं. - मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.
३२ ५९	१	मं ४४ १० रा ११ ४	विशाखा ६ ५६ दि ८ १०	परिघ ६० ० समस्त	वा ११ ५० कौ ४४ १०	श्रीवत्स	१३	१ १४ ३० ३० २३			५ २४	६ ३६	० २८ ८ १७	५७ ४२	१८ २२	- ६	७ २२
३३ २	२	बु ४८ ६ रा १२ ३८	अनुराधा १२ ४७ दि १० ३०	परिघ ० ५९ प्रा ५ ४४	तै १६ ८ गर ४८ ६	सौम्य	१४	२ १५ ३१ ३१ २४			५ २४	६ ३६	० २९ ५ ५९	५७ ४०	१८ ३७	- ६	८ १८
३३ ५	३	गु ५० ५४ रा १ ४४	ज्येष्ठा १७ ४७ दि १२ ३०	शिव १ २० प्रा ५ ५५	व ११ ३० भ ५० ५४	कालदंड	१५	३ १६ १ १ २५	धनु	१७।४७	५ २३	६ ३७	१ ० ३ ४०	५७ ३८	१८ ५१	- ६	९ १४
३३ ७	४	शु ५२ ३७ रा २ २५	मूल २१ ४० दि २ ३	सिद्ध ०/५८ ५५/४४ प्रा ५/५ ४५/१५	वव २१ ४५ वा ५२ ३७	स्थिर	१६	४ १७ २ २ २६			५ २३	६ ३७	१ १ १ १८	५७ ३७	१९ ५	- ६	१० ६
३३ १०	५	श ५२ ५९ रा २ ३३	पू.षा. २४ २२ दि ३ ६	शुभ ५७ २१ रा ४ १८	कौ २२ ४८ तै ५२ ५९	मातङ्ग	१७	५ १८ ३ ३ २७	मकर	३९।४३	५ २२	६ ३८	१ १ ५८ ५६	५७ ३५	१९ १९	- ६	१० ५४
३३ १२	६	र ५२ ४ रा २ ११	उ.षा. २५ ४७ दि ३ ४०	शुक्ल ५४ १ रा २ ५८	गर २२ ३१ व ५२ ४	अमृत	१८	६ १९ ४ ४ २८			५ २२	६ ३८	१ २ ५६ ३१	५७ ३३	१९ ३२	- ६	११ ३७
३३ १४	७	चं ४९ ५६ रा १ १९	श्रवण २५ ५८ दि ३ ४४	ब्रह्म ४९ ४२ रा १ १३	भ २१ ० वव ४९ ५६	सिद्धि	१९	७ २० ५ ५ २९	कुम्भ	५५।२९	५ २१	६ ३९	१ ३ ५४ ५	५७ ३१	१९ ४३	- ६	१२ १६
३३ १७	८	मं ४६ ४५ रा १२ ३	धनिष्ठा २५ ० दि ३ २१	ऐन्द्र ४४ ३४ रा ११ १०	वा १८ २० कौ ४६ ४५	उत्पात	२०	८ २१ ६ ६ ३०			५ २१	६ ३९	१ ४ ५१ ३७	५७ ३०	१९ ५८	- ६	१२ ५२
३३ १९	९	बु ४२ ३८ रा १० २३	शतभिष २३ ८ दि २ ३५	वैधृति ३८ ४० रा ८ ४८	तै १४ ४१ गर ४२ ३८	मानस	२१	९ २२ ७ ७ ३१			५ २०	६ ४०	१ ५ ४९ ७	५७ २९	२० ११	- ६	१ २७
३३ २१	१०	गु ३७ ४० रा ८ २४	पू.भा. २० २४ दि १ २९	विष्कुम्भ ३२ ७ सा ६ १०	व १० ९ भ ३७ ४०	मुद्गर	२२	१० २३ ८ ८ १	मीन	६।५	५ २०	६ ४०	१ ६ ४६ ३७	५७ २७	२० २३	- ५	२ १
३३ २३	११	शु ३२ १० सा ६ ११	उ.भा. १६ ५९ दि १२ ६	प्रीति २५ ३ दि ३ २०	वव ४ ५५ वा ३२/५९ १०/१२	ध्वज	२३	११ २४ ९ ९ २			५ १९	६ ४१	१ ७ ४४ ४	५७ २६	२० ३४	- ५	२ ३६
३३ २५	१२	श २६ १५ दि ३ ४९	रेवती १३ ८ दि १० ३४	आयुष्मा. १७ ३८ दि १२ २२	तै २६ १५ गर ५३ ११	धाता	२४	१२ २५ १० १० ३	मेष	१३।८	५ १९	६ ४१	१ ८ ४१ ३१	५७ २५	२० ४६	- ५	३ १५
३३ २७	१३	र २० ८ दि १ २१	अश्विनी ९ ४ दि ८ ५५	सौभाग्य १० ३ दि ९ ११	व २० ८ भ ४७ ४	आनंद	२५	१३ २६ ११ ११ ४			५ १८	६ ४२	१ ९ ३८ ५७	५७ २३	२० ५६	- ५	३ ५९
३३ ३०	१४	चं १४ ० दि १० ५४	भरणी ४ ५२ प्रा ७ १४	शोभन २/५२ २३/२८ प्रा ६/३ १५/१४	श १४ ० च ४१ १	चर	२६	१४ २७ १२ १२ ५	वृष	१८।५२	५ १८	६ ४२	१ १० ३६ २०	५७ २२	२१ ७	- ५	४ ५०
३३ ३१	३०	मं ८ ३ दि ८ ३०	कृत्तिका ०/५६ ५३/३४ प्रा ५/४ ३८/१२	सुकर्मा ४७ ३८ रा १२ २०	ना ८ ३ किं ३५ १६	गद	२७	१५ २८ १३ १३ ६			५ १७	६ ४३	१ ११ ३३ ४३	५७ २०	२१ १७	- ५	- -

ज्येष्ठकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २३ वैशाख से ६ ज्येष्ठ तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक १३ मई से २७ दिनांक तक सन २०२५ ई.।

ज्येष्ठ में पिष्टन(आटे) से निर्मित ब्रह्ममूर्ति के वस्त्रादि से पूजन करने से सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)। श्रीश्री मांआनंदमयी जयंती। ▼
⊙सं.वृष में सूर्य ५६।११(रा.३।५२)। मु.१५जघन्य महँगी। पूर्व की १६घटि पुण्य। परदिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्तिपुण्यकाल। ❶
भ.दि.१।११से रा.१।४५ तक (पाताल)। सौर व नेपाली ज्येष्ठमासारंभ। धनुराशि(दि.१२।३०)। मृत्युवाण ५८।३९उ.(रा.शे.४।५१से)।
संकष्टी श्रीगणेश चौथ व्रत (च.उ.रा.१०।६)। मृत्युवाणसमस्तदिन। रवियोग दि.२।३ तक। ▼मृत्युवाण ५३।४७या.(रा.२।५५तक)।
मकरराशि (रा.९।१५)। कृष्णपञ्चमी (जैन)। मृत्युवाण १।७ या.(प्रा.५।४९तक)। यायीजययोग दि.३।६ से।
भ.रा.२।११से। (पाताल)। रवियोग दि.३।४० से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। ❷ यायीजययोग दि.८।५५ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.दि.१।४५ तक (पाताल)। कुम्भराशि(रा.३।३३)। रवियोगयायीजयसर्वार्थसिद्धियोग दि.३।४४ तक।
कालाष्टमी व्रत। श्रीशीतलाष्टमी व्रत। आज बासीभोजन का ग्रहण शास्त्रविहित है। त्रिलोचनाष्टमी (बङ्गाल)। त्रिलोचनपूजा। बड़का मंगल। ⊙मा.मिथुनसूर्य ५६।०४(रा.शे.४।३)।
❶हरिद्वार काशी में असीसंगम में स्नान। गो अन्न तिल दान गोदावरी में स्नान। ग्रीष्मऋतु। देवर्षिनारद जयंती। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.१०।३०तक।
भ.दि.९।२४ से रा.८।२४ तक (मृत्यु)। राष्ट्रियज्येष्ठमासारंभ दि.३१। मीनराशि (दि.७।४६)। पौराणिक अगस्त्यास्त १३।०८(दि.१०।५५)। यायीजययोग रा.८।२४ से।
अचला ११एकादशी व्रत सबका। जलक्रीड़ाएकादशी(उड़ीसा)। भद्रकालीएकादशी(पंजाब)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग दि.१२।६ से।
मेषराशि(दि.१०।३४)। शनिप्रदोष १३व्रत। सन्तानहेतु लाभप्रद। तीन दिनों का वटसावित्रीव्रतारम्भ। ⊙रोहिणी में सूर्य२२।०(दि.२।६)।
भ.दि.१।२१ से रा.१२।८ तक (स्वर्ग)। मासशिवरात्रि १३व्रत। निशीथ का ग्राह्य। वटसावित्रीद्वितीयदिन। प्रदोष सावित्रीचतुर्दशी (बङ्गाल)। ❷
वृषराशि (दि.१२।५१)। श्राद्ध ३०। प्रदोष वटसावित्री व्रत। स्त्रीयों के नित्य काम्य हेतु। सावित्री अमावस्या (उड़ीसा)। फलहारिणीकालिकापूजा–निशीथव्यापिनि (बङ्गाल)।
भौमवती अमावस्या ३०। स्नानदान हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष तथा भय। शनैश्चर जयंती। बड़का मंगल। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.५।३८ तक।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्ट लग्न विमर्श

ति.१ मंगल रा.२।५५ मृत्युवाण उपरान्त से अनुराधा रे.७ ल.१२ (रा.२।५५ उ. इष्टा २ ग्र.व.वि.१२। सूर्यवेध किंतु चन्द्र अपुक्त से अशुभ।

ति.२ बुध दि.१०।३० या अनु.क्रिया पंचेष्ट लग्नाभाव।

ति.३ गुरु दि.१२।३० से मूल में भौमयुक्त चन्द्र अपुक्त से अशुभ। रा.७।५३ से (चन्द्रशुद्धि) रा.शे.४।५१ मृत्युवाण-पूर्व मूल में रे.९ ल.८ (रा. ७।५३ से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१३।।(७वाँ सूर्य दान) या ल.११ (रा.१२।४४ से) इष्ट ६ ग्र.व. वि.१५।

ति.४ शुक्र मूल में मृत्युवाणदोष।

ति.५ शनि दि.३।६ मृत्युवाण बाद उ.षा.में ल.७ (सा.४।९ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (१०वाँ भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) ल.९ (रा.८।४२ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ (८वाँ भौम अशुभ) या ल.१२ (रा.२।६ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१७।

ति.६ रवि दि.३।४० तक उ.षा.में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१० गुरु दि.१।२९ से उ.भा.में रे.७ ल.गोधूलि(सूर्यास्तकाल) या ल.१० (दि.१०।२७ से) इष्ट ५ग्र.व.वि. १३ (७वाँ भौमदान) या ल.१२ (रा. १।४५ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (लग्न का चंद्र दान)।

ति.११ शुक्र दि.१२।६ तक उ.भा.में रे.७ दिन में ल.२ (प्रा.६।४५ तक) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५। दि. १२।६ से रेवती रे.१० ल.गोधूलि वा ल.२ (रा.११।४१उ.) इष्टा ५ ग्र.व.वि.१२ (ल. चंद्रदान)।

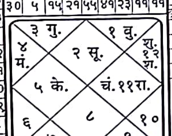
ति.१२ शनि दि.१०।३४ या रेवती ल.२ (प्रा.६।४० या) इ.६ ग्र.व. वि.१५। पश्चात मासान्त दोष है।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	गुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ मं	७ १ ५६ २९	७२५ २६	३ १५ १८ ३५	३१ १५	० १४ २ ११	१११ ५७	२ ० ५२ १७	११ १३ १४ २७	५४ ४१	११ ० ४३ ५६	११ ० ९ २८
२ बु	७ १४ ४ ४२	७२८ ५५	३ १५ ४९ ५१	३१ १५	० १५ ५४ ९	१११ ५७	२ १ ५ १८	११ १४ ९ ९	५४ ४१	११ ० ४८ १९	११ ० ६ १८
३ गु	७ २६ २१ ८	७३८ २७	३ १६ २१ ७	३१ १५	० १७ ४६ ६	१११ ५७	२ १ १८ १९	११ १५ ३ ५१	५४ ४१	११ ० ५२ ४२	११ ० ३ ७
४ शु	८ ८ ४४ ४०	७५१ २२	३ १६ ५२ २२	३१ १५	० १९ ३८ ४	१११ ५७	२ १ ३१ २०	११ १५ ५८ ३३	५४ ४१	११ ० ५७ ५	१० २९ ५९ ५६
५ श	८ २१ २९ ६	७६५ ३३	३ १७ २३ ३८	३१ १५	० २१ ३० १	११३ ५६	२ १ ४४ १७	११ १६ ५३ १४	५४ ४१	११ १ १ २८	१० २९ ५६ ४६
६ र	९ ३ २४ ९	७८१ ३२	३ १७ ५४ ५४	३१ १५	० २३ २३ ५८	११७ २१	२ १ ५७ १२	११ १७ ४७ ५६	५४ ४१	११ १ ५ ५२	१० २९ ५३ ३६
७ चं	९ १७ ३४ ५०	७९७ ३३	३ १८ २६ ९	३१ १५	० २५ २१ १९	११७ २१	२ २ १० ७	११ १८ ४२ ३८	५४ ४१	११ १ १० १५	१० २९ ५० २३
८ मं	१० ० १ १३	८१३ ५	३ १८ ५७ २५	३३ १५	० २७ १८ ४०	११७ २१	२ २ २३ ३	११ १९ ३७ २०	५४ ४१	११ १ १४ ३८	१० २९ ४७ १३
९ बु	१० १४ ४१ ३९	८२५ ४१	३ १९ २८ ४१	३४ १५	० २९ १६ २	११७ २१	२ २ ३५ ५८	११ २० ३२ २	५४ ४१	११ १ १९ १	१० २९ ४४ २
१० गु	१० २८ ३५ १	८३८ ११	३ १९ ५९ ५६	३४ १५	१ १ १३ २३	११८ १७	२ २ ४८ ५४	११ २१ २६ ४४	५४ ४१	११ १ २३ २४	१० २९ ४० ५२
११ शु	११ १२ ३९ ५३	८४८ १८	३ २० ३१ १२	३४ १५	१ ३ ११ ४१	११८ ४२	२ ३ १ ४९	११ २२ २१ २५	५४ ४१	११ १ २७ ४७	१० २९ ३७ ४१
१२ श	११ २६ ५२ ५३	८५४ ५१	३ २१ २ २८	३४ १५	१ ५ १० २३	११८ ४२	२ ३ १४ ४५	११ २३ १६ ७	५४ ३१	११ १ ३२ ९	१० २९ ३४ ३०
१३ र	० ११ १० ११	८५८ ९	३ २१ ३३ ४३	३४ १५	१ ७ ९ ५	११८ ४२	२ ३ २७ ४४	११ २४ १० ३८	५४ १६	११ १ ३६ ३१	१० २९ ३१ १९
१४ चं	० २५ ३० १४	८६० १२	३ २२ ४ ५९	३४ १५	१ ९ ७ ४८	११८ ४२	२ ३ ४१ १	११ २५ ४ ५५	५४ १६	११ १ ४० ५४	१० २९ २८ ८
३० मं	१ १० १२ ३२	८५९ ३	३ २२ ३६ १५	३४ १५	१ ११ ६ ३०	११८ ४२	२ ३ ५४ १८	११ २५ ५९ ११	५४ १६	११ १ ४५ १६	१० २९ २४ ५८

७पं० ज्येष्ठकृष्ण ८मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२८८९
अयनांश२४।१२।७

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	३	०	२	११	११	१०	४
४	०	१८	२७	२	१९	१	२९	२९
५१	१	५७	१८	२३	३७	१४	४७	४७
३७	१३	२५	४०	३	२०	३८	१३	१३
५७	८१३	३३	११७	१२	५४	४	३	३
३०	५	१५	२१	५५	४१	२३	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१मं. घं.मि.	२बु. घं.मि.	तिथि ल.अं.	३ गु. घं.मि.	४ शु. घं.मि.	५श. घं.मि.	६ र. घं.मि.	७ चं. घं.मि.	८ मं. घं.मि.	९ बु. घं.मि.	१०गु. घं.मि.	११शु. घं.मि.	१२श. घं.मि.	१३र. घं.मि.	१४ चं. घं.मि.	३०मं. घं.मि.
मेष	५ ३०	५ ५६	वृष	७ १९	७ १४	७ १०	७ ६	७ २	६ ५७	६ ५३	६ ४९	६ ४५	६ ४०	६ ३६	६ ३२	६ २८
वृष	७ २६	७ २२	मिथुन	९ ३३	९ २८	९ २४	९ २०	९ १६	९ ११	९ ७	९ ३	८ ५९	८ ५४	८ ५०	८ ४६	८ ४२
मिथुन	९ ४०	९ ३६	कर्क	११ ५१	११ ४६	११ ४२	११ ३८	११ ३४	११ २९	११ २५	११ २१	११ १७	११ १२	११ ८	११ ४	११ ०
कर्क	११ ५८	११ ५४	सिंह	२ ५	२ ०	१ ५६	१ ५२	१ ४८	१ ४३	१ ३९	१ ३५	१ ३१	१ २६	१ २२	१ १८	१ १४
सिंह	२ १२	२ ८	कन्या	४ १८	४ १३	४ ९	४ ५	४ १	३ ५६	३ ५२	३ ४८	३ ४४	३ ३९	३ ३५	३ ३१	३ २७
कन्या	४ २५	४ २१	तुला	६ ३४	६ २९	६ २५	६ २१	६ १७	६ १२	६ ८	६ ४	६ ०	५ ५५	५ ५१	५ ४७	५ ४३
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
तुला	६ ४१	६ ३७	वृश्चिक	८ ५१	८ ४६	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ २९	८ २५	८ २१	८ १७	८ १२	८ ८	८ ४	८ ०
वृश्चिक	८ ५८	८ ५४	धनु	१० ५७	१० ५२	१० ४८	१० ४४	१० ४०	१० ३५	१० ३१	१० २७	१० २३	१० १८	१० १४	१० १०	१० ६
धनु	११ ४	११ ०	मकर	१२ ४४	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३१	१२ २७	१२ २२	१२ १८	१२ १४	१२ १०	१२ ५	१२ १	११ ५७	११ ५३
मकर	१२ ५१	१२ ४७	कुम्भ	२ १५	२ १०	२ ६	२ २	१ ५८	१ ५३	१ ४९	१ ४५	१ ४१	१ ३६	१ ३२	१ २८	१ २४
कुम्भ	२ २२	२ १८	मीन	३ ४३	३ ३८	३ ३४	३ ३०	३ २६	३ २१	३ १७	३ १३	३ ९	३ ४	३ ०	२ ५६	२ ५२
मीन	३ ५०	३ ४६	मेष	५ २०	५ १५	५ ११	५ ७	५ ३	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४६	४ ४१	४ ३७	४ ३३	४ २९

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ मंगल दि.८।१०तक विशाखा लालवस्त्रमूँगारत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.२ बुध अनु. जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन पश्चिमदिशा की यात्रा शिल्पविद्या कर्णवेध (ल.२ दि.७।२२ से दि.९।३६ तक) बीजोप्ति विपणि वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.३ गुरु ज्येष्ठा सूर्यवेध। दि.१२।३० से दि.१।११ भद्रा पूर्व मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण दर्वरी धानरोपण औषधीसेवन नावनिर्माण उपनयन (ल.५ दि.१२।३०से लग्न का के.दा.) विपणि धानछेदन मुहूर्त्त। ति.४ शुक्र मूल रिक्तादोष। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.५ शनि पू.षा.में शस्त्र निर्माण मुहूर्त्त। दि.३।६ से उ.षा.में सौभाग्यवतीविना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण बीजोप्ति मुहूर्त्त। ति.६ रवि रा.२।११ भद्रा पूर्व उ.षा.में शिशुताम्बूलभक्षण नवीनआसन का प्रयोग चौपायों का क्रयविक्रय नावनिर्माण धानछेदन मुहूर्त्त। ति.७ सोम श्रवण सूर्यवेध। दि.३।४० से धनिष्ठा आभूषण निर्माण चौपायों का क्रयविक्रय मकर के चन्द्र में पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या चौल(ल.६ दि.४।१९से) औषधी सेवन हलप्रवहण बीजोप्ति वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.८ मंगल रा.११।१०वैधृति पूर्व धनिष्ठा लालवस्त्रमूँगारत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। दि.३।२१ से शतभिष शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.९ बुध शतभिष रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.१०गुरु पू.भा.में शनियुति। ति.११ शुक्र दि.१२।१६ तक उ.भा.में ●

८पं० ज्येष्ठकृष्ण ३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२८९६
अयनांश २४।१२।८

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१	३	२	२	११	११	१०	४
११	१०	२२	११	३	२५	१	२९	२९
३३	१२	३६	६	५४	५५	४५	२४	२४
४३	३२	१५	३०	१८	११	१६	५८	५८
५७	८५१	३४	११८	१३	५४	४	३	३
२०	३	१५	४२	७०	१६	२२	११	११



● पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूल भक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण गृहप्रवेश (ल.३ प्रा.६। ४५ से दि. ८।५९तक) हलप्रवहण विपणि मुहूर्त्त। ति.१२ शनि रेवती कर्णवेध। दि.१०।३४ से दि.३। ४९ तक (१२में) अश्विनी कालावस्त्र-नीलमादि रत्नधारण हलप्रवहण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। पश्चात मासान्त दोष है।

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल-ति.२ बुध दि.१०।३० से। ति.४ शुक्र दि.२।३ तक। रेवती/अश्विनी-ति.११ शुक्र दि.१२।१६ से। ति.१३ रवि दि.८।५५तक। पञ्चकविचार-ति.७ सोम रा.३।३३ से।ति.१२ शनि दि.१०।३४ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पुष्य। ति.३ गुरु श्लेषा ३६।१६(रा.७।५३)।। बुध-भरणी।। ति.७ सोम कृत्तिका ४०।१४ (रा.९।२७)। ति.९ बुध वृष २२।२९ (दि.२।२०)। ति.१४ सोम रोहिणी २६।२३ (दि.३।५१)।। गुरु-ति.१२ शनि मृग.४ चरण २४।१६ (दि.३।१)।। शुक्र-उ.भा.में।। ति.४ शुक्र रेवती ४५।२९ (रा.११।३५)।। शनि-पू.भा.४ चरण।। राहु-मीनराशि पू.भा.में ४ चरण।। ति.३ गुरु कुम्भराशि पू.भा.३ चरण।। केतु-कन्याराशि उ.फा.२ चरण।। सिंहराशि उ.फा.१ चरण ५८।५२(रा.१०।५६)।।

ज्येष्ठकृष्णपक्ष विचार– यह पक्ष सामान्य रूप से पन्द्रह दिनों का है। १३ मई से ज्येष्ठ मास आरंभ हो रहा है। ज्येष्ठ मास के प्रारंभ में आटे से निर्मित ब्रह्म मूर्ति का वस्त्रादि से पूजन करने से सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। १४ मई को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में बिना किसी वाहन के पैदल ही पहुँचकर सूचना पहुँचाने वाले आदि संचार वाहक **गुरु देवर्षि नारद जी की जयंती** मनाई जायेगी एवं **वीणा पूजन** का उत्सव किया जायेगा। आज **वृष की संक्रांति** रात ३:५२ से लगेगी, पुण्यकाल अगले दिन **१५ मई** को सूर्योदय से मध्याह्न तक होगा। गोदावरी, हरिद्वार व काशी में असीसंगम पर स्नान ☛ कर गो, तिल, सुवर्ण, अन्नादि एवं वस्त्र का दान करना चाहिए। आज से **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ** हो जायेगा। **१६ मई को संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात १०:६ के बाद अर्घ्य दें। **१९ मई** को सप्तमी में व्रत कर देवी का पूजन कर अगले दिन **२० मई को शीतलाष्टमी व्रत** बसिअउरा होगा, आज बासी भोजन करना शास्त्र विहित है। २३ मई को **अचला एकादशी** व्रत सबका है, इस दिन व्रत करने से अचल अपार पापों से मुक्ति मिलती है। २४ मई को सन्तान लाभ हेतु **शनिप्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज से ही **सौभाग्यदायी वटसावित्री व्रत** का प्रारंभ होगा, जो कि तीन दिनों तक चलेगा। **२५ मई** को निशीथ १४ तिथि में **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **२६ मई** को **श्राद्ध की अमावस्या** तथा प्रदोष अमावस्या में **वटसावित्री व्रत** का समापन होगा। **वटसावित्री व्रत** को **बरगदाई** भी कहते हैं। इस दिन स्त्रियाँ सौभाग्य हेतु वटवृक्ष की १०८ बार या यथाशक्ति कच्चा सूत लपेटते हुए परिक्रमा करती हैं। **२७ मई को स्नान-दान की भौमवती अमावस्या होगी।** अशुभवार से भय व कष्ट होता है। **भौमवती अमावस्या** के दिन गंगा स्नान करने से सहस्र गोदान के समान फल प्राप्त होता है। आज **श्रीशनिदेव** की जयंती मनाई जायेगी।

दि.मा घ.	प.		वा.	तिथि					नक्षत्र						योग						करण						योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	३३	१	बु	२ ५४	२९ ५७	प्रा	६ ४	१७ १५	मृगशिर	५४	१२	रा	२	५७	धृति	४०	५१	रा	९	३७	बव	२	२९	वा	२९ ५७	५७ २६	अमृत	२८	१६	२९	१४	१४	७	मिथुन	२५।४४	५	१७	६	४३	१	१२	३१	४	५७	१९	२१	२७	-	५	८	२३
३३	३५	३	गु	५३	१४	रा	२	३४	आर्द्रा	५१	५९	रा	२	४	शूल	३४	३९	रा	७	८	तै	२५	२०	गर	५३	१४	काण	२९	१७	१	१५	१५	८			५	१७	६	४३	१	१३	२८	२४	५७	१७	२१	३७	-	५	९	२५
३३	३७	४	शु	४९	५४	रा	१	१४	पुनर्वसु	५०	३२	रा	१	२९	गण्ड	२९	९	सा	४	५६	व	२१	३५	भ	४९	५५	लुम्बक	३०	१८	२	१६	१६	९	कर्क	३५।५४	५	१७	६	४३	१	१४	२५	४२	५७	१६	२१	४६	-	५	१०	१७
३३	३९	५	श	४७	३९	रा	१२	२०	पुष्य	५०	११	रा	१	२०	वृद्धि	२४	२८	दि	३	३	बव	१८	४७	वा	४७	३९	मित्र	३१	१९	३	१७	१७	१०			५	१६	६	४४	१	१५	२२	५९	५७	१६	२१	५४	-	५	११	२
३३	४०	६	र	४६	३६	रा	११	५४	श्लेषा	५१	३	रा	१	४१	ध्रुव	२०	४१	दि	१	३२	कौ	१७	७	तै	४६	३६	वज्र	जू.	२०	४	१८	१८	११	सिंह	५१।३	५	१६	६	४४	१	१६	२०	१५	५७	१५	२२	३	-	४	११	३९
३३	४२	७	चं	४६	५०	रा	११	५९	मघा	५३	९	रा	२	३१	व्याघात	१७	५५	दि	१२	२५	गर	१६	४३	व	४६	५०	ध्वांक्ष	२	२१	५	१९	१९	१२			५	१५	६	४५	१	१७	१७	३०	५७	१३	२२	११	-	४	१२	११
३३	४३	८	मं	४८	२६	रा	१२	३७	पू.फा.	५६	३४	रा	३	५३	हर्षण	१६	१०	दि	११	४३	भ	१७	३८	बव	४८	२६	धूम्र	३	२२	६	२०	२०	१३			५	१५	६	४५	१	१८	१४	४३	५७	११	२२	१८	-	४	१२	४१
३३	४५	९	बु	५१	५	रा	१	४१	उ.फा.	६०	०	समस्त			वज्र	१५	२६	दि	११	२५	वा	१९	४५	कौ	५१	५	प्रवर्द्धमान	४	२३	७	२१	२१	१४	कन्या	१२।४२	५	१५	६	४५	१	१९	११	५४	५७	१०	२२	२६	-	४	१	९
३३	४६	१०	गु	५४	५४	रा	३	१३	उ.फा.	१	५	प्रा	५	४१	सिद्धि	१५	३५	दि	११	२९	तै	२२	५९	गर	५४	५४	मातङ्ग	५	२४	८	२२	२२	१५			५	१५	६	४५	१	२०	९	५	५७	१०	२२	३२	-	४	१	३८
३३	४७	११	शु	५९	२८	रा	५	२	हस्त	६	३६	दि	७	५३	व्यतिपात	१६	२९	दि	११	५०	व	२७	११	भ	५९	२८	अमृत	६	२५	९	२३	२३	१६	तुला	३९।४२	५	१५	६	४५	१	२१	६	१५	५७	८	२२	३९	-	४	२	७
३३	४८	१२	श	६०	०	समस्त			चित्रा	१२	४८	दि	१०	२१	वरियान	१७	५४	दि	१२	२३	बव	३१	५८	वा	६०	०	काण	७	२६	१०	२४	२४	१७			५	१४	६	४६	१	२२	३	२३	५७	८	२२	४५	-	३	२	३८
३३	४९	१२	र	४	२९	प्रा	७	२	स्वाती	१९	२१	दि	१२	५८	परिघ	१९	३५	दि	१	४	वा	४	२९	कौ	३७	१	लुम्बक	८	२७	११	२५	२५	१८			५	१४	६	४६	१	२३	०	३१	५७	६	२२	५०	-	३	३	१४
३३	५०	१३	चं	९	३३	दि	९	३	विशाखा	२५	४९	दि	३	३३	शिव	२१	११	दि	१	४२	तै	९	३३	गर	४१	५२	मित्र	९	२८	१२	२६	२६	१९	वृश्चिक	९।१२	५	१४	६	४६	१	२३	५७	३८	५७	५	२२	५६	-	३	३	५४
३३	५१	१४	मं	१४	१२	दि	१०	५५	अनुराधा	३१	५०	सा	५	५८	सिद्ध	२२	२५	दि	२	१२	व	१४	१२	भ	४६	९	वज्र	१०	२९	१३	२७	२७	२०			५	१४	६	४६	१	२४	५४	४३	५७	४	२३	०	-	३	४	३९
३३	५२	१५	बु	१८	७	दि	१२	२९	ज्येष्ठा	३७	०	रा	८	२	साध्य	२३	५	दि	२	२८	बव	१८	७	वा	४९	३०	ध्वांक्ष	११	३०	१४	२८	२८	२१	धनु	३७।०	५	१४	६	४६	१	२५	५१	४७	५७	३	२३	५	-	३	-	-

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ७ ज्येष्ठ से २१ तिथि तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक २८ मई से ११ जून तक सन् २०२५ ई.। गुर्वस्त पश्चिम में ति.१५बुध(११-६-२५)

मिथुनराशि:(दि.३।१५)। ◡चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंगसुभिक्ष। मु ३०ममान्य। करवीर १व्रत। दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ। तिथि १०तक गंगा का पृथ्वी में निम्न प्रवेश। ❶
मु.जिलहिज १२हि१४४६। रम्भा ३व्रत। महाराणाप्रताप जयंती(राज.)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.२।४ से। ▲जमाईषष्ठी(बङ्गाल)। ❷
भ.दि.१।५५ से रा.१।१४ तक (स्वर्ग/मृत्यु)। कर्कराशि:(रा.७।३९)। वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। उमावतार ४। अ... (उड़ीसा)। ❷
महादेव विवाह (उड़ीसा)। श्रुतपञ्चमी(जैन)। रवियोग रा.१।२०से। ❶ सोपपदा २। वेदारम्भ का निषेध। सर्वार्थसिद्धियोग ...
जून ६। सिंहराशि (रा.५।३)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। अरण्यषष्ठी। अरण्यगौरीव्रत। शीतलाषष्ठी(उड़ीसा)। विन्ध्यवासिनीषष्ठी। ... ▲
भ.रा.११।५९से (मृत्यु)। ❹ चम्पकद्वादशी–उड़ीसा। मु.इदुज्जुहा(बकरीद)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।२१ से पूर्व में ...
भ.दि.१२।१८ तक (मृत्यु)। अष्टमी में शुक्लादेवी पूजन। मेलाक्षीरभवानी(कश्मीर)। धूमावतीजयंती। ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)। ... ❸
कन्याराशि(दि.१०।२०)। नवमी में देवी उपवास पूजन। मृत्युबाण ५०।२८या (रा.१।२६तक)। रवियोग समस्त। ◉ ...
श्री गङ्गादशहरा। श्रीगङ्गावतरण। श्री गङ्गाजन्म(ल.२)। काशीदशाश्वमेध में स्नान गङ्गास्तोत्र पाठ को ...
भ.दि.४।१७ से रा.शे.५।२ तक (पाताल)। तुलाराशि (रा.९।८)। द्वादशी आधिक्य से निर्जला एकादशी ११व्रत स्मार्त। ❸
वैष्णवों की एकादशी व्रत। "एकादशीविद्ध वृद्धिद्वादशीतिथि से गृहस्थ पूर्व व्रतकर आज पारण करें। त्रिविक्रम ... ❹
प्रदोष १२व्रत। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारंभ(तीनदिन)। श्रीसुपार्श्वनाथ जयंती(जैन)।◉मृगशिर में सूर्य २०।२८(दि.१।२५)। ❺
वृश्चिकराशि(दि.८।५५)। वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन। रवियोगयमघंटयोग दि ३।३३ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.दि.१०।५५ से रा.११।४२ तक (पाताल)। व्रत १५। प्रदोष दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत। गांवों के नित्य काम्य हेतु। चम्पकचतुर्दशी (बङ्गाल)। ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)।❻
धनुराशि(रा.८।१२)। पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तपूर्णिमा छत्रपादुकदान से आधिपत्य की प्राप्ति। बिल्वत्रिरात्रव्रत। जलयात्रा। ❼

विवाह मुहूर्त्त पञ्चेष्ट लग्न विमर्श

ति.१ बुध रा.२।५७ या मृग. रे.१० ल.२ (रा.६।२५ या) इष्ट ६ प्र.व.वि.१४।। या ल.७ (दि.३।४३ उ.) इष्ट ५ प्र.व.वि. ११ (६ शुक्र अशुभ) या ल.गोधूलि।
ति.६ रवि रा.१।४१ से मघा रे.५ (अल्प रेखा) पंचेष्ट लग्नाभाव। दिवा ल.४ (दि.१०।३७ उ.) इष्ट ५ प्र.व.वि.१४ या ल.७ (दि.३।४ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१४।। (१०मस्थ मंगल अशुभ) या ल.गोधूलि या ल.१० (रा.९।४० से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१० (७मस्थ भौमदान)।
ति.७ सोम मघा में पूर्वदोष।
ति.९ बुध उ.फा.में केतुयुति मृत्युबाण।
ति.१० गुरु उ.फा.में पूर्वदोष। प्रा.५।४१ या केतुयुति पंचेष्ट लग्नाभाव से दि.११।२९ व्यतिपात पूर्व हस्त रे.८ दिन ल.४ (दि.८।१७ मे) इष्ट ५प्र.व.वि.१४ या दिन ल.५ (दि.१०।२५ मे) इष्ट ५ प्र.व. वि.१३।। (लग्न का केतु दान)
ति.११शुक्र दि.७।५३ तक रे.७ पंचेष्ट लग्नभाव।
ति.१२ शनि दि.१०।२१ से स्वाती में रे.८ दिनल.५(दि.१०।२१ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३।। (७वां राहु दान) या दिनल.६ (दि.१२।३१ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३(७ वां शनि दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.२(रा.७।१७ से)इष्ट ५प्र.व. वि.१४ (८वां भौम अशुभ) या ल.१० (रा.९।२३से) इष्ट५ प्र.व.वि.१० (७वां भौम अशुभ) या ल.१२ (रा.१२।४१ से) इष्ट ५ प्र.व.वि. १२ (८वां चन्द्र अशुभ)।
ति.१२ रवि दि.१२।५८ तक स्वाती में रे.७ दिन ल.५(दि.१०।१३ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३।(७वां राहु दान) या दिन ल.६ (दि.१२।२७से) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५(७ वां शनि दान) पश्चात गुरुवृद्धत्व दोष प्रारंभ।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	गुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ बु	१ २३ ५८ १९	८३२०	३ २३ ७ ३०	३२११	१ १३ ५ १२	११८ ४२	२ ४ ७ ३५	११ २६ ५३	२७ ५४ १६	११ १ ४९ ३८	१० २९ २१ ५७
३ गु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४ शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५ श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६ र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७ चं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ मं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१० गु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२ श	६ ४ ५ १९	३२५ ४	३ २८ २९ १	३४१०	२ २ १८ ३६	१०९ ५६	२ ६ २० २८	० ६ ५७ ५५	६३ ५७	११ २ २२ ११	१० २८ ४९ ५९
१२ र	६ १६ ७ २६	३२९ १५	३ २९ ३ १९	३४१०	२ ४ ८ ४३	१०९ ५६	२ ६ ३३ १७	० ८ १ ५२	६३ ५७	११ २ २५ २४	१० २८ ४६ ४८
१३ चं	६ २८ ९ १६	३२२ ९	३ २९ ३७ २१	३४१०	२ ५ ५८ ३९	१०९ ५६	२ ६ १७ ५	० ९ ५ ५०	६३ ५७	११ २ २८ ३७	१० २८ ४३ ३७
१४ मं	७ ९ १४ १४	३२७ ५	४ ० ११ ३२	३४१०	२ ७ ४८ ३५	१०५ १३	२ ७ ० २३	० १० ९ ४८	६३ ५७	११ २ ३१ ५०	१० २८ ४० २६
१५ बु	७ २२ २५ ३७	३३६ ३४	४ ० ४५ ४२	३४१०	२ ९ ३३ ३८	१०४ ४०	२ ७ १४ ८	० ११ १३ ५५	६३ ५७	११ २ ३५ ३	१० २८ ३७ १५

९पं०ज्येष्ठशुक्ल ८मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१०३
अयनांश२४।१२।९

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	३	१	२	०	११	१०	४
१८	१४	२६	२४	५	२	२	२९	२९
१४	४६	१५	४६	२७	४२	९	२	२
४३	२५	५७	३७	१८	४	१६	४२	४२
५७	७५६	३१	११५	१३	६३	३	३	३
११	५३	२६	१३	१७	५७	१३	११	११

४ | ३ गु. | १ शु. | मं. | सू. २ बु. | १२ श. | चं.५के. | ११ रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ चं. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	१३चं. घं.	मि.	१४मं. घं.	मि.	१५बु. घं.	मि.
वृष	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	[illegible]	[illegible]	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	३०
मिथुन	[illegible]																													
कर्क	[illegible]																													
सिंह	[illegible]																													
कन्या	[illegible]																													
तुला	[illegible]																													
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	[illegible]																													
धनु	[illegible]																													
मकर	[illegible]																													
कुम्भ	[illegible]																													
मीन	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४
मेष	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३१

१०पं०ज्येष्ठशुक्ल१५बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१११
अयनांश २४।१२।१०

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	४	२	२	०	११	१०	४
२५	२२	०	९	७	११	२	२८	२८
५१	२५	४५	३३	१४	१३	३५	३७	३७
४७	४७	४२	४८	८	४५	३	१५	१५
५७	७३६	३४	१०४	१४	६३	३	३	३
३	३४	१०	४७	२२	५७	१२	११	११

बु.३गु. | १ शु. | ४ | २ सू. | १२ श. | मं.५ के. | ११ रा. | ६ | ८ चं. | १० | ७ | ९

❷गुरुअर्जुनदेव शहीदीदिवस(सिक्ख)। रवियोग सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।२९तक। ❸ भीमसेन के लिये शक्कर–स्वर्ण सहित कुम्भदान। दानमंत्र:– देवदेव हृषीकेश संसारार्णव तारक। उदकुम्भ प्रदानेन यास्यामि हरिमन्दिरम्"। देवविवाह एकादशी। रुक्मीणीविवाह (उड़ीसा)। गायत्री जयंती। रवियोग दि.७।५३ तक। स्थायीजयोग रा.शे.५।२ से। ❺गुरुवृद्धत्व प्रारंभ ३४।२०(सा.६।५४)। यायीजययोग प्रा.७।२ से। ❻रवियोग सा.५।५८ तक। ❼संतकबीर जयंती। स्नानयात्रा (बङ्गाल)। मन्वादि१५। गुर्वस्त पश्चिम में ३४।२०(सा.६।५४)।

मूलविचार-श्लेषा/मघा-ति.५शनि रा.१।२० से। ति.७ सोम रा.२।३१ तक। ज्येष्ठ/मूल-ति.१४ मंगल सा.५।५८ से।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-श्लेषा।। ति.१३ सोम मघा सिंह में ३९।४५ (रा.९।८)।। बुध-रोहिणी। ति.७ सोम मृग में १४।५४ (दि.११।१३)।। ति.१० गुरु मिथुन ४४।३२ (रा.११।४)।। ति.१३ सोम आर्द्रा २२।३४ (दि.२।१६)।। गुरु-मृग ४ चरण। ति.१२ रवि आर्द्रा १ चरण २८।३ (सा.४।२७)।। शुक्र-रेवती।। ति.५ शनि अश्विनी मेष में २४।३९ (दि.३।८)।। शनि-पू.भा.४ चरण।। राहु-कुम्भराशि पू.भा.३ चरण।। केतु-सिंहराशि उ.फा.१ चरण ।।

ज्येष्ठशुक्लपक्ष विचार–द्वितीया तिथि की हानि है एवं द्वादशी तिथि की वृद्धि होने से पक्ष पूरे पन्द्रह दिनों का है। आज से दशमी तिथि तक काशी के दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान प्रारंभ होगा। विशेष-वैशाखशुक्ल तृतीया को आर्द्रा में वर्षा हो तो महादुर्भिक्ष संभव है। २८ मई को उत्तरशृंग चन्द्रदर्शन से सुभिक्ष है। ३० मई को वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत किया जायेगा। ३ जून आज शुक्लादेवी का पूजन तथा ४ जून को नवमी में देवी का उपवास सहित पूजन होगा। ५ जून को गंगा दशहरा मनाया जायेगा। यह उत्सव मुख्यत: स्नान का है। अपने दशविध पापों के विनाश हेतु गंगा की प्रार्थना करें व पूजा☚

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ बुध मृगशिर सूर्यभोग्य। ति.३ गुरु आर्द्रा अक्षरारम्भ विद्यारंभ उपनयन (ल.३प्रा.६।२१ से दि.८।३५ तक) धानछेदन मुहूर्त्त। ति.४ शुक्र पुनर्वसु रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.५शनि पुष्य भौमभुक्त है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। ति.६ रवि श्लेषा भौमवेध। ति.७ सोम मघा भौमभोग्य। ति.८ मंगल दि.१२।१८ भद्रा रिक्ताबाद पू.फा.में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.९ बुध उ.फा.में केतुयुति। ति.१०गुरु उ.फा.में पूर्वदोष। प्रा.५।४से दि.११।२९ व्यतिपातपूर्व हस्त पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायो का क्रय विक्रय नये अन्नभक्षण शिल्पविद्या चौलकेशान्त कर्णवेध (ल.३ प्रा.७।५३से) गृहारंभ (ल.३ प्रा.७।५३ से दि.८।७ तक) विपणि व्यापार वाहनक्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। ति.११ शुक्र दि.११।५० व्यतिपात बाद सा.४।७ भद्रा पूर्व चित्रा पुंसवन सीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग चौपायों का क्रयविक्रय दक्षिणदिशा यात्रा शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि व्यापार वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१२ शनि चित्रा शनिवेध। दि.१०।२१ से स्वाती कालावस्त्र नीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.१२ रवि स्वाती शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान(१३दशी) नये अन्नभक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन उपनयन (ल.३ प्रा.५।४१ से प्रा.७।२ तक) विपणि वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.१३ सोम दि.९।३ रिक्तापूर्व विशाखा चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्नभक्षण मुहूर्त्त। ति.१४ मंगल अनु.रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.१५ बुध ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण चौपायो का क्रय विक्रय धानरोपण मुहूर्त्त।

☚के पश्चात् दीपक को गंगा में प्रवाहित करें। ६ जून को वृद्धि द्वादशी में पारण लाभ से निर्जला एकादशी व्रत स्मार्त्तों हेतु, इसे भीमसेनी एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी व्रत में स्नान व आचमन के अलावा जरा भी जल ग्रहण नहीं करना चाहिये। इस एकादशी का व्रत रखने से सभी एकादशी व्रतों के फल की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। आज काशी के दशाश्वमेध घाट से कलश यात्रा प्रारंभ होकर श्रीकाशी विश्वनाथ जी को अर्पित की जाती है। ७ जून को अधिक दशमी मान निषेध से वैष्णवों की एकादशी व्रत होगी। ८ जून को सर्वकामना पूर्ति कारक प्रदोष व्रत किया जायेगा। आज दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत का प्रारंभ होगा। ९ जून को वटसावित्री व्रत का द्वितीय दिन होगा। १० जून को पूर्णिमा व्रत तथा दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत का समापन होगा। ११ जून को स्नान-दान की पूर्णिमा है। आज भगवान् जगन्नाथ जी को जलाभिषेक (स्नान) कराया जायेगा, इसे देवस्नान पूर्णिमा भी कहते हैं। आज ज्येष्ठा नक्षत्र में छाता, चरणपादुका, अन्न दान से राजयोग प्राप्ति होती है। आज संत कबीर जयंती मनाई जायेगी। ता.११ जून को मासान्त में गुर्वस्त है, अत: तीन दिन पूर्व दोष प्रारंभ से शुभ कार्यों का निषेध है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

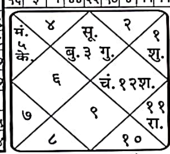
दि.मा घ.	प.	तिथि	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश		सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. ±	मि.	चंद्रोदय स्टै.	टा.	आषाढ़कृष्णपक्ष
३३	५३	१	गु	२०	५४	दि	१	३५	मूल	४१	५	रा	९	३९	शुभ	२२	५३	दि	२	२२	कौ	२०	५४	तै	५१	४७	धूम्र	१२	१	१५	२९	२९	२२			५	१३	६	४७	१	२६	४८	५१	५७	३	२३	९	-	२	८	२	आपाढ़मास के प्रथमपक्ष में यदि सूर्यमण्डल बादलों, विद्युतगर्जन तथा वृष्टि रहित हो तो दो मास पर्यन्त तक वर्षा का अभाव होगा। गुरु हरगोविन्दसिंह जयंती (सिख)।
३३	५४	२	शु	२२	४०	दि	२	१७	पू.षा.	४४	२	रा	१०	४९	शुक्ल	२१	४९	दि	१	५६	गर	२२	४०	व	५२	५१	प्रवर्द्धमान	१३	२	१६	३०	३०	२३	मकर	५९।२७	५	१३	६	४७	१	२७	४५	५४	५७	१	२३	१२	-	२	८	५२	भ.रा.२।२१ से (पाताल)। मकरराशि (रा.शे.५।०)। ❶ यायीजययोग सा.५।११से।
३३	५४	३	श	२३	२	दि	२	२६	उ.षा.	४५	४३	रा	११	३०	ब्रह्म	१९	४२	दि	१	५	भ	२३	२	वव	५२	३४	राक्षस	१४	३	१७	३१	३१	२४			५	१३	६	४७	१	२८	४२	५५	५७	०	२३	१५	-	२	९	३७	भ.दि.२।२६ तक (पाताल)। संकष्टी श्रीगणेश चौथ व्रत (च.उ.रा.९।३७)। यायीजययोग दि.२।२५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।३० से।
३३	५५	४	र	२२	६	दि	२	३	श्रवण	४६	९	रा	११	४०	ऐन्द्र	१६	३६	दि	११	५१	वा	२२	६	कौ	५१	२	गद	१५	४	१८	३२	१	२५			५	१३	६	४७	१	२९	३९	५६	५७	०	२३	१८	-	२	१०	१६	नेपाली आषाढ़ मासारंभ। ⊙संमिथुन में सूर्य २१।८(दि.१।३९)। मु.३०सामान्य। बाद की १६ घटि पुण्य। आज सूर्यास्त तक संक्रान्ति पुण्यकाल। वस्त्र अन्न गोदान गोदावरी में स्नान। राजससंक्रान्ति (उड़ीसा)।
३३	५५	५	चं	१९	५९	दि	१	१२	धनिष्ठा	४५	२५	रा	११	२३	वैधृति	१२	२९	दि	१०	१२	तै	१९	५९	गर	४८	२३	शुभ	१६	५	१९	१	२	२६	कुम्भ	१५।४७	५	१३	६	४७	२	०	३६	५६	५६	५९	२३	२१	-	२	१०	५३	सौर आषाढ़ मासारंभ। कुम्भराशि(दि.११।३२)। रवियोग रा.११।२३ से। यायीजययोग दि.१।१२ तक।
३३	५६	६	मं	१६	४८	दि	११	५६	शतभिष	४३	४०	रा	१०	४१	विष्कुम्भ	७	३१	दि	८	१३	व	१६	४८	भ	४४	४४	मृत्यु	१७	६	२०	२	३	२७			५	१३	६	४७	२	१	३३	५६	५६	५८	२३	२२	-	१	११	२७	भ.दि.११।५६ से रा.११।७ तक (मृत्यु)। रवियोग रा.१०।४१ तक पश्चात त्रिपुष्करयोग।
३३	५६	७	बु	१२	४१	दि	१०	१७	पू.भा.	४१	५	रा	९	३९	प्रीति	१ ५३	४६ ३४	प्रा	५ ३	५५ २१	वव	१२	४१	वा	४०	१२	पद्म	१८	७	२१	३	४	२८	मीन	२६।४४	५	१३	६	४७	२	२	३०	५४	५६	५७	२३	२४	-	१	१२	०	मीनराशि(दि.३।५५)। प्रदोष में कालाष्टमी ८। ❷कामरूप कामाख्याधाम महोत्सव। कामाख्या पर्वत पर कामाख्या देवी पूजन उत्सव। त्रिपुष्करयोग दि.३।३० से।
३३	५७	८	गु	७	४३	दि	८	१८	उ.भा.	३७	४९	रा	८	२०	सौभाग्य	४८	२३	रा	१२	३४	कौ	७	४३	तै	३४	५७	छत्र	१९	८	२२	४	५	२९			५	१३	६	४७	२	३	२७	५२	५६	५६	२३	२५	-	१	१२	३४	श्रीशीतलाष्टमी ८व्रत। आज वासी भोजन का ग्रहण शास्त्र विहित है। यात्रा व उत्सव। यायीजययोग दि.८।९८ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।२० से।
३३	५७	९	शु	२ ५४	११ ४	प्रा	६ ३	५ ४३	रेवती	३४	१	सा	६	४९	शोभन	४१	२	रा	९	३७	गर	२	११	व	२९ ५६	१३ १५	श्रीवत्स	२०	९	२३	५	६	३०	मेष	३४।१	५	१३	६	४७	२	४	२४	४८	५६	५६	२३	२६	-	१	१	१०	भ.सा.४।५४ से रा.शे.३।४३ तक (मृत्यु/स्वर्ग)। मेषराशि(सा.६।४९)। सर्वार्थसिद्धियोग सा.६।४९ से।
३३	५७	११	श	५०	४	रा	१	१४	अश्विनी	२९	५६	सा	५	११	अतिगण्ड	३३	३०	सा	६	३७	वव	२३	९	वा	५०	४	सौम्य	२१	१०	२४	६	७	३१			५	१३	६	४७	२	५	२१	४५	५६	५६	२३	२६	-	१	१	५१	योगिनी एकादशी ११व्रत स्मार्त्त। अपाढ़कृष्णपक्ष में योगिनी व्रत के पुण्य से कुष्ठ(कोढ़) आदि का नाश होता है। श्रीदेवरहावावा पुण्यतिथि। विश्वयोग दिवस।⊙सा.कर्क सूर्य २५।९८(दि.३।२०)।❶
३३	५७	१२	र	४३	५३	रा	१०	४६	भरणी	२५	४३	दि	३	३०	सुकर्मा	२५	५०	दि	३	३३	कौ	१६	५८	तै	४३	५३	कालदंड	२२	११	२५	७	८	१	वृष	३९।४३	५	१३	६	४७	२	६	१८	४१	५६	५५	२३	२६	-	०	२	३७	राष्ट्रिय आषाढ़मास दि.३१। वैष्णवएकादशी व्रत। वृषराशि(रा.९।६)। ⊙आर्द्रा में सूर्य२२।२८(दि.२।९२)। पु.स्त्री.चं.नं.योग मंडुकवाहन चंडानाड़ी स्वामी शनिवायुवृष्टियोग। ❷
३३	५७	१३	चं	३७	५२	रा	८	२१	कृत्तिका	२१	४०	दि	१	५३	धृति	१८	१९	दि	१२	३२	गर	१०	५३	व	३७	५२	स्थिर	२३	१२	२६	८	९	२			५	१३	६	४७	२	७	१५	३७	५६	५५	२३	२५	-	०	३	३२	भ.रा.८।२२ से (स्वर्ग)। सोमप्रदोष १३व्रत। सन्तान हेतु प्रशस्त। मासशिवरात्रि १३ व्रत। यायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.१।५३ से।
३३	५७	१४	मं	३२	१४	सा	६	६	रोहिणी	१७	५७	दि	१२	२३	शूल	११	२	दि	९	३७	भ	५	३	श	३२ ५९	१४ ४१	मातङ्ग	२४	१३	२७	९	१०	३	मिथुन	४६।२१	५	१३	६	४७	२	८	१२	३३	५६	५४	२३	२४	+	०	४	३३	भ.प्रा.७।१४ तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि(रा.११।४५)। स्थायीजयोग दि.१२।२३ से।
३३	५७	३०	बु	२७	८	दि	४	४	मृगशिर	१४	४४	दि	११	६	गण्ड	४ ५३	९ ४१	प्रा	६ ४	५२ २१	ना	२७	८	किं	५४	५९	अमृत	२५	१४	२८	१०	११	४			५	१३	६	४७	२	९	९	२७	५६	५४	२३	२३	+	०	-	-	अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुख। रवियोग दि.११।६ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	गु	८	३	४७	८	७४९	१	४	१	१९	५२	३४	१	२	११	१८	२९	१०४	४०	२	७	२८	३८	०	१२	१७	४३	६३	५७	११	२	३८	१६	१०	२८	३४	५
२	शु	८	१७	२०	२४	७६२	३०	४	१	५३	५३	३४	१	२	१३	३	१०	१०४	४०	२	७	४२	५४	०	१३	२१	४१	६३	५७	११	२	४१	२७	१०	२८	३०	५४
३	श	९	०	७	५	७७८	१०	४	२	२७	५४	३४	१	२	१४	४७	५०	१०३	१०	२	७	५७	१७	०	१४	२५	३९	६३	५७	११	२	४३	३२	१०	२८	२७	४३
४	र	९	१३	९	५	७९४	१५	४	३	१	५५	३४	१	२	१६	३१	१	९८	१५	२	८	११	३९	०	१५	२९	३६	६३	५७	११	२	४५	३६	१०	२८	२४	३२
५	चं	९	२६	२६	५७	८०९	५३	४	३	३५	५६	३४	१	२	१८	९	१७	९८	१०	२	८	२६	२	०	१६	३३	३४	६३	५७	११	२	४७	४१	१०	२८	२१	२१
६	मं	१०	१०	०	१७	८२४	२	४	४	९	५७	३४	१	२	१९	४७	२७	९८	१०	२	८	४०	२५	०	१७	३७	३२	६३	५७	११	२	४९	४५	१०	२८	१८	११
७	बु	१०	२३	४७	३५	८३५	५९	४	४	४३	५८	३४	१	२	२१	२५	३७	९८	१०	२	८	५४	४८	०	१८	४१	२९	६३	५७	११	२	५१	४९	१०	२८	१५	०
८	गु	११	७	४६	४५	८४६	३	४	५	१७	५९	३४	१	२	२३	३	४७	९३	४४	२	९	९	११	०	१९	४५	२७	६३	५७	११	२	५३	५४	१०	२८	११	४९
९	शु	११	२१	५५	४७	८५४	५	४	५	५२	०	३४	१	२	२४	३७	३१	८९	९	२	९	२३	३३	०	२०	४९	२५	६३	५७	११	२	५५	५९	१०	२८	८	३८
११	श	०	५	११	४५	८५८	२५	४	६	२६	१	३४	१	२	२६	६	४१	८८	५६	२	९	३७	५६	०	२१	५३	२२	६३	५७	११	२	५८	३	१०	२८	५	२७
१२	र	०	२०	३१	१२	८६०	२८	४	७	०	२	३४	१	२	२७	३५	३७	८७	५८	२	९	५२	१९	०	२२	५७	२०	६३	५७	११	३	०	८	१०	२८	२	१७
१३	चं	१	४	५०	१२	८५७	५४	४	७	३४	३	३४	१	२	२९	३	३६	८७	५८	२	१०	६	४२	०	२४	१	१८	६३	३७	११	३	२	१२	१०	२७	५९	६
१४	मं	१	१९	४	५२	८५२	४९	४	८	८	४	३४	१	३	०	३१	३४	८०	२७	२	१०	२१	५	०	२५	४	५५	६५	२	११	३	४	१६	१०	२७	५५	५५
३०	बु	२	३	१२	२६	८४५	११	४	८	४२	६	३४	१	३	१	५२	२	७७	४५	२	१०	३५	२७	०	२६	९	५७	६७	५२	११	३	६	१९	१०	२७	५२	४४

११पं० आषाढ़कृष्ण८गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२११९ अयनांश२४।१२।११

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
२	११	४	२	२	०	११	१०	४
३	७	५	२३	९	१९	२	२८	२८
२७	४६	१७	३	९	४५	५३	११	११
५२	४५	५९	४७	११	२७	५४	४९	४९
५६	८४६	३४	९३	१४	६३	२	३	३
५६	३	१	४४	२२	५७	४	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	५ चं. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	१३चं. घं.	मि.	१४मं. घं.	मि.	३०बु. घं.	मि.
वृष	५	२५	५	२१	५	१७	५	१४	मिथुन	७	२४	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६
मिथुन	७	३९	७	३५	७	३१	७	२८	कर्क	९	४२	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४
कर्क	९	५७	९	५३	९	४९	९	४६	सिंह	११	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८
सिंह	१२	११	१२	७	१२	३	१२	०	कन्या	२	९	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
कन्या	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	तुला	४	२५	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७
तुला	४	४०	४	३६	४	३२	४	२९	वृश्चिक	६	४२	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	६	५७	६	५३	६	४९	६	४६	धनु	८	४८	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०
धनु	९	३	८	५९	८	५५	८	५२	मकर	१०	३५	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७
मकर	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३९	कुम्भ	१२	६	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८
कुम्भ	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	१०	मीन	१	३४	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६
मीन	१	४९	१	४५	१	४१	१	३८	मेष	३	११	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२४	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३
मेष	३	२६	३	२२	३	१८	३	१५	वृष	५	७	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। **ति.१**गुरु मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दवंरी धानरोपण औषधीसेवन नावनिर्माण विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्त। **ति.२** शुक्र पू.षा.में नावनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.३** शनि उ.षा.में सूर्यवेध। **ति.४** रवि श्रवण रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। **ति.५** सोम दि.१०।१२ वैधृति बाद धनिष्ठा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय कुम्भ में **पश्चिमदिशा** की यात्रा नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.६** मंगल दि.११।५६ भद्रा पूर्व शतभिष वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **ति.७** बुध पू.भा.में शनियुति। **ति.८** गुरु दि.८।१८ रिक्तापूर्व उ.भा.में शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण शिल्पविद्या नावनिर्माण **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.९** शुक्र रेवती केतुवेध। **ति.११** शनि अश्विनी कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.१२** रवि भरणी भौमवेध। **पश्चात मासान्त दोष है।**

१२पं० आषाढ़कृष्ण ३०बुध सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २१२५ अयनांश २४।१२।१२

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
२	२	४	३	२	०	११	१०	४
९	३	८	१	१०	२६	३	२७	२७
९	१२	४२	५२	३५	९	६	५२	५२
२७	२६	६	२	२७	५७	१९	४४	४४
५६	८४५	३४	७७	१४	६७	२	३	३
५४	१९	१	४५	२२	५२	४	११	११



मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.१ गुरु रा.९।३९ तक। रेवती/अश्विनी-ति.८ गुरु रा.८।२० से। ति.११ शनि सा.५।११ तक। पञ्चकविचार-ति.५ सोम दि.११।३२ से। ति.९ शुक्र सा.६।४९ तक।

आषाढ़मासकृत्य-वृष्टि विचार-आर्द्रादि पांच(पुनर्वसु,पुष्य,श्लेषा,मघा)पू.भा.,रेवती से चार(अश्विनी,भरणी,कृत्तिका)पू.षा.से चार(उ.षा.,श्रवण,एवं धनिष्ठा) ये चौदह नक्षत्र चन्द्र तथा शेष नक्षत्र सूर्य के होते है। सूर्यनक्षत्र-रोहिणी मृ. पू.फा. उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा,ज्येष्ठा, मूल,शतभिष, उ.भा.।। चन्द्रनक्षत्र-आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य,श्लेषा, मघा, पू.भा., रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पू.षा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा। यदि सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्र में तथा चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में स्थित होता है तो वृष्टि होती है। परन्तु यदि सूर्य एवं चन्द्र नक्षत्र में हो तो स्वल्प वृष्टि तथा सूर्य नक्षत्र में स्थित हो तो वृष्टि नहीं होती है। वृष्टि प्रश्न विचार-वर्षा सम्बन्धित प्रश्न के ज्ञान में वर्षा ऋतु का चन्द्रमा यदि जलचर राशि का होकर लग्न या केन्द्र में स्थित हो अथवा शुक्लपक्ष का होकर शुभग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र ही अत्यधिक वृष्टि होती है। परन्तु यदि पापग्रहों से दृष्ट हो तो वर्षा काल में शीघ्र ही अल्प वृष्टि होती है। चन्द्रमा की तरह यदि शुक्र भी उपर कहे हुए परिस्थितियों में स्थित हो तो उपर्युक्त समस्त फल होते है। वर्षा कालीन चन्द्रमा यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर शुक्र से सात राशियों में स्थित होकर त्रिकोणस्थ हो तो भी वृष्टि कारक होता है। यदि वृष्टि योगकारक होकर शुक्र बुध के समीप स्थित हों तथा इन दोनों के मध्य सूर्य बैठा निश्चय ही वृष्टि विनाश हो जाता है, परन्तु सूर्य के आगे और पीछे दोनों तरफ आसन्नवर्ती शुभग्रह हों तो वृष्टिविनाश नहीं होता अपितु वृष्टि होती है। ग्रहों के उदयास्त,अयनराशि परिवर्तन,संयोगकाल तथा पक्ष के अन्त में प्रातः वृष्टि होती है। उदय एवं अस्त होते हुए शुक्र तथा बुध वृष्टि कारक होते है। मंगल के उदयास्त काल में चलवृष्टि तथा शनि के उदयास्त काल में स्वल्प,मध्य एवं अति (त्रिधा) वृष्टि स्थान भेद से होती है। वृहस्पति उदयास्त काल में अतिवृष्टि तथा अनन्तर अल्पवृष्टि करता है। वृष्टिविचार- चैत्र मास के अश्विन्यादि दस नक्षत्रों में मेघ का गर्भधारण होता है तो आर्द्रा आदि दस नक्षत्रों (सूर्य नक्षत्रों) में क्रमशः वृष्टि होती है।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-मघा में।। **बुध**-आर्द्रा।। **ति.६** मंगल पुनर्वसु ७।४१ (दि.८।१७)। **ति.१३** सोम कर्कराशि ३८।२८ (रा.८।३६)।। **गुरु-ति.१२** रवि आर्द्रा २ चरण ३२।४ (सा.६।३)।। **शुक्र**-अश्विनी।। **ति.१**गुरु भरणी ५८।२६ (रा.शे.४।३५)। **ति.३०**बुध कृत्तिका २६।३४ (दि.३।५१)।। **शनि**-पू.भा.४ चरण।। **राहु**-पू.भा.३ चरण।। **केतु**-उ.फा.१ चरण।।

आषाढ़कृष्णपक्ष विचार–दशमी तिथि की हानि होने से यह पक्ष चौदह दिनों का है। पक्ष में **गुर्वस्त** होने से शुभ संस्कारों का निषेध होगा। पक्ष में एक राशि पर सूर्य, चंद्र, गुरु हो तो उत्तर दिशा में जनभय एवं शोक हो तथा इस समय जौ, मूँग, वस्त्रों का संग्रह करने पर सातवें मास में लाभ होता है। पक्ष में यदि बुध, गुरु एक राशि पर हों तो उत्तम वर्षा किन्तु मध्य में सूर्य आ जाने पर वर्षा का अवरोध होगा। आषाढ़मास के प्रथम दिन यदि सूर्यमण्डल बादलों व विद्युत् गर्जन तथा वृष्टि रहित हो तो दो मास पर्यन्त वर्षा का अभाव रहेगा।☛

☛**१२ जून** से आषाढ़ मास प्रारम्भ हो रहा है। **१४ जून** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात ९:३७ के बाद अर्घ्य दें। **१८ जून** को सप्तमी रात्रि में शीतला देवी का पूजन कर **१९ जून** को **श्रीशीतलाष्टमी बसिअउरा** वासी भोजन प्रसाद रुप में ग्रहण किया जायेगा। **२१ जून** को **योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त** जनों के लिये है। इस व्रत को करने से कुष्ठ (कोढ़) रोगादि का नाश होता है। आज ही प्रसिद्ध **संत देवरहा बाबा** की **पुण्यतिथि** मनाई जायेगी। **२२ जून** को दशमी का मान अधिक होने से आज **एकादशी व्रत वैष्णवों** की होगी। आज **आर्द्रा में सूर्यप्रवेश** से अम्बुवाची पर्व (कामाख्याधाम महोत्सव) शुरू होगा। **२३ जून** को भगवान् शिवजी का सर्वकामना पूर्णकारक सन्तान सुख हेतु **सोमप्रदोष व्रत** एवं निशीथ काल में त्रयोदशी युक्त चतुर्दशी में **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **२५ जून** को **स्नान-दान एवं श्राद्ध की अमावस्या** होगी। शुभवार से शुभ होता है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

आषाढ़शुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ५ आषाढ़ से १९ तिथि तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक २६ जून से १० जुलाई तक सन् २०२५ ई.।

गुरु उदय पूर्व में ति.१२ सोम (७।७।२५)

दि.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	दि./रा.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि./रा.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि./रा.	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३३	५६	१	गु	२२	५०	दि	२	२१	आर्द्रा	१२	१५	दि	१०	७	ध्रुव	५२	१३	रा	२	६	वव	२२	५०	वा	५१	७	काण
३३	५६	२	शु	१९	२४	दि	१२	५८	पुनर्वसु	१०	३६	दि	९	२७	व्याघात	४७	२५	रा	१२	११	कौ	१९	२४	तै	४८	१३	लुम्बक
३३	५५	३	श	१७	२	दि	१२	१	पुष्य	९	५९	दि	९	१२	हर्षण	४३	२९	रा	१०	३६	गर	१७	२	व	४६	२७	मित्र
३३	५५	४	र	१५	५२	दि	११	३३	श्लेषा	१०	३४	दि	९	२७	वज्र	४०	३१	रा	९	२५	भ	१५	५२	वव	४५	५५	वज्र
३३	५४	५	चं	१५	५८	दि	११	३६	मघा	१२	२२	दि	१०	९	सिद्धि	३८	३५	रा	८	३९	वा	१५	५८	कौ	४६	४२	ध्वांक्ष
३३	५३	६	मं	१७	२६	दि	१२	११	पू.फा.	१५	२९	दि	११	२४	व्यतिपात	३७	४१	रा	८	१७	तै	१७	२६	गर	४८	४२	धूम्र
३३	५३	७	बु	१९	५८	दि	१	१२	उ.फा.	१९	४१	दि	१	५	वरीयान	३७	३९	रा	८	१६	व	१९	५८	भ	५१	४९	प्रवर्द्धमान
३३	५२	८	गु	२३	४०	दि	२	४२	हस्त	२४	५९	दि	३	१३	परिघ	३८	२६	रा	८	३६	वव	२३	४०	वा	५५	५४	राक्षस
३३	५१	९	शु	२८	८	दि	४	२९	चित्रा	३१	२	सा	५	३८	शिव	३९	४३	रा	९	७	कौ	२८	८	तै	६०	०	मुसल
३३	५०	१०	श	३३	५	सा	६	२८	स्वाती	३७	३१	रा	८	१४	सिद्ध	४१	२१	रा	९	४६	तै	०	३६	गर	३३	५	सिद्धि
३३	४९	११	र	३८	७	रा	८	२८	विशाखा	४४	२	रा	१०	५०	साध्य	४२	५९	रा	१०	२५	व	५	३६	भ	३८	७	उत्पात
३३	४८	१२	चं	४२	४५	रा	१०	२०	अनुराधा	५०	८	रा	१	१७	शुभ	४४	१८	रा	१०	५७	वव	१०	२६	वा	४२	४५	मानस
३३	४६	१३	मं	४६	४२	रा	११	५५	ज्येष्ठा	५५	३२	रा	३	२८	शुक्ल	४५	४	रा	११	१६	कौ	१४	४३	तै	४६	४२	मुद्गर
३३	४५	१४	बु	४९	३४	रा	१	४	मूल	५९	५२	रा	५	११	ब्रह्म	४५	२	रा	११	१५	गर	१८	८	व	४९	३४	ध्वज
३३	४४	१५	गु	५१	२४	रा	१	४८	पू.षा.	६०	०	समस्त			ऐन्द्र	४४	९	रा	१०	५४	भ	२०	२९	वव	५१	२४	धाता

तिथि	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	२६	१५	२९	११	१२	५	कर्क	५६।१	५	१३	६	४७	२	१०	६	२२	५६	५४	२३	२१	+	१	८	४
२	२७	१६	१	१२	१३	६			५	१३	६	४७	२	११	३	१६	५६	५२	२३	१९	+	१	८	५३
३	२८	१७	२	१३	१४	७			५	१३	६	४७	२	१२	०	९	५६	५२	२३	१६	+	१	९	३४
४	२९	१८	३	१४	१५	८	सिंह	१०।३४	५	१३	६	४७	२	१२	५७	२	५६	५१	२३	१३	+	१	१०	९
५	३०	१९	४	१५	१६	९			५	१३	६	४७	२	१३	५३	५४	५६	५१	२३	१०	+	१	१०	४०
६	जु	२०	५	१६	१७	१०	कन्या	३१।३२	५	१३	६	४७	२	१४	५०	४६	५६	५१	२३	६	+	२	११	१०
७	२	२१	६	१७	१८	११			५	१३	६	४७	२	१५	४७	३७	५६	५१	२३	२	+	२	११	३८
८	३	२२	७	१८	१९	१२	तुला	५८।०	५	१४	६	४६	२	१६	४४	२८	५६	५०	२२	५७	+	२	१२	७
९	४	२३	८	१९	२०	१३			५	१४	६	४६	२	१७	४१	१९	५६	५०	२२	५२	+	२	१२	३८
१०	५	२४	९	२०	२१	१४			५	१४	६	४६	२	१८	३८	१०	५६	५०	२२	४७	+	२	१	१२
११	६	२५	१०	२१	२२	१५	वृश्चिक	२७।२४	५	१४	६	४६	२	१९	३५	१	५६	५१	२२	४१	+	२	१	५०
१२	७	२६	११	२२	२३	१६			५	१४	६	४६	२	२०	३१	५२	५६	५१	२२	३५	+	३	२	३४
१३	८	२७	१२	२३	२४	१७	धनु	५५।३२	५	१५	६	४५	२	२१	२८	४४	५६	५१	२२	२८	+	३	३	२४
१४	९	२८	१३	२४	२५	१८			५	१५	६	४५	२	२२	२५	३६	५६	५२	२२	२१	+	३	४	१९
१५	१०	२९	१४	२५	२६	१९			५	१५	६	४५	२	२३	२२	२८	५६	५२	२२	१४	+	३	-	-

१. ◡चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंगसुभिक्ष। मु.४५मर्घ्यां। कर्कराशि (गत ३।३७)। गुप्तनवरात्र(नौदुर्गा) प्रारम्भ। मनोरथद्वितीया२–बङ्गाल(ग.३ग.६।४७)। यायीजयसर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।७ से।
२. मु.मुहर्रम १ हि.१४४७। मु.नववर्षारंभ। रथयात्रा २। श्रीगणकल्याण उत्सव। "आज के दिन रथ में स्थित भगवान जगन्नाथ का दर्शन पूजन।" सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।२७तक।
३. भ.रा.११।४८ से (मृत्यु)। रवियोग दि.९।१२ से। यायीजययोग दि.१०।१ तक।
४. भ.दि.११।३३ तक (मृत्यु)। सिंह राशि (दि.९।२७)। मध्याह्नचतुर्थी रविवति वैनायकी श्रीगणेशव्रत। रवियोग दि.९।२७तक पश्चात्यमघण्टयोग।
५. श्रीस्कन्द पञ्चमी। रवियोग दि.१०।९से। ①☉पुनर्वसु में सूर्य २६।२२(दि.३।४७)। स्त्री.नपुं. न.पु.योग अल्पवृष्टि वङ्कनाड़ी स्वामी शनि मेघाच्छादित सुवृष्टियोग।
६. जुलाई७। कन्याराशि (सा.५।५०)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। कुमारषष्ठी ६। कर्दमषष्ठी (बङ्गाल)। हेरपञ्चमी (उड़ीसा)। रवियोग दि.११।२८ तक। त्रिपुष्करयोग दि.१२।४१ से।
७. भ.दि.१।१२से रा.१।५७ तक (पाताल)। विवस्वतसप्तमी। विवस्वतसूर्यपूजा ७। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।५से। मु.मुहर्रम(ताजिया)। त्रिपुष्करयोग रा.८।२८से।
८. तुलाराशि (रा.शे.४।२६)। परशुरामाष्टमी (उड़ीसा)। खर्चीपूजा(त्रिपुरा)। रवियोग दि.३।१३ से। यायीजययोग दि.२।४२ से।
९. मेला शरीक भगवती(कश्मीर)। रवियोग समस्त दिन। ② श्रीकृष्णद्वादशी। गोपद्मव्रतारम्भ। गुरूदयपूर्व २४।३३(दि.३।३)। यायीजययोग रा.१०।२०से। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।४७ से।
१०. मन्वादि १०। गिरिजापूजा १०। सोपपदा १०। आज वेदाध्ययन निषेध है। पुनर्यात्रा (उड़ीसा)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.८।१४ तक। यायीजययोग रा.६।२८ से।
११. भ.प्रा.७।२८ से रा.८।२९ तक (पाताल)। वृश्चिकराशि (रा.४।१०)। श्रीविष्णुशयनीएकादशीव्रत सबका। रात्रि में शयनोत्सव। रविनारायणएकादशी(उड़ीसा)। हरिशयनीएकादशी①
१२. हरिवासरयोग से सङ्गवकालत्याग मध्याह्न में १३।२३उ. (दि.१०।३९ से) एकादशीपारण। चातुर्मास व्रतारम्भ। शाकत्यागव्रतारम्भ। [illegible] श्रीविष्णुशयनोत्सव। ②
१३. धनुराशि(रा.शे.३।२८)। भौमप्रदोष १३व्रत। ऋणमुक्ति हेतु। मेलाज्वालामुखी(कश्मीर)। जयापार्वती व्रतारम्भ (गुजरात)। रवियोग रा.३।२८ से। यायीजययोग रा.११।५५ से।
१४. भ.रा.१।५ से (पाताल)। श्रीशिवशयनचतुर्दशी(उड़ीसा)। चौमासीचौदस(जैन)। रवियोग रा.शे.५।११ तक पश्चात् यमघण्टयोग।
१५. भ.दि.१।२७ तक। पूर्णिमा। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। श्रीगुरुपूर्णिमा १५। गुरुव्यास पूजा कर्णघण्टा कनखल में स्नान। मन्वादि१५। श्रीकोकिला १५व्रत। श्रीकोकिलारूपि शिव का③

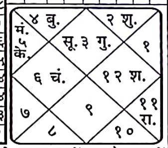
।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	गु	२	१७	९	३७	८३४	३२	४	९	१६	७	३४	१	३	३	९	४७	७७	४३	२	१०	४९	५०	०	२७	१७	४९	६७	५२	११	३	८	२३	१०	२७	४९	३३
२	शु	३	०	५४	४०	८२२	३७	४	९	५०	८	३४	१	३	४	२७	३१	७७	४३	२	११	४	१३	०	२८	२५	४२	६७	५२	११	३	१०	२६	१०	२७	४६	२३
३	श	३	१४	२५	३०	८०८	१८	४	१०	२४	९	३४	१	३	५	४५	१५	७७	४३	२	११	१८	३६	०	२९	३३	३४	६७	५२	११	३	१२	३०	१०	२७	४३	११
४	र	३	२७	४०	२८	७९२	१७	४	१०	५८	१०	३४	१	३	७	२	५८	६१	४५	२	११	३२	५९	१	०	४१	२६	६७	५२	११	३	१४	११	१०	२७	४०	१
५	चं	४	९	३९	५५	७७६	४१	४	११	३२	११	३४	३०	३	८	४	४४	६१	६	२	११	४७	२१	१	१	४९	१९	६७	५२	११	३	१४	४३	१०	२७	३६	५०
६	मं	४	२३	२३	४५	७६०	२९	४	१२	६	४१	३५	२३	३	९	५	५१	६१	६	२	१२	१	४४	१	२	५७	११	६७	५२	११	३	१५	१५	१०	२७	३३	३९
७	बु	५	५	५४	४३	७४७	३९	४	१२	४२	४	३५	२३	३	१०	६	५७	६१	६	२	१२	१६	७	१	४	५	३	६७	५२	११	३	१५	४८	१०	२७	३०	२८
८	गु	५	१८	१३	५६	७३५	४	४	१३	१७	२८	३५	२३	३	११	८	३	५६	५०	२	१२	३०	३०	१	५	१२	५६	६७	५२	११	३	१६	२०	१०	२७	२७	१८
९	शु	६	१	७	१७	७२७	१६	४	१३	५२	५१	३५	२३	३	१२	४	५४	३९	४२	२	१२	४४	५३	१	६	२०	४८	६७	५२	११	३	१६	५२	१०	२७	२४	७
१०	श	६	१२	२८	३४	७२१	५९	४	१४	२८	१४	३५	२३	३	१२	४४	३६	३९	२१	२	१२	५९	१५	१	७	२८	४०	६७	५२	११	३	१७	२४	१०	२७	२०	५६
११	र	६	२४	३०	२५	७२१	३७	४	१५	३	३७	३५	२३	३	१३	२३	५८	३८	३५	२	१३	१३	३८	१	८	३६	३३	६७	५२	११	३	१७	५७	१०	२७	१७	४५
१२	चं	७	६	३३	१५	७२६	१०	४	१५	३९	१	३५	२३	३	१४	२	३३	३८	३५	२	१३	२८	१	१	९	४४	२५	६७	६	११	३	१८	२९	१०	२७	१४	३४
१३	मं	७	१८	४०	४२	७३३	५६	४	१६	१४	२४	३५	२३	३	१४	४१	८	२७	४	२	१३	४२	२४	१	१०	५१	३१	६६	५५	११	३	१९	१	१०	२७	११	२४
१४	बु	८	०	५५	३३	७४६	६	४	१६	४९	४७	३५	२३	३	१५	८	१३	९	५१	२	१३	५६	४६	१	११	५८	२७	६६	५५	११	३	१९	३३	१०	२७	८	१३
१५	गु	८	१३	२१	४१	७५८	५३	४	१७	२५	११	३५	२३	३	१५	१८	४	९	४५	२	१४	११	७	१	१३	५	२२	६६	५५	११	३	२०	४	१०	२७	५	२

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। **भौम**-मघा। ति.८ गुरु पू.फा.में ४।१८ (प्रा.६।५७)।। **बुध**-पुनर्वसु।। ति.१ गुरु पुष्य ७।५२ (दि.८।२२)।। **गुरु**-ति.११ रवि आर्द्रा ३ चरण २६।३३ (दि.३।५१)।। **शुक्र**-कृत्तिका।। ति.३ शनि वृष २३।२२ (दि.२।३४)। ति.१२ सोम रोहिणी १३।५६ (दि.१०।४८)।। **शनि**-पू.भा.४ चरण।। ति.१४ बुध उ.भा.१ चरण ५३।४ (रा.२।२९)।। **राहु**-पू.भा.३ चरण।। **केतु**-उ.फा.१ चरण।।

१३पं० आषाढ़शुक्ल८गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१३३
अयनांश२४।१२।१३

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	४	३	२	१	११	१०	४
१६	१८	१३	११	१२	५	३	२७	२७
४४	१३	१७	८	३०	१२	१६	२७	२७
२८	५६	२८	३	३०	५६	२०	१८	१८
५६	७३५	३५	५६	१४	६७	०	३	३
५०	४	२३	५०	२२	५२	३२	११	११



आषाढ़शुक्लपक्ष विचार–यह पक्ष सामान्य रूप से पन्द्रह दिनों का है। पक्ष में द्वितीया तथा नवमी तिथि शुक्रवारी होने से उत्तम वर्षा तथा अन्न में सस्तीकारक है। **आषाढ़ी पूर्णिमा** को नक्षत्र वृद्धि से अन्न के भावों में सस्ती होगी। पू.षा. नक्षत्र वृद्धि से सर्वत्र धान्य की पैदावार उत्तम तथा सुख व शान्ति होगी। पक्ष में **७ जुलाई** को **गुरु उदय** हो रहा है, किन्तु **हरिशयन दोष** से विवाहादि का निषेध है। **२६ जून** को उत्तरशृंग **चन्द्रदर्शन** सुभिक्षदायी है। **२७जून** को **रथयात्रा उत्सव** मनाया जायेगा।☛

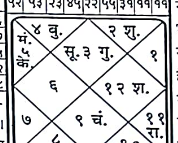
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ चं. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ चं. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
मिथुन	६	४२	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५
कर्क	९	०	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३
सिंह	११	१४	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७
कन्या	१	२७	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०
तुला	३	४३	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६
वृश्चिक	६	०	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	८	६	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९
मकर	९	५३	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६
कुम्भ	११	२४	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७
मीन	१२	५२	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५
मेष	२	२९	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२
वृष	४	२५	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। **ति.१** गुरु आर्द्रा सूर्ययुति। **ति.२** शुक्र पुनर्वसु सूर्यभोग्य। **ति.३** शनि दि.९।१२ तक पुष्य कालावस्त्रनीलमादिरत्न धारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.४** रवि श्लेषा भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.५** सोम मघा भौमयुति। **ति.६** मंगल पू.फा.में भौमभोग्य। **ति.७** बुध दि.१।१२ भद्रा पूर्व उ.फा.में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण दवंरी धानरोपण शिल्पविद्या **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.८** गुरु दि.२।४२ रिक्तापूर्व हस्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण **विपणि व्यापार** वाहन क्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.९** शुक्र दि.४।२९ रिक्तावाद चित्रा शनिवेध। **ति.१०** शनि स्वाती कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.११** रवि प्रा.७।२८ भद्रा पूर्व विशाखा नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण वाटिकारोपण चौपायों का क्रय विक्रय नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.१२ सोम अनुराधा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दवंरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **विपणि व्यापार** वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.१३ मंगल ज्येष्ठा शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.१४ बुध मूल सूर्यवेध। **ति.१५** गुरु दि.१।२७ से रा.१०।५४ वैधृतिपूर्व पू.षा.में नावनिर्माण मुहूर्त्त।

१४पं० आषाढ़शुक्ल१५गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २१४०
अयनांश२४।१२।१४

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
२	८	४	३	२	१	११	१०	४
२३	१३	१७	१५	१४	१३	३	२७	२७
२२	२१	२५	१८	११	५	२०	५	५
२	४१	११	४	७	२२	४	२	२
५६	७५८	३५	९	१४	६६	०	३	३
५२	५३	२३	४५	२२	५५	३१	११	११



③ प्रतिदिन पूजन। नक्त(रात्रि)में भोजन नियमारम्भ। ह्रास वृद्धि परीक्षण हेतु सायंकाल सर्वधान्य को अलग अलग तौल लें। वायुपरीक्षण करें। नक्तभोजनारम्भ(प्रदोष)। श्रीशिव शयनोत्सव। प्रदोष शिवपवित्रारोपण।

मूलविचार-श्लेषा/मघा-ति.३ शनि दि.९।१२ से। **ति.५** सोम दि.१०।९ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति.१२ सोम रा.१।१७ से। **ति.१४** बुध रा.शे.५।११ तक।

☛यह पूरे देशभर में सर्वत्र, विशेषकर जगन्नाथपुरी में मनाया जायेगा। पुष्य नक्षत्र योग प्राप्ति से यह विशिष्ट होता है। धार्मिक जनसमुदाय रथ पर विराजमान श्रीकृष्ण-बलराम-सुभद्राजी का दर्शनपूजन कर पुण्य के भागी होते है तथा रथ को खींचने में सहयोग करके भविष्य में होने वाले कष्टों से मुक्ति पाते हैं। **२९ जून** को सूर्योदयकाल से मध्याह्न युक्त रविवार को रविवति **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **५ जुलाई** को सोपपदा है। आज वेद अध्ययन का निषेध है। **६ जुलाई** को **हरि (विष्णु) शयनी एकादशी व्रत** समस्त जनों के लिये है। आज श्रीहरि (विष्णु) का शास्त्र-विधि व परम्परानुसार पूजनकर शयन कराना चाहिये। **७ जुलाई** को **हरिवासरयोग** अनुराधा नक्षत्र होने से संगवकाल त्याग कर दि.१०।३९ मध्याह्न में एकादशी का **पारण** होगा। आज से **चातुर्मास प्रारम्भ** हो जायेगा। इसका यम-नियम पालन आज से होगा। अत: आज से विवाहादि शुभ कार्यों का चार माह तक निषेध है। आज चातुर्मास व्रत के अनुष्ठान हेतु संकल्प लेना चाहिये। **८ जुलाई** को ऋणमुक्ति हेतु प्रशस्त **भौमप्रदोष व्रत** किया जायेगा। **९ जुलाई** को **शिवशयन उत्सव** मनाया जायेगा। **१० जुलाई को स्नान-दान** एवं **व्रत की पूर्णिमा** होगी। **कोकिला व्रत** भी आज किया जायेगा। आज के दिन **गुरु पूर्णिमा** मनाई जायेगी। इस दिन गुरु व आचार्य की पूजा कर उपहार स्वरूप भेंट अर्पित करने का विशेष महत्त्व है। समस्त विद्याओं के जनकस्वरूप **आदि गुरु वेद व्यास जी की पूजा** की जायेगी। काशी स्थित **व्यास मन्दिर** में विशेष रूप से दर्शन पूजन किया जाता है।

श्रावणकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २० आषाढ से २ श्रावण तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक ११ जुलाई से २४ दिनांक तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा घ.प.	तिथि	नक्षत्र	योग	करण	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति उ +	रे.अं. + मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.	श्रावणकृष्णपक्ष
३३ ४२	१ शु ५१ ४९ रा १ ५९	पू.षा. ३ ६ प्रा ६ ३१	वैधृति ४२ १३ रा १० ९	वा २१ ३६ कौ ५१ ४९	प्रवर्द्धमान	११	१	१५	२६	२७	२०	मकर १८।३६	५ १६	६ ४४	२ २४ १९ २१	५६ ५३	२२ ६	+ ३	७ ३४	मकरराशि (दि.१२।४२)। मैथिल नववर्षारंभ। श्रावणमास में चर्तुमास्य व्रती का शाक त्याग करें। श्रीकाशीविश्वनाथ को नित्य बिल्वपत्र अर्पण। नित्य पार्थिव अर्चन प्रारंभ। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.७।१७ से पूर्वत्रिपुष्करयोग।
३३ ४१	२ श ५० ५८ रा १ ३९	उ.षा. ५ ३ प्रा ७ १७	विष्कुम्भ ३९ १६ रा ८ ५८	तै २१ २४ गर ५० ५८	राक्षस	१२	२	१६	२७	२८	२१		५ १६	६ ४४	२ २५ १६ १४	५६ ५४	२१ ५८	+ ३	८ १६	अशून्यशयन २ व्रत (चं.उ.रा.८।१६)। शय्या स्थित श्रीलक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य में सुख प्राप्ति। चातुर्मास विधेय। वीरशासन जयंती (जैन)।
३३ ३९	३ र ४८ ५५ रा १२ ५०	श्रवण ५ ४४ प्रा ७ ३३	प्रीति ३५ २० रा ७ २४	व १९ ५७ भ ४८ ५५	गद	१३	३	१७	२८	२९	२२	कुम्भ ३५।२९	५ १६	६ ४४	२ २६ १३ ९	५६ ५४	२१ ४९	+ ४	८ ५४	भ.दि.१।१५ से रा.१२।५० तक (पाताल)। कुम्भराशि(रा.७।२८)। जयापार्वती समापन(गुजरात)। यायीजययोग प्रा.७।३३ तक।
३३ ३८	४ चं ४५ ४७ रा ११ ३५	धनिष्ठा ५ १४ प्रा ७ २२	आयुष्मा. ३० ३० सा ५ २८	वव १७ २१ वा ४५ ४७	शुभ	१४	४	१८	२९	३०	२३		५ १६	६ ४४	२ २७ १० ४	५६ ५४	२१ ४१	+ ४	९ २९	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.९।२९)। श्रावणसोमवार व्रत(प्रदोषविधि)। सोमवार व्रत कार्य श्रावण में यथाविधिशक्तिनुसार उपवास तथा रात्रि में भोजन।
३३ ३६	५ मं ४१ ४३ रा ९ ५८	शतभिष ३ ३९ प्रा ६ ४४	सौभाग्य २४ ५३ दि ३ १४	कौ १३ ४५ तै ४१ ४३	मृत्यु	१५	५	१९	३०	३१	२४	मीन ४६।५३	५ १७	६ ४३	२ २८ ६ ५९	५६ ५५	२१ ३१	+ ४	१० २	मीनराशि(रा.१२।२)। नागपञ्चमी ५(बङ्गाल)। मधुश्रावणी व्रतारम्भ(मिथिला)। हरदेवी पूजा(जयपुर)। भौमव्रत। दुर्गायात्रा—गौरीपूजा—हनुमद्दर्शन। ②सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।२३ तक।
३३ ३४	६ बु ३६ ४८ रा ८ ०	पू.भा. १/५६ १८/५० प्रा ५/४ ४८/३२	शोभन १८ ३४ दि १२ ४२	गर ९ १५ व ३६ ४८	पद्म	१६	६	२०	३१	३२	२५		५ १७	६ ४३	२ २९ ३ ५४	५६ ५६	२१ २२	+ ४	१० ३५	भ.रा.८।० से (मृत्यु)। ⊙सं.कर्क सूर्य ५९।७(रा.शे.४।५५)। मु.३०सामान्य। पूर्व १६या ३०घटि पुण्य। आज दिन के उत्तरार्द्ध से सूर्यास्त तक संक्रान्ति पुण्यकाल। ①
३३ ३२	७ गु ३१ १६ सा ५ ४७	रेवती ५४ २७ रा ३ ४	अतिगण्ड ११ ४० दि ९ ५७	भ ४ २ वव ३१/५८ १६/१८	मित्र	१७	७	२१	१	१	२६	मेष ५४।२७	५ १७	६ ४३	३ ० ० ५१	५६ ५७	२१ १२	+ ४	११ १०	भ.४।२ प्रा.६।५४ तक (मृत्यु)। मेषराशि (रा.३।४)। सौर व नेपाली श्रावणमास। शीतलासप्तमी (उड़ीसा)। यायीजययोग सा.५।४७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.३।४ तक।
३३ ३१	८ शु २५ २० दि ३ २६	अश्विनी ५० २४ रा १ २७	सुकर्मा ४/५२ २३/२८ प्रा ७/४ ३/२	कौ २५ २० तै ५२ १४	वज्र	१८	८	२२	२	२	२७		५ १८	६ ४२	३ ० ५७ ४८	५६ ५७	२१ १	+ ४	११ ४८	मन्वादि ८। शीतलाष्टमी। स्थायीजयोग दि.३।२६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।२७ तक।
३३ २८	९ श १९ ९ दि १२ ५७	भरणी ४६ १२ रा ११ ४६	शूल ४९ ११ रा १२ ५८	गर १९ ९ व ४६ २	ध्वांक्ष	१९	९	२३	३	३	२८		५ १८	६ ४२	३ १ ५४ ४५	५६ ५८	२० ५९	+ ४	१२ ३१	भ.रा.११।४३ से (स्वर्ग)। केरपूजा (त्रिपुरा)। यायीजययोग दि.१२।५७ तक।
३३ २७	१० र १२ ५६ दि १० २९	कृत्तिका ४२ ५ रा १० ९	गण्ड ४१ ३८ रा ९ ५८	भ १२ ५६ वव ३९ ५४	धूम्र	२०	१०	२४	४	४	२९	वृष ०।१०	५ १९	६ ४१	३ २ ५१ ४४	५६ ५९	२० ४०	+ ४	१ २१	भ.दि.१०।२९ तक (स्वर्ग)। वृषराशि (प्रा.५।२३)। ⊙पुष्य में सूर्य २९।४६ (सा.५।१३)। चं.चं.पु.स्त्री.योग चातकवाहन चंडानाड़ी स्वामी शनि मध्यम वृष्टियोग। ▲ प्रा.५।४८तक। यमघंटयोग रा.३।[illegible]
३३ २५	११ चं ६ ५३ दि ८ ४	रोहिणी ३८ १५ रा ८ ३७	वृद्धि ३४ १७ रा ७ १	वा ६ ५३ कौ ३४ २	प्रवर्द्धमान	२१	११	२५	५	५	३०		५ १९	६ ४१	३ ३ ४८ ४३	५७ ०	२० २८	+ ४	२ १८	कामदा एकादशी ११ व्रत सबका। श्रावणसोमवार व्रत (प्रदोषविधि)। यायीजययोग दि.८।४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।३७ तक।
३३ २२	१२ मं १/५४ १२/५० प्रा ५/३ ४८/४५	मृगशिर ३४ ५२ रा ७ १६	ध्रुव २७ १७ दि ४ १४	तै १ १२ गर २८/५६ ३७/२	राक्षस	२२	१२	२६	६	६	३१	मिथुन ६।३४	५ २०	६ ४०	३ ४ ४५ ४३	५७ ०	२० १६	+ ४	३ २२	भ.रा.३।४५ से। (स्वर्ग)। मिथुनराशि(दि.७।५८)। प्रा.५।४८तक एकादशीव्रत का पारण। भौमप्रदोष १२व्रत। ऋणमुक्ति हेतु। भौमव्रत। दुर्गायात्रा—गौरीपूजा—हनुमद्दर्शन। स्थायीजयोगद्विपुष्करयोग ▲
३३ २०	१४ बु ५१ ४२ रा २ ०	आर्द्रा ३२ १० सा ६ १२	व्याघात २० ५१ दि १ ४०	भ २३ ५२ श ५१ ४२	मुसल	२३	१३	२७	७	७	१		५ २०	६ ४०	३ ५ ४२ ४३	५७ २	२० ४	+ ४	४ २८	भ.दि.२।५३ तक (स्वर्ग)। राष्ट्रियश्रावणमास दि.३१। मासशिवरात्रि १४ व्रत। ⊙सायन सिंह में सूर्य ३।२६(प्रा.६।४२)।
३३ १८	३० गु ४८ १० रा १२ ३६	पुनर्वसु ३० १९ सा ५ २७	हर्षण १५ ५ दि ११ २२	च १९ ५६ ना ४८ १०	सिद्धि	२४	१४	२८	८	८	२	कर्क १५।४७	५ २०	६ ४०	३ ६ ३९ ४६	५७ २	१९ ५२	+ ४	- -	कर्कराशि(दि.११।३९)। अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध पुण्य। शुभवार सुख। मन्वादि ३०। कर्कटकवबु(कोचीन)। चिताऊ अमावस्या(उड़ीसा)। हरियाली३०। आड़िअमावस्या(द.भा.)। ②

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	गुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ शु	८ २६ ४० ०	७६० ४१	४ १८ ० ३४	३५ २३	३ १५ २७ ५०	९ ४५	२ १४ २५ २९	१ १४ १२ १७	६६ ५५	११ ३ २० ३५	१० २७ १ ५१
२ श	९ ८ ५४ ४७	७७४ ४९	४ १८ ३५ ५७	३५ २३	३ १५ ३७ ३६	९ ४५	२ १४ ३९ ५१	१ १५ १९ १२	६६ ५५	११ ३ २१ ६	१० २६ ५८ ४०
३ र	९ २२ ४ २५	७९० ५९	४ १९ ११ २०	३५ २३	व १५ ४७ २२	९ १२	२ १४ ५४ १२	१ १६ २६ ७	६६ ५५	११ ३ २१ ३७	१० २६ ५५ ३०
४ चं	१० ४ २९ ३८	८०६ ४३	४ १९ ४६ ४४	३५ २१	३ १५ ३८ ९	२२ ४१	२ १५ ८ ३४	१ १७ ३३ ३	६६ ५५	व ३ २२ ८	१० २६ ५२ १९
५ मं	१० १९ १० १	८२१ ४०	४ २० २२ ५	३५ १८	३ १५ १५ २८	२२ ४४	२ १५ २१ ५७	१ १८ ३९ ५८	६६ ५५	११ ३ २१ ५४	१० २६ ४९ ८
६ बु	११ ३ ३८ १८	८४४ ३४	४ २० ५७ २४	३५ १८	३ १४ ५२ ४३	२२ ४४	२ १५ ३५ १४	१ १९ ४६ ५३	६६ ५५	११ ३ २० ५४	१० २६ ४५ ५७
७ गु	११ १७ ६ ३१	८५२ १९	४ २१ ३२ ४३	३५ १८	३ १४ २९ ५८	२२ ४४	२ १५ ४८ ३२	१ २० ५३ ४८	६६ ५३	११ ३ १९ ५४	१० २६ ४२ ४६
८ शु	० १ १९ २१	८५७ ५४	४ २२ ८ २	३५ १८	३ १४ ७ १४	४४ ३८	२ १६ १ ४९	१ २२ ० ४१	६९ १८	११ ३ १८ ५३	१० २६ ३९ ३६
९ श	० १५ ३७ ३८	८६० १२	४ २२ ४३ २०	३५ २३	३ १३ २२ ३५	५१ २५	२ १६ १५ ६	१ २३ १० ०	६९ २९	११ ३ १७ ५३	१० २६ ३६ २५
१० र	० २९ ५७ ३३	८५८ ५५	४ २३ १८ ४४	३५ ५८	३ १२ ३१ १०	५१ २६	२ १६ २८ २३	१ २४ १९ ३०	६९ ३०	११ ३ १६ ५३	१० २६ ३३ १४
११ चं	१ १४ १५ १२	८५४ ३५	४ २३ ५४ ४३	३५ ५८	३ ११ ३९ ४४	५१ २६	२ १६ ४१ ४०	१ २५ २९ ०	६९ १६	११ ३ १५ ५३	१० २६ ३० ३
१२ मं	१ २८ २७ २०	८४७ ४८	४ २४ ३० ४१	३५ ५८	३ १० ४८ १७	५१ २६	२ १६ ५४ ५७	१ २६ ३८ १६	६९ १२	११ ३ १४ ५२	१० २६ २६ ५२
१४ बु	२ १२ ३० ५४	८३७ ४१	४ २५ ६ ४०	३५ ५८	३ ९ ५६ ५१	५१ २६	२ १७ ८ १४	१ २७ ४७ २८	६९ १२	११ ३ १३ ५२	१० २६ २३ ४२
३० गु	२ २६ २२ ५५	८२५ २७	४ २५ ४२ ३९	३५ ५८	३ ९ ५ २४	५१ २६	२ १७ २१ ३१	१ २८ ५६ ४०	६९ १२	११ ३ १२ ५२	१० २६ २० ३१

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पू.फा.में।। बुध-पुष्य।। ति.३ रवि वक्री ३०।५२ (सा.५।३७)।। गुरु-ति.१० रवि आर्द्रा ४ चरण ५२।२९ (रा.२।१९)।। शुक्र-रोहिणी।। ति.९ शनि मृग में ८।३९ (दि.८।४६)।। ति.३० गुरु मिथुन ५४।५५ (रा.शे.३।१८)।। शनि-उ.भा.१ चरण।। ति.४ सोम वक्री ४२।३ (रा.१०।४)।। ति.६ बुध पू.भा.४ चरण ५४।१९ (रा.२।५७)।। राहु-पू.भा.३ चरण। ति.७ गुरु पू.भा.२ चरण।। केतु-उ.फा.१ चरण। पू.फा.में ४ चरण ५२।१८ (रा.२।१२)।।

१५पं० श्रावणकृष्णा८ शुक्रे

सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१४८
अयनांश २४।१२।१५

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	४	३	२	१	११	१०	४
०	१	२२	१४	१६	२२	३	२६	२६
५७	१९	८	७	१	०	१८	३९	३९
४८	२१	२	१४	४९	४१	५३	३६	३६
५६	८५७	३५	४४	१३	६९	१	३	३
५७	५४	१८	३८ व	१७	१८	० व	११	११



श्रावणकृष्णपक्ष विचार—त्रयोदशी की तिथि की हानि होने से पक्ष चौदह दिनों का है। श्रावण मास में चातुर्मास व्रती को शाक का त्याग करना चाहिये। **११ जुलाई** से श्रावण आरम्भ हो रहा है। श्रावण मास में शिवजी को जल चढ़ाकर बेलपत्र, चन्दन, अक्षत, धूप, दीप से शिवपूजन का विशेष महत्त्व है। जो प्रतिदिन पूजा न कर सके उन्हें सोमवार के दिन शिवजी की पूजा और व्रत रखना चाहिये। इस मास में **लघुरुद्र, महारुद्र** अथवा **अतिरुद्र पाठ** करने का भी विधान है। श्रावण में पार्थिव शिवपूजन का विशेष महत्त्व है। केसरिया वस्त्र धारण कर कावरियों का समूह सर्वत्र देशभर में☛

।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

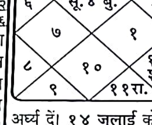
तिथि ल.अं.	१शु. घं.मि.	२श. घं.मि.	३र. घं.मि.	४चं. घं.मि.	५मं. घं.मि.	६बु. घं.मि.	तिथि ल.अं.	७गु. घं.मि.	८शु. घं.मि.	९श. घं.मि.	१०र. घं.मि.	११चं. घं.मि.	१२मं. घं.मि.	१४बु. घं.मि.	३०गु. घं.मि.
मिथुन	५ ४१	५ ३७	५ ३३	५ २९	५ २५	५ २१	कर्क	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २३	७ १९	७ १५	७ ११	७ ७
कर्क	७ ५९	७ ५५	७ ५१	७ ४७	७ ४३	७ ३९	सिंह	९ ४९	९ ४५	९ ४१	९ ३७	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २१
सिंह	१० १३	१० ९	१० ५	१० १	९ ५७	९ ५३	कन्या	१२ २	११ ५८	११ ५४	११ ५०	११ ४६	११ ४२	११ ३८	११ ३४
कन्या	१२ २६	१२ २२	१२ १८	१२ १४	१२ १०	१२ ६	तुला	२ १८	२ १४	२ १०	२ ६	२ २	१ ५८	१ ५४	१ ५०
तुला	२ ४२	२ ३८	२ ३४	२ ३०	२ २६	२ २२	वृश्चिक	४ ३५	४ ३१	४ २७	४ २३	४ १९	४ १५	४ ११	४ ७
वृश्चिक	४ ५९	४ ५५	४ ५१	४ ४७	४ ४३	४ ३९	धनू	६ ४१	६ ३७	६ ३३	६ २९	६ २५	६ २१	६ १७	६ १३
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
धनू	७ ५	७ १	६ ५७	६ ५३	६ ४९	६ ४५	मकर	८ २८	८ २४	८ २०	८ १६	८ १२	८ ८	८ ४	८ ०
मकर	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३२	कुम्भ	९ ५९	९ ५५	९ ५१	९ ४७	९ ४३	९ ३९	९ ३५	९ ३१
कुम्भ	१० २३	१० १९	१० १५	१० ११	१० ७	१० ३	मीन	११ २७	११ २३	११ १९	११ १५	११ ११	११ ७	११ ३	१० ५९
मीन	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ३९	११ ३५	११ ३१	मेष	१ ४	१ ०	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६
मेष	१ २८	१ २४	१ २०	१ १६	१ १२	१ ८	वृष	३ ०	२ ५६	२ ५२	२ ४८	२ ४४	२ ४०	२ ३६	२ ३२
वृष	३ २४	३ २०	३ १६	३ १२	३ ८	३ ४	मिथुन	५ १४	५ १०	५ ६	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४६

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। **ति.१** शुक्र पू.षा.में वैधृतिदोष। **ति.२** शनि उ.षा.में सौभाग्यवती विना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण। प्रा.७।१७ से श्रवण वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.३** रवि दि.१।१५ भद्रा पूर्व श्रवण पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग आभूषण निर्माण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.४** सोम धनिष्ठा रिक्तादोष। **ति.५** मंगल प्रा.६। ४४ तक शतभिष वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **ति.६** बुध पू.भा.में राहुयुति। **ति.७** गुरु रेवती राहुयुति। **ति.८** शुक्र अश्विनी भौमवेध। **ति.९** शनि भरणी भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.१०** रवि दि.१०।२९भद्राबाद कृत्तिका शस्त्रनिर्माण धान्यच्छेदन मुहूर्त्त। **ति.११** सोम रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण आभूषण निर्माण दवंरी धानरोपण शिल्पविद्या **जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६ दि.९।३३ उ.) विपणि मुहूर्त्त।** रा.८।३७ से मृगशिर **जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.१२ रा.९।४३ से लग्न का श.दा.)।** ति.१२ मंगल प्रा.५।४८ तक मृगशिर शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

१६पं० श्रावणकृष्ण३० गुरु

सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१५४
अयनांश २४।१२।१६

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
३	२	४	३	२	१	११	१०	४
६	२६	२५	९	१७	२८	३	२६	२६
३९	२२	४२	५	२१	५६	१२	२०	२०
४६	५५	३९	२४	३१	४०	५२	३१	३१
५७	८२५	३५	५१	१३	६९	१	३	३
२	२७	५८	२६ व	१७	१२	२ व	११	११



① घी गाय दान मन्दाकिनी में स्नान। निरयन दक्षिणायन दैत्यों का दिन देवों की रात्रि। [illegible] संक्रान्ति से तीन दिनों तक शुभ कार्य निषेध है। **वर्षविश्वा १२ सुभिक्षकर। वर्षर्तु।** कर्क के [illegible] केश क्षौरादि कार्य वर्जित है। ② सव्यापि **मनसापूजा प्रारंभ** (बङ्गाल)। रवियोग रा.शे.४।३२से।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी ति.६ बुध रा.शे.४।३२ से। **ति.८** शुक्र रा.१।२७ तक।
पञ्चकविचार-ति.३ रवि रा.७।२८ से। **ति.७** गुरु रा.३।४ तक।

☛स्थित शिवालयों में जाकर जलाभिषेक करते हैं। समस्त श्रावणमास में मंगलवार को देवीदर्शन व हनुमान्जी का दर्शन-पूजन करने से अभीष्ट कामना पूर्ण होती है। श्रावण कृष्ण में **शनि वक्री** होने पर दुर्भिक्ष तथा अन्न की विभिषिका हो। पक्ष में **दो ग्रह वक्री** हों तो शासकों में क्षोभ की वृद्धि हो। **श्रावण में शनिवारी नवमी** संतापकारक है तथा कार्तिक में सत्तापरिवर्तन होने की सम्भावना होती है। इस मास में एकादशी को **रोहिणी** से सुभिक्ष हो। १२ जुलाई को **अशून्यशयन व्रत** में आज शय्या स्थित लक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य-सुख की प्राप्ति होती है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर होने के पाप से मुक्त हो जाते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु की मूर्ति को लक्ष्मी सहित विशिष्ट शय्या पर स्थापित कर अनेक उपचारों द्वारा पूजन करें। दिनभर मौन रखे तथा सायं पुनः स्नान कर शयनोत्सव मनायें। चन्द्रोदय पर अर्घ्यपात्र में जल, फल, पुष्प, गन्धाक्षत रखकर मंत्र द्वारा अर्घ्य दें। **१४ जुलाई** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर रात ९:२९ के बाद चन्द्रोदय में अर्घ्य दें। **१६ जुलाई** को कर्कसंक्रान्ति में **मनसा पूजा** बङ्गाल में प्रारंभ होगा। **१७ जुलाई** को **श्रीशीतला सप्तमी** का पूजन होगा। **१८ जुलाई** को **श्रीशीतलाष्टमी बसिअउरा** किया जायेगा। **२१ जुलाई** को **कामदा एकादशी व्रत सबका** होगा। **२२ जुलाई** को आज सूर्योदय उपरान्त द्वादशी प्रा.५।४८ तक **एकादशी का पारण** करें। आज ऋणमुक्ति हेतु प्रशस्त **भौमप्रदोष** व्रत होगा। २३ जुलाई को **मास शिवरात्रि** व्रत किया जायेगा। **२४ जुलाई** को **स्नान-दान एवं श्राद्ध की अमावस्या** एवं हरियाली **अमावस** मनाई जायेगी। शुभवार से सुभिक्ष तथा शुभ है।

श्रावणशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ३ श्रावण से १८ तिथि तक १९४७ शक
अंग्रेजी दिनांक २५ जुलाई से ९ अगस्त तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा घ.	प.	तिथि		घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३३	१६	१	शु	४५	४३	रा	११	३८	पुष्य	२९	२७	सा	५	७	वज्र	१०	४	दि	९	२२	किं	१६	५६	वव	४५	४३	उत्पात
३३	१४	२	श	४४	२८	रा	११	८	श्लेषा	२९	४३	सा	५	१४	सिद्धि	५	५३	प्रा	७	४२	वा	१५	५	कौ	४४	२८	मानस
३३	११	३	र	४४	२९	रा	११	९	मघा	३१	१४	सा	५	५१	व्यतिपात	२	४३	प्रा	६	२७	तै	१४	२८	गर	४४	२९	मुद्गर
३३	९	४	चं	४५	५१	रा	११	४२	पू.फा.	३४	२	सा	६	५८	वरियान	० ५८	३२ ५२	प्रा	५ ५	३४ ७	व	१५	१०	भ	४५	५१	ध्वज
३३	६	५	मं	४८	१८	रा	१२	४२	उ.फा.	३७	५८	रा	८	३४	शिव	५९	८	रा	५	२	वव	१७	४	वा	४८	१८	धाता
३३	४	६	बु	५१	५७	रा	२	९	हस्त	४३	३	रा	१०	३६	सिद्ध	५९	४४	रा	५	१६	कौ	२०	७	तै	५१	५७	आनंद
३३	१	७	गु	५६	२२	रा	३	५६	चित्रा	४८	५६	रा	१२	५८	साध्य	६०	०	समस्त			गर	२४	९	व	५६	२२	चर
३२	५८	८	शु	६०	०	समस्त			स्वाती	५५	१९	रा	३	३१	साध्य	०	५५	प्रा	५	४६	भ	२८	५१	वव	६०	०	गद
३२	५६	८	श	१	२०	प्रा	५	५७	विशाखा	६०	०	समस्त			शुभ	२	२७	प्रा	६	२३	वव	१	२०	वा	३३	५१	शुभ
३२	५३	९	र	६	२३	दि	७	५८	विशाखा	१	५२	प्रा	६	१०	शुक्ल	४	५	प्रा	७	३	कौ	६	२३	तै	३८	४४	उत्पात
३२	५०	१०	चं	११	५	दि	९	५२	अनुराधा	८	४	दि	८	३९	ब्रह्म	५	२७	प्रा	७	३६	गर	११	५	व	४३	५	मानस
३२	४९	११	मं	१५	६	दि	११	२८	ज्येष्ठा	१३	३८	दि	१०	५३	ऐन्द्र	६	१८	दि	७	५७	भ	१५	६	वव	४६	३५	मुद्गर
३२	४५	१२	बु	१८	५	दि	१२	४१	मूल	१८	१४	दि	१२	४४	वैधृति	६	२६	दि	८	१	वा	१८	५	कौ	४९	२	ध्वज
३२	४२	१३	गु	२०	०	दि	१	२८	पू.षा.	२१	४४	दि	२	९	विष्कुम्भ	५	३९	प्रा	७	४३	तै	२०	०	गर	५०	१७	धाता
३२	३९	१४	शु	२०	३४	दि	१	४१	उ.षा.	२३	५७	दि	३	२	प्रीति	३	५३	प्रा	७	१	व	२०	३४	भ	५०	१०	आनंद
३२	३६	१५	श	१९	४७	दि	१	२३	श्रवण	२४	५३	दि	३	२६	आयुष्मा.	१ ५६	७ १२	प्रा	५ ४	५५ २४	वव	१९	४७	वा	४८	५०	स्थिर

तिथि	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति		रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	२५	१५	२९	९	९	३			५	२१	६	३९	३	७	३६	४९	५७	४	१९	३९	+	४	-	-
२	२६	१६	३०	१०	१०	४	सिंह	२९।४३	५	२१	६	३९	३	८	३३	५४	५७	५	१९	२६	+	४	८	५
३	२७	१७	१	११	११	५			५	२२	६	३८	३	९	३०	५९	५७	५	१९	१३	+	४	८	३८
४	२८	१८	२	१२	१२	६	कन्या	५०।१	५	२२	६	३८	३	१०	२८	५	५७	६	१८	५९	+	४	९	९
५	२९	१९	३	१३	१३	७			५	२३	६	३७	३	११	२५	१२	५७	७	१८	४५	+	४	९	३८
६	३०	२०	४	१४	१४	८			५	२३	६	३७	३	१२	२२	१९	५७	९	१८	३१	+	४	१०	६
७	३१	२१	५	१५	१५	९	तुला	१५।५९	५	२४	६	३६	३	१३	१९	२८	५७	१०	१८	१६	+	४	१०	३७
८	अ	२२	६	१६	१६	१०			५	२४	६	३६	३	१४	१६	३९	५७	१०	१८	१	+	४	११	९
८	२	२३	७	१७	१७	११	वृश्चिक	४५।१४	५	२५	६	३५	३	१५	१३	५०	५७	१२	१७	४६	+	४	११	४६
९	३	२४	८	१८	१८	१२			५	२५	६	३५	३	१६	११	२	५७	१२	१७	३०	+	४	१२	२७
१०	४	२५	९	१९	१९	१३			५	२६	६	३४	३	१७	८	१५	५७	१४	१७	१४	+	४	१	१५
११	५	२६	१०	२०	२०	१४	धनु	१३।३८	५	२६	६	३४	३	१८	५	२९	५७	१६	१६	५८	+	४	२	७
१२	६	२७	११	२१	२१	१५			५	२७	६	३३	३	१९	२	४५	५७	१७	१६	४२	+	४	३	६
१३	७	२८	१२	२२	२२	१६	मकर	३७।१७	५	२८	६	३२	३	२०	०	३	५७	१८	१६	२५	+	४	४	७
१४	८	२९	१३	२३	२३	१७			५	२८	६	३२	३	२०	५७	२१	५७	१९	१६	८	+	४	५	१०
१५	९	३०	१४	२४	२४	१८	कुम्भ	५४।४६	५	२९	६	३१	३	२१	५४	४१	५७	२०	१५	५१	+	४	-	-

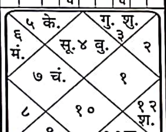
श्रीविष्णु तथा शिव का अभिषेक प्रारंभ। ❷ मौनव्रत।
सिंहराशि (सा.५।१४)। चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.३०सामान्य। धर्मसम्राट स्वामीकरपात्रि जयन्ती। ❶रवियोग सा.५।१४ से पूर्व ...
मु.सफर २ हि.१४४७। मधुश्रवा ३ (पश्चिम में प्रसिद्ध)। ठकुराईनजयन्ती ३ (पश्चिम में प्रसिद्ध)। स्वर्णगौरीव्रत। ... हरियालीतीज ३। ❶
भ.दि.११।२६ से रा.११।४२ तक (मृत्यु)। कन्याराशि(रा.१।२२)। वैनायकीश्रीगणेश चौथ व्रत। आडिपूरम् (द.भा.)। ...
श्रीनागपञ्चमी ५। दीवार पर गोबरआदि से आकृत नागों का यथाशक्ति पूजन। तक्षकपूजा ५। काशी नागकूप यात्रा। ... ❋
स्कन्दषष्ठी ६ व्रत। सायं कल्कीवतार ६। लुण्ठनषष्ठी(बङ्गाल)। रवियोग रा.१०।३६ तक। ❸ ... ❷
भ.रा.३।५७ से (पाताल)। तुलाराशि (दि.११।४८)। गोस्वामि तुलसीदास जयंती। यायीजययोग रा.१२।५८ से।
भ.सा.४।५६ तक (पाताल)। अगस्त ८। मेलानयनादेवी चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)। रवियोगस्थायीजययोग रा.३।३१ से। ❋यायीजययोग रा.११।४२से।
वृश्चिकराशि(रा.११।३१)। रवियोग समस्त।
वरालक्ष्मीव्रत। ⊙श्लेषा में सूर्य३०।२३(सा.५।३४)। नपुं.स्त्री सू.चं. योग नागवाहन चण्डानाडी स्वामी शनि ...
भ.रा.१०।४०से (स्वर्ग)। प्रदोष झूलनयात्रारंभ। श्रावणसोमवार व्रत(प्रदोषविधि)। रवियोग समस्त। ... ❸
भ.दि.११।२८ तक (पाताल)। धनुराशि (दि.१०।५३)। पुत्रदाएकादशी ११व्रत सबका। मौनव्रत। दुर्गायात्रा—गौरीपूजा— ...
दि.१२।४१ तक एकादशी पारणा। प्रदोष १२ व्रत। श्रीविष्णुपवित्रारोपण। शाकदान। दीर्घन्यायव्रत का प्रारम्भ। ... दामोदरद्वादशी। बुद्धद्वादशी १२। यमघण्टयोग दि.१२।४१ तक।
मकरराशि (रा.८।२३)। श्रीशिवाधिवासन पवित्रारोपण-रात्रिव्यापिनि चतुर्दशी में। आखेटक त्रयोदशी(उड़ीसा)। रवियोगादि २।९से। ❹रवियोग दि.३।२ तक पश्चात सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.दि.१।४१ से रा.१।३२ तक (पाताल)। व्रत १५। सायं हयग्रीवोत्पत्ति। काशी के भदैनी स्थित मन्दिर में दर्शन पूजन। रात्रि में सर्पबलि। प्रदोष झूलनयात्रा समापन। प्रदोष नारोलीपूर्णिमा। ❹
कुम्भराशि (रा.३।२३)। पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। रक्षाबंधन (गर्जा) कार्य। उपाकर्म (श्रावणी)। श्रवणनक्षत्र व शुक्लयजुर्वेदियों आपस्तम्ब ... के साथ पूर्णिमा मतावलम्बी अन्य ❺

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

तिथि	वार	सोम				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	शु	३	१०	१	३५	८११	४३	४	२६	१८	३७	३५	५८	३	८	१३	५८	५१	२६	२	१७	३४	४८	२	०	५	५३	६९	१२	११	३	११	५०	१०	२६	१७	२०
२	श	३	२३	२५	३२	७९६	२७	४	२६	५४	३६	३५	५८	३	७	२२	३१	५१	२६	२	१७	४८	५	२	१	१९	५	६९	१२	११	३	१०	४८	१०	२६	१४	९
३	र	४	६	३३	४९	७८०	१६	४	२७	३०	३६	३५	५१	३	६	३१	५	५१	२६	२	१८	१	२१	२	२	३३	०	६९	१२	११	३	९	४७	१०	२६	१०	५८
४	च	४	१९	२६	२७	७६४	११	४	२८	७	३४	३७	५	३	५	४२	५१	५२	४१	२	१८	१४	३८	२	३	३३	३०	६९	१२	११	३	८	४५	१०	२६	७	४७
५	म	५	१	४	५५	७५०	४४	४	२८	४४	४०	३७	५	३	५	२	०	५२	४४	२	१८	२७	५५	२	४	४६	२०	६९	१२	११	३	७	४३	१०	२६	४	३७
६	बु	५	१४	३	५०	७३७	३०	४	२९	२१	४५	३७	५	३	४	४७	७५	५२	४८	२	१८	४१	११	२	५	५९	११	६९	१२	११	३	६	४३	१०	२६	१	२६
७	गु	५	२६	४५	४९	७२८	३७	४	२९	५८	५०	३७	५	३	४	३४	२०	५२	४८	२	१८	५४	२५	२	७	१	६	६९	१२	११	३	५	४४	१०	२५	५८	१५
८	शु	६	८	५३	२२	७२३	४८	५	०	३५	५६	३७	५	३	४	२२	०	५२	४८	२	१९	७	४०	२	८	२६	४	६९	१२	११	३	४	४२	१०	२५	५५	४
८	श	६	२०	५६	५६	७२१	१५	५	१	१३	१	३७	५	मा	३	५८	२३	९	३८	२	१९	२०	५५	२	९	३९	३	६९	१२	११	२	५९	३२	१०	२५	५१	५३
९	र	७	३	२०	०	७२४	३८	५	१	५०	६	३७	५	३	४	८	१	९	४५	२	१९	३३	१०	२	१०	२८	४३	६९	१२	११	२	५६	५५	१०	२५	४८	४३
१०	च	७	१५	२	३९	७२५	४	५	२	२७	१२	३७	५	३	४	१७	४	९	४५	२	१९	४५	२७	२	११	४१	१	६९	१२	११	२	५४	४०	१०	२५	४५	३२
११	म	७	२७	१३	३९	७३२	४	५	३	४	१७	३७	५	३	४	२७	३२	९	४५	२	१९	५९	०	२	१२	४७	८	६९	१२	११	२	५१	४९	१०	२५	४२	२१
१२	बु	८	९	३४	१२	७४३	२	५	३	४१	२२	३७	५	३	४	३७	१८	२३	१६	२	२०	११	५६	२	१३	५६	२०	६९	१२	११	२	४९	१६	१०	२५	३९	१०
१३	गु	८	२२	६	१२	७५५	५४	५	४	१८	२८	३७	५	३	५	०	३५	३८	२८	२	२०	२४	५१	२	१५	५	३३	६९	१२	११	२	४६	४३	१०	२५	३५	५९
१४	शु	९	३	५२	३	७७१	२९	५	४	५५	३३	३७	५	३	५	३९	३	३८	३५	२	२०	३७	४६	२	१६	१४	४५	६९	१२	११	२	४४	१०	१०	२५	३२	४९
१५	श	९	१७	५३	१८	७८७	४४	५	५	३२	३९	३७	५	३	६	१७	३८	३८	३५	२	२०	५०	४१	२	१७	२३	५७	६९	२२	११	२	४१	३७	१०	२५	२९	३८

१७पं० श्रावणशुक्ल ८शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१६२
अयनांश २४।१२।१७

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	५	३	२	२	११	१०	४
१४	८	०	४	१९	८	३	२५	२५
१६	५३	३५	११	७	१०	२	५५	५५
३९	२२	५६	४६	२०	१९	१	४	४
५७	७२३	३७	१३	१२	६९	२	३	३
१०	४	५	२३ व	५५	१२	३३ व	११	११

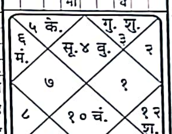


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि / ल.अं.	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४च. घं.	मि.	५म. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०च. घं.	मि.	११म. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	१५श. घं.	मि.
कर्क	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	६
सिंह	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	९	२३	८	२०
कन्या	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३३
तुला	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४९
वृश्चिक	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	६
धनु	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	१२
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५९
कुम्भ	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	३०
मीन	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८
मेष	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३५
वृष	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१
मिथुन	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४५

१८पं० श्रावणशुक्ल१५शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण २१७०
अयनांश २४।१२।१८

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
३	९	५	३	२	२	११	१०	४
२१	१७	५	६	२०	१७	२	२५	२५
५४	३	३२	१७	५०	२३	४१	२९	२९
४१	१८	३९	३८	४१	५७	३७	३८	३८
५७	८७८	३७	३८	१२	६९	२	३	३
२०	४४	५	३५ मा	५५	२२	३४ व	११	११



❺ शाखाजनों को (श्रावणी)। ... आवणि अवित्तु (द.भा.)। मध्याह्न ऋषि तर्पण। संस्कृत दिवस। अमरनाथ यात्रा। सोलोन (दिल्ली)। बलभद्रपूजा (उड़ीसा)। दुर्गारथयात्रा (मिथिला)। ऋक्उपाकर्म (द.भा.)।

मूलविचार-श्लेषा/मघा-ति.१ शुक्र सा.५।७ से ति.३ रवि सा.५।५१ तक। **ज्येष्ठ/मूल-**ति.१० सोम दि.८।३९ से। ति.१२ बुध दि.१२।४४ तक। **पञ्चकविचार-**ति.१५ शनि रा.३।२३ से।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पू.फा.में। ति.१ शुक्र उ.फा.में ३५।४० (रा.७।३७)। ति.७ गुरु कन्या में १।५२ (प्रा.६।९)।। **वक्रीबुध-पुष्य।।** ति.८ शनि मार्गी ३४।५३(रा.७।२२)।। **गुरु-आर्द्रा** ४ चरण।। ति.११ मंगल पुनर्वसु १ चरण ४।३७ (प्रा.७।१७)।। **शुक्र-मृगशिर।** ति.६ बुध आर्द्रा ४१।४२ (रा.१०।४)।। **वक्रीशनि-**पू.भा.४ चरण।। राहु-पू.भा.२ चरण। केतु-पू.फा.में ४ चरण।।

श्रावणशुक्लपक्ष विचार–इस पक्ष में ८ तिथि की वृद्धि होने से यह पक्ष सोलह दिनों का है। पक्ष में गुरु शुक्र का एक राशि में होना दुर्भिक्ष तथा दुःखदायी है। **विशेष–**यदि श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र में वर्षा हो तो सुभिक्ष तथा अन्न पैदावार उत्तम हो। श्रावणशुक्ल प्रथम दिन में विष्णुशिव का अभिषेक प्रारंभ करें। **२६ जुलाई** को उत्तरशृंग **चन्द्रदर्शन** से सुभिक्ष होगा। आज धर्मसम्राट् **स्वा.करपात्रीजी महाराज की जयंती** सर्वत्र विशेषकर काशी नगरी में विविध आयोजनों के साथ मनाई जायेगी। **२७ जुलाई** को **मधुश्रावणी व हरियाली तीज व्रत** किया जायेगा।☛

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ शुक्र पुष्य सूर्ययुति। **ति.२** शनि श्लेषा सूर्यभोग्य। **ति.३** रवि प्रा.६।२७ व्यतिपात वाद मघा शस्त्रनिर्माण धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.४** सोम पू.फा.में भौमयुति। **ति.५** मंगल उ.फा.में भौमभोग्य । **ति.६** बुध हस्त शनिवेध हैं किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.७** गुरु चित्रा शनिराहुवेध। **ति.८**शुक्र स्वाती सा.४।५६ भद्रा वाद नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि व्यापार** वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.८** शनि प्रा.५।५७ रिक्तापूर्व विशाखा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.९** रवि दि.७।५८ रिक्तावाद विशाखा नवीनवस्त्रस्वर्णरत्न धारण वाटिकारोपण चौपायों का क्रय विक्रय नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.१०** सोम रा.१०।४० भद्रा पूर्व अनुराधा सूर्यवेध। **ति.११** मंगल ज्येष्ठा भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.१२** बुध दि.८।१ वैधृति वाद मूल शिशुताम्बूलभक्षण दवंरी धानरोपण औषधीसेवन **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.१३** गुरु पू.षा.में नावनिर्माण रोगविमुक्तस्नान(१४) मुहूर्त्त। **ति.१४** शुक्र दि.१।४१ रिक्तावाद उ.षा.में भद्रादोष। ति.१५ शनि श्रवण **गृहारंभ(च.शु.)** वाहनक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्त।

☛**२८ जुलाई** को **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** है। **२९ जुलाई** को **नागपंचमी** का पर्व मनाया जायेगा। आज गृह-द्वार के दोनों तरफ नाग का चित्र (फोटो) लगाकर या गोबर से सर्प आकृति बनाकर घी, दूध एवं जल से तर्पण करके दही, दुर्वांकुर, धूप, दीप, पुष्प माला आदि से विधिपूर्वक पूजन कर गेहूं, दूध, धान का लावा का भोग लगाना चाहिये। इससे पद्म, तक्षक आदि नागगण संतुष्ट होते है तथा पूजनकर्ता के सात कुलो तक सर्पभय नही होता है। यह पर्व शारीरिक बल पौरुष के परीक्षण के लिये व्यायामशाला में कुश्ती का आयोजन किया जाता है। साथ ही ज्ञान-तर्क शक्ति परीक्षणार्थ विशेषकर काशी में नाग कूप (ईश्वरगंगी मुहल्ला में) पर शास्त्रार्थ का आयोजन किया जाता है। आज नागकूप का दर्शन एवं जल स्पर्श करना चाहिये। **३१ जुलाई** को राम चरित मानस, हनुमान चालीसा आदि के रचयिता **गोस्वामी तुलसीदासजी** की जयंती मनाई जायेगी। **४ अगस्त** को प्रदोष में **झूलनयात्रा** प्रारम्भ होगी। **५ अगस्त** को **पुत्रदा एकादशी व्रत सबका** है। इस व्रत से पुत्रलाभ तथा दीर्घायु होते हैं। **६ अगस्त** आज दि.१२।४१ तक **एकादशी का पारण** करें। आज सर्व कामनापूर्ति हेतु **प्रदोष व्रत** होगा। आज भगवान् विष्णु का पवित्रारोपण (पवित्रसूत्र या जनेऊ) पहनाया जायेगा। आज दहीत्याग (छाछ का निषेध नहीं) करें। **७ अगस्त** को रात्रिकाल चतुर्दशी में **शिवजी का पवित्रारोपण** होगा। **८ अगस्त** को **व्रत की पूर्णिमा** है। आज सायाह्नकाल पूर्णिमा में **हयग्रीव भगवान् का पूजन व दर्शन** होगा। **९ अगस्त** को **स्नान-दान की पूर्णिमा** तथा **रक्षाबंधन का पर्व** मनाया जायेगा। आज **संस्कृत दिवस** मनाया जायेगा। आज ही श्रवण नक्षत्र तथा पूर्णिमा मतावलम्बी तथा अन्य शाखा के अनुयायियों का **उपाकर्म (श्रावणीकर्म)** सम्पन्न होगा।

भाद्रपदकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १६ श्रावण से १ भाद्रपद तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक १० अगस्त से २३ दिनांक तक सन् २०२५ ई.। गृहारंभ सौरकर्कग्राह्य

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

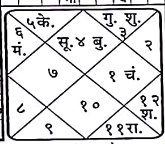
दि.मा घ.	प.	तिथि							नक्षत्र						योग						करण						योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. +	मि.	चंद्रोदय स्टै.	टा.	भाद्रपदकृष्णपक्ष
३२	३३	१	र	१७	५३	दि	१२	३८	धनिष्ठा	२४	३८	दि	३	२०	शोभन	५२	३८	रा	२	३२	कौ	१७	५३	तै	४६	२२	मातङ्ग	१०	१	१५	२५	२५	१९			५	२९	६	३१	३	२२	५२	१	५७	२२	१५	४४	+	४	७	२९	गायत्री जप। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय(रा.७।२९)। यायीजययोग दि.१२।३८ तक पश्चात द्विपुष्करयोग।
३२	३०	२	चं	१४	५१	दि	११	२६	शतभिष	२३	१७	दि	२	४८	अतिगण्ड	४७	६	रा	१२	२०	गर	१४	५१	व	४२	५१	अमृत	११	२	१६	२६	२६	२०			५	३०	६	३०	३	२३	४९	२४	५७	२३	१५	१६	+	४	८	३	भ.रा.१०।३८ से (मृत्यु)। विन्ध्याचली भीमचण्डी देवी जयन्ती। कज्जली निमित्त रात्रि जागरण(रतजग्गा)। प्रदोष विशालाक्षीयात्रा ३।
३२	२७	३	मं	१०	५२	दि	९	५१	पू.भा.	२१	८	दि	१	५८	सुकर्मा	४०	५४	रा	९	५२	भ	१०	५२	वव	३८	२७	काण	१२	३	१७	२७	२७	२१	मीन	६।४०	५	३१	६	२९	३	२४	४६	४७	५७	२५	१४	५८	+	४	८	३७	भ.दि.९।५१ तक (मृत्यु)। मीनराशि (दि.८।११)। अङ्गारक संकष्टी (वहुला) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.८।३७)। प्रदोष वहुलाचतुर्थी (म.प्र.)। कज्जली (कजरी)३। गोपूजा ३। अलंकृत गायों का पूजन ❶
३२	२४	४	बु	६	२	दि	७	५५	उ.भा.	१८	६	दि	१२	४५	धृति	३४	५	रा	७	९	वा	६	२	कौ	३३	१८	लुम्बक	१३	४	१८	२८	२८	२२			५	३१	६	२९	३	२५	४४	१२	५७	२६	१४	४०	+	४	९	११	पूर्वविद्ध ग्राह्य रक्षापञ्चमी ५(उड़ीसा)। गुरुपञ्चमी(उड़ीसा)। ❶अगेवरतृतीया(उड़ीसा)। तीजड़ी(सिन्धी)। स्थायीजयोग दि.९।५१से। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।५८ से।
३२	२१	५	गु	०/५४	३५/७	प्रा	५/३	४५/२५	रेवती	१४	३०	दि	११	२०	शूल	२६	४९	दि	४	१५	तै	०	३५	गर	२७/५४	३८/४२	मित्र	१४	५	१९	२९	२९	२३	मेष	१४।३०	५	३२	६	२८	३	२६	४१	३९	५७	२८	१४	२२	+	३	९	४९	भ.रा.३।२५ से (स्वर्ग)। मेषराशि (दि.११।२०)। अनुदया षष्ठी मध्याह्न में हलषष्ठी ६व्रत(ललहीछठ)। मु.चेहल्लुम। रवियोग दि.११।२०से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। यायीजययोग प्रा.५।४५ तक।
३२	१८	७	शु	४८	३५	रा	१२	५८	अश्विनी	१०	२९	दि	९	४३	गण्ड	१९	१७	दि	१	१४	भ	२१	३८	वव	४८	३५	वज्र	१५	६	२०	३०	३०	२४			५	३२	६	२८	३	२७	३९	७	५७	२९	१४	३	+	३	१०	२९	भ.दि.२।९१तक (स्वर्ग)। शीतलासप्तमी। भारतीय स्वतंत्रता दिवस। राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन राष्ट्रगान तथा विविधोत्सव का आयोजन।
३२	१५	८	श	४२	२२	रा	१०	२९	भरणी	६	१८	दि	८	४	वृद्धि	११	३५	दि	१०	११	वा	१५	२८	कौ	४२	२२	ध्वांक्ष	१६	७	२१	३१	३१	२५	वृष	२०।१५	५	३३	६	२७	३	२८	३६	३६	५७	३०	१३	४४	+	२	११	१७	वृषराशि (दि.१।३९)। कालाष्टमी। श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रत सवका। गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव)। संत ज्ञानेश्वर जयंती। श्रीजयंती (रामानुज)।
३२	११	९	र	३६	२१	रा	८	६	कृत्तिका	२/५६	८/३	प्रा	६/४	२५/५०	ध्रुव	३/५२	५८/३३	प्रा	७/४	९/१०	तै	९	२१	गर	३६	२१	धूम्र	१७	८	२२	३२	१	२६			५	३४	६	२६	३	२९	३४	६	५७	३२	१३	२५	+	२	१२	१०	नेपालीभाद्रपद। दहिमहोत्सव। सूर्योदयस्पर्श शुद्ध नक्षत्र(रोहिणी) वैष्णव श्रीकृष्णजन्मव्रत। गंधर्वनवमी(गुग्गानवमी)। रोहिणीमत श्रीजयंती(रामानुज)।⊙सं.मवा व सिंह में सूर्य २७।०(सा.४।२२)। ❷
३२	८	१०	चं	३०	४०	सा	५	५०	मृगशिर	५४	४०	रा	३	२६	हर्षण	४९	२४	रा	१	१९	व	३	३०	भ	३०/५८	४०/४	आनंद	१८	९	२३	१	२	२७	मिथुन	२६।२५	५	३४	६	२६	४	०	३१	३९	५७	३४	१३	६	+	२	१	११	भ.प्रा.६।५८से सा.५।५०तक (स्वर्ग)। सौरभाद्रपदमास। मिथुनराशि (सा.४।८)। सर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.३।२६ तक।
३२	५	११	मं	२५	२९	दि	३	४६	आर्द्रा	५१	४५	रा	२	१७	वज्र	४२	४४	रा	१०	४०	वा	२५	२९	कौ	५३	१७	चर	१९	१०	२४	२	३	२८			५	३५	६	२५	४	१	२९	३	५७	३५	१२	४७	+	२	२	१५	जयाएकादशी ११व्रत सवका। स्थायीजयोगत्रिपुष्करयोग रा.२।१७ से पूर्व यमघंटयोग।
३२	२	१२	बु	२१	५	दि	२	२	पुनर्वसु	४९	४५	रा	१	३०	सिद्धि	३६	४५	रा	८	१८	तै	२१	५	गर	४९	१८	गद	२०	११	२५	३	४	२९	कर्क	३५।१५	५	३६	६	२४	४	२	२६	४८	५७	३७	१२	२७	+	१	३	२१	कर्कराशि (रा.७।४२)। प्रदोष १२ व्रत। मु.आखिरी चहारशम्बा।
३१	५८	१३	गु	१७	३१	दि	१२	३६	पुष्य	४८	३५	रा	१	२	व्यतिपात	३१	३०	सा	६	१२	व	१७	३१	भ	४६	१६	शुभ	२१	१२	२६	४	५	३०			५	३६	६	२४	४	३	२४	२६	५७	३८	१२	७	+	१	४	२४	भ.दि.१२।३६ से रा.१२।६ तक (मृत्यु)। मासशिवरात्रि १३व्रत। प्रदोष अघोरचतुर्दशी। द्विदिवसीय कैलाशयात्रारंभ (कश्मीर)। पर्युषण पर्वारंभ ५ पक्ष(जैन)।
३१	५५	१४	शु	१५	१	दि	११	३७	श्लेषा	४८	३३	रा	१	२	वरीयान	२७	४	सा	४	२६	श	१५	१	च	४४	२२	मृत्यु	२२	१३	२७	५	६	३१	सिंह	४८।३३	५	३७	६	२३	४	४	२२	५	५७	४०	११	४७	+	१	५	२५	सिंहराशि (रा.१।२)। श्राद्ध ३०। कैलाशयात्रासमापन (कश्मीर)। प्रदोषे पिठोरी अमावस्या ३०।
३१	५२	३०	श	१३	४४	दि	११	७	मघा	४९	४२	रा	१	३०	परिघ	२३	३७	दि	३	४	ना	१३	४४	किं	४३	४३	पद्म	२३	१४	२८	६	७	१			५	३८	६	२२	४	५	१९	४६	५७	४२	११	२७	+	१	-	-	राष्ट्रियभाद्रपदमास दि.३१। अमावस्या ३०। स्नानदान हेतु पुण्य। पापवार से दुर्भिक्ष भय। कुशोत्पाटिनी ३०। "ॐ हुं फट्" मंत्र द्वारा कुशग्रहण करें। शुद्ध कर कुशा बांध करके रख लें। ❸

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	र	१०	०	१०	११	८०३	२०	५	६	९	४४	३७	५	३	६	५६	१४	३८	३५	२	२१	३	३६	२	१८	३३	२०	७०	१५	११	२	३९	२	१०	२५	२६	२७
२	चं	१०	१४	४२	२५	८१८	२४	५	६	४६	४७	३७	५	३	७	३४	४९	५२	५८	२	२१	१६	३०	२	१९	४३	३५	७०	१४	११	२	३६	२८	१०	२५	२३	१६
३	मं	१०	२८	२७	४५	८२१	४३	५	७	२३	५५	३७	५	३	८	२७	७	५९	२९	२	२१	२९	२४	२	२०	५३	५०	७०	१४	११	२	३३	५४	१०	२५	२०	५
४	बु	११	१२	२५	४९	८४२	३४	५	८	१	०	३७	५	३	९	२६	३६	५९	३१	२	२१	४२	१७	२	२२	४	४	७०	१४	११	२	३१	२०	१०	२५	१६	५५
५	गु	११	२६	३९	२०	८७१	३	५	८	३८	५	३७	५	३	१०	२६	८	५९	३३	२	२१	५५	११	२	२३	१४	१९	७०	१४	११	२	२८	४५	१०	२५	१३	४४
७	शु	०	१०	५०	१२	८९७	३	५	९	१६	२७	३८	३०	३	११	२५	४०	५९	३१	२	२२	८	४	२	२४	३४	३४	७०	१४	११	२	२६	११	१०	२५	१०	३३
८	श	०	२५	९	४२	८९९	७७	५	९	५४	५८	३८	२८	३	१२	२५	१२	७३	७	२	२२	२०	५५	२	२५	३४	४९	७०	१४	११	२	२३	३०	१०	२५	७	२२
९	र	१	१०	३०	३७	८९१	२२	५	१०	३३	२६	३८	२८	३	१३	३८	२०	७५	४५	२	२२	३३	१६	२	२६	४५	४	७०	१७	११	२	१८	४७	१०	२५	४	११
१०	चं	१	२३	४५	५४	८९१	४८	५	११	११	५४	३८	२८	३	१४	५४	५	७५	४६	२	२२	४४	३३	२	२७	५५	२२	७०	३२	११	२	१५	४	१०	२५	१	१
११	मं	२	७	५४	४५	८४०	५२	५	११	५०	२३	३८	२८	३	१६	९	५२	७५	४६	२	२२	५६	११	२	२९	५	५४	७०	३२	११	२	११	२१	१०	२४	५७	५०
१२	बु	२	२१	५३	४८	८२७	३५	५	१२	२८	५१	३८	२८	३	१७	२५	३९	७६	०	२	२३	७	३८	३	०	१६	२६	७०	३२	११	२	७	३९	१०	२४	५४	३९
१३	गु	३	५	३९	२३	८१५	५१	५	१३	७	१९	३८	२८	३	१८	४१	३९	८५	४४	२	२३	१९	६	३	१	२६	५८	७०	३२	११	२	३	५६	१०	२४	५१	२८
१४	श	३	१९	१२	१८	८००	२६	५	१३	४५	४८	३८	२८	३	२०	७	२४	८५	४६	२	२३	३०	३३	३	२	३७	३०	७०	३२	११	२	०	१३	१०	२४	४८	१७
३०	श	४	१	२९	४८	७८४	५७	५	१४	२४	१६	३८	४२	३	२१	३३	११	८५	४६	२	२३	४२	०	३	३	४८	२	७०	३२	११	१	५६	३०	१०	२४	४५	७

१९पं० भाद्रपदकृष्ण८शनि सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२९७७ अयनांश२४।१२।१९

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	५	३	२	३	११	१०	४
२८	२५	९	१२	२२	२५	२	२४	२४
३६	९	४५	२५	२०	३४	२२	७	७
५७	८५	३८	७३	१२	७०	३	३	३
३०	४७	२८	७	१८	१४	४०	११	११
			मा			व		

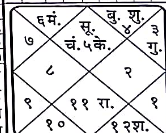


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ चं. घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	१०चं घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	३०श. घं.	मि.
कर्क	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४७	५	४३	५	३९	५	३६	सिंह	७	४६	७	४२	७	३८	७	३५	७	३१	७	२८
सिंह	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	१	७	५७	७	५३	७	५०	कन्या	९	५९	९	५५	९	५१	९	४८	९	४४	९	४१
कन्या	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	तुला	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५७
तुला	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१९	वृश्चिक	२	३२	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	२	१४
वृश्चिक	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६	धनु	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३	४	२०
धनु	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५३	४	४९	४	४५	४	४२	मकर	६	२५	६	२१	६	१७	६	१४	६	१०	६	७
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	४०	६	३६	६	३२	६	२९	कुम्भ	७	५६	७	५२	७	४८	७	४५	७	४१	७	३८
कुम्भ	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	११	८	७	८	३	८	०	मीन	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९	९	६
मीन	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	मेष	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	५०	१०	४६	१०	४३
मेष	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१६	११	१२	११	८	११	५	वृष	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३९
वृष	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	१२	१	८	१	४	१	१	मिथुन	३	११	३	७	३	३	३	०	२	५६	२	५३
मिथुन	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२६	३	२२	३	१८	३	१५	कर्क	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	११

२०पं० भाद्रपदकृष्ण३०शनि सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२९८४ अयनांश २४।१२।२०

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	५	३	२	३	११	१०	४
५	१	१४	२१	२३	३	१	२४	२४
१९	२९	२४	३३	४२	४८	५६	४५	४५
४६	४८	१६	११	०	२	३०	७	७
५७	७८४	३८	८५	११	७०	३	३	३
४२	५७	४२	४६	२७	३२	४२	११	११
			मा			व		



❷मु.४५ सस्ती। पूर्व की १६घटिपुण्य। आज दिन घं.९ मि.५८ से संक्रान्ति का पुण्यकाल। छत्र सुवर्ण दान गङ्गा स्नान। पु.स्त्री.मृ.च.योग मेषवाहन वातनाड़ी स्वामी सूर्य मेघ आच्छादित वायुवृष्टियोग। मनसापूजा समाप्त–प्रधानदिन। यायीजययोग प्रा.६।२५ से। ❸ वर्ष पर्यन्त इसी कुशा का प्रयोग करें। आलोक अमावस्या। सप्तपुरीअमावस्या (उड़ीसा)। मु.शहादते इमाम हसन। दृश्य अगस्त्योदय ४।२४(प्रा.७।२४)। ⊙सायन कन्या में सूर्य २७।५९(सा.४।४९)।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी-ति.४ बुध दि.१२।४५ से। ति.७ शुक्र दि.९।४३ तक। **श्लेषा/मघा**-ति.१३ गुरु रा.१।२ से। ति.३० शनि रा.१।३० तक। **पञ्चकविचार**-ति.५ गुरु दि.११।२० तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-उ.फा.में।। ति.५ गुरु हस्त ४९।५४ (रा.१।३०)।। **मार्गीबुध-पुष्य।।** ति.११ मंगल श्लेषा २३।५२ (दि.३।८)।। **गुरु-पुनर्वसु १ चरण। ति.१३** गुरु पुनर्वसु २ चरण ४।४५ (प्रा.७।३०)।। **शुक्र-आर्द्रा।** ति.२ सोम पुनर्वसु १४।१ (दि.११।६)। ति.११ मंगल कर्क में ४६।१ (रा.११।५९)। **ति.१४** शुक्र पुष्य ३६।९(रा.८।५)।। **वक्रीशनि-**पू.भा.४ चरण।। **राहु**-पू.भा.२ चरण। केतु-पू.फा.मे ४ चरण।।

भाद्रपदकृष्णपक्ष विचार—यह पक्ष षष्ठी तिथि की हानि से १४ दिनों का है। भाद्रपद कृष्ण **सोमवारी द्वितीया** से धन धान्य तथा पशु सम्पदा की वृद्धि होगी। **विशेष**—भाद्रपद मास में सूर्यसंक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोग तथा आश्विन में भय व्याप्त हो। चातुर्मास व्रती भाद्रपद मास में दही का त्याग करें। छाछ (मट्ठा) त्याग का निषेध नहीं है। **१० अगस्त** को **अशून्यशयन व्रत** में आज शय्या स्थित लक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करने से अक्षय धन तथा दाम्पत्य-सुख की प्राप्ति होती है। इस व्रत को करने से स्त्री वैधव्य तथा पुरुष विधुर☛ होने के पाप से मुक्त हो जाते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु की मूर्ति को लक्ष्मी सहित विशिष्ट शय्या पर स्थापित कर अनेक उपचारों द्वारा पूजन करें। दिनभर मौन रखे तथा सायं पुनः स्नान कर शयनोत्सव मनायें। चन्द्रोदय पर अर्घ्यपात्र में जल, फल, पुष्प, गन्धाक्षत रखकर मंत्र द्वारा अर्घ्य दें। **११ अगस्त को विन्ध्याचली भीमचण्डी देवी की जयंती** एवं कजली निमित्त **रतजग्गा** किया जायेगा। प्रदोषकाल में **विशालाक्षी यात्रा** होगी। **१२ अगस्त** को **कजली तीज** मनायी जायेगी। आज सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा अपनी सास को वयाना देकर आशीर्वाद लेती हैं तथा गीतसंगीत का आयोजन होता है। आज मंगलवारी मध्याह्न युक्त चतुर्थी में अत्यंत पुण्यदायी **अङ्गारक संकष्टी वहुला श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। इस चतुर्थी व्रत को उपवास तथा गंध, पुष्प तथा दूर्वा आदि के द्वारा गणेश पूजन कर परिक्रमा करें तथा सायं समय सवत्सा गाय का पूजन करें। चन्द्रोदय रात ८:३७ के बाद अर्घ्य दें। **१४ अगस्त** को पुत्र की दीर्घायुष्य कामना से पंचमी में मध्याह्न षष्ठी अनुरोध से **हलषष्ठी (ललही छठ) व्रत** किया जायेगा। **१५ अगस्त** को **भारतीय स्वतन्त्रता दिवस** मनाया जायेगा। राष्ट्रीय ध्वजारोहण, राष्ट्रगान के साथ विविध उत्सवों का आयोजन होगा। **१६ अगस्त** को सूर्योदय से रात्रि में अष्टमी तिथि प्राप्त होने से **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** सभी जनों द्वारा तथा **गोकुलाष्टमी** (नंदोत्सव) मनायी जायेगी। **१७ अगस्त** को **उदयकाल रोहिणी मत** वाले वैष्णवजनों की **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** तथा **दधिमहोत्सव** होगा। आज सिंह संक्रान्ति में (शेष पृष्ठ ८ पर)

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। **ति.१**रवि धनिष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.२** सोम रा.१०।३८ भद्रा पूर्व शतभिष जातकर्म नामकरण अन्नप्राशन आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रयविक्रय धानरोपण नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन **गृहारंभ(ल.८ दि.१२।४५ से)** वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.३** मंगल पू.भा.में शनियुति। **ति.४** बुध उ.भा.में शनिवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.५** गुरु रेवती केतुवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। । **ति.७** शुक्र अश्विनी केतुवेध। **ति.८** शनि भरणी शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.९** रवि कृत्तिका रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। **ति.१०**सोम प्रा.६।५८ भद्रा पूर्व मृगशिर जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन वाटिकारोपण **दक्षिणदिशा** की यात्रा शिल्पविद्या औषधीसेवन **विपणि व्यापार** वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.११** मंगल आर्द्रा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.१२** बुध रा.८।१८ व्यतिपात पूर्व पुनर्वसु जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहन क्रय मुहूर्त्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा घ.	दि.मा प.	तिथि	वार	तिथि घ.	तिथि प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३१	४८	१	र	१३	४२	दि	११	६	पू.फा.	५२	१०	रा	२	३०	शिव	२१	११	दि	२	६	बव	१३	४२	बा	४४	२१	छत्र
३१	४५	२	चं	१५	०	दि	११	३९	उ.फा.	५५	५२	रा	४	०	सिद्ध	१९	४७	दि	१	३३	कौ	१५	०	तै	४६	१४	श्रीवत्स
३१	४२	३	मं	१७	२९	दि	१२	३९	हस्त	६०	०	समस्त			साध्य	१९	१५	दि	१	२२	गर	१७	२९	व	४९	१७	सौम्य
३१	३८	४	बु	२१	६	दि	२	६	हस्त	०	४१	प्रा	५	५६	शुभ	१९	३७	दि	१	३०	भ	२१	६	बव	५३	१९	आनंद
३१	३५	५	गु	२५	३३	दि	३	५४	चित्रा	६	२१	दि	८	१३	शुक्ल	२०	३७	दि	१	५५	बा	२५	३३	कौ	५८	२	चर
३१	३१	६	शु	३०	३२	सा	५	५४	स्वाती	१२	३९	दि	१०	४५	ब्रह्म	२२	३	दि	२	३१	तै	३०	३२	गर	६०	०	गद
३१	२८	७	श	३५	३९	रा	७	५८	विशाखा	१९	१०	दि	१	२२	ऐन्द्र	२३	३७	दि	३	८	गर	३	५	व	३५	३९	शुभ
३१	२४	८	र	४०	२६	रा	९	५३	अनुराधा	२५	३०	दि	३	५५	वैधृति	२५	१	दि	३	४३	भ	८	२	बव	४०	२६	मृत्यु
३१	२१	९	चं	४४	३३	रा	११	३३	ज्येष्ठा	३१	१३	सा	६	१३	विष्कुम्भ	२५	५६	सा	४	६	बा	१२	२९	कौ	४४	३३	पद्म
३१	१८	१०	मं	४७	४०	रा	१२	४९	मूल	३६	४	रा	८	१०	प्रीति	२६	११	सा	४	१३	तै	१६	६	गर	४७	४०	छत्र
३१	१४	११	बु	४९	४२	रा	१	३८	पू.षा.	३९	४९	रा	९	४१	आयुष्मा.	२५	३१	दि	३	५७	व	१८	४१	भ	४९	४२	श्रीवत्स
३१	१०	१२	गु	५०	२३	रा	१	५५	उ.षा.	४२	२०	रा	१०	४२	सौभाग्य	२३	५६	दि	३	२१	बव	२०	२	बा	५०	२३	सौम्य
३१	७	१३	शु	४९	४५	रा	१	४१	श्रवण	४३	३३	रा	११	१२	शोभन	२१	२१	दि	२	१९	कौ	२०	४	तै	४९	४५	धूम्र
३१	३	१४	श	४७	५६	रा	१२	५७	धनिष्ठा	४३	३५	रा	११	१३	अतिगण्ड	१७	४४	दि	१२	५२	गर	१८	५०	व	४७	५६	प्रवर्द्धमान
३१	०	१५	र	४४	५९	रा	११	४८	शतभिष	४२	२७	रा	१०	४६	सुकर्मा	१३	१२	दि	११	४	भ	१६	२७	बव	४४	५९	राक्षस

तिथि	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ	+	रे.अं. ±	मि.	चन्द्रास्त स्टै.टा.	
१	२४	१५	२९	७	८	२			५	३८	६	२२	४	६	१७	२८	५७	४५	११	६	+	०	७	८
२	२५	१६	१	८	९	३	कन्या	८।५	५	३९	६	२१	४	७	१५	१३	५७	४६	१०	४६	+	०	७	३८
३	२६	१७	२	९	१०	४			५	४०	६	२०	४	८	१२	५९	५७	४८	१०	२५	-	०	८	६
४	२७	१८	३	१०	११	५	तुला	३३।३१	५	४०	६	२०	४	९	१०	४७	५७	४८	१०	४	-	०	८	३६
५	२८	१९	४	११	१२	६			५	४१	६	१९	४	१०	८	३६	५७	५२	९	४३	-	१	९	८
६	२९	२०	५	१२	१३	७			५	४२	६	१८	४	११	६	२८	५७	५४	९	२२	-	१	९	४२
७	३०	२१	६	१३	१४	८	वृश्चिक	२।३२	५	४२	६	१८	४	१२	४	२२	५७	५५	९	०	-	१	१०	२१
८	३१	२२	७	१४	१५	९			५	४३	६	१७	४	१३	२	१८	५७	५७	८	३९	-	२	११	६
९	सि	२३	८	१५	१६	१०	धनु	३१।१३	५	४४	६	१६	४	१४	०	१५	५७	५९	८	१७	-	२	११	५६
१०	२	२४	९	१६	१७	११			५	४५	६	१५	४	१४	५८	१५	५८	०	७	५५	-	२	१२	५१
११	३	२५	१०	१७	१८	१२	मकर	५५।२७	५	४५	६	१५	४	१५	५६	१६	५८	३	७	३३	-	३	१	५१
१२	४	२६	११	१८	१९	१३			५	४६	६	१४	४	१६	५४	१९	५८	५	७	११	-	३	२	५३
१३	५	२७	१२	१९	२०	१४			५	४७	६	१३	४	१७	५२	२५	५८	६	६	४९	-	३	३	५५
१४	६	२८	१३	२०	२१	१५	कुम्भ	१३।३४	५	४७	६	१३	४	१८	५०	३१	५८	१०	६	२७	-	४	४	५८
१५	७	२९	१४	२१	२२	१६			५	४८	६	१२	४	१९	४८	४१	५८	११	६	४	-	४	-	-

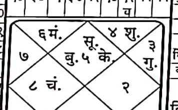
◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु ३०सामान्य। सर्वार्थसिद्धियोग त्रिपुष्करयोग रा २।३०से। ❶ गौरीव्रत(उड़ीसा)। रोटतीज(जैन)। रवियोगसमस्त।
कन्याराशि (दि.८।५३)। मु.रविउलूवल ३ हि.१४४७। अपराह्न में वाराहवतार ३। श्रीशंकरदेवतिथि(असम)। भादवामेला(राज.)—तीनदिन। रवियोग रा से ४।० से। यायीजययोग दि.११।३९से।
भ.रा.१।२३ से (पाताल)। हरितालिका ३(तीज)व्रत। स्त्रीयों के नित्य काम्य हेतु। प्रातः हस्त में सामवेदियों का उपाकर्म। मन्वादि ३। आज चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त (रा.८।६)। पत्थरचौथ। ❶
भ.दि.२।६तक। (पाताल)। तुलाराशि (रा.७।८)। वैनायकी श्रीगणेश४ व्रत। मध्याह्न में गणेशचतुर्थी। सरस्वतीपूजा(उड़ीसा)। वरदा चतुर्थी। विनायकचतुर्थी(तमिलनाडु)। श्रीगणेशोत्सवारम्भ ❷
मध्याह्न ऋषिपञ्चमी ५व्रत। मध्याह्न में सप्तर्षिपूजा। सात वर्षों तक ऋषिप्रतिमा पूजन कर ब्राह्मण को दान दें। आज बिना जोते भूमि से उत्पन्न शाक का ग्रहण। तीनदिन मेलापटप्रारंभ कश्मीर। ❸
श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। श्रीलोलार्कषष्ठी ६व्रत। काशी के भदैनी स्थित लोलार्ककुण्ड में सन्तान हेतु स्नान का विधान। सूर्यषष्ठी ६व्रत। देव ६। स्वामि कार्तिकेय दर्शन। ब्रह्महत्यादि पापनाश। चर्पटषष्ठी। ❹
भ.रा.७।५८ से (स्वर्ग)। वृश्चिकराशि (प्रा.६।४३)। अपराजिता। सन्तानसप्तमी। मुक्ताभरण व्रत। महालक्ष्मीव्रतारंभ १६दिनों तक(रा.३ रा.१०।२१)। आज काशी में लक्ष्मीकुण्ड में स्नान दर्शन। ❺
भ.दि.८।५६ तक (स्वर्ग)। अनुराधा में ज्येष्ठा देवी आवाहन। दूर्वाष्टमी ८ व्रत। स्त्रीयों के नित्य काम्य हेतु। मध्याह्न राधाष्टमी। दुर्गाशयनाष्टमी(उड़ीसा)। महारविवारव्रत। आजलवण रहित भोजनकार्य। ❻
सितम्बर १। धनुराशि(सा.६।१३)। मध्याह्न ज्येष्ठा देवी पूजन। नन्दानवमी। अदुः खनवमी। तालनवमी (बङ्गाल)। श्रीचन्द्रजयती(श्रीनगाल्या उदासीन)। रवियोग सा.६।१३ से।
मूल में ज्येष्ठादेवी का विसर्जन। प्रदोष में आवर्णिमूलम(द.भा.)। दशावतार १०व्रत। रवियोग समस्त दिन। ❼ जलझूलनी(राज.)। कीलमुहूर्त्त(कुर्ग)। रवियोग रा.९।४१तक।
भ.दि.१।२३ से रा.१।३८ तक (पाताल)। मकरराशि (रात ३।५६)। पद्माएकादशी ११व्रत सबका। कर्माएकादशी(झारखण्ड)। डोलग्यारस(म.प्र.)। हैकरहितोम्व(मणिपुर)। ❼
वामनावतार १२। वामन द्वादशी १२ व्रत। श्रीविष्णु(कटि)परिवर्तन उत्सव। दुग्धत्याग दधिदान व्रतारंभ। शक्रध्वज स्थापन। इन्द्रपूजा(मिथिला)। कल्किद्वादशी। ओनम प्रथम दिन(द.भा.)।
प्रदोष १३व्रत। मु.मिलादुननवी—मु.ईदमिलाद(वारावफात)। मध्याह्न थिरुओनम(द.भा.)। रवियोग रा.११।१२ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.रा.१२।५७ से (मृत्यु)। कुम्भराशि (दि.११।१३)। अनंतचतुर्दशी १४ व्रत। आज लवण रहित भोजन कार्य। श्रीशिवपरिवर्तनोत्सव। गणपति विसर्जन। ओनम तृतीयदिन(द.भा.)। ❽
भ.दि.१२।२३ तक (मृत्यु)। पूर्णिमा १५। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। नान्दीमातामह श्राद्ध(पार्वणविधि)। उमामहेश्वर व्रत(अनन्त विधि)। पूर्वाह्न लोकपाल पूजा। काशी में खग्रास चन्द्रग्रहण विवरण पृ.८ पर देखें। ❾

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	र	४	१५	३१	५५	७६८	२४	५	१५	२	५८	३९	५	३	२२	५८	५७	८५	४६	२	२३	५३	२८	३	४	५८	३४	७०	३२	११	१	५२	४७	१०	२४	४१	५६
२	चं	४	२८	१८	२३	७५३	३१	५	१५	४२	४	३९	५	३	२४	२४	४४	८६	४७	२	२४	४	४८	३	६	९	६	७०	३२	११	१	४९	४	१०	२४	३८	४५
३	मं	५	१०	५१	२८	७४७	४	५	१६	२१	१०	३९	५	३	२५	५१	३२	९३	२१	२	२४	१६	१	३	७	१९	३८	७०	३२	११	१	४५	२०	१०	२४	३५	३४
४	बु	५	२३	२०	०	७१०	५९	५	१७	०	१६	३९	५	३	२७	२४	५३	९३	१९	२	२४	२७	१४	३	८	३०	१०	७०	३२	११	१	४१	३६	१०	२४	३२	२३
५	गु	६	५	२२	३८	७३०	५७	५	१७	३९	२२	३९	५	३	२८	५८	१३	९३	१९	२	२४	३८	२७	३	९	४०	४२	७०	३२	११	१	३७	५२	१०	२४	२९	१२
६	शु	६	१७	२७	२२	७२३	५८	५	१८	१८	२८	३९	५	४	०	३१	३२	९३	१९	२	२४	४९	४०	३	१०	५१	१४	७०	३२	११	१	३४	८	१०	२४	२६	२
७	श	६	२९	२९	२९	७२१	३७	५	१८	५७	३४	३९	५	४	२	४	५२	९५	३४	२	२५	०	५२	३	१२	१	४६	७०	३२	११	१	३०	२४	१०	२४	२२	५१
८	र	७	११	३२	२८	७२३	३७	५	१९	३६	४०	३९	५	४	३	४०	२७	९९	३०	२	२५	१२	५	३	१३	१२	१८	७०	५४	११	१	२६	२५	१०	२४	१९	४०
९	चं	७	२३	३९	५९	७३०	२४	५	२०	१५	४६	३९	५	४	५	१९	५८	९९	२९	२	२५	२३	१७	३	१४	२३	१३	७१	३७	११	१	२१	३३	१०	२४	१६	२९
१०	मं	८	४	५५	५	७४०	१०	५	२०	५४	५१	३९	५	४	६	५९	२७	९९	२९	२	२५	३४	३०	३	१५	३४	५१	७२	२४	११	१	१६	४०	१०	२४	१३	१८
११	बु	८	१८	२०	२०	७५२	५६	५	२१	३३	५७	३९	५	४	८	३८	५७	९९	२९	२	२५	४४	४१	३	१६	४७	१५	७२	२३	११	१	११	४८	१०	२४	१०	८
१२	गु	९	०	५८	१७	७६७	४७	५	२२	१३	३	३९	५	४	१०	१८	२७	१०१	२६	२	२५	५४	२७	३	१७	५९	३९	७२	२३	११	१	६	५६	१०	२४	६	५७
१३	शु	९	१३	५०	५२	७८४	६	५	२२	५२	९	३९	५	४	११	५९	५३	१०३	१०	२	२६	४	१३	३	१९	१२	२	७२	२३	११	१	२	३	१०	२४	३	४६
१४	श	९	२६	५९	१३	७९९	३३	५	२३	३१	१५	३९	५	४	१३	४३	३	१०२	३१	२	२६	१३	५९	३	२०	२४	२६	७२	२३	११	०	५७	११	१०	२४	०	३५
१५	र	१०	१०	२३	६	८१५	२४	५	२४	१०	२१	३९	५	४	१५	२५	३५	१०२	३१	२	२६	२३	४५	३	२१	३६	५०	७२	२३	११	०	५२	१८	१०	२३	५७	२४

२१पं० भाद्रपदशुक्ल८ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१९१२
अयनांश२४।१२।२१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	५	४	२	३	११	१०	४
१३	११	१९	३	२५	१३	१	२४	२४
२	३२	३६	४०	१२	१२	२६	१९	१९
१८	२८	४०	२७	५	१८	२५	४०	४०
५७	७२३	३९	९९	११	७०	४	३	३
५७	३७	५	३०	१२	५४	५२ व	११	११

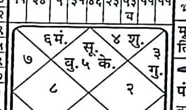


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२चं. घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९ चं. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	१५र. घं.	मि.
सिंह	७	२४	७	२०	७	१६	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५९	६	५५	६	५१	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३४
कन्या	९	३७	९	३३	९	२९	९	२६	९	२२	९	१९	९	१५	९	१२	९	८	९	४	९	१	८	५७	८	५४	८	५०	८	४७
तुला	११	५३	११	४९	११	४५	११	४२	११	३८	११	३५	११	३१	११	२८	११	२४	११	२०	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	३
वृश्चिक	२	१०	२	६	२	२	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०	१	२७	१	२३	१	२०
धनु	४	१६	४	१२	४	८	४	५	४	१	३	५८	३	५४	३	५१	३	४७	३	४३	३	४०	३	३६	३	३३	३	२९	३	२६
मकर	६	३	५	५९	५	५५	५	५२	५	४८	५	४५	५	४१	५	३८	५	३४	५	३०	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१३
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	७	३४	७	३०	७	२६	७	२३	७	१९	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५८	६	५४	६	५१	६	४७	६	४४
मीन	९	२	८	५८	८	५४	८	५१	८	४७	८	४४	८	४०	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१९	८	१५	८	१२
मेष	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५६	९	५२	९	४९
वृष	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५२	११	४८	११	४५
मिथुन	२	४९	२	४५	२	४१	२	३८	२	३४	२	३१	२	२७	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	६	२	२	१	५९
कर्क	५	७	५	३	४	५९	४	५६	४	५२	४	४९	४	४५	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०	४	१७

२२पं० भाद्रपदशुक्ल१५ रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण२१९१९
अयनांश२४।१२।२२

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	५	४	२	३	११	१०	४
१९	१०	२४	१५	२६	२१	०	२३	२३
४८	२३	१०	२५	२३	३६	५२	५७	५७
४१	६	२१	३५	४५	५०	१८	२४	२४
५८	८१५	३९	१०२	९	७२	४	३	३
११	२४	५	३१	४६	२३	५३ व	११	११



❷(महाराष्ट्र)। सोभाग्यचतुर्थी(बङ्गाल)। हरितालीचतुर्थी। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग प्रा.५।४६तक। ❸ रवियोगयायीजययोग दि.८।१३ से। ❹ मन्थानषष्ठी (बङ्गाल)। सोमनाथव्रत(उड़ीसा)। रवियोग दि.१०।४५ तक। ❺ मेलापट समापन(कश्मीर)। ललिता सप्तमी (उड़ीसा)। यायीजययोग दि.१।२२ से पूर्व में त्रिपुष्करयोग। ❻⊙पू.फा.में सूर्य १८।१८(दि.१।१२)। मु.मु.नपुं.स्त्री योग महिषवाहन चन्द्रनाड़ी स्वामी शनि वायु वृष्टियोग। रवियोग समस्त दिन। ❽रवियोग रा.११।१३तक। ❾महावीरी झण्डामेला (सीतामढ़ी) इन्द्रगोविन्द पूजा (प्रदोष)—उड़ीसा। श्रीनारायणगुरु जयती (केरल)। ओनम चतुर्थदिन(द.भा.)।

● गृहारंभ (ल.८ दि.११।१० से ८वां गु.दा. या ल.९ दि.१।२७ से ८वां शुक्र दान) वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१४ शनि धनिष्ठा रिक्तादोष। ति.१५ रवि दि.१२।२३ भद्राबाद शतभिष चौपायों का क्रय विक्रय वाहन क्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.८ रवि दि.३।५५ से। ति.१० मंगल रा.८।१० तक। पञ्चकविचार- ति.१४ शनि दि.११।१३ से।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-हस्त। ति.१३शुक्र चित्रा ४२।४५ (रा.१०।५३)।। **बुध-श्लेषा।। ति.५गुरु** मघा व सिंह में ३९।४४ (रा.९।३५)। **ति.१३शुक्र** पू.फा.४६।३६ (रा.१२।२५)।। **गुरु-पुनर्वसु २चरण।। शुक्र-पुष्य।। ति. १०मंगल** श्लेषा ५४।० (रा.शे. ३।२१)।। **वक्रीशनि-पू.भा. ४चरण।। राहु-पू.भा.** २चरण। **केतु-पू.फा.में ४चरण।।**

भाद्रपदशुक्लपक्ष विचार-सामान्य रूप से पक्ष १५ दिनों का है। **विशेष-**यदि भाद्रपद मास में चित्रा, स्वाती, विशाखा नक्षत्रों वाले दिन वर्षा न हो तो वर्षाकाल का समापन मानें। **२४ अगस्त** को उत्तरशृंग **चंद्रदर्शन** से सुभिक्ष हो। **२६ अगस्त** को **हरितालिका (तीज) व्रत** किया जायेगा। जो कि स्त्रियों के सौभाग्य हेतु है। यह व्रत वैधव्य दोषनाशक तथा पुत्र-पौत्रादि को बढ़ाने वाला होता है। आज सायं चतुर्थी में ढेला चौथ है, आज **चन्द्रदर्शन से कलंक** लगता है, अत: आज चन्द्रदर्शन से बचें। अनचाहे दीख ही जाय तो **गणेश चतुर्थी की कथा** (स्यमन्तक मणि की कथा) सुनें। आज हस्त नक्षत्र में सामवेदियों का उपाकर्म होगा। **२७ अगस्त को वैनायकी वरद्**☛

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१रवि पू.फा.में सूर्यभोग्य। **ति.**२ सोम उ.फा.में भौमभुक्त है किन्तु चंद्रअभुक्त होने से अशुभ है। **ति.**३ मंगल हस्त भौमयुति। **ति.**४ बुध हस्त पूर्वदोष। **ति.**५ गुरु चित्रा राहुवेध। दि.८।१३ से स्वाती जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन सूतीस्नान **विपणि व्यापार** वाहन क्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.**६ शुक्र स्वाती जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रस्वर्ण-रत्नधारण शिल्पविद्या **विपणि व्यापार** वाहन क्रय मुहूर्त्त। **ति.**७ शनि रा.७।५८ भद्रा पूर्व विशाखा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। दि.१।२२ से अनुराधा सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। **ति.**८ रवि दि.३।४३ वैधृति बाद अनुराधा (चन्द्रभुक्त) नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **ति.**९ सोम ज्येष्ठा रिक्तादोष। **ति.**१० मंगल मूल पुंसवन सीमन्त शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.**१२गुरु उ.षा.में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण गृहारंभ **(ल.८ दि.११।१३ से ८वां गु.दा.)** या **(ल.९ दि.१।३०से ८वां शुक्र दान)** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.**१३ शुक्र श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग पूर्वदिशा की यात्रा दवंरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन ●

☛**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** एवं देश व्यापी **गणेशोत्सव प्रारंभ** होगा। **२८ अगस्त** को **ऋषि पंचमी व्रत** किया जायेगा। मध्याह्न में सप्तर्षि पूजा करे तथा सात वर्षों तक ऋषि प्रतिमा का पूजन कर ब्राह्मण को दान करें। बिना जोते भूमि से उत्पन्न शाक को ग्रहण करें। **२९ अगस्त** को **लोलार्क षष्ठी व्रत** होगा। काशी में भदैनी स्थित **लोलार्क कुण्ड पर स्नान** करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। आज **स्वामी कार्तिकयजी का दर्शन पूजन** करने से ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्ति मिलती है। **३० अगस्त** को **सन्तान सप्तमी** व्रत करें। आज से १६ दिनों तक चलने वाले चन्द्रोदय अष्टमी में **महालक्ष्मी व्रत (सोरहिया मेला)** प्रारंभ होगा। काशी के लक्ष्मीकुण्ड पर आज से स्नान व दर्शन-पूजन किया जायेगा। **३१ अगस्त** को मध्याह्न में **राधाष्टमी** मनायी जायेगी। **दूर्वाष्टमी व्रत** कर उमा सहित शिव का षोडशोपचार पूजन करें। **अनुराधा** में ज्येष्ठादेवी का **आवाहन** करें। पक्ष के दूसरे **रविवार** को नमकरहित **महारविवार व्रत** किया जायेगा। **१ सितम्बर** आज मध्याह्न **ज्येष्ठा** में **ज्येष्ठादेवीपूजन** करें। **२ सितम्बर** को **मूल** में देवी का विसर्जन होगा। **३ सितम्बर** को **पद्मा एकादशी व्रत सबका है, कर्मा एकादशी व्रत** (झारखण्ड) एवं **डोलग्यारस** (म.प्र.) किया जायेगा। **४ सितम्बर** आज **वामन द्वादशी व्रत** कर मध्याह्न काल में **भगवान् वामन का अवतार उत्सव** मनाया जायेगा। आज विष्णुपरिवर्तन (करवट) का उत्सव होगा। (शेष पृष्ठ ८ पर)

आश्विनकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १७ भाद्रपद से ३० तिथि तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक ८ सितम्बर से २१ दिनांक तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा	घ.प.	तिथि	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग
३०	५६	१	चं	४१	६	रा	१०	१५	पू.भा.	४०	२७	रा	१०	०	घृति	७	४८	दि	८	५६	वा	१३	२	कौ	४१	६	मुसल
३०	५२	२	मं	३६	२२	रा	८	२१	उ.भा.	३७	३६	रा	८	५१	शूल	१/५३	४२/१५	प्रा	६/३	२९/४७	तै	८	४४	गर	३६	२२	सिद्धि
३०	४९	३	बु	३१	२	सा	६	१४	रेवती	३४	५	रा	७	२८	वृद्धि	४७	४३	रा	१२	५५	व	३	४२	भ	३१/५८	२/७	उत्पात
३०	४५	४	गु	२५	१३	दि	३	५६	अश्विनी	३०	९	सा	५	५४	ध्रुव	४०	११	रा	९	५४	वा	२५	१३	कौ	५२	११	मानस
३०	४२	५	शु	१९	९	दि	१	३१	भरणी	२५	५८	सा	४	१५	व्याघात	३२	२९	रा	६	५१	तै	१९	९	गर	४६	५	मुद्गर
३०	३८	६	श	१३	१	दि	११	४	कृतिका	२१	४५	दि	२	३४	हर्षण	२४	४६	दि	३	४६	व	१३	१	भ	४०	१	ध्वज
३०	३४	७	र	७	२	दि	८	४१	रोहिणी	१७	४३	दि	१२	५८	वज्र	१७	८	दि	१२	४४	वव	७	२	वा	३४	१२	धाता
३०	३२	८	चं	१/५४	२२/५२	प्रा	६/४	२६/२४	मृगशिर	१४	५	दि	११	३२	सिद्धि	९	४९	दि	९	४९	कौ	१	२२	तै	२८/५६	४८/१४	आनंद
३०	२७	१०	मं	५१	५२	रा	२	४०	आर्द्रा	११	०	दि	१०	१९	व्यतिपात	२/५३	५७/४७	प्रा	७/४	५/३७	व	२४	३	भ	५१	५२	चर
३०	२३	११	बु	४८	२०	रा	१	१५	पुनर्वसु	८	४६	दि	९	२५	परिघ	५१	१२	रा	२	२३	वव	२०	६	वा	४८	२०	गद
३०	२०	१२	गु	४५	५१	रा	१२	१६	पुष्य	७	२०	दि	८	५२	शिव	४६	३१	रा	१२	३२	कौ	१७	५	तै	४५	५१	शुभ
३०	१६	१३	शु	४४	३४	रा	११	४६	श्लेषा	७	०	दि	८	४५	सिद्ध	४२	४५	रा	११	३	गर	१५	१२	व	४४	३४	मृत्यु
३०	१३	१४	श	४४	३२	रा	११	४६	मघा	७	५२	दि	९	६	साध्य	४०	०	रा	९	५८	भ	१४	३३	श	४४	३२	पद्म
३०	९	३०	र	४५	५०	रा	१२	१८	पू.फा.	९	५९	दि	९	५६	शुभ	३८	१४	रा	९	१५	च	१५	११	ना	४५	५०	छत्र

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश		सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ +		रे.अं. -	मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.	
८	१	१५	२२	२३	१७	मीन	२५।५७	५	४९	६	११	४	२०	४६	५३	५८	१२	५	४२	-	४	६	३५
९	२	१६	२३	२४	१८			५	४९	६	११	४	२१	४५	६	५८	१४	५	१९	-	५	७	१०
१०	३	१७	२४	२५	१९	मेष	३४।५	५	५०	६	१०	४	२२	४३	२०	५८	१६	४	५७	-	५	७	४७
११	४	१८	२५	२६	२०			५	५१	६	९	४	२३	४१	३७	५८	२०	४	३४	-	५	८	२७
१२	५	१९	२६	२७	२१	वृष	३९।५५	५	५२	६	८	४	२४	३९	५७	५८	२२	४	११	-	६	९	१४
१३	६	२०	२७	२८	२२			५	५२	६	८	४	२५	३८	२०	५८	२४	३	४८	-	६	१०	६
१४	७	२१	२८	२९	२३	मिथुन	४५।५४	५	५३	६	७	४	२६	३६	४४	५८	२५	३	२५	-	६	११	५
१५	८	२२	२९	३०	२४			५	५४	६	६	४	२७	३५	१०	५८	२८	३	२	-	७	१२	८
१६	९	२३	३०	३१	२५	कर्क	५४।२०	५	५५	६	५	४	२८	३३	३९	५८	३०	२	३९	-	७	१	१२
१७	१०	२४	३१	१	२६			५	५५	६	५	४	२९	३२	९	५८	३२	२	१६	-	७	२	१५
१८	११	२५	१	२	२७			५	५६	६	४	५	०	३०	४२	५८	३५	१	५३	-	८	३	१६
१९	१२	२६	२	३	२८	सिंह	७।०	५	५७	६	३	५	१	२९	१८	५८	३७	१	२९	-	८	४	१३
२०	१३	२७	३	४	२९			५	५८	६	२	५	२	२७	५५	५८	३९	१	६	-	८	५	८
२१	१४	२८	४	५	३०	कन्या	२५।५०	५	५८	६	२	५	३	२६	३५	५८	४१	०	४३	-	९	-	-

फसलीनवर्षारंभ। सन् १४३३। मीनराशि(सा.४।२)। महालयारंभ। प्रतिपदाश्राद्ध। तर्पणप्रारंभ। महालय में प्रतिदिन पितरों को तर्पण व श्राद्ध करने से वर्षभर सुख रहता है। आश्विन में ①
अशून्यशयन २व्रत (चं.उ.रा.७।१०)। द्वितीयाश्राद्ध। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।५१तक। ①दूधत्याग किन्तु छाछ त्याग निषेध है। पौराणिक अगस्त्योदय १३।३१(दि.११।१३)। यायीजययोग रा.१०।०से।
भ.प्रा.७।१९ से सा.६।१४ तक (मृत्यु)। मेषराशि(रा.७।२८)। संकष्टीश्रीगणेश ४व्रत(च.उ.रा.७।४७)। अपराह्न तृतीयाश्राद्ध। मुईद ए मौलाद। सायं ललितादेवी यात्रा।
चतुर्थीश्राद्ध। यायीजययोग सा.५।५४से पूर्वसर्वार्थसिद्धियोग। ⑤मेलाफलगु। केथारगौरीव्रत(द.भा.)। तर्पणलयबा(मणिपुर)। समाधीश्रीनारायणगुरु(केरल)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।५६ से।
वृषराशि(रा.९।५०)। श्रीचन्द्रषष्ठीव्रत। चन्द्रोदयव्यापिनीग्राह्य(चं.उ.रा.९।१४)। पञ्चमीश्राद्ध। अपराह्न षष्ठीश्राद्ध। भरणीश्राद्ध। पार्वणवदस्य विधि। *भरणी में श्राद्ध करने से पितृपक्ष में गया में किये* ②
भ.१३।१ दि.११।४ से रा.९।५२ तक (स्वर्ग)। अपराह्न सप्तमीश्राद्ध। रवियोग दि.२।३४ तक पश्चात यायीजययोग।
मिथुनराशि(रा.१२।१५)। प्रदोष कालाष्टमी। जीवत्पुत्रिकाव्रत(जीतिया)। जीमूतवाहनपूजा। श्रीमहालक्ष्मी८व्रत (चं.उ.रा.११।५)। श्रीमहालक्ष्मीव्रतसमापन। लक्ष्मीव्रत चन्द्रोदय में। ③
प्रा.६।२६से जीवत्पुत्रिकाव्रत पारण। मूलाष्टमी(उड़ीसा)। मातृनवमी। सौभाग्यवती स्त्रीयों का श्राद्ध। अन्वष्टकाश्राद्ध। अविधवा नवमी। दुर्गानवमी (महाराष्ट्र)।
भ.दि.३।३२ से रा.२।४० तक (स्वर्ग)। कर्कराशि (रात ३।३९)। दशमीश्राद्ध। यमघटयोग दि.१०।१९तक।
नेपालीआश्विनमास। इन्दिराएकादशी व्रत सबका। एकादशीश्राद्ध।⊙सं.कन्यासूर्य २८।३२(सा.५।१९)। मु.३०समासमताकरम्। पूर्व १६घटि पुण्य आज सूर्यास्त तक संक्रान्ति पुण्यकाल। ④
सौरआश्विनमास। संन्यासि यति वैष्णव का द्वादशी श्राद्ध। ②*श्राद्ध सदृश फल की प्राप्ति।"* अपराह्न माधवदेवतिथि(असम)। रवियोग सा.४।१५ से।
भ.रा.११।४६ से (मृत्यु)। सिंहराशि (दि.८।४५)। प्रदोष १३ व्रत। अपराह्न में मघात्रयोदशीश्राद्ध। मासशिवरात्रि १३व्रत। स्थायीजयोग रा.११।४६ से।
भ.दि.११।४७ तक (मृत्यु)। केवलशस्त्र द्वारा हत जनों का चतुर्दशी श्राद्ध। एकोदिष्ट विधि द्वारा श्राद्ध कार्य। ④गो अन्न तिलदान गोदावरी स्नान। शरद् ऋतु। विश्वकर्मा जंयती।
कन्याराशि(सा.४।१८)। अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से भिक्ष भय। सर्वपैत्री ३०। महालया। पितृविसर्जन। श्रीमहाविष्णु प्रीत्यर्थ ब्रह्मण भोजन। अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध। ⑤

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

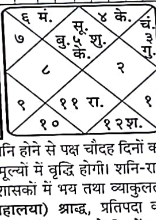
ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	चं	१०	२४	२	४	८२७	३५	५	२४	४९	२७	४०	२७	४	१७	८	६	१०२	३१	२	२६	३३	३१	३	२२	४९	१३	७२	२३	११	०	४७	२६	१०	२३	५४	१४
२	मं	११	६	५३	४०	८३९	५३	५	२५	२९	५५	४०	२९	४	१८	५०	३८	१०५	४९	२	२६	४३	१७	३	२४	१	३७	७२	२३	११	०	४२	२८	१०	२३	५१	३
३	बु	११	२१	५७	१६	८४९	४८	५	२६	१०	२४	४०	२९	४	२०	३६	२८	१०७	२६	२	२६	५३	३	३	२५	१४	१	७२	२३	११	०	३७	४०	१०	२३	४७	५२
४	गु	०	५	९	४८	८५६	७	५	२६	५०	५३	४०	२९	४	२२	२३	५४	१०७	२५	२	२७	२	४९	३	२६	२६	२५	७२	२३	११	०	३२	४६	१०	२३	४४	४१
५	शु	०	२०	२७	५०	८५९	५७	५	२७	३१	२२	४०	२९	४	२४	११	२०	१०७	२५	२	२७	१२	३६	३	२७	३८	४८	७२	२३	११	०	२७	५३	१०	२३	४१	३०
६	श	१	४	४८	५	८६०	२८	५	२८	११	५२	४०	२९	४	२५	५८	४५	१०७	२५	२	२७	२२	२१	३	२८	५१	१२	७२	२३	११	०	२२	५९	१०	२३	३८	२०
७	र	१	१९	६	४५	८५७	३९	५	२८	५२	२१	४०	२९	४	२७	४६	११	१०८	२५	२	२७	३२	७	४	०	३	३६	७२	३६	११	०	१८	६	१०	२३	३५	९
८	चं	२	३	२०	७	८५१	३४	५	२९	३२	५०	४०	२९	४	२९	३४	३६	१०८	३९	२	२७	४१	५२	४	१	१६	१३	७२	४०	११	०	१३	१२	१०	२३	३१	५८
१०	मं	२	१७	२५	२३	८४३	२०	६	०	१३	१९	४०	२९	५	१	२३	१५	१०८	१०	२	२७	५१	३८	४	२	२८	५३	७२	४०	११	०	८	१९	१०	२३	२८	४७
११	बु	३	०	१८	३६	८३०	५५	६	०	५३	४८	४०	२८	५	३	११	२५	१०६	२९	२	२८	१	२३	४	३	४१	३३	७२	४०	११	०	३	२६	१०	२३	२५	३६
१२	गु	३	१४	५९	५०	८१९	३४	६	१	३४	१७	४०	२८	५	४	५७	५५	१०६	२९	२	२८	११	९	४	४	५४	१४	७२	४०	१०	२९	५८	३२	१०	२३	२२	२६
१३	शु	३	२८	२६	९	८०४	२८	६	२	१४	४६	४०	२८	५	६	४४	२५	१०६	२९	२	२८	२०	४७	४	६	६	५४	७२	४०	१०	२९	५३	३९	१०	२३	१९	१५
१४	श	४	११	३६	३६	७८८	३६	६	२	५५	१५	४०	२८	५	८	३०	५५	१०६	२९	२	२८	२८	४४	४	७	१९	३४	७२	४०	१०	२९	४८	४५	१०	२३	१६	४
३०	र	४	२४	३१	२५	७७२	४४	६	३	३५	४४	४०	२८	५	१०	१७	२४	१०६	२९	२	२८	३६	४२	४	८	३२	१५	७२	४०	१०	२९	४३	५२	१०	२३	१२	५३

भौमादिग्रहों का सञ्चार। **भौम**-चित्रा में। ति.८ सोम तुला ४०।१५ (रा.१०।०)।। **बुध**-पू.फा.में।। ति.६ शनि उ.फा.में २३।३ (दि.३।५)। ति.८ सोम कन्या में १४।२ (दि.११।३१)। ति.१४ शनि हस्त ५०।१२(रा.२।१२)।। **गुरु**-ति.१ सोम पुनर्वसु ३ चरण ३९।४८(रा.९।४४)।। **शुक्र**-श्लेषा। ति.६ शनि मघा व सिंह में ५७।१(रा.शे.४।४०)।। **वक्रीशनि**-पू.भा.४ चरण।। ति.११ बुध कुम्भ पू.भा.३ चरण ४२।५(रा.१०।४५)।। **राहु**-पू.भा.२ चरण। ति.१२ गुरु पू.भा.में १ चरण। **केतु**-पू.फा.में ४ चरण।। पू.फा.मे ३ चरण ४५।४५(रा.१२।१४)।।

आश्विनकृष्णपक्ष विचार–९ तिथि की हानि होने से पक्ष चौदह दिनों का है। पक्ष में बुधवारी एकादशी से चौपायों के मूल्यों में वृद्धि होगी। शनि-राहु एक राशि पर हों तो सभी धान महँगे तथा शासकों में भय तथा व्याकुलता होगी। **८ सितम्बर** आज से **पितृपक्ष (महालया) श्राद्ध**, प्रतिपदा का श्राद्धकर्म तर्पणादि प्रारंभ हो जायेगा। **पितृपक्ष विशेष**—अपने पितरों एवं पूर्वजों सहित चराचर ब्रह्माण्ड स्थित जीव जन्तुओं को भी अपना पूर्वज मानकर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित करने के लिये पितृपक्ष भारतीय परम्परा☛

२३पं०आश्विनकृष्ण८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३००७
अयनांश२४।१२।२३

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
४	२	५	४	२	४	११	१०	४
२७	३	२९	२९	२७	१	०	२३	२३
३५	२०	३२	३४	४१	१६	१३	३१	३१
१०	७	५०	३६	५२	१३	१२	५८	५८
५८	८५१	४०	१०८	९	७२	४	३	३
२८	३४	२९	३९	४५	४०	५३ व	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि / ल.अं.	१चं. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.
सिंह	६	३०	६	२६	६	२२	६	१९	६	१५	६	११	६	८	६	४	६	०	५	५७
कन्या	८	४३	८	३९	८	३५	८	३२	८	२८	८	२४	८	२१	८	१७	८	१३	८	१०
तुला	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२६
वृश्चिक	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	१	१२	५७	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४३
धनु	३	२२	३	१८	३	१४	३	११	३	७	३	३	३	०	२	५६	२	५२	२	४९
मकर	५	९	५	५	५	१	४	५८	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३	४	३९	४	३६
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	६	४०	६	३६	६	३२	६	२९	६	२५	६	२१	६	१८	६	१४	६	१०	६	७
मीन	८	८	८	४	८	०	७	५७	७	५३	७	४९	७	४६	७	४२	७	३८	७	३५
मेष	९	४५	९	४१	९	३७	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१५	९	१२
वृष	११	४१	११	३७	११	३३	११	३०	११	२६	११	२२	११	१९	११	१५	११	११	११	८
मिथुन	१	५५	१	५१	१	४७	१	४४	१	४०	१	३६	१	३३	१	२९	१	२५	१	२२
कर्क	४	१३	४	९	४	५	४	२	३	५८	३	५४	३	५१	३	४७	३	४३	३	४०

तिथि / ल.अं.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
कन्या	८	७	८	३	७	५९	७	५६
तुला	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	१२
वृश्चिक	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२९
धनु	२	४६	२	४२	२	३८	२	३५
मकर	४	३३	४	२९	४	२५	४	२२
कुम्भ	६	४	६	०	५	५६	५	५३
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१
मेष	९	९	९	५	९	१	८	५८
वृष	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४
मिथुन	१	१९	१	१५	१	११	१	८
कर्क	३	३७	३	३३	३	२९	३	२६
सिंह	५	५१	५	४७	५	४३	५	४०

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ सोम पू.भा.में भौमवेध। ति.२ मंगल उ.भा.में भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। ति.३ बुध प्रा.७।१९ भद्रा पूर्व रेवती पुसंवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायों का क्रय विक्रय **पश्चिमदिशा** की यात्रा दवंरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या **विपणि** वाहन क्रय मुहूर्त्त। ति.४ गुरु अश्विनी केतुवेध। सा.५।५४ से भरणी नवीन आसन का प्रयोग धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.५** शुक्र भरणी नवीन [illegible]सन का प्रयोग धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.६** शनि दि.११।४ भद्रा पूर्व शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.७** रवि रोहिणी पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्न्धारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण शिल्पविद्या **विपणि** शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **ति.८** सोम प्रा.६।२६ रिक्तापूर्व मृगशिर शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण दक्षिणदिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधी सेवन **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.१०** मंगल प्रा.७।५ व्यतिपात बाद दि.३।३२ भद्रा पूर्व आर्द्रा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.११** बुध पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्लधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रयविक्रय कर्क के चन्द्र में **पश्चिमदिशा** की यात्रा शिल्पविद्या औषधी सेवन वाहन क्रय मुहूर्त्त। **ति.१२** गुरु पुष्य जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन आसन का प्रयोग चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन क्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

२४पं०आश्विनकृष्ण३०रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०१३
अयनांश२४।१२।२४

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
५	४	६	५	२	४	१०	१०	४
३	२४	३	१०	२८	८	२९	२३	२३
२६	३१	३५	१७	३६	३२	४३	१२	१२
३५	२५	४४	२४	४२	१५	५२	५३	५३
५८	७७२	४०	१०६	७	७२	४	३	३
४१	४४	२८	२९	५७	४०	५३ व	११	११



③चन्द्रोदय में अर्घ्यदान। लक्ष्मीकुण्ड में स्नान समाप्त। स्त्रीयों हेतु विशिष्ट भोजन (ओंगठननैव)—मिथिला। अपराह्न अष्टमी श्राद्ध। अष्टकाश्राद्ध। पार्वणविधि। गयामध्याष्टमी। ⊙उ.फा.में सूर्य ३।२१(प्रा.७।१३)। सू.सू.पु.स्त्री.योग जम्बूकवाहन बाहीनाड़ी स्वामी रवि वायुवृष्टियोग। यायीजययोगद्विपुष्करयोग दि.८।४१ तक।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी-ति.२ मंगल रा.८।५१ से। **ति.४** गुरु सा.५।५४ तक।**श्लेषा/मघा-ति.१२** गुरु दि.८।५२ से। **ति.१४** शनि दि.९।६ तक। **पञ्चकविचार-ति.३** बुध रा.७।२८ तक।

☛ की उदारता का परिचायक है। किंचित् देवताओं की पूजा में शिथिलता हो सकती है परन्तु प्रत्येक सनातनी हिन्दू को श्रद्धापूर्वक अपने पितरों को श्राद्ध एवं तर्पण से तृप्त करना चाहिये। इससे उनके आशीर्वाद से देवों की कृपा प्राप्ति के साथ स्वास्थ्य-सुत-धनादि की प्राप्ति होती है। **१० सितम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात ७:४७ के बाद अर्घ्य दें। **१२ सितम्बर** को **श्रीचन्द्रषष्ठी व्रत** (चन्द्रोदय में)। आज भरणी श्राद्ध, अपराह्न काल में भरणी नक्षत्र प्राप्त होने से इसमें श्राद्ध करने पर गयातीर्थश्राद्ध के समान फल प्राप्त होता है। **१४ सितम्बर** को **जीवत्पुत्रिका (जीउतिया) व्रत** मनाया जायेगा। चन्द्रोदयव्यापिनि अष्टमी में **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** के साथ **सोरहिया मेला** का समापन होगा। **१५ सितंबर** को प्रा. ६।२६ बाद नवमी में **जीउतिया का पारण** होगा। आज सौभाग्यवती मृतक स्त्रियों के लिये किया जाने वाला **मातृनवमी** का श्राद्ध किया जायेगा। **१७ सितम्बर** को **इन्दिरा एकादशी व्रत सबका** किया जायेगा। इस व्रत को करने से अधोयोनी में गये पितरों को मुक्ति प्राप्त होती है। आज सूर्यकन्या संक्रान्ति में **विश्वकर्मा जयंती** मनायी जायेगी। सृष्टि के आदिदेवशिल्पी भगवान् विश्वकर्मा की जयंती का प्रसिद्ध पर्व धूमधाम से समारोह पूर्वक किया जायेगा। **१८ सितम्बर** को **संन्यासी यति वैष्णवों का द्वादशीश्राद्ध** होगा। **१९ सितम्बर** को सर्वकामनार्थ **प्रदोष व्रत** तथा **मासशिवरात्रि व्रत** होगा। आज अपराह्न में **मघा त्रयोदशी श्राद्ध** होगा। **२० सितम्बर** को **अज्ञात तिथि** में तथा शस्त्र से मृत जनों का एकोद्दिष्टविधि द्वारा **चतुर्दशी श्राद्ध** होगा। **२१ सितम्बर** को **स्नान दान-श्राद्ध-तर्पण की अमावस्या** तथा **पितृ विसर्जन** किया जायेगा। आज **अज्ञात तिथि वालों** का श्राद्ध तथा **महालया का समापन** होगा। अशुभवार से भय व कष्ट होगा।

आश्विनशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ३१ भाद्रपद से १५ आश्विन तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक २२ सितम्बर से ७ अक्टूबर तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरदऋतु।।

दि.मा	घ.प.	तिथि							नक्षत्र						योग						करण					
३०	५	१	चं	४८	१९	रा	१	१८	उ.फा.	१३	२४	दि	११	२०	शुक्ल	३७	२७	रा	८	५७	किं	१७	४	वव	४८	१९
३०	१	२	मं	५२	०	रा	२	४८	हस्त	१७	५६	दि	१	१०	ब्रह्म	३७	३२	रा	९	०	वा	२०	९	कौ	५२	०
२९	५८	३	बु	५६	३१	रा	४	३६	चित्रा	२३	२६	दि	३	२२	ऐन्द्र	३८	२०	रा	९	२०	तै	२४	१६	गर	५६	३१
२९	५४	४	गु	६०	०	समस्त			स्वाती	२९	३५	सा	५	५१	वैधृति	३९	३६	रा	९	५१	व	२९	२	भ	६०	०
२९	५०	४	शु	१	३४	प्रा	६	४०	विशाखा	३६	७	रा	८	२८	विष्कुम्भ	४१	७	रा	१०	२८	भ	१	३४	वव	३४	१०
२९	४६	५	श	६	४७	दि	८	४५	अनुराधा	४२	३१	रा	११	३	प्रीति	४२	२९	रा	११	२	वा	६	४७	कौ	३९	१४
२९	४३	६	र	११	४१	दि	१०	४३	ज्येष्ठा	४८	२४	रा	१	२४	आयुष्मा.	४३	२९	रा	११	२६	तै	११	४१	गर	४३	४८
२९	३९	७	चं	१५	५५	दि	१२	२६	मूल	५३	३२	रा	३	२८	सौभाग्य	४३	५१	रा	११	३६	व	१५	५५	भ	४७	३२
२९	३५	८	मं	१९	९	दि	१	४४	पू.षा.	५७	३१	रा	५	५	शोभन	४३	२०	रा	११	२५	वव	१९	९	वा	५०	१३
२९	३२	९	बु	२१	१७	दि	२	३६	उ.षा.	६०	०	समस्त			अतिगण्ड	४२	०	रा	१०	५४	कौ	२१	१७	तै	५१	४१
२९	२८	१०	गु	२२	५	दि	२	५६	उ.षा.	०	२१	प्रा	६	१४	सुकर्मा	३९	३५	रा	९	५६	गर	२२	५	व	५१	४९
२९	२४	११	शु	२१	३४	दि	२	४५	श्रवण	१	५५	प्रा	६	५३	धृति	३६	१२	रा	८	३५	भ	२१	३४	वव	५०	४३
२९	२१	१२	श	१९	५१	दि	२	४	धनिष्ठा	२	१६	प्रा	७	२	शूल	३१	४८	रा	६	५१	वा	१९	५१	कौ	४८	२५
२९	१७	१३	र	१७	०	दि	१२	५७	शतभिष	१ / ५८	२६ / ११	प्रा	६ / ५	४३ / ५९	गण्ड	२६	३५	सा	४	४७	तै	१७	०	गर	४५	५
२९	१३	१४	चं	१३	११	दि	११	२५	उ.भा.	५६	५६	रा	४	५५	वृद्धि	२०	३६	दि	२	२३	व	१३	११	भ	४०	५१
२९	१०	१५	मं	८	३१	दि	९	३४	रेवती	५३	३६	रा	३	३६	ध्रुव	१३	५७	दि	११	४४	वव	८	३१	वा	३५	५३

तिथि	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति उ/द	+/-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१	श्रीवत्स	२२	१५	२९	५	६	३१			५	५९	६	१	५	४	२५	१६	५८	४४	० उ	२०	-	९	-	-
२	सौम्य	२३	१६	३०	६	७	१	तुला	५०।४१	६	०	६	०	५	५	२४	१	५८	४६	० द	४	-	१०	६	३६
३	कालदंड	२४	१७	१	७	८	२			६	०	६	०	५	६	२२	४७	५८	४८	०	२७	-	१०	७	७
४	स्थिर	२५	१८	२	८	९	३			६	१	५	५९	५	७	२१	३६	५८	५१	०	५९	-	१०	७	४१
४	मातङ्ग	२६	१९	३	९	१०	४	वृश्चिक	१९।२१	६	२	५	५८	५	८	२०	२७	५८	५३	१	१४	-	१०	८	१८
५	अमृत	२७	२०	४	१०	११	५			६	३	५	५७	५	९	१९	२१	५८	५६	१	३७	-	११	९	०
६	काण	२८	२१	५	११	१२	६	धनु	४८।२४	६	३	५	५७	५	१०	१८	१७	५८	५८	२	१	-	११	९	४७
७	लुम्बक	२९	२२	६	१२	१३	७			६	४	५	५६	५	११	१७	१५	५९	०	२	२४	-	११	१०	३९
८	मित्र	३०	२३	७	१३	१४	८			६	५	५	५५	५	१२	१६	१५	५९	२	२	४७	-	१२	११	३७
९	वज्र	अ	२४	८	१४	१५	९	मकर	१३।१४	६	६	५	५४	५	१३	१५	१८	५९	५	३	११	-	१२	१२	३६
१०	सौम्य	२	२५	९	१५	१६	१०			६	६	५	५४	५	१४	१४	२३	५९	७	३	३४	-	१३	१	३७
११	धूम्र	३	२६	१०	१६	१७	११	कुम्भ	३२।५	६	७	५	५३	५	१५	१३	३१	५९	९	३	५७	-	१३	२	३८
१२	प्रवर्द्धमान	४	२७	११	१७	१८	१२			६	८	५	५२	५	१६	१२	४०	५९	१२	४	२०	-	१३	३	४०
१३	ध्वांक्ष	५	२८	१२	१८	१९	१३	मीन	४५।४	६	९	५	५१	५	१७	११	५३	५९	१४	४	४३	-	१३	४	४३
१४	गद	६	२९	१३	१९	२०	१४			६	९	५	५१	५	१८	११	७	५९	१६	५	६	-	१४	५	४७
१५	शुभ	७	३०	१४	२०	२१	१५	मेष	५३।३६	६	१०	५	५०	५	१९	१०	२४	५९	१९	५	२९	-	१४	-	-

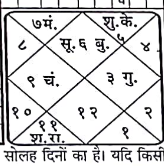
- शारदीयनवरात्रारंभ। आज पूर्वाह्न में कलशस्थापन [illegible] प्रतिपदा में केश पवित्र हेतु (चन्दन लेप व त्रिफला) तथा कंघी का अर्पण। शैलपुत्री देवी दर्शन। महाराजअग्रसेन जयंती। [illegible] ①
- तुलाराशि (रा २।१६)। राष्ट्रियआश्विनमास दि ३०। ◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु ३० [illegible]। द्वितीया में रेशमी पट्ट केश हेतु। ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन। ⊙सायनतुला २।१८ ◼
- मु.रविउस्सानी ४ हि.१४४७। तृतीया में दर्पण तथा सिर हेतु सिन्दूर चरण हेतु अलक्त प्रदान। चित्रघंटा देवी दर्शन। रवियोग दि ३।२२ से। ⑥ सार्वभौमचतुर्थ्याति [illegible]
- भ.सा.५।३८ से (पाताल)। वैना.श्रीगणेश ४ व्रत। चतुर्थी में मधुपर्क(दही,मधु,घी का मिश्रण)तिलक हेतु चांदी का टुकड़ा। नेत्र हेतु अंजन। [illegible]
- भ.प्रा.६।४० तक (पाताल)। वृश्चिकराशि (दि.१९।२१)। मध्याह्न उपाङ्गललिता ५व्रत(महाराष्ट्र)। पञ्चमी में अङ्गराग एवं शक्तिनुसार आभूषण। [illegible] कुष्माण्डादेवी दर्शन। रवियोग सा.५।५१ तक।
- बिल्व आमंत्रण। सायं षष्ठी में बेलवृक्ष को साक्षात् दुर्गादेवी मानकर शयन से जगाने हेतु मंत्रों से बोधन करें। नटपञ्चमी(उड़ीसा)। स्कन्दमातादर्शन। ⊙हस्त में सूर्य [illegible] ②
- धनुराशि (रा.१।२४)। कात्यायनी देवी दर्शन। दुर्गाषष्ठी ६। तपषष्ठी। वङ्गमतानुसार देवी आगमनगजफल-सुवृष्टि। रवियोग [illegible]
- भ.१५।५५ दि.१२।२६ से रा.१।४ तक (पाताल)। दुर्गासप्तमी। पत्रिकाप्रवेशन। सरस्वती का पुस्तकादि पूजन दशमी तक करें। श्रीभवानीअन्नपूर्णापरिक्रमारम्भ [illegible] महानिशापूजा। ③
- महाष्टमी ८व्रत। श्रीदुर्गाष्टमी। व्रत८। महागौरीदर्शन। अष्टमी में यथासामर्थ्यानुसार अनुष्ठान पूजन व उपासना करें। पू.षा.में सरस्वती पूजन। श्रीभवानीअन्नपूर्णा परिक्रमा [illegible] ④
- अक्टूबर १०। मकरराशि (दि.११।२४)। नवरात्रपारण। मुख्यकाल अपराह्न [illegible] (तारकोदय) नवमी संयुक्त दशमी तिथि में विजयादशमी(दशहरा)। अपराह्न [illegible] ⑤
- भ.रा.२।५० से। (पाताल) जगद्गुरुमाधवाचार्य जयन्ती। सोपपदा १०। [illegible] विजयादशमी। श्रवण में सरस्वती विसर्जन। गांधी शास्त्री जयंती। ⑥
- भ.दि.२।४५ तक। (पाताल)। कुम्भराशि (रा.६।५७)। पापाकुशा एकादशी ११व्रत सबका। काशी प्रसिद्ध नाटीइमली भरतमिलाप। रवियोग [illegible]
- शनिप्रदोष १३ व्रत। सन्तान प्राप्ति हेतु प्रशस्त। पद्मनाभद्वादशी १२व्रत। दुग्धदान। द्विदल(दाल) त्याग व्रतारम्भ। मु.फतिहायाजदहुम [illegible] ◼ दि ३।३७ [illegible]
- मीनराशि (रा.१२।११)। रवियोग प्रा.६।४३ से रा.शे.५।५९तक। ②मु.मु.म.मु. [illegible] स्वामीशांति [illegible] रवियोगसमस्त पापांकुशयोग दि.८।४५तक।
- भ.दि.११।२५से रा.१०।२९ तक (मृत्यु)। व्रत १५। रात्रिव्यापिनि शरतपूर्णिमा १५। निशीथ में कोजागरी १५। रात्रि में लक्ष्मी इन्द्र कुबेर आदि की पूजा। निशीथ में [illegible] लक्ष्मी द्वारा वर धन ⑦
- मेषराशि (रा.३।३६)। पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। महर्षिवाल्मीकि जयन्ती। ओली समाप्त(जैन)। कुमारपूर्णिमा (उड़ीसा)। महर्षि पराशरजयन्ती। मीराबाईजयन्ती। सर्वार्थ अमृतसिद्धियोग रा ३।३६से।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	चं	५	७	१०	४८	७५६	४१	६	४	१६	१२	४०	५१	५	१२	३	५४	१०६	२९	२	२८	४४	३९	४	९	४४	५५	७२	४०	१०	२९	३८	५८	१०	२३	९	४२
२	मं	५	१९	३७	३८	७४३	५९	६	४	५७	४	४१	३	५	१३	५०	२४	१०६	२७	२	२८	५२	३६	४	१०	५७	३५	७२	४०	१०	२९	३४	५	१०	२३	६	३२
३	बु	६	१	५५	१९	५७५	१८	६	५	३८	७	४१	३	५	१५	३६	५९	१०५	१६	२	२९	०	३४	४	१२	१०	१५	७२	४०	१०	२९	२९	११	१०	२३	३	२१
४	गु	६	१४	२	१४	७२५	३७	६	६	१९	११	४१	३	५	१७	२२	७	१०५	१७	२	२९	८	३१	४	१३	२२	५६	७३	०	१०	२९	२४	१८	१०	२३	०	१०
४	शु	६	२६	५	४४	७२१	२७	६	७	०	१४	४१	३	५	१८	५७	२४	१०५	१७	२	२९	१६	२८	४	१४	३५	३७	७३	४०	१०	२९	१९	२४	१०	२२	५६	५९
५	श	७	८	७	४५	७२२	५३	६	७	४१	१९	४१	३	५	२०	५२	४३	१०५	२९	२	२९	२४	२५	४	१६	४९	१७	७३	४०	१०	२९	१४	३१	१०	२२	५३	४८
६	र	७	२०	१२	१८	७२८	३३	६	८	२२	२२	४१	३	५	२२	३७	१३	१०३	१७	२	२९	३२	२३	४	१७	३	१७	७३	४०	१०	२९	९	३७	१०	२२	५०	३७
७	चं	८	१	४८	०	७३७	२२	६	९	३	२६	४१	३	५	२४	२०	३०	९९	२	२	२९	४०	२०	४	१९	१६	५७	७३	४०	१०	२९	४	४४	१०	२२	४७	२७
८	मं	८	१४	४०	५१	७५०	११	६	९	४४	३०	४१	३	५	२५	५९	३३	९९	१	२	२९	४८	१७	४	२०	३०	३७	७३	४०	१०	२८	५९	५०	१०	२२	४४	१६
९	बु	८	२७	१९	४४	७६३	५५	६	१०	२५	३४	४१	३	५	२७	३८	४३	९९	१	२	२९	५६	१३	४	२१	४४	१७	७३	४०	१०	२८	५४	५७	१०	२२	४१	५
१०	गु	९	१०	०	[illegible]	७६५	४६	६	११	६	३७	४१	३	५	२९	१७	५२	९९	१	३	०	४	१०	४	२२	५७	५७	७३	४०	१०	२८	५०	३	१०	२२	३७	५४
११	शु	९	२२	५५	६	७७१	३८	६	११	४८	४१	४२	५२	६	०	५७	१	९८	३०	३	०	१२	६	४	२३	११	३७	७३	४०	१०	२८	४५	१०	१०	२२	३४	४३
१२	श	१०	५	९	५७	७९५	२४	६	१२	२९	४५	४२	५२	६	२	३५	२१	९५	३२	३	०	२०	३	४	२४	२५	१७	७३	४०	१०	२८	४०	१७	१०	२२	३१	३३
१३	र	१०	२०	१९	४२	८२४	५८	६	१३	१३	४८	४२	५२	६	४	११	२	९५	३६	३	०	२७	५९	४	२५	३८	५७	७३	४०	१०	२८	३९	३९	१०	२२	२८	२२
१४	चं	११	३	२५	२१	८३७	२७	६	१३	५६	४०	४२	५२	६	५	४६	३८	९५	३६	३	०	३५	१	४	२६	५२	३८	७३	४०	१०	२८	३५	५४	१०	२२	२५	११
१५	मं	११	१७	२३	१८	८४७	३	६	१४	३९	३२	४२	५२	६	७	२२	१५	९५	३६	३	०	४०	४८	४	२८	६	१८	७३	४०	१०	२८	३२	९	१०	२२	२२	०

२५पं० आश्विनशुक्ल ८ मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०२२ अयनांश २४।१२।२५

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
५	८	६	५	२	४	१०	१०	४
१२	१४	९	२५	२९	१९	२८	२२	२२
१६	४०	४४	५९	४८	३०	५९	४४	४४
१५	५१	३०	३३	१७	३७	५०	१६	१६
५९	७५०	४१	९९	७	७३	४	३	३
२	११	३	९	५६	४०	५३ व	११	११

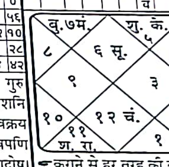


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि / ल.अं.	१चं. घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७चं. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४चं. घं.	मि.	१५मं. घं.	मि.
कन्या	७	५२	७	४८	७	४४	७	४१	७	३७	७	३४	७	३०	७	२६	७	२३	७	१९	७	१६	७	१२	७	८	७	५	७	१	६	५८
तुला	१०	८	१०	४	१०	०	९	५७	९	५३	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	९	२४	९	२१	९	१७	९	१४
वृश्चिक	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१४	१२	१०	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	११	४९	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३१
धनु	२	३१	२	२७	२	२३	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	२	१	५८	१	५५	१	५१	१	४७	१	४४	१	४०	१	३७
मकर	४	१८	४	१४	४	१०	४	७	४	३	४	०	३	५६	३	५२	३	४९	३	४५	३	४२	३	३८	३	३४	३	३१	३	२७	३	२४
कुम्भ	५	४९	५	४५	५	४१	५	३८	५	३४	५	३१	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१३	५	९	५	५	५	२	४	५८	४	५५
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५९	६	५५	६	५१	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	३०	६	२६	६	२३
मेष	८	५४	८	५०	८	४६	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२५	८	२१	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	८	०
वृष	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३९	१०	३५	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	३	९	५९	९	५६
मिथुन	१	४	१	०	१२	५६	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	१०
कर्क	३	२२	३	१८	३	१४	३	११	३	७	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४६	२	४२	२	३८	२	३५	२	३१	२	२८
सिंह	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	१०	५	७	५	३	५	०	४	५६	४	५२	४	४९	४	४५	४	४२

२६पं० आश्विनशुक्ल १५ मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०२९
अयनांश २४।१२।२६

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	६	६	३	४	१०	१०	४
११	१७	१४	७	०	२८	२८	२२	२२
१०	२३	३९	२२	४०	६	३२	२२	२२
२४	१८	३२	१५	४८	१८	९	०	०
५९	८४७	४२	९५	५	७३	३	३	३
११	३	५२	३६	४६	४०	४८ व	११	११



①अनुसार देवी आगमनगजफल-सुवृष्टि। नाती द्वारा नाना का आज श्राद्ध। यायीजययोग दि. ११।२० तक। ③निशीथकाल ४३।०२३ (रा.११।३६ से) ४५।०२५या(रा.१२।२३ तक)। मूल में सरस्वती आवाहन। कालरात्रि दर्शन। [illegible]। ओली प्रारंभ (जैन)। ④अष्टमी में सायं त्रिमुहूर्त(६ घटी)पूर्व व्याप्त नवमी में महानवमी ९ व्रत। दुर्गानवमी। अष्टमी में लोहभिसारिक (सैन्य संस्कार)। अष्टमी नवमी तिथिसंधि में होमादि। आज समस्त नवमी रहते होम। नवमी में चण्डीपूजा तथा बलिकार्य(महाबलिदान)तथा आज समस्त नवमी होम करें। रवियोग रा ५।५ से। स्थायीजययोग दि.१।४४ तक। ⑤ सायं शमीपूजन। नगर ग्राम सीमा लंघन का विधान। संध्या में नीलकण्ठ दर्शन। तारकोदय(प्रदोष)विजययात्रा दशहरा। दुर्गाविसर्जन। पूजन हेतु चिह्न तथा प्रस्थान पूर्व देवीगमन गजवाहनफल—सुवृष्टि। विसर्जन उपरान्त शाबरोत्सव(वनवासी नृत्य)। मन्वादि ९। सिद्धिदात्री देवी दर्शन। उ.षा.में सरस्वती बलिदान। सायं बौद्धावतार १०। रवियोगसमस्त। ⑦प्रदान करती है तथा आज रात्रि को क्रीड़ा का विधान है। यायीजययोग दि.११।२५से।

⬤ ति.११ शुक्र दि.२।४५ भद्रा बाद श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग पूर्वदक्षिणदिशा की यात्रा दंवरी शिल्पविद्या औषधसेवन वाहनक्रय मुहूर्त। ति.१२ शनि धनिष्ठा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहन क्रय मुहूर्त। ति.१३ रवि शतभिष भौमवेध। ति.१४ सोम उ.भा.में रिक्तभद्रा है। ति.१५ मंगल रेवती सूतीस्नान लालवस्त्रमूंगारत्नधारण मुहूर्त।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.५ शनि रा.११।३से। ति.७ सोम रा.३।२८ तक। रेवती/ अश्विनी-ति.१४ सोम रा.शे.४।५५से। पञ्चकविचार-ति.११ शुक्र रा.६।५७से। ति.१५मंगलरा.३।३६ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-चित्रा। ति.४ गुरु स्वाती में ३०।२५ (सा.६।११)।। बुध-हस्त। ति.६ रवि चित्रा २४।५२ (दि.४।०)। ति.१० गुरु तुला २५।३०(सा.४।१८)। ति.१४ सोम स्वाती ३३।३० (रा.७।३३)।। गुरु-ति.९ बुध कर्क पुनर्वसु में ४ चरण २८।३२ (सा.५।३०)।। शुक्र-मघा।। ति.३ बुध पू.फा.में ५७।३५ (रा.शे.५।२)। ति.१३ रवि उ.फा.में ४९।४३(रा.२।२)।। वक्रीशनि-पू.भा.३ चरण।। राहु-पू.भा.१ चरण। केतु-पू.फा.में ३ चरण ।।

आश्विनशुक्लपक्ष विचार—चतुर्थी तिथि वृद्धि से पक्ष सोलह दिनों का है। यदि किसी शुक्लपक्ष में वृद्धि हो तो सुभिक्ष तथा शांति होती है। आश्विन शुक्ल पक्ष आद्याप्रकृति पराम्बा जगदम्बा जगज्जननी भगवती दुर्गा की आराधना के लिये अत्यन्त प्रशस्त काल माना जाता है। साथ ही मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के शौर्य गाथा से परिपूर्ण होने से भी सनातन धर्मावलम्बी जनों के लिये अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण पक्ष (दिन) है। इसे हम **शारदीय नवरात्र** के रूप में घर-घर कलश स्थापना के साथ दुर्गा सप्तशती का पाठ करते-कराते हुए मनाते हैं। नवरात्र में कलश स्थापन कराकर दुर्गासप्तशती का पाठ स्वयं या पुरोहित (ब्राह्मण) द्वारा☛

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ सोम उ.फा.में सूर्ययुति। ति.२ मंगल हस्त सूर्यभोग्य। ति.३ बुध चित्रा भौमयुति। ति.४ गुरु स्वाती भौमभोग्य। ति.४ शुक्र प्रा.६।४० रिक्ताभद्रा बाद विशाखा चौपायों का क्रय विक्रय धानरोपण मुहूर्त्त। ति.५ शनि अनुराधा कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.६ रवि ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण चौपायों का क्रयविक्रय धानरोपण विपणि शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। ति.७ सोम मूल शिशुताम्बूलभक्षण दंवरी धानरोपण विपणि मुहूर्त्त। ति.८ मंगल दि.१।४४ रिक्तापूर्व पू.षा.में रोगविमुक्तस्नान (९मी) शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.९ बुध उ.षा.में रिक्तादोष। दि.२।३६ से दशमी में सूतीस्नान धानछेदन मुहूर्त्त। **अपराह्णकाल** १७।४३उ. (दि.१।११ से) २२।३८या. (दि.३।३३ तक)। **विजयमुहूर्त्त**१९।४१उ. (दि.१।५८ से) २१।३९ या. (दि.२।४६तक)। ति.१०गुरु उ.षा.में पुंसवन, सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान शिल्पविद्या धानछेदन मुहूर्त्त। प्रा.६।१४ से रा.२।५० भद्रा पूर्व श्रवण पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन **पूर्वदिशा** की यात्रा, दंवरी शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **अभिजिन्नमुहूर्त्त** १३।४५उ. (दि.११।३३से)१५।४३ (दि.१२।२३तक)। अपराह्णकाल १७।४१उ. (दि.१।१० से) २३।३५ (दि.३।३२ तक)। **विजयमुहूर्त्त** १९।३९उ. (दि.१।५८ से)२१।३७ (दि.२।४५ तक)। ⬤

☛कराने से हर तरह की बाधाओं से मुक्ति, के साथ ही धन-धान्य, यश, ऐश्वर्य एवं परिवार में सुख-शांति की प्राप्ति होती है। २२ **सितंबर को शारदीय नवरात्र** का प्रारंभ होगा। **कलश स्थापन** प्रातःकाल से मध्याह्न तक करें। कुछ स्थानों पर सूर्योदय प्रतिपदा के वार से दुर्गा वाहन विचार करते हैं। इस वर्ष **मां का आगमन हाथी** पर है हाथी पर आना अच्छी वर्षा व समृद्धि का सूचक है। प्रतिपदा में देवी को केश पवित्र हेतु (चंदन लेप व त्रिफला) तथा कंघी अर्पण करें। आज नाती द्वारा नाना का श्राद्ध होगा। आज महाराज **अग्रसेन की जयंती** है। २३ **सितम्बर** को उत्तरशृंग **चन्द्रदर्शन** से सुभिक्ष होगा। द्वितीया में केश संस्कार हेतु रेशमी पट्टप्रदान करें। **२४ सितंबर** को तृतीया में दर्पण तथा सिर व चरण हेतु सिंदूर व अलक्त अर्पण करें। **२५ सितंबर को वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। चतुर्थी में देवी को मधुपर्क (दही, घी, मधु का मिश्रण) तिलक हेतु चांदी। (शेष पृष्ठ ८ प

कार्तिककृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १६ आश्विन से २९ तिथि तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक ८ अक्टूबर से २१ दिनांक तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरदऋतु।।

दि.मा. घ.प.		तिथि						नक्षत्र					योग					करण						योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	
२९	१	१ बु	३/५२	४५/५१	प्रा	७/५	२६/५५	अश्विनी	४९	४६	रा	२	५	व्याघात	१/५२	४५/२८	प्रा	८/५	५३/५३	कौ	३	१५	तै	३०/५७	३३/३१	मृत्यु	८	१	१५	२१	२२	१६		
२९	२	३ गु	५१	३३	रा	२	४९	भरणी	४५	३९	रा	१२	२७	वज्र	५१	२८	रा	२	४७	व	२४	३२	भ	५१	३३	पद्म	९	२	१६	२२	२३	१७	वृष	५९।३५
२८	५९	४ शु	४५	३०	रा	१२	२४	कृतिका	४१	२५	रा	१०	४६	सिद्धि	४३	३५	रा	११	३८	बव	१८	३	बा	४५	३०	छत्र	१०	३	१७	२३	२४	१८		
२८	५५	५ श	३९	३५	रा	१०	३	रोहिणी	३७	२०	रा	९	९	व्यतिपात	३५	५१	रा	८	३३	कौ	१२	३२	तै	३९	३५	श्रीवत्स	११	४	१८	२४	२५	१९		
२८	५२	६ र	३३	५९	रा	७	४९	मृगशिर	३३	३५	रा	७	४०	वरियान	२८	२३	सा	५	३५	गर	६	४७	व	३३	५९	सौम्य	१२	५	१९	२५	२६	२०	मिथुन	५।२७
२८	४८	७ सो	२८	५६	सा	५	४८	आर्द्रा	३०	२१	सा	६	२२	परिघ	२१	१९	दि	२	४५	भ	१	२७	बव	२६/५५	५५/४७	कालदंड	१३	६	२०	२६	२७	२१		
२८	४४	८ मं	२४	३८	सा	४	६	पुनर्वसु	२७	५४	सा	५	२४	शिव	१४	४९	दि	१२	१०	कौ	२४	३८	तै	५२	५४	स्थिर	१४	७	२१	२७	२८	२२	कर्क	१३।३१
२८	४१	९ बु	२१	११	दि	२	४४	पुष्य	२६	१५	सा	४	४६	सिद्ध	९	१	दि	९	५२	गर	२१	११	व	४९	५८	मातङ्ग	१५	८	२२	२८	२९	२३		
२८	३७	१० गु	१८	४२	दि	१	४२	श्लेषा	२५	३९	सा	४	३१	साध्य	४/५१	१/५२	प्रा	७/६	५२/१६	भ	१८	४६	बव	४८	१०	अमृत	१६	९	२३	२९	३०	२४	सिंह	२५।३९
२८	३३	११ शु	१७	३४	दि	१	१८	मघा	२६	१४	सा	४	४६	शुक्ल	५६	४७	रा	४	५९	बा	१७	३४	कौ	४७	३५	काण	१७	१०	२४	३०	३१	२५		
२८	३०	१२ श	१७	३६	दि	१	२०	पू.फा.	२८	५	सा	५	३२	ब्रह्म	५४	३९	रा	४	९	तै	१७	३६	गर	४८	१७	लुम्बक	१८	११	२५	१	१	२६	कन्या	४३।५१
२८	२६	१३ र	१८	५९	दि	१	५५	उ.फा.	३१	१२	रा	६	४७	ऐन्द्र	५३	३४	रा	३	४४	व	१८	५९	भ	५०	१५	मित्र	१९	१२	२६	२	२	२७		
२८	२३	१४ चं	२१	३२	दि	२	५५	हस्त	३५	२५	रा	८	२९	वैधृति	५३	२०	रा	३	३९	श	२१	३२	च	५३	२३	वज्र	२०	१३	२७	३	३	२८		
२८	१९	३० मं	२५	११	सा	४	२६	चित्रा	४०	४३	रा	१०	३७	विष्कुम्भ	५३	५३	रा	३	५३	ना	२५	११	किं	५७	३३	ध्वांक्ष	२१	१४	२८	४	४	२९	तुला	८।४

सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति		रे.अं. मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.	
६	११	५	४९	५	२०	९	४३	५९	२१	५	५२	- १४	६	२१
६	१२	५	४८	५	२१	९	५	५९	२३	६	१५	- १५	७	६
६	१२	५	४८	५	२२	८	२८	५९	२५	६	३८	- १५	७	५८
६	१३	५	४७	५	२३	७	५४	५९	२८	७	०	- १५	८	५६
६	१४	५	४६	५	२४	७	२२	५९	३०	७	२३	- १५	१०	०
६	१४	५	४६	५	२५	६	५३	५९	३३	७	४६	- १६	११	५
६	१५	५	४५	५	२६	६	२६	५९	३५	८	८	- १६	१२	९
६	१६	५	४४	५	२७	६	१	५९	३८	८	३०	- १६	१	१०
६	१६	५	४४	५	२८	५	४०	५९	४०	८	५२	- १६	२	८
६	१७	५	४३	५	२९	५	२०	५९	४१	९	१४	- १६	३	३
६	१८	५	४२	६	०	५	२	५९	४४	९	३६	- १७	३	५५
६	१९	५	४१	६	१	४	४६	५९	४६	९	५८	- १७	४	४७
६	१९	५	४१	६	२	४	३२	५९	४८	१०	२०	- १७	५	३९
६	२०	५	४०	६	३	४	२१	५९	५०	१०	२४	- १७	-	-

कार्तिकव्रतस्नान नियम प्रारंभ। कार्तिक में द्विदल(दाल)का त्याग। समस्त कार्तिकमास में दीपदान का प्रारंभ करें। कार्तिक में लक्ष तुलसी दल द्वारा पूजन से श्री हरि प्रसन्न होते है। अशून्यशयन २व्रत। ①
भ.सा.४।१से रा.२।४९ तक (स्वर्ग)। वृषराशि(रा.शे.६।२)। उर्स हजरत निजामुद्दिन औलिया(दिल्ली)। यायीजययोग रा.१२।२७ तक।
करक(करवाचौथ)संकष्टीश्रीगणेश चौथ व्रत (चं.उ.रा.७।५८)। चन्द्र अर्घ्यदान। दशरथचतुर्थी बङ्गाल। स्थायीजयोग रा.१०।४६तक पश्चातयमघटयोग।
⊙चित्रा में सूर्य १२।१२(दि.११।८)। चं.सू.स्त्री.स्त्री.योग मंडुकवाहन नीरानाड़ी स्वामीशुक्र वायुमेघाच्छादितवृष्टियोग। रवियोग रा.९।९ से पूर्व में यायीजययोगसर्वार्थअमृतसिद्धियोग।
भ.रा.७।५०से (स्वर्ग)। मिथुनराशि (दि.८।२५)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। रवियोग रा.७।४० तक। ④ पर चतुर्वर्ति नवदीप का दान। गोत्रिरात्रयमपञ्चकयोगारंभ। यायीजययोग सा.५।३२से।
भ.प्रा.६।४९तक (स्वर्ग)। प्रदोष कालाष्टमी। प्रदोष अहोई ८ व्रत(पश्चिम प्रसिद्ध)। चन्द्रोदय ग्राह्य(चं.उ.रा.११।५)।
कर्कराशि (दि.११।३९)। श्रीराधाष्टमी। अरुणोदय अष्टमी में मथुरा के श्रीराधाकुण्ड में स्नान। राधाजयंती। कराष्टमी (महाराष्ट्र)। ⑥पितरों का मार्गदर्शन करें। गोत्रिरात्रनिवृत्ति। शस्त्राहत चतुर्दशी।
भ.रा.२।१५से (मृत्यु)। ① शय्या स्थित श्रीलक्ष्मी सहित विष्णु पूजन से अक्षय धन वा दाम्पत्य में सुखप्राप्ति। प्रार्थना—*पत्नीभर्तृवियोगञ्च भर्ताभार्या समुद्भवमनाप्नुवन्ति। यथा दु:खं दाम्पत्यानि तथा कुरु।*
भ.दि.१।४६ तक (मृत्यु)। सिंहराशि (सा ४।३१)। यायीजययोग दि.१।४६से। ⑤लोटा तीन बार घुमाकर साभ्यङ्ग(तैललेपन) स्नान। मेषलग्न साय ५।३९से हनुमत जन्म। यायीजययोग दि.१।५५तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.६।४७तक।
रम्भाएकादशीव्रत सबका। गोधूलि गोवत्सद्वादशी। बछड़े सहित दुधारु गाय का पूजन। *आज भोजन विशेष-* तेल तथा बटलोही का पकाया गौ दूध,घी,दहि व छाछ को वर्जित करें।⊙सं.तुला में सूर्य ५८।५७ (रा.४।२५)। ③
सौर व नेपालीकार्तिकमास। कन्याराशि (रा.११।५०)। शनिप्रदोष १३व्रत। सतान हेतु प्रशस्त। प्रदोष धनत्रयोदशी (धनतेरस)। यम को दीपदान। सायकाल में मृत्यु नाश हेतु यमराज को गृहद्वार ④
भ.दि.१।५५से रा.२।२५तक (पाताल)। मासशिवरात्रि व्रत। धनवंतरी जयन्ती। कामेश्वरीजयंती। नरकचतुर्दशी (चं.उ.रा.४।४७)। चन्द्रोदय में १४ योग से जुते खेत की मिट्टी से युक्त आपामार्ग की शाखा को ⑤
प्रदोष दीपावली३०। लक्ष्मीन्द्रकुबेरादि पूजा सायं देवाताओं को दीपदान। साभ्यङ्गस्नान। प्रातयम को तर्पण। प्रात: हनुमद्दर्शन। निशीथ महाकालीपूजा। शेष रात्रि में दरिद्रनिस्सारण। हाथ में उल्का(मशाल) लेकर ⑥
तुलाराशि(दि.९।३४)। भौमवती अमावस्या। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्षभय। *आज गङ्गास्नान से सहस्रगोदान सदृश फलाप्ति।* महावीरनिर्वाण दिवस(जैन)। प्रदोष केथरगौरीव्रत(द.भा.)।

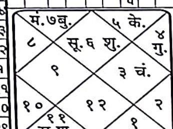
।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१ बु	०	०	३१	९	७४४	३५	६	१५	२२	२४	४२	५२	६	८	५७	५२	९३	२१	३	०	४६	३५	४	२९	१९	५८	७३	४०	१०	२८	२८	२४	१०	२२	१८	४९
३ गु	०	१५	३२	३०	७८८	५५	६	१६	५	१६	४२	५२	६	१०	३१	१४	८८	२३	३	०	५२	२१	५	०	३३	३८	७३	४०	१०	२८	२५	३९	१०	२२	१५	३९
४ शु	१	०	५	५९	८१०	४३	६	१६	४८	८	४२	५२	६	११	५९	३७	८८	२८	३	०	५८	८	५	१	४७	१८	७३	४०	१०	२८	२०	५४	१०	२२	१२	२८
५ श	१	१४	२५	५२	७८८	२५	६	१७	३१	१	४२	५२	६	१३	२८	६	८८	२८	३	१	३	५५	५	३	०	५८	७३	५०	१०	२८	१७	९	१०	२२	९	१७
६ र	१	२८	४२	२२	७५३	२०	६	१८	१३	५३	४२	५२	६	१४	५६	३५	८८	२८	३	१	९	४२	५	४	१४	४८	७३	५६	१०	२८	१३	२६	१०	२२	६	६
७ चं	२	१२	५२	१७	७२५	३३	६	१८	५६	४५	४२	५२	६	१६	२५	४	८५	५०	३	१	१५	२८	५	५	२८	४४	७३	५६	१०	२८	९	४२	१०	२२	२	५५
८ मं	२	२६	५२	१०	७३४	३	६	१९	३९	३७	४२	५२	६	१७	५०	५४	८०	१३	३	१	२१	१५	५	६	४२	४०	७३	५६	१०	२८	५	५८	१०	२१	५९	४५
९ बु	३	१०	४०	६	७२२	३७	६	२०	२२	२९	४२	५२	६	१९	११	८	८०	१७	३	१	२७	२	५	७	५६	३६	७३	५६	१०	२८	२	१४	१०	२१	५६	३४
१० गु	३	२४	१४	३३	७०८	४	६	२१	५	२१	४२	५२	६	२०	३१	२६	८०	१७	३	१	३२	४८	५	९	१०	३२	७३	५६	१०	२७	५८	३०	१०	२१	५३	२३
११ शु	४	७	३३	३५	७१२	४३	६	२१	४८	१४	४२	५२	६	२१	५१	४३	८०	१७	३	१	३८	३४	५	१०	२४	२८	७३	५६	१०	२७	५४	४६	१०	२१	५०	१२
१२ श	४	२०	३६	३५	७०६	४	६	२२	३१	६	४२	५२	६	२३	१२	१	७६	४३	३	१	४४	१९	५	११	३८	२४	७३	५६	१०	२७	५२	१०	१०	२१	४७	१
१३ र	५	२	२४	३३	७१०	२९	६	२३	१३	५८	४२	५२	६	२४	२८	४५	७०	५३	३	१	५०	५	५	१२	५२	२०	७३	५६	१०	२७	४९	३५	१०	२१	४३	५१
१४ चं	५	१५	५८	४३	७२७	२८	६	२३	५६	५०	४२	५२	६	२५	३९	३८	७०	२७	३	१	५५	५०	५	१४	६	१६	७३	५६	१०	२७	४६	५९	१०	२१	४०	४०
३० मं	५	२८	२१	१०	७३५	४	६	२४	३९	४३	४२	५२	६	२६	५०	५	६९	२६	३	२	१	३६	५	१५	२०	१३	७३	५६	१०	२७	४४	२४	१०	२१	३७	२९

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-स्वाती में। ति.८ मंगल विशाखा २८।३१ (सा.५।३९)।। बुध-स्वाती। ति.९ बुध विशाखा में ३६।३२ (रा.८।५३)।। गुरु-पुनर्वसु ४ चरण।। शुक्र-उ.फा.में। ति.१ बुध कन्या ३२।३७ (रा.७।१४)। ति.१० गुरु हस्त ४०।१९ (रा.१०।२०)।। वक्रीशनि-पू.भा.३ चरण।। राहु-पू.भा.१ चरण। केतु-पू.फा.में ३ चरण।।

२७पं० कार्तिककृष्ण ८मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०३६
अयनांश२४।१२।२७

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	६	६	३	५	१०	१०	४
२६	२६	१९	१७	१	६	२८	२१	२१
६	५२	३९	५०	२१	४२	५	५९	५९
२६	१०	३७	५४	१५	४०	५८	४५	४५
५९	८३४	४२	८०	५	७३	३	३	३
३५	३	५२	१३	४६	५६	४३ व	११	११



कार्तिककृष्णपक्ष विचार—द्वितीया तिथि की हानि से पक्ष १४ दिनों का है। प्रतिपदा बुधवारी से वर्षा मध्यम तथा कहीं अनावृष्टि संभव है। भौम युक्त अमावस्या से सर्वत्र भय तथा उसी अमावस्या को या समीप सूर्य संक्रान्ति हो तो सुख हो किन्तु धान्य महँगे होंगे। कार्तिक मास में दाल का सेवन न करें तथा समस्त कार्तिक मास में दीपदान करें। कार्तिक मास में लक्ष तुलसीदल (पत्र) द्वारा विष्णुपूजन से प्रत्येक पत्र पर मोती अर्पण सदृश फल की प्राप्ति होती है। ८ अक्टूबर को अशून्यशयन व्रत होगा। १० अक्टूबर को संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत पूजन करके चन्द्रोदय रात्रि ७:५८ पर अर्घ्य दिया जायेगा। काशी की अत्यन्त☛

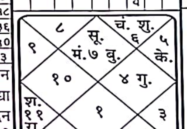
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७चं. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४चं. घं.	मि.	३०मं. घं.	मि.
कन्या	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२१	तुला	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२
तुला	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३७	वृश्चिक	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९
वृश्चिक	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४	धनु	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५
धनु	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१५	१	११	१	७	१	३	१	०	मकर	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
मकर	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४७	कुम्भ	४	१५	४	११	४	७	४	३
कुम्भ	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१८	मीन	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४६	मेष	७	२०	७	१६	७	१२	७	८
मेष	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२३	वृष	९	१६	९	१२	९	८	९	४
वृष	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१९	मिथुन	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८
मिथुन	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३३	कर्क	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६
कर्क	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५१	सिंह	४	२	३	५८	३	५४	३	५०
सिंह	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	५	कन्या	६	१५	६	११	६	७	६	३

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ बुध अश्विनी जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन विपणि वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.३** गुरु सा.४।१ भद्रा पूर्व भरणी नवीन आसनप्रयोग **विपणि** व्यापार धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.४** शुक्र कृत्तिका रिक्तादोष। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। **ति.५** शनि रा.८।३३ व्यतिपात बाद रोहिणी सौभाग्यवती बिना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.६** रवि रा.७।४९ भद्रा पूर्व मृगशिर शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण **विपणि वाहन** क्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.७** सोम प्रा.६।४९ भद्रा वाद आर्द्रा धान छेदन मुहूर्त्त। **ति.८** मंगल पुनर्वसु लालवस्त्रमूंगारत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.९ बुध पुष्य रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। दि.२।४४ रिक्तावाद **जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.१२ सा.४।२५ से)** मुहूर्त्त। सा.४।४६ से श्लेषा धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.१०** गुरु दि.१।४६ भद्रा वाद श्लेषा धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.११** शुक्र सा.४।४६ तक मघा दवंरी धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१२ शनि पू.फा.में केतुयुति। **पश्चात मासान्त दोष है।**

२८पं० कार्तिककृष्ण३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०४३
अयनांश२४।१२।२८

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
६	५	६	६	३	५	१०	१०	४
३	२८	२४	२६	२	१५	२७	२१	२१
४	२१	३९	५०	१	२०	४४	३७	३७
२१	१०	४३	५	३६	१२	२४	२९	२९
५९	७३५	४२	६९	५	७३	२	३	३
५०	४	५२	२६	४५	५६	३६ व	११	११



③मु ३०सामान्य। पूर्व तथा बाद को १० घटिपुण्य। दूसरे दिन सूर्योदय उपरान्त सङ्क्रान्तिपुण्यकाल। दीपतिलगोरसादिदान। गोदावरी में स्नान। दक्षिणगोल। कावेरीसङ्क्रमण (कुर्ग)। स्थायीजयोग सा.४।४६ से।

कार्तिक में आंवला के मूल में विष्णुपूजनविधि-देशकाल सङ्कल्प पश्चात अपने समस्त पापों के नाश हेतु दामोदर प्रभु की प्रसन्नता हेतु आवले वृक्ष के मूल में उनका पूजन करें। पूजन पश्चात पुरुषसूक्त से षोडशोपचार पूजन कर गन्ध,पुष्प,फल युक्त अर्घ्य प्रदान करें। धात्रीपूजनविधि -ॐ धात्र्यै नम -इति सर्वोपचारैः सम्पूज्य नाम मंत्रेण पूजयेत्। ॐ धात्र्यै नम। स्वधायै०। कमलायै०। शिवायै०। विष्णुपत्न्यै०। महालक्ष्म्यै०। रमायै०। इन्दिरायै। लोकमात्रे०। ब्रह्माण्यै०। शान्त्यै०। मेधायै०। गायत्र्यै०। सुभूत्यै०। विश्वरूपायै०। अभिमेधायै०। तत: सव्येन तर्पणम्- पिता पितामहश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिण:। ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पय:। आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृमानवा:। ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पय:।। सूत्रवब्धन-दामोदर निवासायै धात्र्यै देव्यै नमोस्तुते। सूत्रेणानेनबध्नामि धातृ देवि नमोऽस्तुते। परिक्रम्य प्रणमेदिति।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति.१ बुध रा.२।५ तक। श्लेषा/मघा-ति.९बुध सा.४।४६ से ति.११ शुक्र सा.४।४६ तक।

☛प्रसिद्ध चेतगंज की **नक्कटैया लीला** विविध लाग-विमान के साथ आज मनाई जायेगी। **१३ अक्टूबर को अहोई अष्टमी व्रत** चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में मनाई जायेगी। **१४ अक्टूबर को राधाष्टमी व्रत एवं राधा जयन्ती** है। अरुणोदयकाल में मथुरा के **राधा कुण्ड में स्नान** करने से पुण्य लाभ होता है। **१७ अक्टूबर को रम्भा एकादशी व्रत** सबके लिये है। पापमुक्ति तथा सुखी जीवन हेतु किया जायेगा। प्रदोषकाल में द्वादशी तिथि मिलने से **गोवत्स द्वादशी** होगी। आज दुधारू गाय का बछड़े सहित पूजन करें, आज गाय के दुध व दूध से बने पदार्थ का सेवन वर्जित है। **१८ अक्टूबर** को सन्तान लाभ हेतु **शनिप्रदोष व्रत** किया जायेगा। आज प्रदोषकाल में **धनतेरस** मनाई जायेगी। आज मृत्यु नाश हेतु सायंकाल यम के लिये गृहद्वार पर चार वत्तियों वाला दीप जलायें। **१९ अक्टूबर को मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। आज **धन्वन्तरि** तथा **कामेश्वरी जयन्ती** मनाई जायेगी। आज **हनुमत् जयन्ती** सायं मेषलग्न (सा.५।३९) में मनाई जायेगी। आज ही **नरकचतुर्दशी** (चन्द्रोदयग्राह्य) है। चन्द्रोदय चतुर्दशी में १४ योग से जुते खेत की मिट्टी से युक्त अपामार्ग की शाखा को लोटे में तीन वार घुमाकर साभ्यङ्ग स्नान करें। **२० अक्टूबर** को **प्रदोष अमावस्या** में **दीपावली** का उत्सव मनाया जायेगा। **दीपावली पूजा** में प्रदोषकाल तथा वृषलग्न की प्रधानता है। दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त पेज ८ पर देखें। आज मध्यरात्रि में **कालीपूजा** भी सम्पन्न होगी, रात्रि शेष में (शेष पृष्ठ ८ पर)

कार्तिकशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ३० आश्विन से १४ कार्तिक तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक २२ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक सन् २०२५ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल शरदृतु।।

दि.मा घ.	प.	तिथि						नक्षत्र						योग						करण						योग
२८	१६	१	बु	२९	५२	रा	६	१७	स्वाती	४६	४३	रा	१	२	प्रीति	५४	५७	रा	४	१९	वव	२९	५२	वा	६० ०	धूम्र
२८	१२	२	गु	३५	१	रा	८	२२	विशाखा	५३	१२	रा	३	३८	आयुष्मा.	५६	२१	रा	४	५४	वा	२	२६	कौ	३५ १	प्रवर्द्धमान
२८	९	३	शु	४०	२०	रा	१०	३०	अनुराधा	५९	४०	रा	६	१४	सौभाग्य	५७	४५	रा	५	२८	तै	७	४०	गर	४० २०	राक्षस
२८	५	४	श	४५	१९	रा	१२	३१	ज्येष्ठा	६०	०	समस्त			शोभन	५८	४७	रा	५	५३	व	१२	४९	भ	४५ १९	मुसल
२८	२	५	र	४९	३८	रा	२	१५	ज्येष्ठा	५	४३	प्रा	८	४१	अतिगण्ड	५९	१८	रा	६	७	वव	१७	२८	वा	४९ ३८	काण
२७	५८	६	चं	५२	५७	रा	३	३४	मूल	११	३	दि	१०	४९	सुकर्मा	५९	१	रा	६	०	कौ	२१	१७	तै	५२ ५७	पद्म
२७	५५	७	मं	५५	१०	रा	४	२९	पू.षा.	१५	१९	दि	१२	३२	धृति	५७	५२	रा	५	३३	गर	२४	३	व	५५ १०	मित्र
२७	५२	८	बु	५६	४	रा	४	५१	उ.षा.	१८	२८	दि	१	४९	शूल	५५	४२	रा	४	४२	भ	२५	३७	वव	५६ ४	वज्र
२७	४८	९	गु	५५	३७	रा	४	४०	श्रवण	२०	२१	दि	२	३४	गण्ड	५२	३१	रा	३	२६	वा	२५	५०	कौ	५५ ३७	ध्वज
२७	४५	१०	शु	५३	५८	रा	४	२	धनिष्ठा	२०	५७	दि	२	४९	वृद्धि	४८	२१	रा	१	४७	तै	२४	४७	गर	५३ ५८	धाता
२७	४३	११	श	५१	१२	रा	२	५७	शतभिष	२०	२३	दि	२	३७	ध्रुव	४३	१९	रा	११	४७	व	२२	३५	भ	५१ १२	आनंद
२७	३९	१२	र	४७	२६	रा	१	२६	पू.भा.	१८	४६	दि	१	५८	व्याघात	३७	२९	रा	९	२७	वव	१९	१९	वा	४७ २६	चर
२७	३६	१३	चं	४२	५०	रा	११	३७	उ.भा.	१६	२०	दि	१	१	हर्षण	३०	५७	रा	६	५१	कौ	१५	८	तै	४२ ५०	मातङ्ग
२७	३२	१४	मं	३७	३७	रा	९	३३	रेवती	१३	८	दि	११	४५	वज्र	२३	४८	सा	४	१	गर	१०	१३	व	३७ ३७	शुभ
२७	२९	१५	बु	३१	५५	रा	७	१६	अश्विनी	९	२४	दि	१०	१५	सिद्धि	१६	१६	दि	१	०	भ	४	४६	वव	३१ ५५ / ५८ ५७	मृत्यु

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति द	-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.	
२२	१५	२९	५	५	३०			६	२१	५	३९	६	४	४	१२	५९	५३	११	१५	-	१७	-	-	अन्नकूट १। काशी से अन्यत्र गोवर्द्धनपूजा। बलिप्रतिपद। प्रदोष बलिपूजा। अपराह्न गोपूजा। सायं गोक्रीडा। रात्रि मार्गपाली। व्रत माया द्वारा नीराजन सायं मङ्गल मालिका। पुष्कर में घृतक्रीडा। ❶
२३	१६	३०	६	६	१	वृश्चिक	३६।३५	६	२२	५	३८	६	५	४	६	५९	५५	११	९	-	१८	६	१७	◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.८५सग्गी। वृश्चिकराशि(ग.९।१०)। रा.कार्तिकमास दि ३०। काशी में गोवर्द्धनपूजा। मातृद्वितीया२(भइयादूज) बहन के घर भोजन। वस्त्र आभूषण भेंट करे ❷
२४	१७	१	७	७	२			६	२२	५	३८	६	६	४	१	५९	५६	११	४	-	१८	६	५७	मु.जमादिउलव्वल ५ हि.१४४७। ⊙स्वाती में सूर्य ३६।०(ग.७।४६)स्त्री पु.नपुं. सौ. योग मेघवाहन वायुनाडी स्वामी शनि वायु अल्पवर्षायोग। आलोचना गौरी व्रत। रवियोग समस्तदिन ❸
२५	१८	२	८	८	३			६	२३	५	३७	६	७	३	५८	५९	५८	१२	१	-	१८	७	४३	भ.दि.११।३१से रा.१२।३१तक (स्वर्ग)। वैनायकी श्रीगणेश चौथ व्रत। श्रीसूर्यषष्ठीव्रतारंभ। तीन दिनों तक। नागचतुर्थी। कार्तिकपूजा (बङ्गाल)। रवियोग समस्त।
२६	१९	३	९	९	४	धनु	५।४३	६	२४	५	३६	६	८	३	५७	६०	२	१२	०	-	१८	८	३३	धनुराशि (प्रा.८।४१)। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत द्वितीयदिन। ज्ञानपञ्चमी जैन। रवियोग प्रा.८।४१ तक।
२७	२०	४	१०	१०	५			६	२४	५	३६	६	९	३	५९	६०	४	१२	२	-	१८	९	२७	स्कन्दषष्ठी ६ व्रत। श्रीसूर्यषष्ठी ६व्रत(डालाछठ)–बिहार। सायंकालीन सूर्य को अर्घ्यदान। रविरोग अरुणोदय(उदितसूर्य) को द्वितीय अर्घ्यदान। रवियोग दि.१०।४९ से।
२८	२१	५	११	११	६	मकर	३१।६	६	२५	५	३५	६	१०	४	४	६०	६	१३	७	-	१८	१०	२४	भ.रा.शे.४।२९से (पाताल)। मकरराशि (ग.६।५१)। सूर्यषष्ठीव्रत का पारण। कल्पादि ७। रवियोग दि.१२।३२ तक पश्चात् त्रिपुष्करयोग। ❺श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्ति। रवियोग दि.२।३७ तक।
२९	२२	६	१२	१२	७			६	२६	५	३४	६	११	४	११	६०	७	१३	१४	-	१८	११	२३	भ.सा.४।४१तक (पाताल)। बुधाष्टमी पर्व। सूर्यग्रहण समान। गोपाष्टमी ८। गायों को अलंकृत कर पूजन। ❸ स्थायीजयोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.६।१४ से।
३०	२३	७	१३	१३	८	कुम्भ	५०।३९	६	२६	५	३४	६	१२	४	१८	६०	८	१३	२२	-	१८	१२	२२	कुम्भराशि (रा.२।४२)। अक्षयनवमी। कूष्माण्ड में रत्नादि का दान। आंवला वृक्ष के नीचे भोजन। कृतयुगादि। नवमी में अयोध्यामथुरा परिक्रमा। श्रीविष्णुत्रिरात्रारंभ। स्वामीयों श्रीविष्णुमूर्ति तथा तुलसी सङ्ग ❹
३१	२४	८	१४	१४	९			६	२७	५	३३	६	१३	४	२७	६०	१२	१४	३१	-	१८	१	२२	श्रीकृष्ण विजयोत्सव(व्रज)। रवियोगसमस्त। ❹ पूजन द्वादशी में दान। श्रीजगद्धात्री पूजा(बङ्गाल)। अनलानवमी(उड़ीसा)। दुर्गानवमी। गोरीव्रत। रवियोगस्थायीजययोग दि.२।३४ से।
न	२५	९	१५	१५	१०			६	२८	५	३२	६	१४	४	४०	६०	१३	१४	४४	-	१८	२	२२	भ.दि.३।३० से रा.२।५७ तक (मृत्यु)। नवम्बर ११। प्रबोधिनीएकादशी ११व्रत सबका। दिन ३।३०भद्रा पूर्व उत्थापन। तुलसीविवाह। प्रबोधन उत्सव। भीष्मपञ्चकारंभ। ❺
२	२६	१०	१६	१६	११	मीन	४।१०	६	२८	५	३२	६	१५	४	५४	६०	१५	१४	५७	-	१८	३	२५	मीनराशि (दि.८।८)। मन्वादि १२। दि.१।५८ से उ.भा.विवाहनक्षत्र ग्राह्य तुलसीविवाह। चातुर्मास व्रत समाप्ति। दुग्धदान। द्विदल(दाल)त्यागव्रतारंभ। नारायण द्वादशी। वृन्दावनद्वादशी। ❻
३	२७	११	१७	१७	१२			६	२९	५	३१	६	१६	५	१०	६०	१८	१५	१३	-	१८	४	२९	सोमप्रदोष १३व्रत। संतान हेतु प्रशस्त। निशीथ में श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी १४व्रत "पूर्व दिन व्रत कर अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी में पूजन"। रवियोग दि.१।१ से। स्थायीजययोग रा.११।३७ तक।
४	२८	१२	१८	१८	१३	मेष	१३।८	६	३०	५	३०	६	१७	५	२८	६०	१९	१५	३२	-	१८	५	३८	भ.रा.९।३३ से (स्वर्ग)। मेषराशि (दि.११।४५)। श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिन। अरुणोदय में श्रीमहाविष्णुपूजा। व्रतपारण। रासयात्रा (निशीथ)। श्रीनमंदिर को तुलसी समर्पण। अरुणोदय में ❼
५	२९	१३	१९	१९	१४			६	३०	५	३०	६	१८	५	४८	६०	२१	१५	४०	-	१८	-	-	भ.दि.८।२४ तक (स्वर्ग)। कार्तिकपूर्णिमा १५। स्नानदान व्रत हेतु पुण्य। कार्तिकव्रत नियमादि समाप्ति। कार्तिक व्रत का पारण। मन्वादि १५। प्रदोष काशी में देव दीपावली(त्रिपुरोत्सव) ❽

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	बु	६	९	३३	४४	७२७	१६	६	२५	२२	३५	४२	५२	६	२७	५९	३२	६९	२६	३	२	७	२२	५	१६	३४	९	७३	५६	१०	२७	४१	४९	१०	२१	३४	१८
२	गु	६	२२	३९	५०	७२१	५९	६	२६	५	२८	४२	५२	६	२८	८	५९	६३	४	३	२	१०	५२	५	१७	४८	५	७३	५६	१०	२७	३९	१३	१०	२१	३१	७
३	शु	७	४	४१	५१	७२२	९	६	२६	४८	२०	४२	५२	७	०	१२	३	५४	२४	३	२	१३	४५	५	१९	२	१	७३	५६	१०	२७	३६	३७	१०	२१	२७	५६
४	श	७	१६	४४	२	७२६	४३	६	२७	३१	१३	४३	२	७	१	६	२८	५४	२४	३	२	१६	३७	५	२०	१५	५७	७३	५६	१०	२७	३४	३	१०	२१	२४	४६
५	र	८	०	०	०	७३३	४१	६	२८	१४	१६	४३	१३	७	२	२०	४	५४	२४	३	२	१९	२९	५	२१	२९	५३	७३	५६	१०	२७	३१	२८	१०	२१	२१	३५
६	चं	८	११	९	४२	७३४	४५	६	२८	५७	२९	४३	४८	७	२	५५	१६	५४	२४	३	२	२२	२२	५	२२	४३	४९	७३	५६	१०	२७	२८	५४	१०	२१	१८	२४
७	मं	८	२३	२९	२०	७५६	५३	६	२९	४१	२७	४४	३३	७	३	४९	४१	५४	१४	३	२	२५	१५	५	२३	५७	४५	७३	५६	१०	२७	२६	२०	१०	२१	१५	१३
८	बु	९	६	६	४	८१०	५	७	०	२६	०	४४	३३	७	४	३४	५५	४८	२४	३	२	२८	७	५	२५	११	४१	७३	५६	१०	२७	२३	४८	१०	२१	१२	२
९	गु	९	१९	५६	५५	८२५	३९	७	१	१०	३	४४	३३	७	५	२९	१८	३४	२४	३	२	३०	५९	५	२६	२५	३७	७३	५६	१०	२७	२१	१६	१०	२१	८	५२
१०	शु	१०	९	१	३	८४२	४	७	१	५५	९	४४	३३	७	५	४४	३	३४	२४	३	२	३३	५२	५	२७	३९	३३	७३	५६	१०	२७	१८	४५	१०	२१	५	४१
११	श	१०	१५	२५	३८	८५९	३७	७	२	३९	४२	४४	३३	७	६	१८	३७	३४	२४	३	२	३६	४४	५	२८	५३	२९	७३	५६	१०	२७	१६	१६	१०	२१	२	३०
१२	र	१०	२९	२	५१	९१९	६	७	३	२४	१६	४४	३३	७	७	१३	५	२०	१७	३	२	३९	३६	६	०	७	२५	७३	५६	१०	२७	१३	४८	१०	२०	५९	१९
१३	चं	११	१२	५३	१	८३३	४८	७	४	८	५०	४४	३३	७	७	१३	२८	७	२५	३	२	४२	२८	६	१	२१	२१	७३	५६	१०	२७	११	२०	१०	२०	५६	८
१४	मं	११	२६	५५	१	८५४	७	७	४	५३	२३	४४	३३	७	७	२०	५३	७	२५	३	२	४५	१९	६	२	३५	१७	७३	५६	१०	२७	८	५४	१०	२०	५२	५८
१५	बु	०	११	६	२९	८५७	४९	७	५	३७	५७	४४	३३	७	७	२८	१९	७	२५	३	२	४८	१०	६	३	४९	१३	७३	५६	१०	२७	६	२९	१०	२०	४९	४७

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-विशाखा। ति.७ मंगल वृश्चिक २४।५८ (सा.४।२४)। ति.११ शनि अनुराधा ५४।१६ (रा.शे.४।१०)।। बुध-विशाखा। ति.२ गुरु वृश्चिक ४८।३२ (रा.१।४७)। ति.६ सोम अनुराधा २७।१७ (सा.५।१९)।। गुरु-पुनर्वसु ४ चरण।। शुक्र-हस्त। ति.६ सोम चित्रा २९।२२(रा.६।१९)। ति.११ शनि तुला ५३।५९ (रा.४।४)।। वक्रीशनि-पू.भा.३ चरण।। राहु-पू.भा.१ चरण।। केतु-पू.फा.में ३ चरण।।

कार्तिकशुक्लपक्ष विचार–यह पक्ष पन्द्रह दिनों का है। द्वादशी को रात्रि निर्मल तथा अश्विनी नक्षत्र पूर्णिमा से तृण संज्ञक धान्य मध्यम उत्पन्न हों। **२२ अक्टूबर** को प्रतिपदा में **अन्नकूट** (अन्न का समूह) का पवित्र पर्व मनाया जायेगा। आज के दिन विभिन्न प्रकार के पकवानों की पर्वताकार आकृति सदृश बनाकर समर्पित करके वितरण से है। आज काशी से अन्यत्र **गोवर्धन पूजा** होगी। प्रातः स्त्रियां द्वारा नीराजन (दीप घुमाना)। अपराह्न में **मार्गपाली बन्धन** (अशोक के पत्तों का मार्ग में बन्दरवार)। सायंकाल नृत्य व नाट्य का आयोजन **गोक्रीडन** रात्रि में सर्पबलि, सायं **बलिपूजा** संबंधित कृत्य होंगे तथा आभ्यङ्ग (तैल) स्नान करना चाहिए। **२३ अक्टूबर** को उत्तरशृंग☛

२९पं० कार्तिकशुक्ल ८बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०५१
अयनांश२४।१२।२९

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
६	९	७	७	३	५	१०	१०	४
११	६	०	४	२	२५	२७	२१	२१
४	६	२६	३४	२८	११	२३	१२	१२
११	४	१	५५	७	४१	४४	२	२
६०	७६०	४४	३४	२	७३	२	३	३
७	५	३३	३३	५२	५६	३४ व	११	११

मं.८ बु., ६ शु., ९, ७ सू., ५ के., १० चं., ४ गु., श. ११ रा., १, ३, १२, २

।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१बु. घं.	मि.	२गु. घं.	मि.	३शु. घं.	मि.	४श. घं.	मि.	५र. घं.	मि.	६चं. घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.
तुला	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१
वृश्चिक	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८
धनु	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४
मकर	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१
कुम्भ	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२
मीन	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७
वृष	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३
मिथुन	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७
कर्क	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५
सिंह	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९
कन्या	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२

तिथि ल.अं.	९गु. घं.	मि.	१०शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	१३चं. घं.	मि.	१४मं. घं.	मि.	१५बु. घं.	मि.
तुला	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२४
वृश्चिक	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४१
धनु	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४७
मकर	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४
कुम्भ	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	५
मीन	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३३
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	१०
वृष	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	६
मिथुन	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	२०
कर्क	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८
सिंह	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५२
कन्या	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	५

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ बुध स्वाती सूर्यभोग्य। **ति.२** गुरु विशाखा भौमयुति। **ति.३** बुध अनुराधा भौमभोग्य। **ति.४** शनि ज्येष्ठा रिक्ताभद्रा। **ति.५**रवि ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण चौपायों का क्रय विक्रय शस्त्रनिर्माण शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। प्रा.८।४१ से मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण औषधीसेवन विपणि शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **ति.६** सोम मूल शिशुताम्बूलभक्षण दवंरी धानरोपण विपणि मुहूर्त्त। **ति.७** मंगल पू.षा.में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। दि.१२।३२ से उ.षा.में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.८** बुध उ.षा.में शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण शिल्पविद्या मुहूर्त्त। **ति.९** गुरु श्रवण रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। **ति.१०**शुक्र धनिष्ठा जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय कुम्भ चन्द्र पश्चिमदिशा यात्रा नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन नावनिर्माण वाहन क्रय धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.११** शनि शतभिष सूर्यवेध। **ति.१२** रवि पू.भा.में सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। दि.१।५८ से उ.भा.में शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण शिल्पविद्या नावनिर्माण **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.१३** सोम उ.भा.में पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन विपणि धानछेदनमुहूर्त्त। **ति.१४** मंगल रेवती रिक्तादोष। **ति.१५** बुध अश्विनी केतुवेध।

३०पं० कार्तिकशुक्ल१५बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०५८
अयनांश२४।१२।३०

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	७	७	३	६	१०	१०	४
१८	११	५	७	२	३	२७	२०	२०
५	६	३७	२८	४८	४९	१०	४९	४९
४८	२१	५७	१९	१०	१३	४०	४७	४७
६०	८५३	४४	७	२	७३	१	३	३
२१	४	३३	२५	५१	५६	३ व	११	११

बु.८मं., ६ चं., ९, सू.७शु., ५ के., १०, ४ गु., श. ११ रा., १ चं., ३, १२, २

❶ मार्गपाली बन्धन आभ्यङ्गस्नान अपराह्न में अशोक के पत्तों का बन्दनवार लगाये। सायं मङ्गल मालिका। श्रीवीरसंवत् २०५२। नेपाली संवत ११४६। गुर्जरनवसंवत् प्रारम्भ २०८२। कालिदास जयती। ❷भगिनीपूजन करें। यमद्वितीया २। अपराह्न यमुना स्नान तथा यम को तर्पण। यमपञ्चकनिवृत्ति। मत्स्याधार(दवात)पूजा(बिहार)। दूतचित्रगुप्त सहित यमपूजा। ⊙सायन वृश्चिक में सूर्य ४४।२४(रा.१२।१८)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.३।३८ से। ❻गरुड़द्वादशी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।५८ से पूर्व में त्रिपुष्करयोग। ❼मणिकर्णिका स्नान। पाषाण चतुर्दशी (उड़ीसा)। चोमासीचोदस (जैन)। बड़ओसा(उड़ीसा)। प्रदोष अन्नभिषेक(द.भा.)। रवियोग दि. ११।४५ तक पूर्व में स्थायीजययोगसर्वार्थसिद्धियोग। ❽पुष्कर में त्रिपुर को दीपदान। सायंकालीनगङ्गादिदान। गुरुनानकदेव जयती। भीष्मपञ्चक निवृत्ति। कार्तिकेयदर्शन। प्रदोष में रासपूर्णिमा। केदार व्रत (उड़ीसा)। रथयात्रा (जैन)।

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल- ति.३ शुक्र रा.शे.६।१४ से। ति.६ सोम दि.१०।४९ तक। **रेवती/ अश्विनी-**ति.१३ सोम दि.१।१ से। ति.१५ बुध दि.१०।१५ तक। **पञ्चकविचार-**ति.९ गुरु रा.२।४२ से। ति.१४ मंगल दि.११।४५तक।

☛**चन्द्रदर्शन** से सुभिक्ष होवे। आज **काशी में गोवर्धन पूजा** मनाई जायेगी। **चित्रगुप्त पूजा, मत्स्याधार (कलम-दावात) पूजा, यमपूजा, भइया दूज (भातृ द्वितीया)** मनाया जायेगा। आज के दिन भाई बहन के घर भोजन करें तथा वस्त्रादि प्रदान करें। **२५ अक्टूबर** को **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी** व्रत किया जायेगा। आज काशी में तुलसीघाट पर विश्व प्रसिद्ध **नागनथैया** की कृष्ण लीला सम्पन्न होगी। आज से तीन दिनों तक चलने वाला वर्ष भर का सबसे लोकप्रिय श्रीसूर्यदेव का प्रसिद्ध पर्व सर्वत्र देश में विशेषकर बिहार-झारखण्ड में किया जाने वाला डाला **छठ (श्रीसूर्यषष्ठी व्रत)** का प्रारंभ होगा। **२६ अक्टूबर** को डाला छठ दूसरे दिन का कृत्य होगा। **२७ अक्टूबर** को सायं **अस्तगामी सूर्यदेव को छठ व्रत कर अर्घ्यदान** करें। पुनः **२८ अक्टूबर** को रात्रि शेष रहते **अरुणोदय में भगवान् सूर्य** को **द्वितीय अर्घ्य दान** देकर **व्रत** पूर्ण किया जायेगा। इसके बाद व्रत **का पारण** करें। **२९ अक्टूबर** को **गोपाष्टमी** का पर्व मनाया जायेगा। इसमें अलंकृत गौ को चारा-दाना खिलाकर परिक्रमा करनी चाहिए। आज अष्टमी बुधवारी से (शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल शरदऋतु।।

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १५ कार्तिक से २९ अग्रहायण तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक ६ नवम्बर से २० दिनांक तक सन् २०२५ ई.।

विवाह मुहूर्त्त पञ्चेष्टलग्न विमर्श

ति.१२ रवि हस्त में वृश्चिक संक्रान्ति दोष। पश्चात मासान्त दोष।

दि.मा घ.प.	तिथि						नक्षत्र						योग						करण						योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति द	-	रे.अं. -	मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.		
२७ २६	१	गु	२६	०	सा	४	५५	भरणी	५	१७	प्रा	८	३७	व्यतिपात	८	२९	दि	९	५४	कौ	२६	०	तै	५३	१	पद्म	६	१	१४	२०	२०	१५	वृष	१९।१४	६	३१	५	२९	६	१९	६	९	६०	२४	१५	५८	-	१८	५	४३
२७ २३	२	शु	२०	२	दि	२	३१	कृत्तिका	१/५५	५/५१	प्रा	६/५	५७/१७	वरीयान	०/५२	३३/११	प्रा	५/३	४४/३७	गर	२०	२	व	४७	७	छत्र	७	२	१५	२१	२१	१६			६	३१	५	२९	६	२०	६	३४	६०	२५	१६	१६	-	१८	६	४०
२७ २०	३	श	१४	१२	दि	१२	१३	मृगशिर	५३	५	रा	३	४६	शिव	४५	७	रा	१२	३४	भ	१४	१२	वव	४१	२७	वज्र	८	३	१६	२२	२२	१७	मिथुन	२५।०	६	३२	५	२८	६	२१	६	५९	६०	२६	१६	३३	-	१८	७	४५
२७ १७	४	र	८	४२	दि	१०	०	आर्द्रा	४९	४३	रा	२	२६	सिद्ध	३७	५१	रा	९	४१	वा	८	४२	कौ	३६	१३	ध्वांक्ष	९	४	१७	२३	२३	१८			६	३३	५	२७	६	२२	७	२६	६०	३०	१६	५१	-	१८	८	५२
२७ १४	५	चं	३/५५	४४/४७	प्रा	८/६	२/२१	पुनर्वसु	४७	०	रा	१	२१	साध्य	३१	८	रा	७	०	तै	३	४४	गर	३१/५९	३७/३१	धूम्र	१०	५	१८	२४	२४	१९	कर्क	३२।४१	६	३३	५	२७	६	२३	७	५६	६०	३१	१७	८	-	१८	९	५९
२७ ११	७	मं	५६	१०	रा	५	२	पुष्य	४५	९	रा	१२	३७	शुभ	२५	३	सा	४	३५	भ	२७	५०	वव	५६	१०	प्रवर्द्धमान	११	६	१९	२५	२५	२०			६	३४	५	२६	६	२४	८	२८	६०	३३	१७	२४	-	१८	११	३
२७ ८	८	बु	५३	५२	रा	४	६	श्लेषा	४४	१७	रा	१२	१६	शुक्ल	१९	४५	दि	२	२८	वा	२५	१	कौ	५३	५२	राक्षस	१२	७	२०	२६	२६	२१	सिंह	४४।१७	६	३४	५	२६	६	२५	९	१	६०	३४	१७	४१	-	१८	१२	३
२७ ५	९	गु	५२	४८	रा	३	४२	मघा	४४	३४	रा	१२	२४	ब्रह्म	१५	१७	दि	१२	४१	तै	२३	२०	गर	५२	४८	मुसल	१३	८	२१	२७	२७	२२			६	३५	५	२५	६	२६	९	३५	६०	३६	१७	५७	-	१८	१२	५९
२७ २	१०	शु	५२	५८	रा	३	४७	पू.फा.	४६	५	रा	१	१	ऐन्द्र	११	४९	दि	११	१८	व	२२	५३	भ	५२	५८	सिद्धि	१४	९	२२	२८	२८	२३			६	३५	५	२५	६	२७	१०	१२	६०	३८	१८	१७	-	१८	१	५२
२६ ५९	११	श	५४	२८	रा	४	२३	उ.फा.	४८	५२	रा	२	८	वैधृति	९	१९	दि	१०	१९	वव	२३	४३	वा	५४	२८	उत्पात	१५	१०	२३	२९	२९	२४	कन्या	१।४७	६	३६	५	२४	६	२८	१०	५०	६०	३९	१८	२८	-	१७	२	४३
२६ ५७	१२	र	५७	९	रा	५	२८	हस्त	५२	४९	रा	३	४४	विष्कुम्भ	७	५३	दि	९	४५	कौ	२५	४८	तै	५७	९	मानस	१६	११	२४	३०	३०	२५			६	३६	५	२४	६	२९	११	३०	६०	४१	१८	४३	-	१७	३	३५
२६ ५४	१३	चं	६०	०	समस्त			चित्रा	५७	५३	रा	५	४६	प्रीति	७	१७	दि	९	३१	गर	२९	४	व	६०	०	मुद्गर	१७	१२	२५	१	१	२६	तुला	२५।२१	६	३७	५	२३	७	०	१२	१२	६०	४३	१८	५८	-	१७	४	२७
२६ ५१	१३	मं	१	०	प्रा	७	२	स्वाती	६०	०	समस्त			आयुष्मा.	७	३३	दि	९	३९	व	१	०	भ	३३	२०	ध्वज	१८	१३	२६	२	२	२७			६	३८	५	२२	७	१	१२	५५	६०	४५	१९	१३	-	१७	५	२१
२६ ४९	१४	बु	५	४०	दि	८	५४	स्वाती	३	४५	प्रा	८	८	सौभाग्य	८	२६	दि	१०	०	श	५	४०	च	३८	१६	धूम्र	१९	१४	२७	३	३	२८	वृश्चिक	५२।३३	६	३८	५	२२	७	२	१३	४०	६०	४६	१९	२७	-	१७	६	१५
२६ ४६	३०	गु	१०	५३	दि	११	०	विशाखा	१०	९	दि	१०	४२	शोभन	९	४३	दि	१०	३२	ना	१०	५३	किं	४३	३४	प्रवर्द्धमान	२०	१५	२८	४	४	२९			६	३९	५	२१	७	३	१४	२७	६०	४८	१९	४१	-	१६	-	-

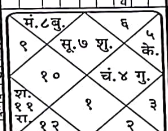
६ — वृषराशि(दि.२।१३)। ⊙विशाखा सूर्य ५३।२९(रा.३।५५)। यायीजययोग प्रा.८।३७ तक पश्चात यमघंटयोग।
७ — भ.रा.१।२२ से (स्वर्ग)। सर्वार्थामृतसिद्धियोग यमघंटयोग प्रा.६।५७ से।
८ — भ.दि.१२।१३ तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि(सा.४।३२)। संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत। चन्द्रोदय(रा.७।४५)।
९ — श्रीमनसादेवी शयन पञ्चमी(रात्रिव्यापिनी)।
१० — भ.रा.शे.५।२१से (मृत्यु)। कर्कराशि(रा.७।३७)। रवियोग सर्वार्थसिद्धियोग रा.१।२१ से। यायीजययोग प्रा.८।२ तक।
११ — भ.सा.५।४२तक (मृत्यु)। रवियोग रा.१२।३७ तक पश्चातसर्वार्थसिद्धियोग।
१२ — सिंहराशि(रा.१२।१६)। श्रीभैरवाष्टमी ८व्रत। श्रीभैरवोत्पत्ति दर्शन पूजन।"आज कालभैरव का व्रत पूजन करे पश्चात अर्घ्य दें। उपवास तथा जागरण करें।" कालाष्टमी व्रत। प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)।
१३ — काझी अनला नवमी(उड़ीसा)।
१४ — भ.दि.३।४४ से रा.३।४७ तक (मृत्यु)।
१५ — कन्याराशि (दि.७।४९)। उत्पन्ना एकादशी ११व्रत सबका। यायीजययोग रा.२।८ तक पश्चात यमघंटयोग।
१६ — ⊙सं.वृश्चिक सूर्य ४७।५७(रा.१।४७)। मु.३०समासमताकर। पूर्व की १६घटिपुण्य। दीपवरदान नर्मदा स्नान। अगले दिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्ति पुण्यकाल। हेमंतऋतु। द्विपुष्करयोग रा.३।४८ से।
१७ — सौर व ने.मार्गशीर्षमास। तुलाराशि (सा.४।४५)। सोमप्रदोष १३ व्रत। संतान हेतु प्रशस्त। यायीजययोग रा.शे.५।४६ से।
१८ — भ.प्रा.७।२ से रा.७।५८ तक (पाताल)। मासशिवरात्रि १३व्रत।
१९ — वृश्चिकराशि(रा.३।३९)। श्राद्ध ३०। मेलापुरमण्डल(जम्मू)। ❶ सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।४२ से।
२० — अमावस्या ३०। स्नानदान हेतु पुण्य काल। शुभवार से सुभिक्ष सुख। प्रदोप रुद्रव्रत(पीड़िया)। द्वापरयुगादि३०। दीपावली अमावस्या(उड़ीसा)। ⊙अनुराधा में सूर्य ५।२८(दि.८।५०)। ❶

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		वक्रीशनि				राहु			
१	गु	०	२५	२४	२२	८५८	५५	७	६	२२	३१	४४	३३	७	७	३५	४४	७	२५	३	२	५१	२	६	५	३	९	७३	५६	१०	२७	९	३७	१०	२०	४६	३६
२	शु	१	१०	१५	३१	८५९	२६	७	७	७	४	४४	३३	च	७	४३	९	११	५७	३	२	५३	५३	६	६	१७	५	७४	५	१०	२७	८	३४	१०	२०	४३	२५
३	श	१	२४	३	४२	८५४	५१	७	७	५१	३८	४४	३३	७	७	३१	१२	२३	४१	३	२	५६	२३	६	७	३१	११	७४	१२	१०	२७	७	३१	१०	२०	४०	१४
४	र	२	८	१७	४२	८४७	३३	७	८	३६	१२	४४	३३	७	७	७	३०	२३	४१	३	२	५६	४३	६	८	४५	२३	७४	१२	१०	२७	६	२८	१०	२०	३७	४
५	चं	२	२२	२३	३७	८३७	५६	७	९	२०	४६	४४	३३	७	६	४३	४८	२३	४१	३	२	५७	२	६	९	५९	३५	७४	१२	१०	२७	५	२५	१०	२०	३३	५३
७	मं	३	६	१८	५१	८२५	२७	७	१०	५	१९	४४	३३	७	६	२०	७	२३	४१	३	२	५७	२२	६	११	१३	४७	७४	११	१०	२७	४	२२	१०	२०	३०	४२
८	बु	३	२०	०	५८	८११	४३	७	१०	४९	५३	४४	३३	७	५	५६	२५	४४	४६	३	२	५७	४२	६	१२	२७	५९	७४	१२	१०	२७	३	२०	१०	२०	२७	३१
९	गु	४	२	२८	३४	७९६	१४	७	११	३४	२७	४४	३३	७	५	११	३९	५१	३५	३	२	५८	२	६	१३	४२	११	७४	४७	१०	२७	२	१९	१०	२०	२४	२०
१०	शु	४	१६	४०	४२	७८०	१६	७	१२	१९	०	४४	३३	७	४	२०	३	५१	३५	३	२	५८	२२	६	१४	५६	५८	७४	५५	१०	२७	१	१७	१०	२०	२१	१०
११	श	४	२९	३७	२०	७६४	३२	७	१३	३	३४	४४	३३	७	३	२८	२८	५१	३५	३	२	५८	४२	६	१६	११	५४	७४	५५	१०	२७	०	१५	१०	२०	१७	५९
१२	र	५	१२	१९	१७	७५०	३५	७	१३	४८	८	४४	३३	७	२	३६	५३	५१	३५	३	२	५९	२	६	१७	२६	५०	७४	५५	१०	२६	५९	१४	१०	२०	१४	४८
१३	चं	५	२४	४९	१९	७३७	४२	७	१४	३२	४२	४४	३३	७	१	४५	१८	५१	३५	३	२	५९	२१	६	१८	४१	४६	७४	५५	१०	२६	५८	१२	१०	२०	११	३७
१३	मं	६	७	५	५७	७२८	४४	७	१५	१७	१५	४४	३३	७	०	५३	४२	५१	३५	३	२	५९	४१	६	१९	५६	४२	७४	५५	मा	२६	५७	५५	१०	२०	८	२६
१४	बु	६	२०	०	०	७२७	४७	७	१६	१	४९	४४	३३	७	०	२	७	५१	३५	३	३	०	०	६	२१	११	३८	७४	५५	१०	२६	५८	२४	१०	२०	५	१६
३०	गु	७	१	१७	४३	७२२	५३	७	१६	४६	२३	४४	३६	६	२९	१०	३२	५१	३५	३	३	०	१८	६	२२	२६	३४	७४	५५	१०	२६	५८	५४	१०	२०	२	५

३१पं० मार्गशीर्षकृष्ण ८बुध
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०६५
अयनांश२४।१२।३१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	३	७	७	३	६	१०	१०	४
२५	२०	१०	५	२	१२	२७	२०	२०
९	०	४९	५६	५७	२७	३	२७	२७
१	५४	५३	२५	४२	५९	२०	३१	३१
६०	८११	४४	४४	०	७४	०	३	३
३४	४३	३३	४६	१९	१२	१ व	११	११



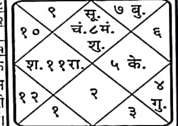
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१गु. घं.	मि.	२शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	५चं. घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.	९गु. घं.	मि.	१०शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.
तुला	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१
वृश्चिक	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५८
धनु	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	४
मकर	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५१
कुम्भ	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२२
मीन	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	५०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२७
वृष	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२३
मिथुन	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३७
कर्क	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५५
सिंह	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	९
कन्या	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२२

तिथि ल.अं.	१३चं. घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
वृश्चिक	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१
धनु	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७
मकर	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४
कुम्भ	२	१७	२	१३	२	९	२	५
मीन	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३
मेष	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	७	१८	७	१४	७	१०	७	६
मिथुन	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०
कर्क	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८
सिंह	२	४	२	०	१	५६	१	५२
कन्या	४	१७	४	१३	४	९	४	५
तुला	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१

३२पं० मार्गशीर्षकृष्ण३०गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण३०७३
अयनांश२४।१२।३२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	७	६	३	६	१०	१०	४
३	१	१६	२९	३	२२	२६	२०	२०
१४	१७	४६	१०	०	२६	५८	२	२
२७	४३	२३	३२	१८	३४	५४	५	५
६०	७२२	४४	५१	०	७४	०	३	३
४८	५३	३६	३५	१८	५५	२९ मा	११	११



मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति.७ मंगल रा.१२।३७ से। ति.९ गुरु रा.१२।२४ तक।

मार्गशीर्षमासकृत्य।। भारते—मार्गशीर्षे तु यो नाम्नैकभक्तेन सर्थितः। भोजयेत् द्विजान्भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते कृषिभागी बहुधनो बहुधान्यश्च जायते।। **वामनपुराणे**—यवगोधूमगजाश्वःशकटादि अन्नादिकं। दातव्यं केशवप्रीत्यर्थमासि मार्गशिरे नरैः।।

अनेक प्रकार के प्रश्नों का योग— प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दें तथा तीन का भाग दें, सम शेष से धातु,विषम शेष से जीव तथा शून्य शेष से मूल सम्बन्धी प्रश्न होता है। **दृष्टि द्वारा प्रश्न कथन—** प्रश्न कर्ता प्रश्नकाल में यदि ऊपर देखे तो जीव,नीचे देखे तो मूल एवं सम्मुख देखे तो धातु सम्बधी प्रश्न होगा। **राशि द्वारा प्रश्न ज्ञान—**चलो मेषादि राशियों के प्रश्न लग्न से क्रमशः मनुष्य,चतुष्पद,गर्भ,व्यवहार,भोग,स्त्री,व्यापार,दुष्टमय,धन,कलह,गर्भ,एवं स्थान सम्बन्धी चिन्ता होती है। **कार्य सिद्धि सम्बन्धी प्रश्न ज्ञान—**गर्ग के अनुसार तत्कालिक लग्न में शीर्षोदय राशि पूर्ण चन्द्र से युक्त हो तो कार्य सिद्धि होगी पुनःग्रह केंद्र व त्रिकोण में स्थित हो तथा पापग्रह ३,६,११ में हो तो भी कार्य सिद्ध होगा तथा प्रेषित व्यक्ति का आगमन होता है। **प्रश्नअक्षर द्वारा कार्य सिद्धि—**प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दें तथा पुनः तीन का भाग दें एकादि शेष से क्रमशः सफलता,यथा स्थिति एवं असफलता प्राप्त होती है। **कार्य सिद्धि का काल ज्ञान—**प्रश्न काल में चन्द्रमा यदि चरराशि का हो तो शीघ्र,स्थिर का हो तो यथा स्थिति एवं द्विस्वभाव राशि का हो तो देर से कार्य सफल होता होता है। **प्रश्न द्वारा दूर एवं समीप का ज्ञान—**नष्ट एवं हृत वस्तु के लाभ सम्बधी प्रश्न के ज्ञान में चर लग्न से दूर, स्थिर से स्वगृह में एवं द्विस्वभाव में घर के बाहर वस्तु लाभ होता है। इसके विचार में ग्रहयोग भी विचार लें। **लाभ प्रश्न में दिशा ज्ञान—**प्रश्न काल के बलवान केन्द्रगत ग्रह की दिशा में नष्टधन को गया हुआ जानें। यदि बलवान ग्रह केन्द्रगत न हो तो लग्न राशि की दिशा में ही नष्टधन को समझना चाहिए अथवा चर राशि का होकर बलवान चन्द्रमा लग्न में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो उसकी दिशा में द्रव्य लाभ होता है। **धनुराशि के सूर्य के शुभकार्यों का निषेध—** धनु एवं मीन राशि के सूर्य, सिंह के गुरु,तथा सूर्य एवं गुरु के परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थिति के समय कोई शुभ कृत्य न करें।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। **भौम-**अनुराधा। ति.१४ वुध ज्येष्ठा में ५१।२५ (रा.३।१२)। **वुध-**अनुराधा। ति.२ शुक्र वक्री २२।५९ (दि.३।४३)। ति.११ शनि विशाखा ९।५१(दि.१०।३३)। ति.१४ वुध तुला २।२७ (प्रा.७।३७)।। **गुरु-**पुनर्वसु ४ चरण।। **शुक्र-**चित्रा। ति.२ शुक्र स्वाती में १८।३४(दि.१।५७)।। ति.१३ मंगल विशाखा २।३९ (प्रा.७।४२)।। **वक्रीशनि-**पू.भा.३ चरण।। ति.१३ मंगल मार्गी २२।१४ (दि.३।३२)।। **राहु-**पू.भा. १ चरण। ति.३० गुरु शतभिष ४चरण।। **केतु-**पू.फा.में ३चरण। पू.फा.में २चरण ३९।१३(रा.१०।२०)।।

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष विचार—पष्ठी तिथि की हानि तथा त्रयोदशी तिथि की वृद्धि से पक्ष पन्द्रह दिनों का है। पक्ष में एकराशि में चारग्रह (चतुग्रही) योग से युद्ध अथवा जल उत्पात से जनहानि होगी। पक्ष में एकादशी को शनिवार हो तो जल से विनाश तथा शासकों को क्षति संभव है। **१६ नवम्बर** को वृश्चिक सूर्यसंक्रान्ति से मास में विवाहादि शुभ कार्यो हेतु प्रशस्त है किन्तु द्वादशी तिथि क्षीण चन्द्र प्रभाव से मासान्त दोष से विवाहादि शुभ कार्यो का इस पक्ष में निषेध है। **८ नवम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय में रात ७:४५ पर अर्घ्य दें।**१० नवम्बर** मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को काशी में **माता अन्नपूर्णा** ☛ **देवी का व्रत-पूजन-श्रृंगार** का १६ दिनात्मक अनुष्ठान प्रारम्भ होगा। इसमें काशी एवं आसपास के जनपदों के किसान धान की कटाई का प्रथम धान्य पुंज (वालियाँ) माता अन्नपूर्णा को समर्पित करते हैं। जिसे प्रसाद रूप में वितरित किया जाता है। उन्नत पैदावार की कामना से कृषक श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर अगले वर्ष के लिये बीज रूप में रखते हैं। **१० नवम्बर** को षष्ठी में काशी के रामेश्वर तीर्थ में **लोटा-भण्टा का मेला** लगेगा। भगवान् श्रीराम द्वारा स्थापित पूजित रामेश्वर महादेव को श्रद्धा पूर्वक **वाटी-चोखा** वनाकर अर्पण करने की परम्परा है। **१२ नवम्बर** को प्रदोषकाल में **श्रीकाल भैरवाष्टमी** मनाई जायेगी। यह **श्रीकाल भैरव की जयंती** (उत्पत्ति) रूप में मनाई जाती है। देशभर में तथा काशी में कालभैरव मन्दिर सहित यहाँ **आठों भैरव मन्दिरों** में मनाई जायेगी। शास्त्रों के अनुसार प्राणी के किये गये पाप दर्शन मात्र से छूट जाते हैं। आज पूजन उपरान्त तीन वार अर्घ्य दें तथा उपवास कर जागरण करें। **१५ नवम्बर** को **उत्पन्ना एकादशी व्रत सबका** है। इस एकादशी के दिन **व्रतारंभ** करें। **१७ नवम्बर** को सन्तान सुख हेतु **सोम प्रदोष व्रत** होगा। **१८ नवम्बर** को **मास शिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। **१९ नवम्बर** को **श्राद्ध की अमावस्या** मनायी जायेगी। **२० नवम्बर** को **स्नान-दान की अमावस्या** होगी। प्रदोषकाल (सूर्यास्त काल में प्रतिपदा) पूजन के मुख्यकाल में प्राप्त होने से **रुद्रव्रत (पीड़िया) पर्व** मनाया जायेगा।

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१ गुरु भरणी व्यतिपात। दि.९।५४ व्यतिपात वाद कृत्तिका में धानछेदन मुहूर्त्त। ति.२ शुक्र कृत्तिका धानछेदन मुहूर्त्त। प्रा.६।५७ से रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण दंवरी धानरोपण शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त्त। ति.३ शनि दि.१२।१२ मृगशिर रिक्ताभद्रा। ति.४ रवि आर्द्रा रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। दि.१०।२० रिक्तावाद शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.५ सोम पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय मिथुन के चन्द्र में पश्चिमदक्षिण दिशा की यात्रा नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण वाहन क्रय मुहूर्त्त। ति.७ मंगल पुष्य भद्रादोष। सा.५।४२ भद्रा बाद श्लेषा भौमवेध। ति.८ बुध श्लेषा पूर्वदोष। ति.१० शुक्र पू.फा.में केतुयुति। ति.११ शनि दि.१०।१९ वैधृति बाद उ.फा.में कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त। ति.१२ रवि हस्त शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन आसनप्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधी सेवन विपणि वाहन क्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमंतऋतु।।

दि.मा घ.	प.	तिथि						नक्षत्र					योग					करण							योग
२६	४४	१	शु	१६	१६	दि	१	९	अनुराधा	१६	४०	दि	१	१९	अतिगण्ड	११	५	दि	११	५	वव	१६	१६	वा	४८	४७	राक्षस
२६	४१	२	श	२१	१९	दि	३	११	ज्येष्ठा	२२	५१	सा	३	४८	सुकर्मा	१२	१३	दि	११	३३	कौ	२१	१९	तै	५३	३०	मुसल
२६	३९	३	र	२५	४१	सा	४	५६	मूल	२८	२३	रा	६	१	धृति	१२	५३	दि	११	४९	गर	२५	४१	व	५७	२१	सिद्धि
२६	३७	४	चं	२९	२	रा	६	१८	पू.षा.	३२	५७	रा	७	५१	शूल	१२	५०	दि	११	४९	भ	२९	२	वव	६०	०	उत्पात
२६	३५	५	मं	३१	१७	रा	७	११	उ.षा.	३६	२५	रा	९	१५	गण्ड	११	५४	दि	११	२६	वव	०	९	वा	३१	१७	मानस
२६	३३	६	बु	३२	११	रा	७	३३	श्रवण	३८	३५	रा	१०	७	वृद्धि	१०	१	दि	१०	४१	कौ	१	४४	तै	३२	११	छत्र
२६	३०	७	गु	३१	४५	रा	७	२४	धनिष्ठा	३९	२९	रा	१०	२९	ध्रुव	७	८	दि	९	३३	गर	१	५८	व	३१	४५	श्रीवत्स
२६	२८	८	शु	३०	८	रा	६	४५	शतभिष	३९	१२	रा	१०	२२	व्याघात	३/५५	१४/१०	प्रा	७/६	५९/३	भ	०	५६	वव	३०/५८	८/४५	सौम्य
२६	२६	९	श	२७	२२	सा	५	३९	पू.भा.	३७	४९	रा	९	५०	वज्र	५२	४४	रा	३	४८	कौ	२७	२२	तै	५५	३०	कालदंड
२६	२५	१०	र	२३	३९	सा	४	१०	उ.भा.	३५	३७	रा	८	५७	सिद्धि	४६	२४	रा	१	१७	गर	२३	३९	व	५१	२१	स्थिर
२६	२३	११	चं	१९	४	दि	२	२०	रेवती	३२	३४	रा	७	४४	व्यतिपात	३९	२४	रा	१०	२८	भ	१९	४	वव	४६	२८	मातङ्ग
२६	२१	१२	मं	१३	५२	दि	१२	१६	अश्विनी	२८	५७	रा	६	१८	वरियान	३१	५६	रा	७	३०	वा	१३	५२	कौ	४१	३	अमृत
२६	१९	१३	बु	८	१४	दि	१०	१	भरणी	२४	५३	सा	४	४१	परिघ	२४	१०	सा	४	२४	तै	८	१४	गर	३५	१७	काण
२६	१६	१४	गु	२/५४	२१/२	प्रा	७/५	४/१८	कृत्तिका	२०	४३	दि	३	२	शिव	१६	१७	दि	१	१५	व	२	२१	भ	२९/५६	२२/२३	लुम्बक

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति द	-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२१	१६	२९	५	५	३०			६	३९	५	२१	७	४	१५	१६	६०	४९	१९	५४	-	१६	५	४०
२२	१७	१	६	६	१	धनु	२२।५१	६	४०	५	२०	७	५	१६	६	६०	५०	२०	७	-	१६	६	२९
२३	१८	२	७	७	२			६	४०	५	२०	७	६	१६	५७	६०	५१	२०	२०	-	१६	७	२२
२४	१९	३	८	८	३	मकर	४८।४९	६	४१	५	१९	७	७	१७	४८	६०	५२	२०	३२	-	१५	८	१८
२५	२०	४	९	९	४			६	४१	५	१९	७	८	१८	४१	६०	५४	२०	४४	-	१५	९	१६
२६	२१	५	१०	१०	५			६	४१	५	१९	७	९	१९	३५	६०	५५	२०	५६	-	१५	१०	१३
२७	२२	६	११	११	६	कुम्भ	९।२	६	४२	५	१८	७	१०	२०	३१	६०	५७	२१	७	-	१५	११	११
२८	२३	७	१२	१२	७			६	४२	५	१८	७	११	२१	२९	६०	५८	२१	१८	-	१४	१२	९
२९	२४	८	१३	१३	८	मीन	२३।९	६	४३	५	१७	७	१२	२२	२७	६०	५९	२१	२८	-	१४	१	८
३०	२५	९	१४	१४	९			६	४३	५	१७	७	१३	२३	२७	६१	०	२१	३८	-	१४	२	८
दि	२६	१०	१५	१५	१०	मेष	३२।३४	६	४३	५	१६	७	१४	२४	२८	६१	१	२१	४८	-	१३	३	१३
२	२७	११	१६	१६	११			६	४४	५	१६	७	१५	२५	३०	६१	३	२१	५७	-	१३	४	२१
३	२८	१२	१७	१७	१२	वृष	३८।५०	६	४४	५	१६	७	१६	२६	३३	६१	५	२२	५	-	१२	५	३४
४	२९	१३	१८	१८	१३			६	४५	५	१५	७	१७	२७	३९	६१	६	२२	१४	-	१२	-	-

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि ३० अग्रहायण से १३ तिथि तक १९४७ शक।
अंग्रेजी दिनांक २१ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक सन् २०२५ ई.।

चन्द्रदर्शनम्। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु.१५ जमादी। सर्वार्थसिद्धियोग दि.२।१९ तक। ❶मौन एकादशी(जैन)। यायीजययोग दि.२।२० तक।
मु.जमादिउस्सानी ६हि.१४४७। रा.अग्रहायण दि.३०। धनुराशि(रा.३।४८)। ⊙सायनधनु में सूर्य २।३६(रा.३।४७)।
भ.रा.शे.५।३६ से (पाताल)। रवियोग रा.६।१९ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
भ.सा.६।१८ तक (पाताल)। मकरराशि (रा.२।१३)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। रवियोग रा.७।५१ तक पश्चात यायीजययोग।
श्रीराम विवाहोत्सव। द्वितीया नागपञ्चमी ५। पञ्चमी नागपूजा कार्य। गुरुतेगबहादुर शहीददिवस(सिक्ख)। ❷
श्रीस्कन्दषष्ठी ६व्रत। चम्पाषष्ठी ६व्रत(महाराष्ट्र)। मूलक रूपिणीषष्ठी(मूलकषष्ठी)। गुहषष्ठी। मध्याह्न में सुब्रमण्यमषष्ठी(कुर्ग)। रवियोग रा.२०।७ तक।
भ.उ. रा.७।२४ से (मृत्यु)। कुम्भराशि (दि.१०।९१)। मित्र(सूर्य)सप्तमी। यायीजययोग रा.७।२४ तक। ❷ रवियोग रा.१।२५ से।
भ.प्रा.७।४ तक (मृत्यु)। रवियोग रा.१०।२२ से। ❸प्रदोष भरणीदीप(द.भा.)। रवियोग रा.६।५८ से पूर्वसर्वार्थअमृतसिद्धियोग। स्थायीजययोग दि.११।२६ तक।
मीनराशि(दि.३।५९)। महानन्दानवमी व्रत। देवी पूजन से विष्णुलोकप्राप्ति। कल्पादि ९। रवियोग समस्त।
भ.रा.३।५५से (मृत्यु)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.८।५७ तक। यायीजययोग रा.८।५० से।
भ.दि.२।२० तक (मृत्यु)। दिसम्बर १२। मेषराशि(रा.७।४४)। मोक्षदा एकादशी ११व्रत सबका। गीताजयन्ती। वैकुण्ठएकादशी(द.भा.)। ❶
भौमप्रदोष १२व्रत। ऋणमुक्ति हेतु श्रेष्ठ। मत्स्यद्वादशी व्रत। अखण्डद्वादशी। व्यजनद्वादशी(उड़ीसा)। दानद्वादशी(उड़ीसा)। ❸
वृषराशि(रा.१०।१६)। अपराह्न चतुर्दशी में पार्वण श्राद्ध। काशी पिशाचमोचन यात्रा। पिशाच मुक्ति हेतु पार्वण श्राद्ध। ❹
भ.प्रा.७।४१से रा.६।३०तक (स्वर्ग)। पूर्णिमा १५। श्रीदत्तात्रेयजयन्ती(प्रदोष)। ❺

❹कपर्दीश्वरदर्शन। गर्भिव्यापिनि पाषाणचतुर्दशी (बङ्गाल)। प्रदोष कृत्तिकादीपम(द.भा.)। ⊙ज्येष्ठा में सूर्य १३।१३ (दि.१।२१)। रवियोग सा.४।१७ तक पूर्व सर्वार्थसिद्धियोग। ❺नगरपरिक्रमा। प्रदोष में वैखानसदीपम (द.भा.)। षोडशी त्रिपुरसुन्दरी जयती। हुर्थीप्रारम्भ (कुर्ग)। यायीजययोग दि.३।२ से पूर्व में यमघण्टयोग।

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विमर्श

ति.१शुक्र दि.२।१९ तक अनुराधा सूर्य युति दिवा ल.१०(दि.१०।४३)इष्ट ६ग्र.व.वि.१५।।(अस्त गुरु)।।

ति.२ शनि सा.३।४८ से मूल रे.१० ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।५७ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।। (७वां चन्द्र अशुभ) या ल.४ (रा.९।२१से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (६वां चन्द्र अशुभ) या ल.६ (रा.२।४३ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१५ या ल.७(रा.३।५६ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१४।

ति.३ रवि रा.६।१ तक मूल में रे.८ दिवाल.१० (दि.१०।३४ से)इष्ट ५ग्र.व.वि.२०।।(७वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।।

ति.४ सोम रा.७।५१ से उ.षा.में रे.७ या ल.३ (रा.६।४१से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।।(७ वां चन्द्र अशुभ) या ल.४ (रा.९।१३ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (६वां चन्द्र अशुभ) या ल.६(रा.२।३५ से) इष्ट ७ ग्र.व.वि.१५।

ति.५ मंगल रा.९।१५तक उ.षा. में रे.७ दिन ल.९ (दि.८।२०से) इष्ट ५ग्र.व.वि.१२।। (८वां गुरु दान) या दिन ल.१०(दि.१०।२६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.२०।।(लग्नस्थ चंद्रदान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।४५से) इष्ट६ ग्र.व.वि.१३।। (८वां चन्द्रअशुभ) या ल.४ (रा. ८।५१से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१३।।(७वां चंद्रअशुभ)।

ति.९ शनि रा.९।५०मेउ.भा. रे.७ल.४(रा.९।५०से)। इष्ट५ ग्र.व.वि.१०या ल.६ (रा.२।२४ से) इष्ट ६ग्र.व.वि.१५ (३स्थ शुक्र अशुभ)।

ति.१०रवि उ.भा.में रे.८ दिवा ल.१० (दि.१०।१४ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५।। (७वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।२३ से)इष्ट ५ग्र.व.वि.१३।। (६वां शुक्र अशुभ) या ल.४(रा.८।३७ से) इष्ट५ ग्र.व.वि.१० रा.८।५७ से रा.१।१७ व्यतिपात पूर्व रे.९रेवती में ल.६ (रा.२।१९ से)इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ (३स्थ शुक्र अशुभ)।

ति.११ सोम रेवती में रे.९ व्यतिपात।

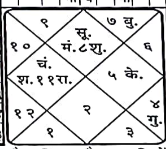
ति.१२ गुरु दि.३।१२ से रोहिणी में रे.८दिन ल.१ (दि.१२।२४ से)इष्ट ५ग्र.व.वि.१४।। (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि(सूर्यास्तकाल) या ल.३ (रा.६।७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (६स्थ शुक्र अशुभ) या ल.४ (रा.८।२१से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१०।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.	वा.	सोम				गति		भौम				गति		वक्रीबुध				गति		गुरु				शुक्र				गति		मार्गीशनि				राहु			
१	शु	७	१३	१९	३३	७२१	३७	७	१७	३०	५९	४५	५४	६	२८	१८	५७	४९	१६	३	३	०	३७	६	२३	४१	३०	७४	५५	१०	२६	५९	२४	१०	१९	५८	५४
२	श	७	२५	२३	४८	७२५	१५	७	१८	१६	५४	४५	५४	६	२७	२९	४०	२३	४१	३	३	०	५५	६	२४	५६	२६	७४	५५	१०	२६	५९	५४	१०	१९	५५	४३
३	र	८	६	३३	३१	७३२	२७	७	१९	२	४९	४५	५४	६	२७	५	५९	२३	४१	३	३	१	१३	६	२६	११	२१	७४	५५	१०	२७	०	२४	१०	१९	५२	३२
४	चं	८	१९	५१	४४	७४३	२५	७	१९	४८	४४	४५	५४	६	२६	४२	१७	२३	४१	व	३	१	३१	६	२७	२६	१७	७४	५५	१०	२७	०	५३	१०	१९	४९	२२
५	मं	९	१	२०	५८	७५६	१८	७	२०	३४	३९	४५	५४	६	२६	१८	३६	२३	४१	३	२	५९	५८	६	२८	४१	१३	७४	५५	१०	२७	१	२३	१०	१९	४६	११
६	बु	९	१५	३	२९	७७२	७	७	२१	२०	३४	४५	५४	६	२५	५४	५४	१७	०	३	२	५६	४०	६	२९	५६	९	७४	५५	१०	२७	१	५३	१०	१९	४३	०
७	गु	९	२८	१	२०	७८८	१०	७	२२	६	२८	४५	५४	मा	२५	३७	५४	७	२५	३	२	५३	२२	७	१	११	५	७४	५५	१०	२७	२	२३	१०	१९	३९	४९
८	शु	१०	११	१४	५१	८०३	४७	७	२२	५२	२३	४५	५४	६	२५	४५	११	७	२५	३	२	५०	३	७	२	२६	१	७४	५५	१०	२७	२	५४	१०	१९	३६	३८
९	श	१०	२४	४३	५३	८१८	५२	७	२३	३८	१८	४५	५४	६	२५	५२	४४	७	२५	३	२	४६	४५	७	३	४०	५७	७४	५५	१०	२७	३	२५	१०	१९	३३	२७
१०	र	११	८	२७	२	८३०	२६	७	२४	२४	१३	४५	५४	६	२६	०	९	७	२५	३	२	४३	२७	७	४	५५	५३	७४	५५	१०	२७	३	५६	१०	१९	३०	१७
११	चं	११	२२	२२	३१	८४२	५०	७	२५	१०	८	४५	५४	६	२६	७	३४	१५	५१	३	२	४०	८	७	६	१०	४९	७४	५५	१०	२७	४	२७	१०	१९	२७	६
१२	मं	०	५	२९	१४	८५१	१८	७	२५	५६	३	४५	५४	६	२६	२३	२५	३४	३३	३	२	३६	५०	७	७	२५	४५	७४	५५	१०	२७	४	५८	१०	१९	२३	५५
१३	बु	०	२०	४४	६	८५८	९	७	२६	४१	५७	४५	४६	६	२६	५७	५९	३४	३३	३	२	३३	३२	७	८	४०	४१	७४	५५	१०	२७	५	२९	१०	१९	२०	४४
१४	गु	१	५	३	१०	८५९	४२	७	२७	२७	४४	४५	४६	६	२७	३२	३३	३४	३३	३	२	३०	१४	७	९	५५	३७	७५	६	१०	२७	७	६	१०	१९	१७	३३

३३पं० मार्गशीर्षशुक्ल८शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०८१
अयनांश२४।१२।३३

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१०	७	६	३	७	१०	१०	४
११	११	२२	२५	२	२	२७	१९	१९
२१	१४	५२	४५	५०	२६	२	३६	३६
२९	५१	२३	१९	३	१	५४	३८	३८
६०	८०३	४५	७	३	७४	०	३	३
५८	४७	५४	२५ मा	१८ व	५५	३१ मा	११	११

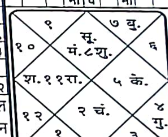


।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ चं. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ चं. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.
वृश्चिक	८	३७	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२
धनु	१०	४३	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८
मकर	१२	३०	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५
कुम्भ	२	१	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६
मीन	३	२९	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४
मेष	५	६	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	७	२	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७
मिथुन	९	१६	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१
कर्क	११	३४	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९
सिंह	१	४८	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३
कन्या	४	१	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६
तुला	६	१७	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२

३४पं० मार्गशीर्षशुक्ल१४गुरु
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०८७
अयनांश२४।१२।३४

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१	७	६	३	७	१०	१०	४
१७	५	२७	२७	२	९	२७	१९	१९
२७	३	२७	३२	३०	५५	७	१७	१७
३९	१०	४४	३३	१४	३७	६	३३	३३
६१	८५९	४५	३४	३	७५	३	३	३
६	४२	४६	३३ मा	१८ व	६	९ मा	११	११



मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.१ शुक्र दि.१।१९ से। ति.३ रवि रा.६।१तक। रेवती/अश्विनी-ति.१० रवि रा.८।५७ से। ति.१२ मंगल रा. ६।१८ तक। पञ्चकविचार-ति.७ गुरु दि. १०।१९ से। ति.११ सोम रा.७।४४ तक।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-ज्येष्ठा।। वक्रीबुध-विशाखा। ति.७ गुरु मार्गी ४१।४७ (रा. ११।२५)।। गुरु-पुनर्वसु ४ चरण। ति.४ सोम वक्री ९।५० (दि.१०।३७)।। शुक्र-विशाखा।। ति.६ बुध वृश्चिक ३।५ (प्रा.७।५५)। ति. ८शुक्र अनुराधा ४३।१४ (रा.१२।०)।। मार्गीशनि-पू.भा. ३ चरण।। राहु-शतभिष में ४ चरण।। केतु-पू.फा.में २ चरण।।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष विचार–पूर्णिमा तिथि की हानि से यह पक्ष चौदह दिन का है। एक राशि में **सूर्य शुक्र** होने से घी, तिल, तेल, खली, मसूर के भावों में वृद्धि तथा भय व्याप्त होगा। पक्ष में तिथि क्षय हो तो सत्ता परिवर्तन, जनकष्ट तथा दुर्भिक्ष होता है। **पक्षविषेश**-शनिवार द्वितीया को दक्षिणदिशा की पवन से कष्ट होगा। **वृश्चिक सूर्य** में इस पक्ष में विवाहादि प्रारंभ होंगे। **२१ नवम्बर** को उत्तरशृंग **चन्द्रदर्शन** से सुभिक्ष होगा। **२४ नवम्बर को वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत** किया जायेगा। **२५ नवम्बर को श्रीरामविवाहोत्सव** का पर्व मनाया जायेगा। **२९ नवम्बर** को महानन्दा **नवमी** को **देवी पूजन** से विष्णुलोक प्राप्ति होती है। **१ दिसम्बर** को अज्ञान नाशक **मोक्षदा**☚ **एकादशी व्रत सबका** तथा **गीता जयन्ती** मनाई जायेगी। आज ही भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा गीता का उपदेश दिया गया था। **२ दिसम्बर** को ऋणमुक्ति हेतु प्रशस्त **भौमप्रदोष व्रत** किया जायेगा। **३ दिसम्बर को** आज अपराह्न चतुर्दशी में पार्वणश्राद्ध तथा **काशी** में **पिशाचमोचन** की यात्रा होगी। **४ दिसम्बर** को **स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा** मनाई जायेगी। प्रदोष पूर्णिमा तिथि में आज भगवान् **दत्तात्रेय की जयंती** मनाई जायेगी।

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। **ति.**१शुक्र अनुराधा सूर्ययुति। **ति.**२ शनि ज्येष्ठा सूर्यभोग्य। **ति.**३रवि सा.४।५६ भद्रा पूर्व मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.**४ सोम पू.षा.में रिक्तादोष। **ति.**५ मंगल उ.षा.में पुंसवन सीमन्त मुहूर्त्त। **ति.**६ बुध श्रवण जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन वाहनक्रय मुहूर्त्त। **ति.**७ गुरु रा.७।२४ भद्रा पूर्व धनिष्ठा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन चौपायों का क्रय विक्रय **दक्षिणदिशा** को त्याग कर यात्रा कुम्भ के चन्द्र में **पश्चिमदिशा** की यात्रा **वधूप्रवेश द्विरागमन (ल.२ सा.४।४०से)** या **द्विरागमन (ल.३ सा.६।३६से)** गृहारंभ(ल.११ दि.१२।४ से लग्न का रा.दा. या ल.२ दि.४।४०से या ल.३ सा.६।३६ से) **जीर्णादिगृहप्रवेश** (ल.९प्रा.८।११ से या ल.११ दि.१२।४ से लग्न का रा.दा.या ल.१२ दि.१।३५ से ८वां बुध दान या ल.३ रा.६।३६ से) मुहूर्त्त। ति.८शुक्र शतभिष राहुयुति। **ति.**९शनि पू.भा.में राहुभुक्त चन्द्र अभुक्त से अशुभ। रा.९।५० रिक्ताबाद उ.भा.में **जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)**मुहूर्त्त। ति.१० रवि रा.१।१७ व्यतिपात पूर्व उ.भा. ● में पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान **विपणि** मुहूर्त्त। **ति.**११ सोम रा.१०।२८ व्यतिपात बाद अश्विनी केतुवेध। **ति.**१३ बुध भरणी धानछेदन मुहूर्त्त। **ति.**१४ गुरु प्रा.७।४ भद्रापूर्व कृत्तिका रिक्तादोष। सा.६।३०भद्रा बाद रोहिणी **गृहारंभ (ल.३ सा.६।३०से)** मुहूर्त्त।

पौषकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १४ अग्रहायण से २८ तिथि तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक ५ दिसम्बर से १९ दिनांक तक सन् २०२५ ई.।

ति.८शुक्र(१२।१२।२५) शुक्रास्त पूर्व में

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमंतऋतु।।

दि.मा	घ.प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि/रा	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सी.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति द	-	रे.अं. -	मि.	चंद्रोदय स्टै.	टा.	पौषकृष्णपक्ष
२६	१६	१	शु	५०	४०	रा	३	१	रोहिणी	१६	३३	दि	१	२२	सिद्ध	८	२३	दि	१०	६	वा	२३	३१	कौ	५०	४०	मित्र	५	१	१४	१९	१९	१४	मिथुन	४४।३४	६	४५	५	१५	७	१८	२८	४५	६१	७	२२	२१	-	१२	५	२२	मिथुनराशि (रा.१२।३५)। मृत्युवाण ३०।४१उ. (रा.७।१)। यमघंटयोग दि.१।२२ तक।
२६	१५	२	श	४५	१७	रा	१२	५१	मृगशिर	१२	३६	दि	११	४७	साध्य	०/५२	३९/३३	प्रा	७/४	०/१	तै	१	५८	गर	४५	१७	वज्र	६	२	१५	२०	२०	१५			६	४५	५	१५	७	१९	२९	५२	६१	८	२२	२९	-	११	६	२९	मृत्युवाण सा.६।३५ तक। द्विपुष्करयोग दि.११।४७ तक।
२६	१४	३	र	४०	२६	रा	१०	५५	आर्द्रा	९	५	दि	१०	२२	शुक्ल	४६	१६	रा	१७	१५	व	१२	५१	भ	४०	२६	ध्वांक्ष	७	३	१६	२१	२१	१६	कर्क	५१।५५	६	४५	५	१५	७	२०	३१	०	६१	८	२२	३६	-	११	७	४०	भ.दि.११।५३ से रा.१०।५५ तक (स्वर्ग)। कर्कराशि (रा.३।३१)। यायीजययोग दि.१०।२२ से।
२६	१२	४	चं	३६	२२	रा	९	१८	पुनर्वसु	६	११	दि	९	१४	ब्रह्म	३९	५७	रा	१०	४४	वव	८	२४	वा	३६	२२	धूम्र	८	४	१७	२२	२२	१७			६	४६	५	१४	७	२१	३२	९	६१	१०	२२	४२	-	१०	८	४८	संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत (चं.उ.रा.८।४८)। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।१४ से।
२६	११	५	मं	३३	९	रा	८	१	पुष्य	४	१०	प्रा	८	२६	ऐन्द्र	३४	२०	रा	८	३०	कौ	४	४५	तै	३३	९	प्रवर्द्धमान	९	५	१८	२३	२३	१८			६	४६	५	१४	७	२२	३३	२०	६१	११	२२	४९	-	१०	९	५२	शुक्रवृद्धत्व प्रारंभ ४३।२२(रा.१२।७)। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.८।२६ से।
२६	१०	६	बु	३१	१	रा	७	१०	श्लेषा	३	१	प्रा	७	५८	वैधृति	२९	३३	रा	६	३५	गर	२	५	व	३१	१	राक्षस	१०	६	१९	२४	२४	१९	सिंह	३।१	६	४६	५	१४	७	२३	३४	३१	६१	१२	२२	५४	-	९	१०	५०	भ.रा.७।१० से (मृत्यु)। सिंहराशि (प्रा.७।५८)। रवियोग प्रा.७।५८ से।
२६	९	७	गु	३०	५	रा	६	४८	मघा	३	१	प्रा	७	५८	विष्कुम्भ	२५	४२	सा	५	२	भ	०	३३	वव	३०	५	मुसल	११	७	२०	२५	२५	२०			६	४६	५	१४	७	२४	३५	४३	६१	१२	२२	५९	-	९	११	४६	भ.प्रा.६।५९ तक (मृत्यु)। रवियोग प्रा.७।५८तक।
२६	८	८	शु	३०	२६	रा	६	५६	पू.फा.	४	११	प्रा	८	२६	प्रीति	२२	५२	सा	३	५४	वा	०	१५	कौ	३०	२६	सिद्धि	१२	८	२१	२६	२६	२१	कन्या	१९।४८	६	४६	५	१४	७	२५	३६	५६	६१	१३	२३	४	-	९	१२	३९	कन्याराशि (दि.२।४१)। कालाष्टमी। पूपाष्टक। अष्टकाश्राद्धम्। पार्वणवदस्यविधि। वैद्धाष्टमी(केरल)। शुक्रास्तपूर्व ४३।२२(रा.१२।७)। ❶
२६	७	९	श	३२	९	रा	७	३८	उ.फा.	६	४०	दि	९	२७	आयुष्मा.	२१	०	दि	३	११	तै	१	१७	गर	३२	९	उत्पात	१३	९	२२	२७	२७	२२			६	४७	५	१३	७	२६	३८	१०	६१	१५	२३	८	-	८	१	३१	अन्वष्टकाश्राद्ध। यायीजययोग दि.९।२७ तक। ❶ स्थायीजययोग प्रा.८।२६तक।
२६	६	१०	र	३४	५७	रा	८	४६	हस्त	१०	२४	दि	१०	५६	सौभाग्य	२०	६	दि	२	४९	व	३	३३	भ	३४	५७	मानस	१४	१०	२३	२८	२८	२३	तुला	४२।४८	६	४७	५	१३	७	२७	३९	२६	६१	१५	२३	१२	-	८	२	२२	भ.प्रा.८।१२ से रा.८।४६ तक (पाताल)। तुलाराशि(रा.११।५४)। सर्वार्थामृतसिद्धियोग दि.१०।५६ तक। पौषदशमी १०(जैन)।
२६	६	११	चं	३८	५९	रा	१०	२२	चित्रा	१५	१२	दि	१२	५१	शोभन	२०	६	दि	२	४९	वव	६	५८	वा	३८	५९	मुद्गर	१५	११	२४	२९	२९	२४			६	४७	५	१३	७	२८	४०	४१	६१	१६	२३	१६	-	७	३	१६	सफला एकादशी ११व्रत सवका। श्रीपार्श्वनाथजयंती (जैन)। ❸ दर्श हवेला अमावस्या(नेपाल)।
२६	५	१२	मं	४३	४७	रा	१२	१७	स्वाती	२०	५५	दि	३	९	अतिगण्ड	२०	४६	दि	३	५	कौ	११	२३	तै	४३	४७	ध्वज	१६	१२	२५	३०	१	२५			६	४७	५	१३	७	२९	४१	५८	६१	१७	२३	१८	-	७	४	१०	नेपालीपौषमास। ⊙सं.मूल व धनु में सूर्य १७।३९ (दि.१।५०)। मु.१५ महँगी। बाद में १६ घटि पुण्य। आज सूर्यास्त तक संक्रान्ति पुण्यकाल। वस्त्र अन्न दान गोदावरी स्नान। खरमासप्रारंभ। ■
२६	४	१३	बु	४९	७	रा	२	२५	विशाखा	२७	१६	सा	५	४१	सुकर्मा	२१	५४	दि	३	३२	गर	१६	२७	व	४९	७	धाता	१७	१३	२६	१	२	२६	वृश्चिक	१०।४१	६	४७	५	१३	८	०	४३	१५	६१	१८	२३	२१	-	६	५	५०	भ.रा.२।२५ से (स्वर्ग)। सौरपौषमास। प्रदोषव्रत। वृश्चिकराशि(दि.११।३)। सर्वार्थामृतसिद्धियोग सा.५।४१ से। ■स्थायीजययोगत्रिपुष्करयोग दि.३।१९ से।
२६	४	१४	गु	५४	३२	रा	४	३५	अनुराधा	३३	५०	रा	८	१९	धृति	२३	१५	सा	४	५	भ	२१	४९	श	५४	३२	आनंद	१८	१४	२७	२	३	२७			६	४७	५	१३	८	१	४४	३३	६१	१९	२३	२३	-	६	६	०	भ.दि.३।३१तक (स्वर्ग)। मासशिवरात्रि १४ व्रत।
२६	४	३०	शु	५९	३५	रा	६	३७	ज्येष्ठा	४०	११	रा	१०	५१	शूल	२४	२९	सा	४	३४	च	२७	३	ना	५९	३५	कालदंड	१९	१५	२८	३	४	२८	धनु	४०।११	६	४७	५	१३	८	२	४५	५३	६१	१९	२३	२४	-	५	-	-	धनुराशि(रा.१०।५१)। अमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष सुख। कपिलधारातीर्थ में श्राद्ध। वकुलअमावास्या–उड़ीसा। कालवादेवी यात्रा(मुम्बई)। ❸

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्ट लग्न विमर्श

ति.१ शुक्र रा.७।१ मृत्युवाण पूर्व रोहिणी में रे.८ दिन ल.१०(दि.९।४४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०(७वां गु.दा.) या दि.१।२२ उ.मृग दिन ल.१(दि. २।३० से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १५।। (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.३(रा.६।३से)इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (६वां शुक्र अशुभ)।

ति.२ शनि मृगशिर में मृत्युवाण।

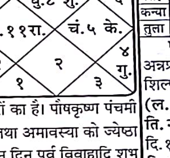
पश्चात शुक्रवृद्धत्व दोषारंभ।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

तिथि	वार	सोम				गति		भौम				गति		मार्गीबुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		मार्गीशनि				राहु			
१	शु	१	१९	२२	५२	८५९	४२	७	२८	१३	३०	४५	४६	६	२८	७	७	३४	३३	३	२	२६	५५	७	११	१०	४३	७५	११	१०	२७	९	८	१०	१९	१४	२२
२	श	२	३	४०	१०	८५६	२२	७	२८	५९	१६	४५	४६	६	२८	४१	४१	४१	५८	३	२	२३	३६	७	१२	२५	५४	७५	११	१०	२७	११	११	१०	१९	११	११
३	र	२	१७	५१	२१	८४९	४८	७	२९	४५	२	४५	४६	६	२९	२३	३९	५४	२४	३	२	२०	१६	७	१३	४१	६	७५	११	१०	२७	१३	१३	१०	१९	८	१
४	चं	३	०	५३	२२	८४०	३७	८	०	३०	४८	४५	४६	७	०	१८	३	५४	२४	३	२	१६	५७	७	१४	५६	१७	७५	११	१०	२७	१५	१५	१०	१९	४	५०
५	मं	३	१५	४२	३१	८२७	४९	८	१	१६	३५	४५	४६	७	१	१२	२८	५४	२४	३	२	१३	३८	७	१६	११	२९	७५	११	१०	२७	१७	१८	१०	१९	१	३९
६	बु	३	२९	२०	०	८१५	३७	८	२	२	२१	४५	४६	७	२	६	५२	५४	२४	३	२	१०	१८	७	१७	२६	४०	७५	११	१०	२७	१९	२०	१०	१८	५८	२८
७	गु	४	१२	३९	४७	८००	०	८	२	४८	७	४५	४६	७	३	१	१६	६१	४५	३	२	६	५९	७	१८	४१	५२	७५	११	१०	२७	२१	२३	१०	१८	५५	१७
८	शु	४	२५	४५	१७	७८४	४४	८	३	३३	५३	४५	४६	७	४	३	२	७०	५४	३	२	१	२४	७	१९	५७	३	७५	११	१०	२७	२३	२५	१०	१८	५२	६
९	श	५	८	३४	३९	७६८	१२	८	४	१९	४०	४५	४६	७	५	१३	५७	७०	५४	३	१	५५	३३	७	२१	१२	१५	७५	११	१०	२७	२५	२८	१०	१८	४८	५६
१०	र	५	२१	९	२७	७५३	८	८	५	५	२६	४५	४६	७	६	२४	५१	७०	५४	३	१	४९	४२	७	२२	२७	२६	७५	११	१०	२७	२७	३१	१०	१८	४५	४५
११	चं	६	२	५८	१८	६३८	९७	८	५	५१	१२	४६	९	७	७	३५	४६	७०	५४	३	१	४३	५०	७	२३	४२	३८	७५	११	१०	२७	२९	३५	१०	१८	४२	३४
१२	मं	६	१५	४५	२२	७३०	२४	८	६	३७	२१	४६	२२	७	८	४६	४०	७५	२३	३	१	३७	५९	७	२४	५७	४९	७५	११	१०	२७	३१	३८	१०	१८	३९	२३
१३	बु	६	२७	५१	१४	७२३	२६	८	७	२३	४४	४६	२२	७	१०	२	४	८०	१७	३	१	३२	८	७	२६	१३	०	७५	२०	१०	२७	३३	४२	१०	१८	३६	१२
१४	गु	७	८	५३	२३	७२९	४	८	८	१०	६	४६	२२	७	११	२२	२१	८०	१७	३	१	२६	१७	७	२७	२८	२१	७५	५८	१०	२७	३५	४६	१०	१८	३३	२
३०	श	७	२१	५५	३०	७२३	२६	८	८	५६	२९	४६	२२	७	१२	४२	३९	८०	१७	३	१	२०	२६	७	२८	४४	१९	७५	५८	१०	२७	३७	४९	१०	१८	२९	५१

३५पं० पौषकृष्ण ८शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०९५
अयनांश २४।१२।३५

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
७	४	८	७	३	७	१०	१०	४
२५	२५	३	४	२	१९	२७	१८	१८
३६	४५	३३	३	१	५७	२३	५२	५२
५६	१७	५३	२	२४	३	२५	६	६
६१	७८४	४५	७०	५	७५	२	३	३
१३	४४	४६	५४	२१	११	२	११	११
			मा	व		मा		

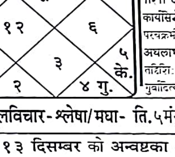


।।दैनिक लग्न सारिणी।।

तिथि ल.अं.	१शु. घं.मि.	२श. घं.मि.	३ र. घं.मि.	४ चं. घं.मि.	५ मं. घं.मि.	६ बु. घं.मि.	७ गु. घं.मि.	८ शु. घं.मि.	९ श. घं.मि.	१०र. घं.मि.	११चं. घं.मि.	१२मं. घं.मि.	तिथि ल.अं.	१३बु. घं.मि.	१४गु. घं.मि.	३०शु. घं.मि.
वृश्चिक	७ ३८	७ ३३	७ २८	७ २४	७ १९	७ १५	७ १०	७ ६	७ १	६ ५७	६ ५२	६ ४८	धनु	८ ५०	८ ४५	८ ४१
धनु	९ ४४	९ ३९	९ ३४	९ ३०	९ २५	९ २१	९ १६	९ १२	९ ७	९ ३	८ ५८	८ ५४	मकर	१० ३७	१० ३२	१० २८
मकर	११ ३१	११ २६	११ २१	११ १७	११ १२	११ ८	११ ३	१० ५९	१० ५४	१० ५०	१० ४५	१० ४१	कुम्भ	१२ ८	१२ ३	११ ५९
कुम्भ	१ २	१२ ५७	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४३	१२ ३९	१२ ३४	१२ ३०	१२ २५	१२ २१	१२ १६	१२ १२	मीन	१ ३६	१ ३१	१ २७
मीन	२ ३०	२ २५	२ २०	२ १६	२ ११	२ ७	२ २	१ ५८	१ ५३	१ ४९	१ ४४	१ ४०	मेष	३ १३	३ ८	३ ४
मेष	४ ७	४ २	३ ५७	३ ५३	३ ४८	३ ४४	३ ३९	३ ३५	३ ३०	३ २६	३ २१	३ १७	वृष	५ ९	५ ४	५ ०
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि
वृष	६ ३	५ ५८	५ ५३	५ ४९	५ ४४	५ ४०	५ ३५	५ ३१	५ २६	५ २२	५ १७	५ १३	मिथुन	७ २३	७ १८	७ १४
मिथुन	८ १७	८ १२	८ ७	८ ३	७ ५८	७ ५४	७ ४९	७ ४५	७ ४०	७ ३६	७ ३१	७ २७	कर्क	९ ४१	९ ३६	९ ३२
कर्क	१० ३५	१० ३०	१० २५	१० २१	१० १६	१० १२	१० ७	१० ३	९ ५८	९ ५४	९ ४९	९ ४५	सिंह	११ ५५	११ ५०	११ ४६
सिंह	१२ ४९	१२ ४४	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३०	१२ २६	१२ २१	१२ १७	१२ १२	१२ ८	१२ ३	११ ५९	कन्या	२ ८	२ ३	१ ५९
कन्या	३ २	२ ५७	२ ५२	२ ४८	२ ४३	२ ३९	२ ३४	२ ३०	२ २५	२ २१	२ १६	२ १२	तुला	४ २४	४ १९	४ १५
तुला	५ १८	५ १३	५ ८	५ ४	४ ५९	४ ५५	४ ५०	४ ४६	४ ४१	४ ३७	४ ३२	४ २८	वृश्चिक	६ ४१	६ ३६	६ ३२

३६पं० पौषकृष्ण ३०शुक्र
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१०२
अयनांश २४।१२।३६

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
८	७	८	७	३	७	१०	१०	४
२	२१	८	१२	१	२८	२७	१८	१८
४५	५५	५६	४२	२०	४४	३७	२९	२९
५३	३०	२९	३९	२६	१९	४९	५१	५१
६१	७२३	४६	८०	५	७५	३	३	३
१९	२६	२२	१७	५१	५८	९	११	११
			मा	व		मा		



भौमादिग्रहों का सञ्चार।।भौम-ज्येष्ठा। ति.३ रवि मूल व धनु में १९।३७(दि.२।३६)।। मार्गीबुध-विशाखा। ति.३ रवि वृश्चिक ४०।६(रा.१०।४७)। ति.७गुरु अनुराधा १८।१२(दि.२।३)।। **वक्रीगुरु**-पुनर्वसु ४ चरण।। **शुक्र**-अनुराधा।। ति.५ मंगल ज्येष्ठा २२।४६(दि.३।५२)। ति.३० शुक्र मूलधनु में ५९।४७ (रा.शे.६।४२)।। **मार्गीशनि**-पू.भा.३ चरण।। **राहु**-शतभिष ४ चरण।। **केतु**-पू.फा.में २ चरण ।।

पौषकृष्णपक्ष विचार–यह पक्ष सामान्य होने से १५ दिनों का है। पौषकृष्ण पंचमी मंगलवार को वर्षा होने पर पृथ्वी पर धान अधिक उत्पन्न हो तथा अमावस्या को ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो अन्न महँगे हों। **१२ दिसम्बर** को **शुक्रास्त** से तीन दिन पूर्व विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध होगा। **ता.१६ दिसम्बर** को **सूर्य का धनुराशि** में प्रवेश से **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। **८ दिसम्बर** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय में रात ८:१० के वाद अर्घ्य दें। **१२ दिसम्बर** को **अष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) होगा।☛

पक्ष में विविधमुहूर्त्त।ति.१ शुक्र रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती विना नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण दंवरी धानरोपण शिल्पविद्या नावनिर्माणमुहूर्त्त। दि.१।२३ से मृगशिर **वधूप्रवेश द्विरागमन (ल.२दि.४।७से) वधूप्रवेश (ल.३सा.६।३से) विपणि** मुहूर्त्त। **द्विरागमन (ल.६ रा.१२।४९ से) वधूप्रवेश (ल.७रा.३।२ से)** मुहूर्त्त। ति.२शनि मृगशिर वाहनक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। दि.११।५३ भद्रा पूर्व आर्द्रा शस्त्रनिर्माण धान छेदन मुहूर्त्त। ति.३ रवि दि.११।५३ भद्रा पूर्व आर्द्रा शस्त्रनिर्माण धानछेदन मुहूर्त्त। ति.४ सोम पुनर्वसु रिक्तादोष। रा.९।१८ रिक्तावाद पुष्य **द्विरागमन (ल.६ रा.१२।३५ से या वधूप्रवेश ल.७ रा.२।४८ से)** मुहूर्त्त। ति.५ मंगल पुष्य पुंसवन सीमन्त सौभाग्यवती विना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। प्रा.८।२६ से श्लेषा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.६ वुध श्लेषा वैधृति। ति.७ गुरु प्रा.६।५९ भद्रावाद मघा दंवरी धानछेदन मुहूर्त्त। प्रा.७।५८ से पू.फा.मे केतुयुति। ति.८ शुक्र पू.भा.मे पूर्वदोष। प्रा.८।२६ से उ.फा.मे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण सौभाग्यवती विना ● नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण दंवरी शिल्पविद्या **विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। ति.९ शनि उ.फा.में रिक्तादोष। ति.१० रवि प्रा.८।१२ भद्रा पूर्व हस्त पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान नवीन आसनप्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण विपणि व्यापार वाहनक्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। ति.११ सोम चित्रा राहुवेध है चंद्र अभुक्त से अशुभ है। ति.१२ मंगल स्वाती राहुवेध। पश्चात मासान्त दोष है।

पौषमास–अथवहुविधप्रश्नानां योगः– प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं सैकपुग्वहिभाजितम्। विषमाङ्के जीवचिन्ता समे धातुः प्रकीर्तितः। मूलं शून्ये विजानीयाच्चास्त्रवचनं यथा।।१।। दृष्टिवशात्प्रश्नकथनम्–स्योनदृष्टे भवेज्जीवं मूलं भूम्यां वलोकने। समावलोकने धातुं केवलदृष्टितः।। राशिवशात्प्रश्न कथनं–द्विपाद चिन्ता अजमे नागणां चतुष्पदानां वृषभे च चिन्ता।। स्याद्गर्भचिन्ता मिथुनाख्यगायां कर्के भवेच्च व्यवहारचिन्ता स्याद्रोगचिन्ता मृगराजराशौ स्याद्धन्याभाग्यवरसुस्थराशौ। वाणिज्य चिन्ता तुलनामिराशौ स्याद् वृश्चिके दुष्टभयादिचिन्ता।। २३।। धनुस्य चापे मकरे कलत्रं स्याद्गर्भचिन्ता घटनाम्नि राशौ। स्थानस्य मीने सुधियो विचिन्त्यो यो बलवान् तस्यादिति।। मम कार्यसिद्धिर्भविष्यति न वेतिप्रश्ने–तात्कालिकलग्नवशाद्विमृशेत्। शीर्षोदयगते लग्ने परिपूर्णेन्दुसंयुते। कार्य सिद्धिविजानीयादितिगर्गेण भाषितम्।।१।। केन्द्रत्रिकोणसंस्थाः सौम्याः पापाः स्व त्रिलाभेषु लाभं सिद्धिं ब्रूयात्कार्याणां प्रीतिगमनं ।।२।। अथाक्षरोपरि प्रश्नाक्षं गद्विगुणितं सैकपुग्वहिभाजितम्। वर्द्धेसिद्धिर्द्विके स्थैर्यं शून्ये शून्यफलं भवेत्।। १।। अथ सर्वप्रश्ने कार्यसिद्धेरवधिकथनम्–शीघ्रं चरस्थे स्थिरभे स्थिरत्वं द्वन्द्वे विलम्बितं च चन्द्रे। कार्यस्य सिद्धिर्विपुलेगनानां परचक्रभीति ।। २।।अथ प्रश्नात्समीपदूर ज्ञानम्– चरे दूरं विजानीयात् स्थिरे लाभं स्वमन्दिरे। द्विस्वभावे वहिर्लाभं ग्रहयोगवशाद्वदेत्।।३।। अथलाभप्रश्ने कस्यां दिशि लाभो भवेदित्यस्य ज्ञानम्। चरे लग्ने शुभदृष्टे लाभे चन्द्र बलान्विते। त्रिकोणकेन्द्रगाः सौम्याः लाभं तद्दिशि।। ४।। केन्द्रगपादे धनेश शुभदृष्टियुतेऽपि वा।। धनुः सङ्क्रमणे सकलशुभानां निषेधमाह–रविक्षेत्रगते भानौ भानुक्षेत्रगते गुरौ गुर्वादित्यः स विज्ञेयः वर्जयेत् सर्वकर्मसु।।

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति.५मंगल प्रा.८।२६ से। ति.७ गुरु प्रा.७।५८ तक। **ज्येष्ठा/मूल-**ति.१४ गुरु रा.८।११ से।

☛**१३ दिसम्बर** को **अन्वष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु किया जायेगा। **१५ दिसम्बर** को **सफला एकादशी व्रत सवका** है। आज जैन धर्म का प्रमुख पर्व **श्री पार्श्वनाथ की जयंती** मनाई जायेगी। **१७ दिसम्बर** को प्रदोष व्रत किया जायेगा। **१८ दिसम्बर** को **मासशिवरात्रि व्रत** होगा। **१९ दिसम्बर** को **स्नान-दान-श्राद्ध अमावस्या** होगी। शुभवार से शुभ है।

पौषशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २९ अग्रहायण से १३ पौष तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक २० दिसम्बर से ३ जनवरी तक सन् २०२५-२६ ई। शुक्रास्त

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमंतऋतु॥

दि.मा घ.प.	तिथि	नक्षत्र	योग	करण	योग	तारीखें अं.फ.हि.सो.ने.रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति द-	रे.अं. +मि.	नक्षत्र स्टे.टा.
२६ ३	१ श ६० ० समस्त	मूल ४५ ५५ रा १ ९	गण्ड २५ १७ सा ४ ५३	किं ३१ ४५ बव ६० ०	गद	२० १६ २९ ४ ५ २९		६ ४७	५ १३	८ ३ ४७ १२	६१ २०	२३ २५	- ५	- -
२६ ३	१ र ३ ५६ प्रा ८ २१	पू.षा. ५० ४६ रा ३ ५	वृद्धि २५ २९ सा ४ ५८	बव ३ ५६ वा ३५ ३४	शुभ	२१ १७ ३० ५ ६ ३०		६ ४७	५ १३	८ ४ ४८ २२	६१ २१	२३ २६	- ४	६ १३
२६ ३	२ चं ७ १३ दि ९ ४०	उ.षा. ५४ ३४ रा ४ ३६	ध्रुव २४ ४७ सा ४ ४१	कौ ७ १३ तै ३८ १९	मृत्यु	२२ १८ १ ६ ७ १	मकर ६।४३	६ ४७	५ १३	८ ५ ४९ ५४	६१ २०	२३ २६	- ४	७ ११
२६ ३	३ मं ९ २६ दि १० ३३	श्रवण ५७ ५ रा ५ ३७	व्याघात २३ १७ सा ४ ५	गर ९ २६ व ३९ ५०	लुम्बक	२३ १९ २ ७ ८ २		६ ४७	५ १३	८ ६ ५१ १४	६१ २१	२३ २६	- ३	८
२६ ३	४ बु १० १४ दि १० ५२	धनिष्ठा ५८ १७ रा ६ ५	हर्षण २० ४१ दि ३ ३	भ १० १४ बव ४० ०	मित्र	२४ २० ३ ८ ९ ३		६ ४७	५ १३	८ ७ ५२ ३६	६१ २१	२३ २५	- ३	९ ६
२६ ४	५ गु ९ ४६ दि १० ४१	शतभिष ५८ २० रा ६ ७	वज्र १७ ९ दि १ ३८	बा ९ ४६ कौ ३८ ५५	वज्र	२५ २१ ४ ९ १० ४	कुम्भ २७।४१	६ ४७	५ १३	८ ८ ५३ ५७	६१ २१	२३ २५	- २	१० ३
२६ ४	६ शु ८ ४ दि १० ०	पू.भा. ५७ १२ रा ५ ३९	सिद्धि १२ ३६ दि ११ ४९	तै ८ ४ गर ३६ ४०	ध्वांक्ष	२६ २२ ५ १० ११ ५	मीन ४२।२९	६ ४७	५ १३	८ ९ ५५ १८	६१ २२	२३ २४	- २	११ ०
२६ ४	७ श ५ १६ दि ८ ५३	उ.भा. ५५ १४ रा ४ ५२	व्यतिपात ७ १४ दि ९ ४०	व ५ १६ भ ३३ २३	धूम्र	२७ २३ ६ ११ १२ ६		६ ४७	५ १३	८ १० ५६ ४१	६१ २३	२३ २२	- २	११ ५८
२६ ५	८ र १ ३१ / ५५ ३४ प्रा ७ ३३ / २३	रेवती ५२ २४ रा ३ ४४	वरियान १ ५३ / ५५ प्रा ७ १३ / ३०	बव १ ३१ वा २३ ५५	प्रवर्द्धमान	२८ २४ ७ १२ १३ ७	मेष ५२।२४	६ ४७	५ १३	८ ११ ५८ ५	६१ २३	२३ १७	- १	१२ ५८
२६ ५	१० चं ४९ ४२ रा २ १०	अश्विनी ४८ ५४ रा २ २०	शिव ४७ ० रा १ ३५	तै २४ १८ गर ४९ ४२	राक्षस	२९ २५ ८ १३ १४ ८		६ ४७	५ १३	८ १२ ५९ २८	६१ २४	२३ १४	- ०	२ २
२६ ६	११ मं ४६ ४ रा १ १३	भरणी ४४ ५५ रा १२ ४६	सिद्ध ३९ २० रा १० ३१	व १८ ५३ भ ४६ ४	मुसल	३० २६ ९ १४ १५ ९	वृष ५८।१७	६ ४७	५ १३	८ १४ ० ५५	६१ २४	२३ १०	- ०	३ १०
२६ ७	१२ बु ४० १२ रा १० ५१	कृत्तिका ४० ५१ रा ११ ७	साध्य ३१ ३० रा ७ २३	बव १३ ८ वा ४० १२	सिद्धि	३१ २७ १० १५ १६ १०		६ ४७	५ १३	८ १५ २ १४	६१ २४	२३ ६	+ ०	४ २९
२६ ८	१३ गु ३४ १८ रा ८ २९	रोहिणी ३६ ४० रा ९ २६	शुभ २३ ३३ सा ४ ११	कौ ७ १५ तै ३४ १८	उत्पात	जन १ २८ ११ १६ १७ ११		६ ४६	५ १४	८ १६ ३ ४२	६५ ४०	२३ १	+ १	५ ३२
२६ ९	१४ शु २८ ३५ रा ६ १२	मृगशिर ३२ ४० रा ७ ५०	शुक्ल १५ ४५ दि १ ४	गर १ २६ व २८ ३५	मानस	२ २९ १२ १७ १८ १२	मिथुन ४।४०	६ ४६	५ १४	८ १७ ५ ८	६१ २५	२२ ५६	+ १	६ ३८
२६ १०	१५ श २३ १४ सा ४ ३	आर्द्रा २९ ५ रा ६ २४	ब्रह्म ८ १३ दि १० ३	वव २३ १४ बा ५० ५०	मुद्गर	३ ३० १३ १८ १९ १३		६ ४६	५ १४	८ १८ ६ ३३	६१ २५	२२ ५१	+ २	- -

◡ चन्द्रदर्शन। उत्तरशृंग सुभिक्ष। मु ३०सामान्य। ⊙सा.मकर में सूर्य ५१।३१(रा.शे.६।३६)। ❶
मु.रज्जब ७ हि.१४४७। रा.पौषमास दि.३०। मकरराशि(दि.९।२८)। उर्मिगोनुदीनचिश्ती (अजमेर) प्रारंभ। ❷
भ.रा.१०।४३से (पाताल)। अङ्गारक वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। रवियोग ग.५।३७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।३३ से।
भ.दि.१०।१४ तक (पाताल)। कुम्भराशि (रा.५।४१)। क्रिसमस ईव(क्रि.)। रवियोग ग.६।५ से।
क्रिसमस डे-बड़ा दिन (क्रि.)। रवियोग ग.६।७ तक। ❸रवियोग ग.शे.४।५२ से। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.६।५३ तक।
मीनराशि (रा.११।४७)। श्रीस्कन्दषष्ठीव्रत। अन्नरूपाषष्ठी व्रत(बंगाल)। तीन दिन तक जोरमेला प्रारम्भ (पंजाब)।
भ.दि.८।५३से रा.४।५२ तक (मृत्यु)। गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती(तिथिमत)। उर्मिगोनुदीनचिश्ती (अजमेर) समापन। ❸
मेषराशि (रा.३।४४)। जोरमेला समापन(पंजाब)। रवियोग समाप्त। सर्वार्थसिद्धियोग ग.३।४४ से।
साम्ब दशमी (उड़ीसा)। सूर्यपूजा (उड़ीसा)। ⊙पू.षा.में सूर्य १२।१४(दि.११।४०)। रवियोग समाप्त। यायीजययोग ग.२।२० से।
भ.दि.१।२०से रा.१।१३तक (स्वर्ग)। वृषराशि (रा.शे.६।२२)। पुत्रदाएकादशी ११व्रत सबका। मन्वादि ११। ❹
कूर्मद्वादशी १२। सर्वार्थसिद्धियोग रा.११।७ तक। ❶ सर्वार्थसिद्धियोगामृतयोग ग.३।५ से।
जनवरी १। खीष्टीयनववर्षारंभ सन् २०२६। प्रदोष १३व्रत। रवियोग ग.९।२६ से यायीजययोग ग.८।२९ तक।
भ.रा.६।१२ से रा.शे.५।८ तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि (दि.८।३८)। चन्द्रदर्शन योग में व्रत की पूर्णिमा १५। ●
पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। अरुद्रदर्शनम(द.भा.)। मु.हजरतअली जयती।

गुलिक प्राणपद साधन

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	वार
७	६	५	४	३	२	१	दिन गुणका
३	२	१	७	६	५	४	रात्रि गुणका

॥सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह॥

ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	वक्रीगुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	राहु
१ श	८ ३ १ ११	७३० १३	८ ९ ४२ ५१	४६ २२	७ १४ २ ५७	८१ १४	३ १ १४ ३५		८ ० ० १७	७५ ५८	१० २७ ४० ५८		१० १८ २६ ४१
१ र	८ १६ १३ ४४	७४० १०	८ १० २९ १३	४६ २२	७ १५ २३ ११	८४ ४०	३ १ ८ ४४		८ १ १६ १५	७५ ५८	१० २७ ४४ १०		१० १८ २३ ३०
२ चं	८ २८ ३५ ५४	७६२ २१	८ ११ १५ ३६	४६ २२	७ १६ ४७ ५२	८८ २८	३ १ २ ५२		८ २ ३२ १३	७५ ५८	१० २७ ४७ २३		१० १८ २० १९
३ मं	९ ११ ९ ३२	७८७ ४७	८ १२ १ ५८	४६ २२	७ १८ १६ २१	८८ ४१	३ ० ५६ ९		८ ३ ४८ ११	७५ ५८	१० २७ ५० ३५		१० १८ १७ ८
४ बु	९ २३ ५८ ८	८२८ ५८	८ १२ ४८ २१	४६ २१	७ १९ ४५ ५	८९ ४१	३ ० ५१ ६		८ ५ ४ ९	७५ ५८	१० २७ ५३ ४७		१० १८ १३ ५७
५ गु	१० ६ २ ५२	७१९ २०	८ १३ ३४ ४२	४६ २१	७ २१ १४ ४५	८९ ४१	३ ० ४५ १६		८ ६ २० ७	७५ ५८	१० २७ ५६ ५९		१० १८ १० ४६
६ शु	१० २० २२ ३५	७५४ ३२	८ १४ २१ ४	४६ २१	७ २२ ४४ २१	९३ ११	३ ० ३९ २४		८ ७ ३६ ५	७५ ५८	१० २८ ० ११		१० १८ ७ ३६
७ श	११ २ ५८ ३०	७६७ ८	८ १५ ७ २६	४६ २१	७ २४ १७ ३९	९५ ३६	३ ० ३३ २३		८ ८ ५२ ३	७५ ५८	१० २८ ३ २३		१० १८ ४ २५
८ र	११ १७ ४६ ४२	८३९ ३९	८ १५ ५३ ४७	४६ २१	७ २५ ४५ १५	९५ ३६	३ ० २७ ४		८ १० ८ ०	७५ ५८	१० २८ ६ ३५		१० १८ १ १४
१० चं	० ० ४७ ३७	८८४ ३३	८ १६ ४० १०	४६ २१	७ २७ २७ ५२	९५ ३६	३ ० १९ २		८ ११ २३ ५९	७५ ५८	१० २८ ९ ४६		१० १७ ५८ ३
११ मं	० १५ ५८ २०	८५५ ११	८ १७ २६ ३१	४६ २१	७ २९ ४ २९	९५ ३३	३ ० ११ ०		८ १२ ३९ ५७	७५ ५८	१० २८ १३ ३		१० १७ ५४ ५२
१२ बु	१ ० १५ २	८५९ ११	८ १८ १२ ५३	४६ २१	८ ० ४० २	९८ ०	३ ० २ ५७		८ १३ ५५ ५५	७६ ९	१० २८ १६ १४		१० १७ ५१ ४२
१३ गु	१ १४ ३४ २८	८५९ ५७	८ १८ ५९ १५	४६ २१	८ २ १८ ३	९९ ९	२ २९ ५४ ५५		८ १५ १२ ५	७६ १३	१० २८ १९ २७		१० १७ ४८ ३१
१४ शु	१ २८ ५३ २०	८५७ ८	८ १९ ४५ ३७	४६ २१	८ ३ ५० १२	९९ ९	२ २९ ४६ ५३		८ १६ २८ १८	७६ १३	१० २८ २२ ३९		१० १७ ४५ २०
१५ श	२ १३ ७ ३६	८५० ४८	८ २० ३१ ५९	४६ २१	८ ५ ३६ २२	९९ ९	२ २९ ३८ ५१		८ १७ २७ २	७६ १३	१० २८ २५ ५३		१० १७ ४२ ९

भौमादिग्रहों का सञ्चार॥ भौम-मूल। ति.४ बुध पू.षा.में ४०।५८ (रा.११।१०)॥ बुध-अनुराधा। ति.१ रवि ज्येष्ठा ५४।२६ (रा.शे.४।३३)। ति.११ मंगल मूलधनु में ३४।५२ (रा.८।४४)॥ वक्रीगुरु-ति.१२ बुध मिथुनराशि पुनर्वसु २२।५ (सा.३।३७)॥ शुक्र-धनुराशि। ति.११ मंगल पू.षा.में ३१।३८ (रा.७।२६)॥ शनि-पू.भा.में ३चरण॥ राहु-शतभिष ४ चरण॥ केतु-पू.फा.में २ चरण॥

३७पं० पौषशुक्ल ८रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१११
अयनांश २४।१२।३७

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
८	११	८	७	३	८	१०	१०	४
११	१७	१५	२५	०	१०	२८	१८	१८
५८	४६	५३	५३	२७	८	६	१	१
५	४२	४८	१५	४	१	३५	१४	१४
६१	८३९	४६	९५	८	७५	३	३	३
२३	३९	२१	३६	४ व	५८	१२	११	११



पौषशुक्लपक्ष विचार-प्रतिपदा तिथि की वृद्धि तथा नवमी की हानि से पक्ष पन्द्रह दिनों का है। महाभारत के अनुसार पौष मास में एक बार भोजन ग्रहण करने से मनुष्य सुन्दर दर्शनीय तथा यश को प्राप्त करता है। वामनपुराण के अनुसार गृह, वाहनादि के दान से दानकर्ता से श्रीहरि प्रसन्न रहते हैं। पक्ष में एकराशि में चारग्रह (चतुग्रही) योग से युद्ध अथवा जल उत्पात से जनहानि होगी। २१ दिसम्बर को उत्तरशृंग चन्द्रदर्शन से सुभिक्ष होगा। २३ दिसम्बर को मंगलवार से अङ्गारक वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत☛

॥दैनिक लग्न सारिणी॥

तिथि / ल.अं.	१श. घं.मि.		१र. घं.मि.		२चं. घं.मि.		३मं. घं.मि.		४बु. घं.मि.		५गु. घं.मि.		६शु. घं.मि.		७श. घं.मि.		८र. घं.मि.		१०चं. घं.मि.		११मं. घं.मि.		१२बु. घं.मि.		१३गु. घं.मि.		१४शु. घं.मि.		१५श. घं.मि.	
धनु	८	३७	८	३२	८	२८	८	२३	८	१९	८	१५	८	१०	८	६	८	२	७	५७	७	५३	७	४९	७	४४	७	४०	७	३६
मकर	१०	२४	१०	१९	१०	१५	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५७	९	५३	९	४९	९	४४	९	४०	९	३६	९	३१	९	२७	९	२३
कुम्भ	११	५५	११	५०	११	४६	११	४१	११	३७	११	३३	११	२८	११	२४	११	२०	११	१५	११	११	११	७	११	२	१०	५८	१०	५४
मीन	१	२३	१	१८	१	१४	१	९	१	५	१	१	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३०	१२	२६	१२	२२
मेष	३	०	२	५५	२	५१	२	४६	२	४२	२	३८	२	३३	२	२९	२	२५	२	२०	२	१६	२	१२	२	७	२	३	१	५९
वृष	४	५६	४	५१	४	४७	४	४२	४	३८	४	३४	४	२९	४	२५	४	२१	४	१६	४	१२	४	८	४	३	३	५९	३	५५
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	७	१०	७	५	७	१	६	५६	६	५२	६	४८	६	४३	६	३९	६	३५	६	३०	६	२६	६	२२	६	१७	६	१३	६	९
कर्क	९	२८	९	२३	९	१९	९	१४	९	१०	९	६	९	१	८	५७	८	५३	८	४८	८	४४	८	४०	८	३५	८	३१	८	२७
सिंह	११	४२	११	३७	११	३३	११	२८	११	२४	११	२०	११	१५	११	११	११	७	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	४९	१०	४५	१०	४१
कन्या	१	५५	१	५०	१	४६	१	४१	१	३७	१	३३	१	२८	१	२४	१	२०	१	१५	१	११	१	७	१	२	१२	५८	१२	५४
तुला	४	११	४	६	४	२	३	५७	३	५३	३	४९	३	४४	३	४०	३	३६	३	३१	३	२७	३	२३	३	१८	३	१४	३	१०
वृश्चिक	६	२८	६	२३	६	१९	६	१४	६	१०	६	६	६	१	५	५७	५	५३	५	४८	५	४४	५	४०	५	३५	५	३१	५	२७

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१शनि मूल सूर्ययुति। ति.१ रवि पू.षा. में भौमभोग्य। ति.२ सोम उ.षा. में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन आभूषणनिर्माण शिल्पविद्या धानछेदन मुहूर्त्त। ति.३ मंगल दि.१०।३३ रिक्तापूर्व श्रवण में पुंसवन सीमन्त रोगविमुक्तस्नान (४र्थी) वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.४ बुध दि.१०।५२ रिक्ताभद्रा बाद धनिष्ठा रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.५ गुरु शतभिष राहुयुति। ति.६ शुक्र पू.भा.में शनियुति। ति.७ शनि प्रा.८।५३ भद्रा पूर्व उ.भा.में व्यतिपात। रा.८।८ भद्रा बाद उ.भा.में सौभाग्यवती बिना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त। ति.८ रवि प्रा.७।२३ रिक्तापूर्व रेवती शिशुताम्बूलभक्षण नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण वाटिकारोपण चौपायों का क्रय विक्रय शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण विपणि वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.१०सोम अश्विनी केतुवेध। ति.१२ बुध कृत्तिका धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१३ गुरु रा.८।३०रिक्तापूर्व रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण ●

३८पं० पौषशुक्ल १५शनि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३०१७
अयनांश २४।१२।३८

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	८	८	२	८	१०	१०	४
१८	१३	२०	५	२९	१७	२८	१७	१७
६	७	३१	३६	३८	२७	२५	४२	४२
३३	३६	५९	२२	५१	२	५३	९	९
६१	८५०	४६	९९	८	७६	३	३	३
२५	४८	२१	९	२ व	१३	२५	११	११



❷ रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग ग.४।३६ से। यायीजययोग दि.१।४०से। ❹ वैकुण्ठएकादशी (द.भा.)। रवियोग ग.१२।४६तक पूर्व यायीजययोग। ● रवियोग ग.३।५० तक। यायीजय योग रात ६।१२ तक।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.१ शनि ग.२।१२ तक। रेवती/ अश्विनी-ति.७ शनि रा.शे.४।५२ से। ति.१० सोम ग.२।२० तक। पञ्चकविचार-ति.४ बुध सा.५।४१ से। ति.८ रवि रा.३।४४ तक।

☛किया जायेगा। २५ दिसम्बर को ईसाई धर्म के अनुयायियों का सबसे बड़ा पर्व क्रिसमस डे (बड़ा दिन) परम्परानुसार मनाया जायेगा तथा भारत के दो महापुरुषों अटल बिहारी वाजपेयी एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के सम्पादक महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती अंग्रेजी तारीख अनुसार आज मनाई जायेगी। ३० दिसम्बर को पुत्रादि लाभ हेतु पुत्रदा एकादशी व्रत सबका किया जायेगा। १ जनवरी को ईसाई अर्थात् अंग्रेजी नववर्ष २०२६ ईस्वी का आरम्भ होगा। पूरे विश्व में शुभकामनाओं का आदान-प्रदान की धूम मचेगी। आज भगवान शिव की कृपा प्राप्ति हेतु प्रदोष व्रत किया जायेगा। २ जनवरी को सूर्यास्त बाद चन्द्रदर्शन प्राप्त होने से व्रत की पूर्णिमा होगी। ३ जनवरी को स्नान-दान की पौषी पूर्णिमा मनाई जायेगी।

● भूम्युपवेशन सूतीस्नान नवीनआसनप्रयोग सौभाग्यवती बिना कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त। आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण देवरी धानरोपण शिल्पविद्या विपणि व्यापार शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.१४ शुक्र रा.६।१२ भद्रापूर्व मृगशिर रिक्तादोष। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। ति.१५ शनि आर्द्रा सूर्यवेध।

उपवास आदि षड्विध कर्म-उपवास-नक्त-आयाचित-व्रत एवं दान भेद से षड्विध कर्म है। उपवास काल अहोरात्र पर्यन्त होता है, जिसमें अहोरात्र पर्यन्त भोजन न करने का आत्म सङ्कल्प होता है। अहोरात्र में द्वितीय भोजनाभाव एवं विशिष्ट मध्याह्न भोजनकृत व्रत एकभक्त,तथा समस्त अहोरात्र में एक बार प्रदोष काल में विशिष्ट भोजन कृत व्रत नक्तव्रत कहलाता है। अयाचित (बिना माँगे ही प्राप्त) भोजन को एक बार करना आयाचित व्रत होता है, ये भोजन भी मध्याह्नादि अहोरात्र के विशेष अंशों में ही किया जाता है तथा दान एवं व्रत भी प्रात: आदि काल भेद एवं उस काल की व्यापिनी तिथि से सम्बन्धित होते हैं।

माघकृष्णपक्ष

राष्ट्रीय तिथि १४ पौष से २८ दिनांक तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक ४ जनवरी से १८ दिनांक तक सन् २०२६ ई।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमंतऋतु।।

दि.मा	घ.प.	तिथि							नक्षत्र						योग						करण						योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश		सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति द	-	रे.अं. +	मि.	बेलेन्द्र	सै.द्य.
२६	११	१	र	१८	२६	दि	२	८	पुनर्वसु	२६	३	सा	५	११	ऐन्द्र	१ ५३	४ २६	प्रा	७ ४	११ ३४	कौ	१८	२६	तै	४६	२७	ध्वज	४	१	१४	१९	२०	१४	कर्क	११।४८	६	४६	५	१४	८	१९	७	५९	६१	२५	२२	५४	+	३	६	२४
२६	१२	२	चं	१४	२८	दि	१२	३३	पुष्य	२३	५३	सा	४	१९	विष्कुम्भ	४८	३९	रा	२	१३	गर	१४	२८	व	४२	५५	धाता	५	२	१५	२०	२१	१५			६	४६	५	१४	८	२०	९	२४	६१	२४	२२	३८	+	३	७	३२
२६	१३	३	मं	११	२२	दि	११	१८	श्लेषा	२२	३१	सा	३	४५	प्रीति	४३	३५	रा	१२	११	भ	११	२२	बव	४०	२१	आनंद	६	३	१६	२१	२२	१६	सिंह	२२।३१	६	४५	५	१५	८	२१	१०	४९	६१	२४	२२	३१	+	४	८	३५
२६	१४	४	बु	९	२०	दि	१०	२९	मघा	२२	१५	सा	३	३९	आयुष्मा.	३९	२५	रा	१०	३१	वा	९	२०	कौ	३८	५५	चर	७	४	१७	२२	२३	१७			६	४५	५	१५	८	२२	१२	१३	६१	२४	२२	२४	+	४	९	३४
२६	१६	५	गु	८	३१	दि	१०	९	पू.फा.	२३	११	सा	४	१	सौभाग्य	३६	१२	रा	९	१३	तै	८	३१	गर	३८	४६	गद	८	५	१८	२३	२४	१८	कन्या	३८।४४	६	४५	५	१५	८	२३	१३	३८	६१	२३	२२	१६	+	५	१०	२९
२६	१७	६	शु	९	१	दि	१०	२१	उ.फा.	२५	२४	सा	४	५४	शोभन	३४	०	रा	८	२१	व	९	१	भ	३९	५६	शुभ	९	६	१९	२४	२५	१९			६	४५	५	१५	८	२४	१५	१	६१	२३	२२	८	+	५	११	२३
२६	१९	७	श	१०	५२	दि	११	५	हस्त	२८	५३	रा	६	१७	अतिगण्ड	३२	५०	रा	७	५२	बव	१०	५२	वा	४२	२०	मृत्यु	१०	७	२०	२५	२६	२०			६	४४	५	१६	८	२५	१६	२५	६१	२२	२२	०	+	५	१२	१९
२६	२१	८	र	१३	४८	दि	१२	१५	चित्रा	३३	२८	रा	८	७	सुकर्मा	३२	३१	रा	७	४४	कौ	१३	४८	तै	४५	५२	पद्म	११	८	२१	२६	२७	२१	तुला	१।११	६	४४	५	१६	८	२६	१८	४७	६१	२१	२१	५०	+	६	१	९
२६	२२	९	चं	१७	५६	दि	१	५४	स्वाती	३९	३	रा	१०	२१	धृति	३२	५९	रा	७	५५	गर	१७	५६	व	५०	२२	छत्र	१२	९	२२	२७	२८	२२			६	४४	५	१६	८	२७	१९	८	६१	२१	२१	४१	+	६	२	३
२६	२४	१०	मं	२२	४९	सा	३	५१	विशाखा	४५	१७	रा	१२	५०	शूल	३३	५९	रा	८	१९	भ	२२	४९	बव	५५	३०	श्रीवत्स	१३	१०	२३	२८	२९	२३	वृश्चिक	२८।४३	६	४३	५	१७	८	२८	२०	३०	६१	२१	२१	३१	+	७	२	५०
२६	२६	११	बु	२८	१२	रा	५	५९	अनुराधा	५१	५१	रा	३	२७	गण्ड	३५	१८	रा	८	५०	वा	२८	१२	कौ	६०	०	सौम्य	१४	११	२४	२९	१	२४			६	४३	५	१७	८	२९	२१	५१	६१	२०	२१	२१	+	७	३	४३
२६	२८	१२	गु	३३	३८	रा	८	९	ज्येष्ठा	५८	१७	रा	६	१	वृद्धि	३६	३७	रा	९	२१	कौ	०	५५	तै	३३	३८	कालदंड	१५	१२	२५	१	२	२५	धनु	५८।१७	६	४२	५	१८	९	०	२३	१२	६१	१९	२१	१०	+	७	४	४४
२६	३०	१३	शु	३८	३९	रा	१०	१०	मूल	६०	०	समस्त			ध्रुव	३७	३५	रा	९	४४	गर	६	८	व	३८	३९	स्थिर	१६	१३	२६	२	३	२६			६	४२	५	१८	९	१	२४	३१	६१	१८	२०	५९	+	८	५	३९
२६	३२	१४	श	४२	५७	रा	११	५२	मूल	४	१२	प्रा	८	२३	व्याघात	३८	२	रा	९	५४	भ	१०	४८	श	४२	५७	गद	१७	१४	२७	३	४	२७			६	४२	५	१८	९	२	२५	५०	६१	१८	२०	४७	+	८	६	२९
२६	३४	३०	र	४६	८	रा	१	८	पू.पा.	९	१९	दि	१०	२४	हर्षण	३७	४१	रा	९	४५	च	१४	३२	ना	४६	८	शुभ	१८	१५	२८	४	५	२८	मकर	२५।१९	६	४१	५	१९	९	३	२७	९	६१	१७	२०	३६	+	८	-	-

[illegible] माघ में मूली भक्षण न करें। माघस्नान [illegible] ❶

कर्कराशि(दि.११।४८)। किसी एक तीर्थ को स्वीकार कर माघ पर्यन्त प्रयाग स्मरण कर तीर्थ जल से नित्यस्नान करें। [illegible] सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।१९ तक।

भ.रा.११।५६ से (मृत्युलोक)। गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती(नवीनमत)। सर्वार्थसिद्धियोग [illegible]

भ.दि.११।१८ तक (मृत्युलोक)। सिंहराशि (रा.३।५४)। [illegible]

❷ [illegible] सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।१९ से।

कन्याराशि(रा.१०।४५)। रवियोग सा.४।१ से। ❶ [illegible] सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।४९ से।

भ.दि.१०।२१ से रा.१०।५३ तक (पाताल)। रवियोग सा.४।५४ तक। ❸ [illegible] दि.११।५ तक। [illegible] सा.६।१७ तक।

प्रदोष कालाष्टमी। स्वामी विवेकानन्द जयंती(तिथिमत)। [illegible]

तुलाराशि (दि.७।११)। [illegible] ⊙उ.षा.में सूर्य २२।४३(दि.३।२५)।

भ.रा.२।५३ से (पाताल)। राष्ट्रीय युवादिवस। स्वामी विवेकानन्द जयंती(नवीनमत)। [illegible] दि.१।५४ तक।

भ.दि.३।५१ से (पाताल)। वृश्चिकराशि (रा.६।४२)। लोहड़ी(पंजाब)। भोगी(द.भा.)।

ने.माघमास। षट्तिला एकादशीव्रत सबका ⊙संक्रान्ति मकर में सूर्य ३०।१९(रा.९।३८) [illegible]

सौरमाघमास। धनुराशि (रा.शे.६।१)। पोंगल(द.भा.)। [illegible] मकरसंक्रान्ति(गुजरात)।

भ.रा.१०।१० से (पाताल)। प्रदोष १३ व्रतम्। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। [illegible]

भ.दि.११।९ तक (पाताल)। [illegible]

मकरराशि (रा.१।५९)। मौनीअमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। [illegible] ❹

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.		सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	र	२	२७	१४	१०	८४२	३५	८	२१	१८	२०	४६	२१	८	१	१५	३१	१००	११	२	२९	३०	४९	८	१९	०	४५	७६	१३	१०	२८	२९	१८	१०	१७	३८	५८
२	चं	३	११	९	३८	८२९	५८	८	२२	४	४२	४६	२१	८	८	५५	५१	१०४	८	२	२९	२२	४७	८	२०	१६	५९	७६	१३	१०	२८	३३	४०	१०	१७	३५	४८
३	मं	३	२४	५२	४७	८१८	३८	८	२२	५१	४	४६	२१	८	१०	३९	५९	१०५	१७	२	२९	१४	४५	८	२१	३३	१२	७६	१३	१०	२८	३८	१	१०	१७	३२	३७
४	बु	४	८	२२	१	८०३	३४	८	२३	३७	२६	४६	२१	८	१२	२५	१७	१०५	१७	२	२९	६	४३	८	२२	४९	२६	७६	१३	१०	२८	४२	२३	१०	१७	२९	२६
५	गु	४	२१	३५	३७	७८७	४४	८	२४	२३	४८	४६	२१	८	१४	१०	३५	१०५	१७	२	२८	५८	४०	८	२४	५	३९	७६	१३	१०	२८	४६	४४	१०	१७	२६	१५
६	शु	५	४	३३	२४	७७१	२९	८	२५	१०	९	४६	२१	८	१५	५५	५३	१०५	१६	२	२८	५०	३८	८	२५	२१	५३	७६	१३	१०	२८	५१	६	१०	१७	२३	४
७	श	५	१७	१६	१	७५६	६	८	२५	५६	३१	४६	२१	८	१७	४१	९	१०६	१९	२	२८	४२	३६	८	२६	३८	७	७६	१३	१०	२८	५५	२७	१०	१७	१९	५४
८	र	५	२९	४५	२७	७४३	१३	८	२६	४२	५१	४६	२१	८	१९	२७	२९	१०६	२९	२	२८	३४	३४	८	२७	५४	२०	७६	१३	१०	२८	५९	४९	१०	१७	१६	४३
९	चं	६	१२	३	४०	७३१	५३	८	२७	२९	१५	४६	२१	८	२१	१३	५९	१०६	२९	२	२८	२६	३२	८	२९	१०	३४	७६	१३	१०	२९	४	१०	१०	१७	१३	३२
१०	मं	६	२४	१३	३	७२४	४२	८	२८	१५	३७	४६	२१	८	२३	०	२८	१०६	२९	२	२८	१८	३०	९	०	२६	४७	७६	१३	१०	२९	८	३१	१०	१७	१०	२१
११	बु	७	६	१६	५२	७२१	४	८	२९	१	५८	४६	२१	८	२४	४६	५८	१०७	०	२	२८	१०	२८	९	१	४३	१	७६	१३	१०	२९	१२	५४	१०	१७	७	१०
१२	गु	७	१८	१८	९	७२२	३१	८	२९	४८	२०	४६	२१	८	२६	३३	५९	१०८	३८	२	२८	२	२६	९	२	५९	१४	७६	१३	१०	२९	१७	१६	१०	१७	४	०
१३	शु	८	०	२०	५०	७२८	११	९	०	३४	४२	४६	२१	८	२८	२२	३८	१०८	३८	२	२७	५४	२३	९	४	१५	२८	७६	१३	१०	२९	२१	३८	१०	१७	०	४९
१४	श	८	१३	२०	०	७३२	१७	९	१	२१	४	४६	२१	९	०	११	१७	१०८	३८	२	२७	४६	२१	९	५	३१	४२	७६	१३	१०	२९	२६	१	१०	१६	५७	३८
३०	र	८	२४	४५	३२	७३७	८	९	२	७	२६	४६	२१	९	१	५९	५६	१०८	३९	२	२७	३८	१९	९	६	४७	५५	७६	१३	१०	२९	३०	२३	१०	१६	५४	२७

३९पं० माघकृष्ण ८रवि सूर्योदय से स्पष्टग्रह ध्रुगण ३११५ अयनांश २४।१२।३९

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
८	५	८	८	२	८	१०	१०	४
२६	२९	२६	१९	२८	२७	२८	१७	१७
१७	४५	४२	२७	३४	५४	५९	१६	१६
४७	२७	५१	२९	३४	२०	४९	४३	४३
६१	७४३	४६	१०६	८	७६	४	३	३
२१	१३	२१	२९	२ व	१३	२१	११	११



भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-पू.षा.में।। ति.७ शनि उ.षा.में ५६।१८ (रा.शे.५।१५)।। ति.१२ गुरु मकर १५।१५ (दि.१२।४४)।। बुध-मूल।। ति.४ बुध पू.षा.में ३२।१२(रा.७।१३)।। ति.१२ गुरु उ.षा.में ३।२० (प्रा.८।२)।। ति.१३ शुक्र मकर ५३।४७ (रा.४।१३)।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु ३ चरण।। शुक्र-पू.षा.में।। ति.७ शनि उ.षा.में १।२९ (प्रा.७।२०)।। ति.९ सोम मकर ३८।५५ (रा.१०।१८)।। शनि-पू.भा.में ३ चरण।। राहु-शतभिष में ४ चरण।। केतु-पू.फा.में २ चरण।।

माघकृष्णपक्ष विचार–यह पक्ष सामान्य रूप से पन्द्रह दिनों का है। आज से **माघ स्नान का व्रत** नियम प्रारंभ होगा। प्रतिदिन काशी के दशाश्वमेध तीर्थ तथा प्रयाग तीर्थ में स्नान का विधान है। गंगा आदि किसी एक तीर्थ को स्वीकार कर माघ पर्यन्त प्रयाग तीर्थ का स्मरण करके तीर्थजल में नित्य स्नान करें। माघ मास में मूली भक्षण न करें। आज से **प्रयाग में माघ मेला** प्रारंभ हो जायेगा। माघ मास में प्रतिपदा को पवन तथा मेघ (बादल) न हो तो सुगन्धित पदार्थ महँगे☛

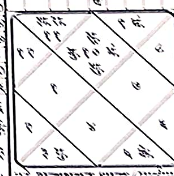
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.ओ.	१र. घं.	मि.	२चं. घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९चं. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	तिथि ल.अं.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
धनु	७	३२	७	२८	७	२२	७	१८	७	१३	७	९	७	४	६	५९	६	५५	६	५०	६	४६	मकर	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६
मकर	९	१९	९	१४	९	९	९	५	९	०	८	५६	८	५१	८	४६	८	४२	८	३८	८	३३	कुम्भ	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७
कुम्भ	१०	५०	१०	४५	१०	४०	१०	३६	१०	३१	१०	२७	१०	२२	१०	१८	१०	१३	१०	८	१०	४	मीन	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५
मीन	१२	१८	१२	१३	१२	९	१२	४	११	५९	११	५५	११	५०	११	४५	११	४१	११	३६	११	३२	मेष	१	४	१	०	१२	५५	१२	५१
मेष	१	५५	१	५०	१	४५	१	४१	१	३६	१	३२	१	२७	१	२२	१	१८	१	१३	१	९	वृष	३	०	२	५६	२	५१	२	४७
वृष	३	५५	३	४६	३	४१	३	३७	३	३२	३	२८	३	२३	३	१८	३	१४	३	९	३	५	मिथुन	५	१४	५	१०	५	६	५	२
ल.ओ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	६	५	६	०	५	५५	५	५१	५	४६	५	४२	५	३७	५	३२	५	२८	५	२३	५	१९	कर्क	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०
कर्क	८	२३	८	१८	८	१३	८	९	८	४	८	०	७	५५	७	५०	७	४६	७	४१	७	३७	सिंह	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१
सिंह	१०	३७	१०	३२	१०	२७	१०	२३	१०	१८	१०	१४	१०	९	१०	४	१०	०	९	५५	९	५१	कन्या	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७
कन्या	१२	५०	१२	४५	१२	४०	१२	३६	१२	३१	१२	२७	१२	२२	१२	१७	१२	१३	१२	८	१२	४	तुला	२	[illegible]	२	११	२	७	२	३
तुला	३	५	३	१	२	५६	२	५२	२	४७	२	४३	२	३८	२	३३	२	२९	२	२४	२	२०	वृश्चिक	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०
वृश्चिक	५	२३	५	१८	५	१३	५	९	५	४	५	०	४	५५	४	५०	४	४६	४	४१	४	३७	धनु	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६

पक्ष में विविधमुहूर्त। ति.१रवि पुनर्वसु सूर्यवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है।। ति.२ सोम रा.११।५६ भद्रापूर्व पुष्य जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय कर्क चन्द्र में **पश्चिमदिशा** की यात्रा नये अन्नभक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन **विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त। ति.३ मंगल श्लेषा भद्रा रिक्तादोष। ति.४ बुध मघा रिक्तादोष। दि.१०।२९ रिक्ताबाद मघा देवरी **बीजोप्ति** धानछेदन मुहूर्त। ति.५ गुरु पू.फा.में केतुयुति। सा.४।१ से उ.फा.मे नवीन आसनप्रयोग सौभाग्यवती बिना नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण देवरी धानरोपण **विपणि** धानछेदन मुहूर्त। ति.६ शुक्र दि.१०।२१ भद्रापूर्व उ.फा.में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती बिना नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण देवरी धानरोपण शिल्पविद्या **विपणि** धानछेदन मुहूर्त। ति.७ शनि हस्त कालावस्त्रनीलमादिरत्नधारण बीजोप्ति वाहन क्रय मुहूर्त।●

४०पं० माघकृष्ण ३०रवि सूर्योदय से स्पष्टग्रह ध्रुगण ३११२ अयनांश २४।१२।४०

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



● ति.८ रवि दि.१२।१५ रिक्तापूर्व चित्रा [illegible] ति.९ सोम स्वाती राहुवेध। ति.१० भौम [illegible] दि.३।५१ पश्चाद विशाखा में [illegible] मुहूर्त। ति.११ बुध अनुराधा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण सूतिकास्नान नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण पश्चिमदिशा यात्रा देवरी नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या हलप्रवहण विपणि वाहनक्रय मुहूर्त। ति.१२ गुरु ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रय विक्रय देवरी [illegible] मुहूर्त। [illegible] दोष है।

मूलविचार- अश्लेषा मघा-ति.२ सोम सा.४।१९ से ति.४ बुध सा.३।३९ तक ज्येष्ठा मूल- ति.११ बुध रा.३।२७ से ति.१४ शनि प्रा.८।२३ तक।

☛ [illegible] माघ गणेश चौथ व्रत [illegible] इस ६ जनवरी को अंगारकी संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कर रात ८।३५ पर चन्द्रोदय में अर्घ्य दिया जायेगा। आज के दिन श्री गणेश जी की उत्पत्ति हुई थी, इसे सकटचौथ व तिलकुटी चौथ भी कहते हैं। १० जनवरी को अष्टका श्राद्ध (पार्वणविधि) होगा। आज स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती तथा स्वामी विवेकानन्द जयंती मनाई जायेगी। ११ जनवरी को अन्वष्टका श्राद्ध (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु होगा। १३ जनवरी को पंजाब के क्षेत्र में लोहड़ी का पर्व तथा दक्षिण भारत में भोगी मनाई जायेगी। १४ जनवरी को मकर के सूर्य रात्रि ९।३८ पर प्रवेश करेंगे। अतः दूसरे दिन १५ जनवरी को सूर्योदय उपरान्त मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल रहेगा। संक्रान्ति पर पवित्र गंगा नदी एवं अन्य नदियों के तीर्थ अथवा तालाब, कुँआ आदि पर स्नान करके दान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। अन्न वस्त्र, स्वेटर, शाल, कम्बल, घृत तथा धार्मिक पुस्तकें एवं पंचांग का दान विशेष पुण्य फल देने वाला होता है। आज से खरमास समाप्त होगा (शेष पेज [illegible]

माघशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २६ पौष से १२ माघ तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक १६ जनवरी से १ फरवरी तक सन् २०२६ ई.। ति.१५ रवि (१।२।२६) शुक्रोदय पश्चिम

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा.	घ.प.	तिथि						नक्षत्र						योग						करण						योग	अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				गति		क्रान्ति व	-	रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	३६	१	चं	४८	१६	रा	१	५९	उ.षा.	१३	१९	दि	१२	०	वज्र	३६	३१	रा	९	१७	किं	१७	१२	बव	४८	१६	मृत्यु	१९	१६	२९	५	६	२९			६	४१	५	१९	९	४	२८	२६	६१	१७	२०	२३	+	९	-	-
२६	३९	२	मं	४८	५९	रा	२	१५	श्रवण	१६	९	दि	१	७	सिद्धि	३४	२०	रा	८	२४	बा	१८	३७	कौ	४८	५९	लुम्बक	२०	१७	३०	६	७	३०	कुम्भ	४६।५६	६	४०	५	२०	९	५	२९	४४	६१	१४	२०	११	+	९	७	१
२६	४१	३	बु	४८	२४	रा	२	१	धनिष्ठा	१७	४२	दि	१	४४	व्यतिपात	३१	७	रा	७	६	तै	१८	४१	गर	४८	२४	मित्र	२१	१८	१	७	८	१			६	४०	५	२०	९	६	३०	५८	६१	१४	१९	५७	+	९	७	५८
२६	४३	४	गु	४६	३६	रा	१	१७	शतभिष	१८	२	दि	१	५१	वरियान	२६	५७	सा	५	२५	व	१७	३०	भ	४६	३६	वज्र	२२	१९	२	८	९	२			६	३९	५	२१	९	७	३२	१३	६१	१२	१९	४४	+	१०	८	५५
२६	४६	५	शु	४३	४४	रा	१२	८	पू.भा.	१७	१२	दि	१	३१	परिघ	२१	५४	दि	३	२४	बव	१५	१०	बा	४३	४४	ध्वांक्ष	२३	२०	३	९	१०	३	मीन	२।२४	६	३९	५	२१	९	८	३३	२६	६१	१२	१९	३०	+	१०	९	५३
२६	४८	६	श	३९	५५	रा	१०	३६	उ.भा.	१५	२३	दि	१२	४७	शिव	१६	३	दि	१	३	कौ	११	४९	तै	३९	५५	धूम्र	२४	२१	४	१०	११	४			६	३८	५	२२	९	९	३४	३९	६१	११	१९	१६	+	१०	१०	५२
२६	५१	७	र	३५	१५	रा	८	४४	रेवती	१२	४३	दि	११	४३	सिद्ध	९	२९	दि	१०	२५	गर	७	३५	व	३५	१५	प्रवर्द्धमान	२५	२२	५	११	१२	५	मेष	१२।४३	६	३८	५	२२	९	१०	३५	५०	६१	१०	१९	१	+	१०	११	५३
२६	५४	८	चं	३०	१	रा	६	३७	अश्विनी	९	२२	दि	१०	२१	साध्य	२ ५२	५२ २९	प्रा	७ ४	४५ ५५	भ	२	३८	वव	३० ५७	१ ११	राक्षस	२६	२३	६	१२	१३	६			६	३७	५	२३	९	११	३७	१	६१	१०	१८	४७	+	११	१२	५८
२६	५६	९	मं	२४	२२	सा	४	२१	भरणी	५	३३	दि	८	५०	शुक्ल	४७	५	रा	१	२७	कौ	२४	२२	तै	५१	२६	मुसल	२७	२४	७	१३	१४	७	वृष	१९।३२	६	३७	५	२३	९	१२	३८	११	६१	९	१८	३१	+	११	२	५
२६	५९	१०	बु	१८	३०	दि	२	०	कृत्तिका	१ ५५	२८ ४८	प्रा	७ ५	११ ३०	ब्रह्म	३९	१०	रा	१०	१६	गर	१८	३०	व	४५	३३	सिद्धि	२८	२५	८	१४	१५	८			६	३६	५	२४	९	१३	३९	२०	६१	८	१८	१६	+	११	३	१४
२७	२	११	गु	१२	३७	दि	११	३८	मृगशिर	५३	१४	रा	३	५३	ऐन्द्र	३१	२२	रा	७	८	भ	१२	३७	वव	३९	४६	मृत्यु	२९	२६	९	१५	१६	९	मिथुन	२५।१५	६	३६	५	२४	९	१४	४०	२८	६१	६	१८	०	+	११	४	२०
२७	५	१२	शु	६	५६	दि	९	२१	आर्द्रा	४९	३३	रा	२	२४	वैधृति	२३	४५	सा	४	५	वा	६	५६	कौ	३४	१७	पद्म	३०	२७	१०	१६	१७	१०			६	३५	५	२५	९	१५	४१	३५	६१	५	१७	४४	+	११	५	२०
२७	८	१३	श	१ ५५	३९ १५	प्रा	७ ५	१४ २०	पुनर्वसु	४६	२२	रा	१	७	विष्कुम्भ	१६	२९	दि	१	१०	तै	१	३९	गर	२९ ५६	१६ ५४	छत्र	३१	२८	११	१७	१८	११	कर्क	३२।९	६	३५	५	२६	९	१६	४२	४१	६१	४	१७	२७	+	१२	६	१२
२७	१०	१५	र	५३	०	रा	३	४६	पुष्य	४४	१	रा	१२	१०	प्रीति	९	४६	दि	१०	२८	भ	२४	५७	वव	५३	०	श्रीवत्स	फ	२९	१२	१८	१९	१२			६	३४	५	२६	९	१७	४३	४५	६१	३	१७	१०	+	१२	-	-

माघ में अशक्तजनों हेतु अंत के तीनदिन स्नान का विधान। वल्लभजयंती १। गुप्तनवरात्र(नोड़ता)प्रारंभ। यायीजययोग दि.२२।०तक पश्चात्सर्वार्थसिद्धियोग।

कुम्भराशि (रा.१।२६)। ◡ चन्द्रदर्शन। समशृंग सामान्य। मु.३०समान्य। ⊙सायनकुम्भ सूर्य १८।५५(दि.२।२४)। त्रिपुष्करयोग दि.२।७ से। ❶ सोमपदा ४। वेदाध्ययनत्याग। रवियोग दि.१।५१ तक।

मु.सावान ८ हि.१४४७। रा.माघमास दि.३०। हेमूकलाणी शहीद दिवस (सिन्ध)। ⊙अभिजित्प्रविष्टोसूर्य ८।५२(दि.१०।२२)। रवियोग दि.१।४४ तक।

भ.दि.१।३९ से रा.१।१७ तक (मृत्यु)। वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत। प्रदोष कुन्द ४चतुर्थी कुन्दपुष्प से शिवपूजन। सप्ताह गणेश जयती। तिल ४। वरदाचतुर्थी (बङ्गाल)। ❶

मीनराशि (प्रा.७।३७)। पूर्वाह्न श्रीवसन्तपञ्चमी। सरस्वतीपूजा। वागीश्वरीजयन्ती यात्रा। रतिकाममहोत्सव। श्री ५। मदनपञ्चमी। तक्षकपूजा। मत्याधार(लेखनीपूजा) बङ्गाल। ❷

श्रीशीतलाषष्ठी(बङ्गाल)। श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत। ⊙श्रवण में सूर्य २४।५१(सा.४।३४)। रवियोग दि.१२।४७तक पुन रवियोग सा.४।३४ से। यायीजययोग रा.१०।३६ से।

भ.रा.८।४४ से (स्वर्ग)। मेषराशि(दि.११।४३)। मन्वादि ७। रथसप्तमी। अरुणोदय सप्तमी में स्नान। अचलासप्तमी व्रत। विधानसप्तमी। आरोग्यसप्तमी। ❸

भ.प्रा.७।४०तक (स्वर्ग)। भीष्माष्टमी। भीष्म के निमित्त श्राद्धतर्पण। श्राद्धकार्य द्वारा संतान प्राप्ति होती है। भारतीय गणतंत्र दिवस। ध्वजआरोहण–राष्ट्रगान–विविध उत्सव का आयोजन। ✖

वृषराशि(दि.२।२६)। महानन्दानवमी। श्रीहरसूब्रह्मदेवजयन्ती। नैनपुर–भभुआ(बिहार)। पुष्पाञ्जली व्रत समाप्त(जैन)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग प्रा.८।५० से।

भ.रा.१२।४९ से (स्वर्ग)। रवियोग रा.शे.५।३०तक। यायीजययोग दि.२।० से। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.७।११ तक। ❹ सन्तानद्वादशी। [illegible]। गुरुगोरखनाथजयंती। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग रा.२।२४ से।

भ.दि.११।३९ तक (स्वर्ग)। मिथुनराशि(सा.४।४२)। जयाएकादशी ११व्रत सबका। भक्तपुण्डरीक उत्सव(पण्ढरपुर)। भैमीएकादशी(बङ्गाल)। ✖ यायीजययोग रा.६।३७ से।

दि.९।२१ तक एकादशीपारण। प्रदोष १३ व्रत। भीष्मद्वादशी १२। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तर्पण। तिलद्वादशी १२। आज तिल द्वारा विष्णु पूजन हेतु कार्य। सोमपदा १२। वेदाध्ययन का निषेध। अनध्यायद्वादशी। ❹

भ.रा.शे.५।२० से (मृत्यु)। कर्कराशि (रा.७।२७)। कल्पादि १३। मरुमहोत्सवारंभ तीन दिन तक (राज.)। रवियोग रा.१।७ तक। यायीजययोग रा.७।२६ तक।

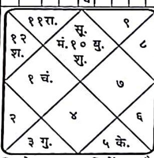
भ.सा.४।३३ तक (मृत्यु)। फरवरी २। माघीपूर्णिमा। स्नानदानव्रत हेतु पुण्य। तिलपात्र ऊर्नावस्त्र कम्बलादि का दान। माघ स्नानव्रत नियमादि समाप्ति। संत रविदास जयन्ती। काशी ❺

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.		सोम				गति		भौम				गति		बुध				गति		वक्रीगुरु				शुक्र				गति		शनि				राहु			
१	चं	९	६	१३	३३	८५०	०	९	२	५३	४७	४६	२१	९	३	४८	३५	१०८	३१	२	२७	३०	१७	९	८	४	९	७६	१३	१०	२९	३४	४५	१०	१६	५१	१६
२	मं	९	१९	५४	२३	८६३	५५	९	३	४०	९	४६	२१	९	५	३७	७	१०७	२५	२	२७	२२	१५	९	९	२०	२२	७६	१३	१०	२९	३९	३६	१०	१६	४८	६
३	बु	१०	१	४९	५७	८७९	५१	९	४	२६	३१	४६	२१	९	७	२४	३२	१०७	२५	२	२७	१४	१३	९	१०	३६	३६	७६	१३	१०	२९	४५	७	१०	१६	४४	५५
४	गु	१०	१६	०	५३	८९५	३६	९	५	१२	५३	४६	२१	९	९	११	५८	१०७	२५	२	२७	६	११	९	११	५२	४९	७६	१३	१०	२९	५०	३७	१०	१६	४१	४४
५	शु	१०	२९	२७	२६	८११	१६	९	५	५९	१५	४६	२१	९	१०	५९	२३	१०७	२६	२	२६	५८	९	९	१३	९	३	७६	१३	१०	२९	५६	८	१०	१६	३८	३३
६	श	११	१३	८	२९	८२४	५८	९	६	४५	३६	४६	२१	९	१२	४६	५०	१०६	१४	२	२६	५०	७	९	१४	२५	१७	७६	१३	११	०	१	३९	१०	१६	३५	२२
७	र	११	२७	२	३३	८३७	१२	९	७	३१	५८	४६	२१	९	१४	३३	४	१०२	५१	२	२६	४२	६	९	१५	४१	३०	७६	१३	११	०	७	१०	१०	१६	३२	११
८	चं	०	११	७	४४	८४७	१८	९	८	१८	२०	४६	२१	९	१६	१५	५६	१०३	११	२	२६	३४	५	९	१६	५७	४४	७६	१३	११	०	१२	४१	१०	१६	२९	१
९	मं	०	२५	२०	५८	८५४	२०	९	९	४	४२	४६	२१	९	१७	५९	७	१०३	११	२	२६	२६	४	९	१८	१३	५७	७६	०	११	०	१८	१२	१०	१६	२५	५०
१०	बु	१	१०	२१	२	८६०	१२	९	९	५१	४	४६	२१	९	१९	४२	१९	१०३	१२	२	२६	१८	२	९	१९	२९	५८	७५	५८	११	०	२३	४२	१०	१६	२२	३९
११	गु	१	२३	५९	४	८५७	३९	९	१०	३७	२५	४६	२१	९	२१	२५	३२	१०१	४२	२	२६	१०	१	९	२०	४५	५६	७५	५८	११	०	२९	१३	१०	१६	१९	२८
१२	शु	२	८	१६	७	८५२	१९	९	११	२३	४७	४६	२१	९	२३	७	१५	९९	२९	२	२६	२	६	९	२२	१	५४	७५	५८	११	०	३४	४५	१०	१६	१६	१७
१३	श	२	२२	२७	८	८४४	४९	९	१२	१०	९	४६	२१	९	२४	४६	४४	९९	२९	२	२५	५६	१५	९	२३	१७	५२	७५	५८	११	०	४०	१६	१०	१६	१३	७
१५	र	३	६	२९	११	८३२	३६	९	१२	५६	३१	४६	२१	९	२६	२६	१४	९९	२९	२	२५	५०	२४	९	२४	३३	५०	७५	५८	११	०	४५	४८	१०	१६	९	५६

४१पं० माघशुक्ल ८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण
३१३०अयनांश२४।१२।४१

सू	च.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	९	९	२	९	११	१०	४
११	११	८	१६	२६	१६	०	१६	१६
३७	७	१८	१५	३४	५७	१२	२९	२९
१	४४	२०	५६	५	४४	४१	१	१
६१	८४७	४६	१०३	८	७६	५	३	३
१०	१८	२१	११	१	१३	३०	११	११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ चं. घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ चं. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१५र. घं.	मि.
मकर	८	१२	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८
कुम्भ	९	४३	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९
मीन	११	११	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७
मेष	१२	४८	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४
वृष	२	४४	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०
मिथुन	४	५८	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४
ल.अं.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	७	१६	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२
सिंह	९	३०	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६
कन्या	११	४३	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९
तुला	१	५९	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५
वृश्चिक	४	१६	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२
धनु	६	२२	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८

४२पं० माघशुक्ल १५रवि
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण
३१३६अयनांश२४।१२।४२

सू	च.	म.	बु	गु	शु	श	रा	के
९	३	९	९	२	९	११	१०	४
१७	६	१२	२६	२५	२४	०	१६	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



❷ नेताजी सुभाषचन्द्रबोसजयंती। रवियोग दि.१।३१ तक। ❸ ⊙अभिजितत्रिवृत्तसूर्य १३।५४ (दि.१२।२)। रवियोगयायीजययोग दि.११।४३ तक। ❺ सीरगोवर्धनग्राम यात्रा दर्शन। माघ स्नान व्रत नियमादि समाप्ति। होलिका रोपण। अन्नपुत्सव–रात्रिव्यापिनि (उड़ीसा)। घईपूषम् (द.भा.)। शुक्रोदय पश्चिम में २८।४० (रा.६।४)। सर्वार्थसिद्धियोग रा.१२।२० तक।

● मुहूर्त। ति.११ गुरु मृगशिरा सूर्यवेध है किन्तु चन्द्र में अमृत होने से अशुभ है। ति.१२ शुक्र आर्द्रा भौमवेध। ति.१३ शनि पुनर्वसु में रिक्तादोष। ति.१५ रवि सा.४।३३ भद्रावाद पुष्य नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती बिना नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन बीजोप्ति विपणि वाहनक्रय शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त।

मूलविचार–रेवती/अश्विनी–ति. ६शनि दि.१२।४७से।ति.७ रवि दि.११।४३ तक। श्लेषा/मघा–ति.१५ रवि रा.१२।१० से। पञ्चकविचार– ति.२ मंगल रा.१२।२६ से।ति.७ रवि दि.११।४३ तक।

☛ में ग्राह्य चतुर्थी में कुन्दचतुर्थी मनाई जायेगी। आज सोमपदा में वेदाध्ययन का निषेध है। २३ जनवरी को सर्वत्र धूमधाम से वसंत पंचमी, सरस्वती पूजन का कार्यक्रम होगा। आज वागीश्वरी जयंती के साथ वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव, विद्यार्थी एवं विद्यानुरागीजन देवी की प्रतिमा स्थापित कर पूजन के साथ मनाते हैं। २५ जनवरी को रथसप्तमी, सूर्यसप्तमी व अचला सप्तमी व्रत किया जायेगा। २६ जनवरी को भीष्माष्टमी–गंगापुत्र भीष्म पितामह के लिये श्राद्ध व तर्पण से सन्तान सुख की प्राप्ति होती है। आज भारतीय गणतन्त्र दिवस का पर्व ध्वजारोहण, राष्ट्रगान के साथ विविध उत्सवों का आयोजन होगा। २७ जनवरी को महानन्दा नवमी व श्रीहरसूब्रह्मदेवजी की जयंती भभुआ (बिहार) में मनायी जायेगी। २९ जनवरी को पिशाचत्व नाश हेतु जया एकादशी व्रत सबका होगा। ३० जनवरी दि.९।२१ तक द्वादशी में एकादशी व्रत का पारण होगा। आज प्रदोष व्रत किया जायेगा। आज भीष्मद्वादशी को भीष्म के उद्देश्य से श्राद्ध तर्पण करें। आज तिल से विष्णुपूजन तथा तिल से हवन करें। आज सोमपदा में वेदाध्ययन का निषेध है। १ फरवरी को स्नान-दान-व्रत की माघ पूर्णिमा है। आज माघस्नान नियम की समाप्ति हो जायेगी। आज ऊनी वस्त्र, कम्बलादि का दान करें। आज संत रविदास जयंती मनायी जायेगी। काशी के सीर गोवर्धनपुर ग्राम तक शोभायात्रा निकाली जायेगी तथा विविध आयोजनों के साथ दर्शन होगा।

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-उ.षा.। ति.१० बुध श्रवण में ११।३४ (दि.११।१४)।। बुध-उ.षा.। ति.४ गुरु श्रवण में २६।५० (सा.५।२३)। ति.१२ शुक्र धनिष्ठा ७।४२(दि.९।४०)।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु ३ चरण। ति.७ रवि पुनर्वसु २ चरण १५।४० (दि.१२।५४)।। शुक्र-उ.षा.में। ति.२ मंगल श्रवण ३१।१२ (रा.७।१९)।। शनि-पू.भा.में ३ चरण। ति.५ शुक्र पू.भा.४ चरण ४२।८ (रा.११।३०)।। राहु-शतभिष में ४ चरण। ति.४ गुरु शतभिष में ३ चरण।। केतु-पू.फा.में २ चरण। पू.फा.में १ चरण ३२।४० (रा.७।४३)।।

माघशुक्लपक्ष विचार–१४ तिथि की हानि से पक्ष १४ दिनों का है। माघ मास में पाँच रविवार होने से दुर्भिक्ष और भय होगा। माघ पूर्णिमा को मेघ हो तो धान्य संग्रह कर सातवें माह में विक्रय से लाभ हो। पक्षारंभ में शुक्रास्त से विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। पक्ष के अंत में १ फरवरी को शुक्रोदय होगा। १९ जनवरी को गुप्त नवरात्र (नोड़ता) का प्रारंभ है। २० जनवरी को समशृंग चन्द्रदर्शन से पक्ष सामान्य रहेगा। २२ जनवरी को वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत किया जायेगा। तिल चतुर्थी एवं प्रदोष☛

पक्ष में विविधमुहूर्त्त।। ति.१ सोम उ.षा.में जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण आभूषणनिर्माण शिल्पविद्या धानछेदन मुहूर्त्त। ति.२ मंगल रा.८।२४ व्यतिपात पूर्व श्रवण पुंसवन सीमन्त वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.३ बुध धनिष्ठा व्यतिपात। ति.४ गुरु शतभिष राहुयुति। ति.५ शुक्र पू.भा.में शनियुति। दि.१।३१से उ.भा.में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती बिना नवीनवस्त्र स्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण शिल्पविद्या नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि धानछेदन मुहूर्त्त। ति.६ शनि उ.भा.में सौभाग्यवती बिना कालावस्त्र नीलमादिरत्नधारण मुहूर्त्त। ति.७ रवि दि.१।४३ तक रेवती पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान नवीन आसन का प्रयोग आभूषणनिर्माण चौपायों का क्रय विक्रय नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण विपणि वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.८ सोम अश्विनी केतुवेध। ति.९ मंगल भरणी रिक्तादोष। ति.१० बुध कृत्तिका सूर्यवेध। प्रा.७।११ से रा.१२।४९ भद्रा पूर्व रोहिणी पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग सौभाग्यवती बिना नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण आभूषणनिर्माण दंवरी धानरोपण शिल्पविद्या हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि ●

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा घ.प.	तिथि	वार	तिथि (घ. प. रा/दि घं. मि.)	नक्षत्र	योग	करण
२७ १३	१	चं	४९ ५८ रा २ ३२	श्लेषा ४२ २७ रा ११ ३१	आयुष्मा. ३/५५ ५५/५१ प्रा ८/५ ५/५५	वा २१ २९ कौ ४९ ५८
२७ १६	२	मं	४८ २ रा १ ४५	मघा ४१ ५६ रा ११ १९	शोभन ५३ ५५ रा ४ ७	तै १९ ० गर ४८ २
२७ १९	३	बु	४७ १९ रा १ २७	पू.फा. ४२ ३७ रा ११ ३४	अतिगण्ड ५० २६ रा २ ४२	व १७ ४० भ ४७ १९
२७ २३	४	गु	४७ ५३ रा १ ४०	उ.फा. ४४ ३३ रा १२ २०	सुकर्मा ४७ ५६ रा १ ४१	वव १७ ३६ वा ४७ ५३
२७ २६	५	शु	४९ ५० रा २ २७	हस्त ४७ ४७ रा १ ३७	धृति ४६ ३१ रा १ ७	कौ १८ ५१ तै ४९ ५०
२७ २९	६	श	५२ ५१ रा ३ ३८	चित्रा ५२ ७ रा ३ २०	शूल ४५ ५४ रा १२ ५१	गर २१ २० व ५२ ५१
२७ ३२	७	र	५७ २ रा ५ १८	स्वाती ५७ ३१ रा ५ ३०	गण्ड ४६ ११ रा १२ ५८	भ २४ ५६ वव ५७ २
२७ ३५	८	चं	६० ० समस्त	विशाखा ६० ० समस्त	वृद्धि ४७ ४ रा १ १८	वा २९ २९ कौ ६० ०
२७ ३९	८	मं	१ ५७ प्रा ७ १५	विशाखा ३ ३८ प्रा ७ ५५	ध्रुव ४८ २१ रा १ ४८	कौ १ ५७ तै ३४ ३८
२७ ४२	९	बु	७ २० दि ९ २४	अनुराधा १० ११ दि १० ३२	व्याघात ४९ ४५ रा २ २२	गर ७ २० व ४० १
२७ ४५	१०	गु	१२ ४३ दि ११ ३२	ज्येष्ठा १६ ४२ दि १ ७	हर्षण ५० ५४ रा २ ४८	भ १२ ४३ वव ४५ ११
२७ ४९	११	शु	१७ ४० दि १ ३०	मूल २२ ४७ दि ३ ३२	वज्र ५१ ३९ रा ३ ५	वा १७ ४० कौ ४९ ४५
२७ ५२	१२	श	२१ ५१ दि ३ १०	पू.षा. २८ ८ सा ५ ४१	सिद्धि ५१ ४१ रा ३ ६	तै २१ ५१ गर ५३ २३
२७ ५५	१३	र	२४ ५५ सा ४ २३	उ.षा. ३२ २२ रा ७ २१	व्यतिपात ५० ५० रा २ ४५	व २४ ५५ भ ५५ ५४
२७ ५९	१४	चं	२६ ५४ सा ५ ९	श्रवण ३५ ३१ रा ८ ३६	वरियान ४९ १ रा २ ०	श २६ ५४ च ५७ ११
२८ २	३०	मं	२७ २९ सा ५ २३	धनिष्ठा ३७ २२ रा ९ २०	परिघ ४६ १३ रा १२ ५३	ना २७ २९ किं ५७ ७

तिथि	योग	तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति द -	रे.अं. + मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.
१	सौम्य	२	१	१३	१९	२०	१३	सिंह ४२।२७	६ ३३	५ २७	९ १८ ४४ ४९	६१ ३	१६ ५३	+ १२	६ १५
२	कालदंड	३	२	१४	२०	२१	१४		६ ३३	५ २७	९ १९ ४५ ५३	६१ १	१६ ३६	+ १२	७ १७
३	स्थिर	४	३	१५	२१	२२	१५	कन्या ५८।६	६ ३२	५ २८	९ २० ४६ ५४	६० ५९	१६ १८	+ १२	८ १४
४	मातङ्ग	५	४	१६	२२	२३	१६		६ ३१	५ २९	९ २१ ४७ ५३	६० ५८	१६ ०	+ १२	९ १०
५	अमृत	६	५	१७	२३	२४	१७		६ ३१	५ २९	९ २२ ४८ ५१	६० ५७	१५ ४२	+ १२	१० ४
६	काण	७	६	१८	२४	२५	१८	तुला १९।५७	६ ३०	५ ३०	९ २३ ४९ ४९	६० ५६	१५ २३	+ १२	१० ५८
७	लुम्बक	८	७	१९	२५	२६	१९		६ ३०	५ ३०	९ २४ ५० ४५	६० ५४	१५ ४	+ १२	११ ५३
८	मित्र	९	८	२०	२६	२७	२०	वृश्चिक ४७।६	६ २९	५ ३१	९ २५ ५१ ४०	६० ५३	१४ ४५	+ १२	१२ ४८
८	श्रीवत्स	१०	९	२१	२७	२८	२१		६ २८	५ ३२	९ २६ ५२ ३४	६० ५२	१४ २६	+ १२	१ ४४
९	सौम्य	११	१०	२२	२८	२९	२२		६ २८	५ ३२	९ २७ ५३ २६	६० ५०	१४ ७	+ १२	२ ३८
१०	कालदंड	१२	११	२३	२९	३०	२३	धनु १६।४२	६ २७	५ ३३	९ २८ ५४ १६	६० ४९	१३ ४७	+ १२	३ ३१
११	स्थिर	१३	१२	२४	३०	१	२४		६ २६	५ ३४	९ २९ ५५ ५	६० ४७	१३ २७	+ १२	४ २०
१२	मातङ्ग	१४	१३	२५	१	२	२५	मकर ४४।११	६ २६	५ ३४	१० ० ५५ ५३	६० ४६	१३ ७	+ १२	५ ५
१३	अमृत	१५	१४	२६	२	३	२६		६ २५	५ ३५	१० १ ५६ ३१	६० ४५	१२ ४६	+ १२	५ ४६
१४	सिद्धि	१६	१५	२७	३	४	२७		६ २४	५ ३६	१० २ ५७ २५	६० ४३	१२ २५	+ १२	६ २२
३०	उत्पात	१७	१६	२८	४	५	२८	कुम्भ ६।२७	६ २४	५ ३६	१० ३ ५८ ८	६० ४२	१२ ५	+ १२	- -

फाल्गुनकृष्णपक्ष

राष्ट्रिय तिथि १२ माघ से २८ तिथि तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक २ फरवरी से १७ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

सिंहराशि(रा.११।३१)। माघव्रत पारण। यायीजययोग रा.११।३१ तक।
③ कृत्तिवासेश्वर दर्शन। मृत्युबाण दि.७।४७ तक। यायीजययोग सा.४।२३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा.७।२१ तक।
भ.दि.१।३६ से रा.१।२८ तक (मृत्यु)। कन्याराशि (रा.शे.५।४६)। मु.शब-ए-बारात। शुक्रवाल्त्वनिवृत्ति २३।५०(सा.४।४)।
संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय(रा.९।१०)। ①अन्य अष्टका श्राद्ध यदि सम्भव न हो तो आज श्राद्ध अवश्य करें। यमनष्टयोग समस्त।
⊙धनिष्ठा में सूर्य ३०।३८(रा.६।४६)। रवियोग रा.१।३७ से। ④ सहस्र गोदान सदृश फल प्राप्ति।
भ.रा.३।३८ से (पाताल)। तुलाराशि (दि.२।२९)। रवियोगसमस्त। सर्वार्थसिद्धियोग रा.३।२० से।
भ.२४।५६ सा.४।२८ तक (पाताल)। भानुसप्तमी ७। रवियोगयायीजययोग रा.शे.५।३० तक।
वृश्चिकराशि (रा.१।१९)। कालाष्टमी। सीताष्टमी। श्रीजानकीजयन्ती८। अष्टकाश्राद्ध। पार्वणविधि। साकाष्टका। ①
अपराह्न अन्वष्टकाश्राद्ध। ②संक्रान्ति पुण्यकाल। गोअन्न तिलदान गोदावरी स्नान। शिशिरऋतु। स्थायीजययोग दि.३।३२ से।
भ.रा.१०।२८ से (स्वर्ग)। मृत्युबाण दि.९।४ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।३२ तक।
भ.दि.११।३२ तक (पाताल)। धनुराशि (दि.१।७)। स्वामीदयानंदसरस्वती जयन्ती(आर्यसमाज संस्थापक)। मृत्युबाण दि.८।४२ तक।
ने.फाल्गुन। विजयाएकादशी ११व्रत सबका।⊙सं.कुम्भ सूर्य ४।५१(प्रा.८।२२)। मु.३०समान्य। पूर्व की १६घटि पुण्य। आज सूर्योदय उपरान्त ②
सौरफाल्गुन। मकरराशि (रा.१२।६)। शनिप्रदोष १३व्रत। संतान लाभ हेतु प्रशस्त। मृत्युबाण दि.८।३ से।
भ.सा.४।२३ से रा.४।४७ तक (पाताल)। श्रीमहाशिवरात्रि १३ व्रत। रात्रिव्यापिनि चतुर्दशी में चतुर्दशलिङ्गपूजा। वेद्यनाथजयन्ती। ③
शिवरात्रिव्रत का पारण। सर्वार्थसिद्धियोग रा.८।३६ तक।
कुम्भराशि (दि.८।५९)। भौमवतीअमावस्या ३०। स्नानदानश्राद्ध हेतु पुण्य। अशुभवार से दुर्भिक्ष तथा भय। गङ्गास्नान से ④

विवाह मुहूर्त पञ्चेष्टलग्न विमर्श

ति.३ बुध रा.११।३४ उ. उ.फा.में रे.७ ल.७ (रा.११।३४ से)इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५।

ति.४ गुरु उ.फा. रे.७ दिनल.१०(प्रा.७।० तक) इष्ट ५ग्र.व.वि.१०(लग्न के सूर्यदान) या दि.ल.१२ (दि.८।३१ से) इष्ट ५ ग्र.व. वि.११।। (७वां चंद्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.५(रा.६।४ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (६स्थ शुक्र अशुभ) या ल.७ (रा.१०।३१से) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० या रा. १२।२० से हस्त रे.९ रात्रि पञ्चेष्टलग्न अभाव।

ति.५ शुक्र रा.१।३७ तक हस्त रे.९ दिन ल.१०(प्रा.६।५५ तक) इष्ट ५ ग्र.व.वि. १५ (लग्नस्थ सूर्यदान) या दिन ल.१२ (दि. ८।२६ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। (७वां चन्द्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.७ (रा. १०।२६ से)इष्ट ५ ग्र.व. वि.१०।

ति.७ रवि स्वाती में राहुवेध रे.७ दिवा ल.१० (प्रा.६:४७ या) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०. या दि.ल.३ (दि.१।१९ उ.) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८मस्थ भौम अशुभ) वा ल.५ (सा.५:५१ उ.) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।। (७ मस्थ राहुदान) वा ल.७ (रा.१०।१८ उ.) इष्ट ५ ग्र.व. वि.१०।

ति.८ मंगल प्रा.७।५५ से अनु. रे.९ दिन ल.३ (दि.१।१०से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२(८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि(सूर्यास्तकाल) या ल.७ (रा.१०।९ से) इष्ट५ ग्र.व. वि.१३।।

ति.९ बुध दि.९।४ मृत्युबाण पूर्व अनुराधा रे.९ दिन ल.१०(प्रा.६।३४तक) इष्ट ६ग्र.व.वि.१५ (लग्न का सूर्यदान)।

ति.१०गुरु मृत्युबाण बाद दि.१।७ से मूल रे.७ दिन ल.३ (दि.१।२ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ (८वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.७ (रा.१०।१ से) इष्ट ६ ग्र.व. वि.१५ या ल.८(रा.१२।१७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१४।

ति.११शुक्र दि.३।३२ तक सं.पु.काल उपरान्त मूल रे.७ दिन में पञ्चेष्टलग्न का अभाव।

ति.१२शनि दि.३।१०से पश्चात मासान्त दोष।

मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति.२ मंगल रा.११।१९ तक। **ज्येष्ठ/मूल-ति. ९**बुध दि.१०।३२ से। ति. ११ शुक्र दि.३।३२ तक **पञ्चकविचार-** ति.३० मंगल दि.८।५९ से।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

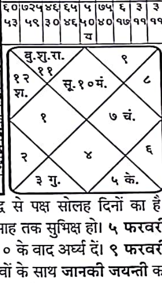
ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	वक्रीगुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ चं	३ २० १८ ४९	८२१ २६	९ १३ ४२ ५३	४६ २८	९ २८ ५ ४४	९९ ३०	२ २५ ४४ ३३	९ २५ ४९ ४८	७५ ५८	११ ० ५१ २०	१० १६ ६ ४५
२ मं	४ २ ५६ २	८०६ ५६	९ १४ २९ २१	४६ ३०	९ २९ ४५ १५	९६ २	२ २५ ३८ ४२	९ २७ ५ ४६	७५ ५८	११ ० ५६ ५१	१० १६ ३ ३४
३ बु	४ १७ १८ ११	७९० ५९	९ १५ १५ ५२	४६ ३०	१० १ २१ १७	९३ १९	२ २५ ३२ ५१	९ २८ २१ ४४	७५ ५८	११ १ २ २३	१० १६ ० २३
४ गु	५ ० २४ ३३	७७५ १	९ १६ २ २३	४६ ३०	१० २ ५४ ३७	९३ २८	२ २५ २७ ०	९ २९ ३७ ४२	७५ ५८	११ १ ८ २४	१० १५ ५७ १३
५ शु	५ १३ १५ २८	७६९ ५	९ १६ ४८ ५३	४६ ३०	१० ४ २८ ६	९४ ३२	२ २५ २१ ९	१० ० ५३ ४०	७५ ५८	११ १ १४ ४१	१० १५ ५४ २
६ श	५ २५ ५१ ५५	७६६ ७	९ १७ ३५ २४	४६ ३०	१० ६ २ ३८	९४ ३०	२ २५ १५ १८	१० २ ९ ३८	७५ ५८	११ १ २० ५८	१० १५ ५० ५१
७ र	६ ८ १६ २६	७३३ ५६	९ १८ २१ ५५	४६ ३०	१० ७ ३७ ८	८८ ६	२ २५ ९ २७	१० ३ २५ ३६	७५ ५८	११ १ २७ १५	१० १५ ४७ ४०
८ चं	६ २० ३० १७	७२५ ५९	९ १९ ८ २६	४६ ३०	१० ९ ५ १५	८५ ४६	२ २५ ३ ३६	१० ४ ४१ ३४	७५ ४०	११ १ ३३ ३३	१० १५ ४४ २९
८ मं	७ ३ २० ०	७२३ १७	९ १९ ५४ ५७	४६ ३०	१० १० ३१ १	८५ ४६	२ २४ ५७ ४५	१० ५ ५७ १५	७५ ११	११ १ ३९ ५०	१० १५ ४१ १९
९ बु	७ १४ ३७ ३५	७२९ १५	९ २० ४१ २८	४६ ३०	१० ११ ५६ ४०	८५ ४६	२ २४ ५१ ५६	१० ७ १२ २६	७५ ११	११ १ ४६ ७	१० १५ ३८ ८
१० गु	७ २६ ३९ ९	७२१ ३७	९ २१ २७ ५८	४६ ३०	१० १३ २२ ३५	८५ ४४	२ २४ ४६ ६	१० ८ २७ ३८	७५ ११	११ १ ५२ २४	१० १५ ३४ ५७
११ शु	८ ८ ४४ ११	७२६ २१	९ २२ १४ २९	४६ ३०	१० १४ ४८ २०	७६ ३५	२ २४ ४० १६	१० ९ ४२ ४९	७५ ११	११ १ ५८ ४२	१० १५ ३१ ४६
१२ श	८ २० ५५ ३६	७३४ ३०	९ २३ १ ०	४६ ३०	१० १६ ४ ५६	७५ ४६	२ २४ ३४ २६	१० १० ५८ १	७५ ११	११ २ ४ ५९	१० १५ २८ ३५
१३ र	९ ३ १६ ५३	७४७ १६	९ २३ ४७ ३१	४६ ३०	१० १७ २० ४२	७५ ४६	२ २४ २८ ३६	१० १२ १३ १२	७५ ११	११ २ ११ १७	१० १५ २५ २५
१४ चं	९ १५ ५० ४	७६० ५	९ २४ ३४ २	४६ ३०	१० १८ ३६ २९	७५ ४५	२ २४ २३ ५१	१० १३ २८ २४	७५ ११	११ २ १७ ३५	१० १५ २२ १४
३० मं	९ २८ ३६ ४१	७७६ ४	९ २५ २० ३३	४६ ३०	१० १९ ५२ १५	७४ ५	२ २४ २० ३३	१० १४ ४३ ३५	७५ ११	११ २ २३ ५३	१० १५ १९ ३

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-श्रवण। ति.१२ शनि धनिष्ठा २४।३० (सा.४।१४)।। **बुध**-धनिष्ठा। ति.२ मंगल कुम्भ ९।१३ (दि.१०।१४)। ति.६ शनि शतभिष में २३।४४ (सा.४।१०)। ति.३० मंगल पू.भा. ६।१७ (दि.८।५५)।। **वक्रीगुरु**-पुनर्वसु २ चरण।। **शुक्र**-धनिष्ठा। ति.४ गुरु कुम्भ में १७।३७ (दि.१।३४)। ति.८ मंगल शतभिष ३४।७ (रा.८।७)।। **शनि**-पू.भा.में ४ चरण।। **राहु**-शतभिष ३ चरण।। **केतु**-पू.फा.में १चरण ।।

फाल्गुनकृष्णपक्ष विचार–अष्टमी तिथि की वृद्धि से पक्ष सोलह दिनों का है। फाल्गुनकृष्ण **षष्ठी** तिथि को **चित्रा** नक्षत्र हो तो तीन माह तक सुभिक्ष हो। **५ फरवरी** को **संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत** कर चन्द्रोदय रात ९:१० के बाद अर्घ्य दें। **९ फरवरी** को जनक नन्दिनी माता सीता की जयंती विविध उत्सवों के साथ **जानकी जयन्ती** का पर्व हर्षोल्लास पूर्वक सर्वत्र विशेषकर मिथिलांचल में मनाया जायेगा। आज ☛

४३पं० फाल्गुनकृष्ण ८सोम
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण
३१४४ अयनांश२४।१२।४३

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	९	१०	२	१०	११	१०	४
२५	२०	१९	९	२५	४	१	१५	१५
५१	३०	८	५	३	४१	३३	४४	४४
४०	१७	२६	१५	३६	३४	३३	२९	२९
६० ५३	७२५ ५९	४६ ३०	६५ ४६	५ ५० व	७५ ४०	६ १७	३ ११	३ ११



।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

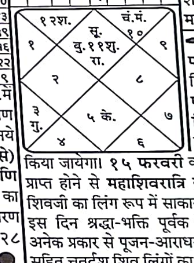
तिथि ल.अं.	१च. घं.मि.	२म. घं.मि.	३बु. घं.मि.	४गु. घं.मि.	५शु. घं.मि.	६ श. घं.मि.	७ र. घं.मि.	८च. घं.मि.	८म. घं.मि.	९ बु. घं.मि.	१०गु. घं.मि.	११शु. घं.मि.
मकर	७ १३	७ ८	७ ४	७ ०	६ ५५	६ ५१	६ ४७	६ ४३	६ ३८	६ ३४	६ ३०	६ २६
कुम्भ	८ ४४	८ ३९	८ ३५	८ ३१	८ २६	८ २२	८ १८	८ १४	८ ९	८ ५	८ १	७ ५७
मीन	१० १२	१० ७	१० ३	९ ५९	९ ५४	९ ५०	९ ४६	९ ४२	९ ३७	९ ३३	९ २९	९ २५
मेष	११ ४९	११ ४४	११ ४०	११ ३६	११ ३१	११ २७	११ २३	११ १९	११ १४	११ १०	११ ६	११ २
वृष	१ ४५	१ ४०	१ ३६	१ ३२	१ २७	१ २३	१ १९	१ १५	१ १०	१ ६	१ २	१२ ५८
मिथुन	३ ५९	३ ५४	३ ५०	३ ४६	३ ४१	३ ३७	३ ३३	३ २९	३ २४	३ २०	३ १६	३ १२
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
कर्क	६ १७	६ १२	६ ८	६ ४	५ ५९	५ ५५	५ ५१	५ ४७	५ ४२	५ ३८	५ ३४	५ ३०
सिंह	८ ३१	८ २६	८ २२	८ १८	८ १३	८ ९	८ ५	८ १	७ ५६	७ ५२	७ ४८	७ ४४
कन्या	१० ४४	१० ३९	१० ३५	१० ३१	१० २६	१० २२	१० १८	१० १४	१० ९	१० ५	१० १	९ ५७
तुला	१ ०	१२ ५५	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४२	१२ ३८	१२ ३४	१२ ३०	१२ २५	१२ २१	१२ १७	१२ १३
वृश्चिक	३ १७	३ १२	३ ८	३ ४	२ ५९	२ ५५	२ ५१	२ ४७	२ ४२	२ ३८	२ ३४	२ ३०
धनु	५ २३	५ १८	५ १४	५ १०	५ ५	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ४८	४ ४४	४ ४०	४ ३६

तिथि ल.अं.	१२श. घं.मि.	१३र. घं.मि.	१४च. घं.मि.	३०म. घं.मि.
कुम्भ	७ ५४	७ ५०	७ ४६	७ ४३
मीन	९ २२	९ १८	९ १४	९ ११
मेष	१० ५९	१० ५५	१० ५१	१० ४८
वृष	१२ ५५	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४४
मिथुन	३ ९	३ ५	३ १	२ ५८
कर्क	५ २७	५ २३	५ १९	५ १६
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
सिंह	७ ४१	७ ३७	७ ३३	७ ३०
कन्या	९ ५४	९ ५०	९ ४६	९ ४३
तुला	१२ १०	१२ ६	१२ २	११ ५९
वृश्चिक	२ २७	२ २३	२ १९	२ १६
धनु	४ ३३	४ २९	४ २५	४ २२
मकर	६ २०	६ १६	६ १२	६ ९

पक्ष में विविधमुहूर्त्त।।। ति.१सोम श्लेषा धानछेदन मुहूर्त्त। ति.२ मंगल मघा शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.३ बुध पू.फा.में केतुयुति। ति.४ गुरु उ.फा.में रिक्तादोष। ति.५ शुक्र हस्त पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन नवीन आसन का प्रयोग नवीनवस्त्रस्वर्णरत्नधारण चौपायों का क्रय विक्रय **पश्चिमदिशा** की यात्रा नये अन्न का भक्षण शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण **जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा उपनयन (ल.२दि.११।३१ से) अक्षरारम्भ(ल.१२ दि.८।३६ से या ल.२ दि.११।३१से) गृहप्रवेश (ल.१२ दि.८।३६ से) बीजोप्ति विपणि व्यापार** वाहनक्रय धानछेदन मुहूर्त्त। ति.६ शनि चित्रा शनिवेध। ति.७ रवि स्वाती राहुवेध। ति.८ सोम विशाखा चौपायों का क्रय विक्रय धानरोपण शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.८ मंगल प्रा.७।१५ रिक्तापूर्व विशाखा लालवस्त्रमूंगा रत्न धारण रोगविमुक्तस्नान (९मीं) शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। ति.९ बुध अनुराधा रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त। दि.१०।३२ रिक्तावाद रा.१०।२८ भद्रापूर्व ज्येठा शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रयविक्रय दंवरी धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१०गुरु दि.११।३२ ● भद्रावाद ज्येष्ठा शिशुताम्बूल भक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रयविक्रय **चौलकेशान्त (ल.२ दि.११।३२)** शल्यक्रिया धानछेदन मुहूर्त्त। दि.१।७ से मूल **हलप्रवहण** मुहूर्त्त। ति.११शुक्र मूल पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दंवरी धानरोपण औषधीसेवन नावनिर्माण **हलप्रवहण विपणि** धानछेदन मुहूर्त्त। ति.१२ शनि पू.षा.में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त। **पश्चात मासान्त दोष है।**

४४पं० फाल्गुनकृष्ण३०मंगल
सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण
३१५२ अयनांश२४।१२।४४

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	९	९	१०	२	१०	११	१०	४
३	२८	२५	१९	२४	१४	२	१५	१५
५८	३६	२०	५२	२०	४३	२३	१९	१९
८	४१	३३	१५	३३	३५	५३	३	३
६० ४२	७७६ ४	४६ ३०	७४ ५	३ १८ व	७५ ११	६ १७	३ ११	३ ११



☛ **अष्टकाश्राद्ध** (पार्वणविधि) होगा। **१० फरवरी** को **अन्वष्टका श्राद्ध** (पार्वणविधि) पितरों की तृप्ति हेतु किया जायेगा। **१३ फरवरी** को समस्त कार्य में विजय हेतु **विजया एकादशी व्रत** सबका होगा। **१४ फरवरी** को सन्तान लाभ हेतु **शनिप्रदोष व्रत** किया जायेगा। **१५ फरवरी** को आज प्रदोष तथा निशीथ काल में चतुर्दशी प्राप्त होने से **महाशिवरात्रि व्रत** किया जायेगा। यह पर्व परब्रह्म निराकार शिवजी का लिंग रूप में साकार होने का पर्व है। संपूर्ण विश्व में फैले शिवभक्त इस दिन श्रद्धा-भक्ति पूर्वक जलाभिषेक, रुद्राभिषेक, दुग्धाभिषेक आदि अनेक प्रकार से पूजन-आराधना करते हैं। विशेषत: काशी में काशी विश्वनाथ सहित चतुर्दश शिव लिंगों का दर्शन-पूजन किया जाता है। (शेष पृष्ठ ८ पर)

फाल्गुनशुक्लपक्ष

राष्ट्रिय तिथि २६ माघ से १२ फाल्गुन तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक १८ फरवरी से ३ मार्च तक सन २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ.प.	तिथि	नक्षत्र	योग	करण	योग	तारीखें अं. फ. हि. सौ. ने. रा.	चन्द्र राशि प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति द -	रे.अं. + मि.	चन्द्रास्त स्टै.टा.
२८ ६	१ बु २६ ४६ सा ५ ५	शतभिष ३७ ५९ रा ९ ३४	शिव ४२ २४ रा ११ २०	वव २६ ४६ वा ५५ ४८	मानस	१८ १७ २९ ५ ६ २९		६ २३	५ ३७	१० ४ ५८ ५०	६० ३९	११ ४४	+ १२	६ ४७
२८ ९	२ गु २४ ५० सा ४ १८	पू.भा. ३७ २२ रा ९ १८	सिद्ध ३७ ३९ रा ९ २५	कौ २४ ५० तै ५३ १९	मुद्गर	१९ १८ १ ६ ७ ३०	मीन २२।३१	६ २२	५ ३८	१० ५ ५९ ३०	६० ३७	११ २२	+ १२	७ ४६
२८ १३	३ शु २१ ४९ दि ३ ५	उ.भा. ३५ ४६ रा ८ ३९	साध्य ३२ ४ रा ७ ११	गर २१ ४९ व ४९ ५१	ध्वज	२० १९ २ ७ ८ १		६ २१	५ ३९	१० ७ ० ८	६० ३६	११ १	+ १२	८ ४५
२८ १६	४ श १७ ५३ दि १ ३०	रेवती ३३ २० रा ७ ४१	शुभ २५ ५० सा ४ ४१	भ १७ ५३ वव ४५ ३०	धाता	२१ २० ३ ८ ९ २	मेष ३३।२०	६ २१	५ ३९	१० ८ ० ४४	६० ३४	१० ३९	+ १२	९ ४७
२८ २०	५ र १३ ७ दि ११ ३४	अश्विनी ३० ८ रा ६ २३	शुक्ल १८ ५६ दि १ ५४	वा १३ ७ कौ ४० २७	आनंद	२२ २१ ४ ९ १० ३		६ २०	५ ४०	१० ९ १ १८	६० ३२	१० १८	+ १२	१० ५१
२८ २३	६ चं ७ ४८ दि ९ २६	भरणी २६ २६ सा ४ ५३	ब्रह्म ११ ३३ दि १० ५६	तै ७ ४८ गर ३४ ५६	चर	२३ २२ ५ १० ११ ४	वृष ४०।२५	६ १९	५ ४१	१० १० १ ५१	६० ३०	९ ५६	+ १२	११ ५८
२८ २७	७ मं २ ५४ / ५ ४ प्रा ७ ४ / ९ ४७	कृत्तिका २२ २३ दि ३ १६	ऐन्द्र ३ ५२ / ५३ १२ प्रा ७ ४ / ५२ ४५	व २ ५ भ २९ ५६ / ७ ९	गद	२४ २३ ६ ११ १२ ५		६ १९	५ ४१	१० ११ २ २२	६० २९	९ ३४	+ ११	१ ५
२८ ३१	९ बु ५० १५ रा २ २४	रोहिणी १८ १२ दि १ ३५	विष्कुम्भ ४८ १६ रा १ ३६	वा २३ १२ कौ ५० १५	शुभ	२५ २४ ७ १२ १३ ६	मिथुन ४६।१०	६ १८	५ ४२	१० १२ २ ५२	६० २८	९ ११	+ ११	२ १०
२८ ३४	१० गु ४४ ३३ रा १२ ६	मृगशिर १४ ८ दि ११ ५६	प्रीति ४० ३८ रा १० ३२	तै १७ २४ गर ४४ ३३	मृत्यु	२६ २५ ८ १३ १४ ७		६ १७	५ ४३	१० १३ ३ २०	६० २६	८ ४९	+ ११	३ १९
२८ ३८	११ शु ३९ १६ रा ९ ५८	आर्द्रा १० २२ दि १० २५	आयुष्मा. ३३ १६ रा ७ ३४	व ११ ५४ भ ३९ १६	पद्म	२७ २६ ९ १४ १५ ८	कर्क ५२।५५	६ १६	५ ४४	१० १४ ३ ४६	६० २२	८ २७	+ ११	४ ४
२८ ४१	१२ श ३४ ३१ रा ८ ४	पुनर्वसु ७ ६ दि ९ ६	सौभाग्य २६ २५ सा ४ ५०	वव ६ ५३ वा ३४ ३१	छत्र	२८ २७ १० १५ १६ ९		६ १६	५ ४४	१० १५ ४ ९	६० २१	८ ४	+ ११	४ ५१
२८ ४५	१३ र ३० ३९ रा ६ ३०	पुष्य ४ ३१ प्रा ८ ३	शोभन २० १२ दि २ १९	कौ २ ३५ तै ३० ३९ / ५९ १०	श्रीवत्स	मा २८ ११ १६ १७ १०		६ १५	५ ४५	१० १६ ४ ३१	६० २०	७ ४१	+ ११	५ ३९
२८ ४९	१४ चं २७ ४२ सा ५ १८	श्लेषा २ ४६ प्रा ७ २०	अतिगण्ड १४ ४१ दि १२ ६	व २७ ४२ भ ५६ ४५	सौम्य	२ २९ १२ १७ १८ ११	सिंह २।४६	६ १४	५ ४६	१० १७ ४ ५१	६० १७	७ १८	+ ११	६ ६
२८ ५२	१५ मं २५ ४८ सा ४ ३३	मघा २ ३ प्रा ७ ३	सुकर्मा १० ० दि १० १४	वव २५ ४८ वा ५५ २७	कालदंड	३ ३० १३ १८ १९ १२		६ १४	५ ४६	१० १८ ५ ९	६० १६	६ ५६	+ १०	- -

◡ चन्द्रदर्शन। समशृंग समता। मु.१५मंहगी। कल्याणेश्वराजजनकपुर परिक्रमा प्रारंभ(मिथिला)। ⊙सायननीन में सूर्य [illegible]।
मीनराशि(दि.३।२२)। मु.रमजान ९ हि.१४४७। मु.रोजाप्रारंभ। ⊙शतभिष में सूर्य [illegible]। शिवाजी जयंती(महाराष्ट्र) ❶
भ.रा.२।२७ से (मृत्यु)। रा.फाल्गुनमास दि.३०। रवियोगसर्वार्थअमृतसिद्धियोग रा.८।३९ से।
भ.दि.१।३० तक (मृत्यु)। मेषराशि (रा.३।१८)। वैनायकीश्रीगणेश व्रत। सतचतुर्थी(उड़ीसा)। रवियोग रा.७।४१ तक। [illegible] दि.१।३० से।
रवियोग रा.६।२३ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग। ❶ श्रीरामकृष्णपरहंस जयंती। फुलेरा दूज(नेपाल)। [illegible] रा.९।२६ से।
वृषराशि(रा.१०।२९)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। गोरूपिणीषष्ठी(बंगाल)। रवियोग सा.४।५३ तक। [illegible] दि.९।२६ से।
भ.प्रा.७।१९ से सा.५।५८ तक (स्वर्ग)। कामदा सप्तमी ७ व्रत। होलाष्टक प्रारंभ। केवल सतलुज, व्यास, रावी नदी के [illegible] तथा ❷
मिथुनराशि (रा.१२।८६)। रवियोग दि.१।३५ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग।
रवियोग समस्त। ❷त्रिपुष्करक्षेत्र में विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। [illegible]त्रिपुष्करयोग रा.७।१९ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि.३।१६ तक।
भ.दि.११।१४ से रा.९।५८ तक। (स्वर्ग)। कर्कराशि (रा.३।२६)। आमलकी ११एकादशीव्रत सर्वेषाम्। रङ्गभरीएकादशी। ❸
श्रीनृसिंहद्वादशी। दि.९।६ से पुष्ययोग में गोविन्दद्वादशी। [illegible]त्रिपुष्करयोग दि.९।६ तक।
मार्च ३। प्रदोष १३व्रत। रवियोग प्रा.८।३ से पूर्व में सर्वार्थसिद्धियोग ❸[illegible]। [illegible]। [illegible]
भ.सा.५।१९से रा.शे.४।५६तक (मृत्यु)। सिंहराशि(प्रा.७।२०)। व्रत १५। [illegible] में भद्रा रा.शे.४।५६ से होलिकादहन। [illegible] ❹
पूर्णिमा १५। स्नानदान हेतु पुण्य। ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण। [illegible] १५। श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती।

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

ति.वा.	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	वक्रीगुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ बु	१०११३८४२	७२१५४	९ २६ ७ ३	४६ ३०	१०२१ ६ २०	५९ ३१	२ २४ १३१४	१०१५५८४७	७५ ११	११ २ ३० १०	१०१५१५५२
२ गु	१०२४५६३६	८०८८	९ २६ ५३ ३४	४६ ३०	१०२२ ५ ५२	५९ ५५	२ २४ १३५६	१०१७१३५८	७५ ११	११ २ ३६ २८	१०१५१२४९
३ शु	११ ८ ३० ३	८२५ ५५	९ २७४० ५	४६ ३०	१०२३ ५ ४८	५९ ५५	२ २४१०३८	१०१८२९१०	७५ ११	११ २ ४२४६	१०१५ ९ ३९
४ श	११२२१६४४	८३३ ४८	९ २८२६ ३६	४६ ३०	१०२४ ५ ४३	५९ ५२	२ २४ ७ १९	१०१९४४२१	७५ ११	११ २ ४९ ३	१०१५ ६ २०
५ र	० ५ ४५३५	८३५ ४	९ २९१३ ७	४६ ३०	१०२५ ५ ३५	५३ ३८	२ २४ ४ १	१०२०५९३२	७५ १०	११ २ ५५ २०	१०१५ ३ ९
६ चं	० २० ४४ २८	८४२ ३४	९ २९५९ ३७	४६ ३०	१०२५ ५९ १४	३८ ३५	२ २४ ० ४३	१०२२१४४३	७५ १३	११ ३ ३ ५०	१०१४५९५८
७ मं	१ ४ ३९५३	८५० ५४	१० ० ४६ ८	४६ ३०	१०२६ ३५ ४९	३८ ३५	२ २३ ५७२५	१०२३२८५४	७५ ११	११ ३ १० ५३	१०१४५६४७
९ बु	१ १८ ४८ १	८५८ ५३	१० १ ३२३९	४६ ३०	१०२७ १६ २४	३८ ३५	२ २३ ५४ ६	१०२४४३ ८	७५ १२	११ ३ १७५७	१०१४५३३६
१० गु	२ ३ ५५१	८०८ १	१० २ १९१०	४६ ३०	१०२७ ५४ ५९	३८ ३१	२ २३ ५०४८	१०२५५७२०	७५ १२	११ ३ २५ ०	१०१४५०२६
११ शु	२ १७ २२३९	८२३ ३४	१० ३ ५ ४१	४६ ३१	१०२८ ३३ २९	३८ ३५	२ २३ ४७३२	१०२७ ११ ३२	७५ १२	११ ३ ३२ ४	१०१४४७१५
१२ श	३ ० ३६५३	८२८ ३	१० ३ ५२ २०	४६ ३१	१०२९ ५ ४ १४	१ ३४	२ २३ ४४१५	१०२८२५४४	७५ १२	११ ३ ३९ ७	१०१४४४ ४
१३ र	३ १४२३ ४	८३५ ५५	१० ४ ३९ ०	४६ ३१	१०२९ ९ ०	१ ३४	२ २३ ४० ५८	१०२९३९५६	७५ १२	११ ३ ४६ ११	१०१४४०५३
१४ चं	३ २६५२ ०	८४८ २	१० ५ २५ ३१	४६ ३१	१०२९ १५ ४४	१ ३४	२ २३ ३७ ४२	११ ० ५४ ८	७५ १२	११ ३ ५३ १४	१०१४३७४२
१५ मं	४ १२५२ ०	८४०	१० ६ १२ ११	४६ ३१	१०२९ २० ३२	१ ३४	२ २३ ३४ २५	११ २ ८ २०	७५ १२	११ ४ ० १८	१०१४३४३२

४५पं०फाल्गुनशुक्ल ७मंगल सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१५९ अयनांश २४।१२।४५

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१	१०	१०	२	१०	११	१०	४
११	४	०	२६	२३	२३	३	१४	१४
२	३९	४६	३७	५७	२८	१०	५६	५६
२२	५७	८	४९	२५	५६	५३	४७	४७
६०	८५७	४६	३८	३	७४	७	३	३
२९	५४	३०	३५	१८ व	११	३	११	११

।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१ बु. घं.मि.	२ गु. घं.मि.	३ शु. घं.मि.	४ श. घं.मि.	५ र. घं.मि.	६ चं. घं.मि.	७ मं. घं.मि.	९ बु. घं.मि.	१० गु. घं.मि.	११ शु. घं.मि.	१२ श. घं.मि.	१३ र. घं.मि.	१४ चं. घं.मि.	१५ मं. घं.मि.
कुम्भ	७ ३९	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २३	७ २०	७ १६	७ १२	७ ८	७ ५	७ १	६ ५७	६ ५३	६ ५०
मीन	९ ७	९ ३	८ ५९	८ ५५	८ ५१	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३३	८ २९	८ २५	८ २१	८ १८
मेष	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २५	१० २१	१० १७	१० १३	१० १०	१० ६	१० २	९ ५८	९ ५५
वृष	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३२	१२ २८	१२ २४	१२ २१	१२ १७	१२ १३	१२ ९	१२ ६	१२ २	११ ५८	११ ५४	११ ५१
मिथुन	२ ५४	२ ५०	२ ४६	२ ४२	२ ३८	२ ३५	२ ३१	२ २७	२ २३	२ २०	२ १६	२ १२	२ ८	२ ५
कर्क	५ १२	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५३	४ ४९	४ ४५	४ ४१	४ ३८	४ ३४	४ ३०	४ २६	४ २३
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
सिंह	७ २६	७ २२	७ १८	७ १४	७ १०	७ ७	७ ३	६ ५९	६ ५५	६ ५२	६ ४८	६ ४४	६ ४०	६ ३७
कन्या	९ ३९	९ ३५	९ ३१	९ २७	९ २३	९ २०	९ १६	९ १२	९ ८	९ ५	९ १	८ ५७	८ ५३	८ ५०
तुला	११ ५५	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ३९	११ ३६	११ ३२	११ २८	११ २४	११ २१	११ १७	११ १३	११ ९	११ ६
वृश्चिक	२ १२	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५३	१ ४९	१ ४५	१ ४१	१ ३८	१ ३४	१ ३०	१ २६	१ २३
धनु	४ १८	४ १४	४ १०	४ ६	४ २	३ ५९	३ ५५	३ ५१	३ ४७	३ ४४	३ ४०	३ ३६	३ ३२	३ २९
मकर	६ ५	६ १	५ ५७	५ ५३	५ ४९	५ ४६	५ ४२	५ ३८	५ ३४	५ ३१	५ २७	५ २३	५ १९	५ १६

४६पं०फाल्गुनशुक्ल१५मंगल सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१६६ अयनांश २४।१२।४६

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	१०	१०	२	११	११	१०	४
१८	१२	६	२९	२३	२	४	१४	१४
५	५२	१२	२७	३४	८	०	३४	३४
९	२०	११	३२	२५	२०	१८	३२	३२
६०	८०९	४६	१	३	७४	७	३	३
१६	४०	३१	३८	१६ व	१२	३	११	११

ग्रहादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-धनिष्ठा। ति.६ सोम कुम्भ में २।१ (प्रा.६।३०)। ति.१५ मंगल शतभिष ३५।३६(रा.८।२८)।। बुध-पू.भा.में। वक्रीगुरु-पुनर्वसु २ चरण।। शुक्र-शतभिषा। ति.४ शनि पू.भा. १२।२१ (दि.११।२१)। ति.१३ रवि मीनराशि १६।१४ (दि.१२।४५)। ति.१५ मंगल उ.भा.५७।५७ (रा.५।२५)।। शनि-पू.भा.में ४ चरण। ति.९ बुध उ.भा. १ चरण १७।२८ (दि.१२।१७)।। राहु-शतभिष ३ चरण।। केतु-पू.फा.में १ चरण।।

फाल्गुनशुक्ल पक्ष विचार—अष्टमी तिथि की हानि से पक्ष १४ दिनों का है। पक्ष में पाँच ग्रह एक राशि पर होने से पशुओं की क्षति होती है। पक्ष में कुम्भ मीन संक्रान्ति के मध्य नवमी को रोहिणी हो तो मध्यम वर्षा हो। १८ फरवरी को समशृंग चन्द्रदर्शन सामान्य है। २१ फरवरी को वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत किया जायेगा। २४ फरवरी प्रातः ७।१९ से अष्टमी में होलाष्टक प्रारंभ है। इसका दोष केवल सतलुज, व्यास, रावी नदी तथा त्रिपुष्कर क्षेत्रों में विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। २७ फरवरी को आमलकी एकादशी व्रत सबका है। आज काशीविश्वनाथ का शृंगार दिन है ☛

पक्ष में विविधमुहूर्त। ति.१ बुध शतभिष राहुयुति। ति.२ गुरु पू.भा.में शनियुति। ति.३ शुक्र उ.भा.में शनिभोग्य। ति.४ शनि दि.१।३० रिक्ताभद्रा बाद रेवती अन्नप्राशन कालावस्त्रनालमादिरत्नधारण वाहनक्रय मुहूर्त। ति.५ रवि अश्विनी केतुवेध। ति.६ सोम भरणी धानच्छेदन मुहूर्त। ति.७ मंगल प्रा.७।१९ भद्रापूर्व कृत्तिका शस्त्रनिर्माण मुहूर्त। दि.३।१६ से रोहिणी हलप्रवहण शल्यक्रिया मुहूर्त। ति.९ बुध रोहिणी रिक्तादोष। दि.१।३५ से मृगशिर रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त। ति.१० गुरु मृगशिर पुंसवन सीमन्त जातकर्म शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान दक्षिणदिशा को त्याग कर यात्रा शिल्पविद्या औषधीसेवन नावनिर्माण चौलकेशान्त कर्णवेध (ल.१२ प्रा.७।८ से शनिदान या ल.२ दि.१०।१३ से) उपनयन (ल.२ दि.१०।१३ से या ल.३ दि.१२।१९ से) विद्यारंभ(ल.२ दि.१०।१३ से) गृहारंभ(ल.२ दि.१०।१३ से) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा वधूप्रवेश द्विरागमन (ल.२ दि.१०।१३ से) हलप्रवहण विपणि व्यापार वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त। ति.११ शुक्र आर्द्रा उपनयन(ल.२ दि.१०।१० से) मुहूर्त। दि.१०।२५ से दि.११।१ भद्रापूर्व पुनर्वसु पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान चौपायों का क्रय विक्रय ●

❹[illegible] दोलोत्सव(बंगाल)। दोलयात्रा। [illegible] (उड़ीसा)। [illegible] रा.३।२० से [illegible] रा.३।२० तक।

● मिथुन के चन्द्र में दक्षिणदिशा को [illegible] द्विरागमन (ल.२ दि.१०।२५ से) हलप्रवहण वाहनक्रय मुहूर्त। ति.१२ शनि दि.९।६ से पुष्य [illegible] गृहारंभ (ल.२ दि.१०।६ से या ल.३ दि.१२।१२ से) गृहप्रवेश (ल.२ दि.१०।६ से४र्थ के.दा. या ल.३ दि.१२।१२से) वाहनक्रय मुहूर्त। ति.१३ रवि पुष्य पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूल भक्षण चौपायों का क्रय विक्रय (श्लेषा) [illegible] प्रतिष्ठा (ल.३ दि.१०।१२ से) [illegible] शल्यक्रिया मुहूर्त। ति.१४ सोम श्लेषा [illegible] विद्विष्ट। ति.१५ मंगल मघा [illegible] मुहूर्त।

☛ तथा काशी में रंगभरी एकादशी मनाई जायेगी। ऐसी मान्यता है कि आज के ही दिन भगवान् शिव ने माता पार्वतीजी का गौना कराकर काशी लेकर आये। इस परम्परा का निर्वहन करते हुए [illegible] विश्वनाथ माता गौरा-पार्वती के विग्रह का पूजन करके काशीवासी अबीर-गुलाल उड़ाते हुए भक्ति भाव में सराबोर हो निहाल होते हैं। २८ फरवरी को नृसिंह द्वादशी व्रत किया जायेगा। पुष्य योग प्राप्त होने पर गोविन्दद्वादशी होती है। १ मार्च को प्रदोष व्रत किया जायेगा। २ मार्च को व्रत की पूर्णिमा तथा अरुणोदयपूर्व भद्रारहित पूर्णिमा तिथि में रा.शे.४।५६ भद्रा बाद होलिकादहन होगा। ३ मार्च को स्नान-दान की पूर्णिमा मनाई जायेगी। आज श्रीचैतन्य महाप्रभुजी की जयन्ती भी मनायी जाती है तथा दोलोत्सव(दोलयात्रा) भी होगी। आज भारत में ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण लग रहा है।

ति.२ गुरु रा.२।१८ से उ.भा.[illegible] ६.८ का १० (रा.शे.४।१४ उ.) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५।
ति.३ शुक्र उ.भा. [illegible] रा.८।३१ से रेवती [illegible] (रा.७।१२ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१० ([illegible]) या ल.१० (रा.शे.४।१० से) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५, उ.भा. में [illegible] दिवा ल.२ (दि.८।५९) इष्ट ५ प्र.व.वि.१२ (१० [illegible]) या दि.ल.२ (दि.१०।३६) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३।। या ल. [illegible]।
ति.४ शनि रा.७।४१ तक रेवती में दि.८ दिन ल.२ (दि.८।५५ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१२ ([illegible]) या ल. [illegible] ([illegible])।।
ति.७ मंगल दि.३।१६ से रोहिणी में [illegible] ल. [illegible] ल. ([illegible]) या ल.१० (रा.३।५५) इष्ट ६ प्र.व.वि.१५।
ति.९ बुध रोहिणी में दि.९ दिन ल.१ (दि.८।४० से) इष्ट ७ प्र.व.वि.१८।। ([illegible]) या दि.१।३५ से मृग. दि.९ [illegible] ([illegible]) या ल.६ (रा.६।५९ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.११।। ([illegible]) या ल.७ (रा.९।१२ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१० ([illegible]) या ल.१० (रा.शे.३।५२ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१०।
ति.१० गुरु दि.११।५६तक मृग में दि.९ दिन ल.१ (दि.८।३६ से) इष्ट ७ प्र.व.वि.१३।। ([illegible]) या दिन ल.२ (दि.१०।१३ से) इष्ट ५ प्र.व.वि.१८।। (१० का [illegible])
ति.१४ सोम रा.७।२० से मघा में [illegible] दिवा ल.३ (दि.१२।५४) इष्ट ५ प्र.व.वि.१३।। या ल.[illegible], या ल.६ (रा.६।४४) इष्ट ५ प्र.व.वि.११।। (७ [illegible]) [illegible]।
ति.१५ मंगल प्रा.७।३ या मघा में [illegible]।

[illegible]-रेवती/अश्विनी-दि.३ शुक्र रा.८।३१ से ति.५ रवि रा.६।२३तक। श्लेषा/मघा-ति.१३ रवि प्रा.८।३ से ति.१५ मंगल प्रा.७।३तक। [illegible]-ति.[illegible] रा.७।४१तक।

राष्ट्रिय तिथि १३ फाल्गुन से २८ तिथि तक १९४७ शक। अंग्रेजी दिनांक ४ मार्च से १९ दिनांक तक सन् २०२६ ई.।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा घ.प.	तिथि		नक्षत्र	योग	करण	योग
२८ ५६	१	बु २५ ६ सा ४ १५	पू.फा. २ २९ प्रा ७ १२	धृति ६ १६ दि ८ ४३	कौ २५ ६ तै ५५ २३	स्थिर
२९ ०	२	गु २५ ४१ सा ४ २८	उ.फा. ४ ११ प्रा ७ ५२	शूल ३ ३२ प्रा ७ ३६	गर २५ ४१ व ५६ ४१	मातङ्ग
२९ ४	३	शु २७ ४१ सा ५ १५	हस्त ७ ८ दि ९ २	गण्ड १ ४७ प्रा ६ ५३	भ २७ ४१ ववब ५९ १२	अमृत
२९ ७	४	श ३० ४३ रा ६ २८	चित्रा ११ १३ दि १० ४०	वृद्धि १ ० प्रा ६ ३५	वा ३० ४३ कौ ६० ०	काण
२९ ११	५	र ३४ ५३ रा ८ ७	स्वाती १६ २६ दि १२ ४४	ध्रुव १ ६ प्रा ६ ३६	कौ २ ४८ तै ३४ ५३	लुम्बक
२९ १५	६	चं ३९ ४७ रा १० ३	विशाखा २२ २६ दि ३ ७	व्याघात १ ५३ प्रा ६ ५४	गर ७ २० व ३९ ४७	मित्र
२९ १८	७	मं ४५ ७ रा १२ ११	अनुराधा २८ ५५ सा ५ ४२	हर्षण ३ ८ प्रा ७ २३	भ १२ २७ ववब ४५ ७	वज्र
२९ २२	८	बु ५० २४ रा २ १७	ज्येष्ठा ३५ ३० रा ८ २०	वज्र ४ ३९ प्रा ७ ५९	वा १७ ४५ कौ ५० २४	ध्वांक्ष
२९ २६	९	गु ५५ १३ रा ४ १२	मूल ४१ ४२ रा १० ४७	सिद्धि ६ २ दि ८ ३१	तै २२ ४८ गर ५५ १३	धूम्र
२९ २९	१०	शु ५९ १८ रा ५ ४९	पू.षा. ४७ १४ रा १२ ५९	व्यतिपात ७ ० दि ८ ५४	व २७ १५ भ ५९ १८	प्रवर्द्धमान
२९ ३२	११	श ६० ० समस्त	उ.षा. ५१ ४६ रा २ ४७	वरीयान ७ २१ दि ९ १	ववब ३० ४५ वा ६० ०	राक्षस
२९ ३६	११	र २ १२ प्रा ६ ५८	श्रवण ५५ ११ रा ४ ९	परिघ ६ ४८ दि ८ ४८	वा २ १२ कौ ३३ ६	गद
२९ ४१	१२	चं ४ १ प्रा ७ ४०	धनिष्ठा ५७ १८ रा ४ ५९	शिव ५ २४ दि ८ १३	तै ४ १ गर ३४ १५	शुभ
२९ ४४	१३	मं ४ २९ प्रा ७ ५१	शतभिष ५८ ९ रा ५ १८	सिद्ध २ ५६ ५७ ३२ प्रा ७ ५ १३ ५१	व ४ २९ भ ३४ ४	मृत्यु
२९ ४८	१४	बु ३ ४० प्रा ७ ३०	पू.भा. ५७ ५० रा ५ १०	शुभ ५५ ४ रा ४ ४	श ३ ४० च ३२ ३८	पद्म
२९ ५२	३०	गु १ ५६ ३६ ५० प्रा ६ ५ ४० २९	उ.भा. ५६ २४ रा ४ ३५	शुक्ल ४९ ४८ रा १ ५७	ना १ ३६ किं ३० ५८ १ २६	छत्र

तारीखें अं.	फ.	हि.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश		सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	गति	क्रान्ति द -	रे.अं. + मि.	चंद्रोदय स्टै.टा.
४	१	१४	१९	२०	१३	कन्या	१७।५५	६ १३	५ ४७	१० १९ ५ २५	६० १४	६ ३३	+ १०	६ ५६
५	२	१५	२०	२१	१४			६ १२	५ ४८	१० २० ५ ४०	६० ११	६ ९	+ १०	७ ५२
६	३	१६	२१	२२	१५	तुला	३९।१०	६ ११	५ ४९	१० २१ ५ ५२	६० १०	५ ४६	+ १०	८ ४६
७	४	१७	२२	२३	१६			६ ११	५ ४९	१० २२ ६ २	६० ८	५ २३	+ ९	९ ४१
८	५	१८	२३	२४	१७			६ १०	५ ५०	१० २३ ६ ११	६० ५	५ ०	+ ९	१० ३३
९	६	१९	२४	२५	१८	वृश्चिक	५।५६	६ ९	५ ५१	१० २४ ६ १६	६० ४	४ ३६	+ ९	११ ३३
१०	७	२०	२५	२६	१९			६ ८	५ ५२	१० २५ ६ २०	६० ३	४ १३	+ ९	१२ २८
११	८	२१	२६	२७	२०	धनु	३५।३०	६ ८	५ ५२	१० २६ ६ २४	६० १	३ ४९	+ ८	१ २२
१२	९	२२	२७	२८	२१			६ ७	५ ५३	१० २७ ६ २६	५९ ५८	३ २६	+ ८	२ १२
१३	१०	२३	२८	२९	२२			६ ६	५ ५४	१० २८ ६ २८	५९ ५८	३ २	+ ८	२ ५८
१४	११	२४	२९	३०	२३	मकर	३।२२	६ ५	५ ५५	१० २९ ६ २९	५९ ५६	२ ३८	+ ८	३ ४०
१५	१२	२५	१	१	२४			६ ५	५ ५५	११ ० ६ ११	५९ ५३	२ १५	+ ७	४ १८
१६	१३	२६	२	२	२५	कुम्भ	२६।१४	६ ४	५ ५६	११ १ ६ १	५९ ४९	१ ५१	+ ७	४ ५३
१७	१४	२७	३	३	२६			६ ३	५ ५७	११ २ ५ ५२	५९ ४६	१ २७	+ ७	५ २७
१८	१५	२८	४	४	२७	मीन	४२।५५	६ २	५ ५८	११ ३ ५ ३९	५९ ४४	१ ४	+ ६	६ ०
१९	१६	२९	५	५	२८			६ २	५ ५८	११ ४ ५ २३	५९ ४२	० ४०	+ ६	- -

चैत्रकृष्णपक्ष

कन्याराशि(दि.१।२३)। सर्वत्रहोली। वसन्तोत्सव। होलामेला(पंजाब)। सायंप्रतिपदायाम में चतुष्षष्ठीयात्रा(काशी)तथा दर्शन। साभ्यङ्ग (तैल) ❶

भ.रा.शे.४।५२ से (पाताल)। संतुकाराम जयंती। यायीजययोग प्रा.७।५२ से। ❶स्नान—स्पर्श—होलिकाभस्म का धारण।✦

भ.सा.५।१५ तक (पाताल)। तुलाराशि (रा.९।१०)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय (रा.८।४६)। कल्पादि ३। मु.शहादते हजरत अली। स्थायीजययोग सा.५।१५ से।

सर्वार्थसिद्धियोग दि.१०।४०से। ✦आमकुसुम का प्राशन। गीतवादन से काममहोत्सवादि के सभी कार्यों का विधान। ⊙पू.भा.सूर्य ५४।२१(रा.शे.३।४०)। मृत्युबाण रा.शे.३।४८तक।

रङ्गपञ्चमी। विजयगोविन्दजी हलंकर (मणिपुर)। यायीजययोग दि.१२।४४तक। ●आजवासी भोजन शास्त्रोक्त है।

भ.रा.२।०४ से (स्वर्ग)। श्रीस्कन्दषष्ठी। वृश्चिकराशि (दि.८।३१)। रवियोगसर्वार्थसिद्धियोग दि.३।७ से। यायीजययोग रा.१०।१३ से।

भ.१२।२७ दि.११।१७ तक (स्वर्ग)। रवियोग सा.५।४२ तक। स्थायीजययोग रा.१२।११ से।

धनुराशि (रा.८।२०)। कालाष्टमी ८। श्रीशीतलाष्टमी ८व्रत। ●

श्रीऋषभनाथजी जयंती (जैन)। मृत्युबाण रा.३।३४ से।

भ.सा.५।०से रा.शे.५।१९ तक (पाताल)। मृत्युबाण ५३।४२तक(रा.३।३४)। पर्वदिन सूर्योदय उपरान्त संक्रान्तिपुण्यकाल। गौ अन्न तिल दान ❷

मकरराशि (प्रा.७।२५)। ⊙सं.मीन में सूर्य ५३।१८(रा.३।३०)। मु.३०सामान्य। बाद की १६घटीपुण्य। ❖स्थायीजययोग रा.शे.५।१९ से।

सौर व ने.चैत्रमास। पापमोचनीएकादशी ११व्रत सबका। द्विपुष्करयोग रा.शे.४।१९ ऊ.। यायीजययोग प्रा.७।४० से।

कुम्भराशि(सा.४।३४)। सोमप्रदोष १२ व्रत। सन्तान हेतु प्रशस्त। द्वादशी में प्रा.७।४० तक एकादशी व्रत पारण। काशी में वृद्धअङ्गारकपर्व(बुढ़वामंगल)। ❖

भ.प्रा.७।५१ से रा.७।४१ तक (मृत्यु)। मासशिवरात्रिव्रत। प्रा.७। ५१ तक वारुणीपर्व योग। मधुकृष्णत्रयोदशी।

मीनराशि(रा.११।१२)। श्राद्ध ३०। ❷गोदावरी स्नान। वसंतऋतु। खरमास प्रवृत्ति। यायीजययोग ग.२।४७ तक परं सर्वार्थसिद्धियोग।

अमावस्या ३०। स्नानदान हेतु पुण्य। शुभवार से सुभिक्ष सुख। आज प्रा.६।४० से प्रतिपदातिथि योग में❹

❹चैत्रसंवत्सर बसंत नवरात्रारंभ संवत् २०८३। आज कलश स्थापन कार्य। श्रवण प्रपादारम्भ। असमर्थता में धर्मकादिदान।▲

।।सूर्योदय से दैनिकस्पष्टचन्द्रभौमादिग्रह।।

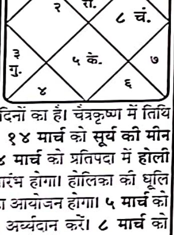
ति.वा	सोम	गति	भौम	गति	बुध	गति	वक्रीगुरु	शुक्र	गति	शनि	राहु
१ बु	४ २६ ७ ८	७२४ ५५	१० ६ ५८ ५९	४६ ३१	व २९ ३ ७ १०	११ ४२	२ २३ ३१ ८	११ ३ २२ ३२	७४ १२	११ ४ ७ २२	१० १४ ३१ २१
२ गु	५ ८ ५ ४६	[illegible]	१० ७ ४५ ३९	४६ ३१	१० २९ २५ २८	२२ ४३	मा २ २३ ३० ४५	११ ४ ३६ ४४	७४ १२	११ ४ १४ २६	१० १४ २८ १०
३ शु	५ २१ ४९ २९	७२२ १०	१० ८ ३२ १८	४६ ३१	१० २९ २ ४३	२२ ४३	२ २३ ३१ ५	११ ५ ५० ५६	७४ १२	११ ४ २१ ३०	१० १४ २४ ५९
४ श	६ ४ ३ ६०	७३३ ५६	१० ९ १८ ५८	४६ ३१	१० २८ ३९ ५८	२२ ४३	२ २३ ३१ २५	११ ७ ५ ८	७४ १२	११ ४ २८ ३४	१० १४ २१ ४८
५ र	६ १६ ३८ २५	७३६ ०	१० १० ५ ३८	४६ ३१	१० २८ १७ १३	२२ ५०	२ २३ ३१ ४५	११ ८ १९ २०	७४ १२	११ ४ ३५ ४१	१० १४ १८ ३८
६ चं	६ २८ ४८ ५	७२७ ११	१० १० ५२ १७	४६ ३१	१० २७ ५४ २३	४६ ५५	२ २३ ३२ ४	११ ९ ३३ ३२	७४ १२	११ ४ ४३ ३१	१० १४ १५ २७
७ मं	७ ९ ५२ ३	७२९ ५९	१० ११ ३८ ५७	४६ ३१	१० २७ ७ ३८	५१ २६	२ २३ ३२ २४	११ १० ४७ ४४	७४ १२	११ ४ ५१ २१	१० १४ १२ १६
८ बु	७ २२ ५३ २८	७२० ५५	१० १२ २५ ३७	४६ ३१	१० २६ १६ ११	५१ २६	२ २३ ३२ ४४	११ १२ १ ५६	७४ १२	११ ४ ५९ १०	१० १४ ९ ५
९ गु	८ ३ ५६ ४	७२५ ४	१० १३ १२ १७	४६ ३१	१० २५ २४ ४४	५१ २६	२ २३ ३३ ४	११ १३ १६ ८	७४ १२	११ ५ ७ ०	१० १४ ५ ५४
१० शु	८ १७ ३ २७	७३२ २७	१० १३ ५८ ५६	४६ ३१	१० २४ ३३ १८	५१ २६	२ २३ ३३ २४	११ १४ ३० २०	७४ १२	११ ५ १४ ५०	१० १४ २ ४४
११ श	८ २९ १८ १६	७७३ ४८	१० १४ ४५ ३६	४६ ३१	१० २३ ४१ ५२	५१ २६	२ २३ ३३ ४४	११ १५ ४४ ३२	७४ १२	११ ५ २२ ३९	१० १३ ५९ ३३
११ र	९ ११ ४३ ५२	७७६ ४३	१० १५ ३२ १६	४६ ३१	१० २२ ५० २५	५१ २६	२ २३ ३४ ४	११ १६ ५८ ४४	७४ १२	११ ५ ३० २९	१० १३ ५६ २२
१२ चं	९ २४ २२ २	७७२ ५५	१० १६ १८ ५५	४६ ३१	१० २१ ५८ ५९	५१ २६	२ २३ ३४ २५	११ १८ १२ ५६	७४ १२	११ ५ ३८ १८	१० १३ ५३ ११
१३ मं	१० ६ १५ ३०	७८८ २९	१० १७ ५ ३५	४६ ३१	१० २१ ७ ३२	५१ २५	२ २३ ३४ ४६	११ १९ २७ ८	७४ १२	११ ५ ४६ ८	१० १३ ५० ०
१४ बु	१० २० २४ ४८	८०४ ३४	१० १७ ५२ १५	४६ ३१	१० २० १६ ७	४६ ७	२ २३ ३५ ७	११ २० ४१ २०	७४ १२	११ ५ ५३ ५८	१० १३ ४६ ५०
३० गु	११ २ ४९ ३६	८११ ३४	१० १८ ३८ ५४	४६ ३१	१० १९ ३० ०	२२ ४३	२ २३ ३५ २८	११ २१ ५५ ३२	७४ १२	११ ६ १ ४८	१० १३ ४३ ३९

भौमादिग्रहों का सञ्चार।। भौम-शतभिषा। बुध-पू.भा.में ति.१ बुध वक्री २७।१६(सा.५।१३)। ति.१४ बुध शतभिष में २०।५८ (दि.२।२५)।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु २ चरण। ति.२ गुरु मार्गी ३२।३१ (रा.७।१२)।। शुक्र-उ.भा.। ति.११ शनि रेवती ४४।५१ (रा.१२।११)।। शनि-उ.भा.१ चरण।। राहु-शतभिष ३ चरण। केतु-पू.फा.में १ चरण।।

चैत्रकृष्णपक्ष विचार—एकादशी तिथि की वृद्धि से पक्ष सोलह दिनों का है। चैत्रकृष्ण में तिथि वृद्धि तथा चैत्रशुक्ल में तिथि हानि से अन्न की क्षति तथा कमी हो। १४ मार्च को सूर्य की मीन संक्रान्ति में खरमास से विवाहादि कार्यों का निषेध हो जायेगा। ४ मार्च को प्रतिपदा में होली (रङ्गोत्सव) का उत्सव मनाया जायेगा। आज से वसन्तोत्सव का प्रारंभ होगा। होलिका की धूलि धारण करें। आज बोर खाना चाहिये। गीत वन्दन, काननहोत्सवादि का आयोजन होगा। ५ मार्च को संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कर चन्द्रोदय में रात ८:४६ के बाद अर्घ्यदान करें। ८ मार्च को रंगपंचमी का पर्व मनाया जायेगा। १० मार्च को शीतला सप्तमी व्रत कर रात्रि में पूजन किया जायेगा।

४७पं० चैत्रकृष्ण ८बुध सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१७४ अयनांश २४।१२।४७

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	१०	१०	२	११	११	१०	४
२६	२२	१२	२६	२३	१२	४	१४	१४
६	५३	२५	१६	३२	१	५९	९	९
२४	२८	३७	११	४४	५६	१०	५	५
६०	७२०	४६	५१	०	७४	७	३	३
१	५४	३९	२६	२० मा	१२	४९	११	११



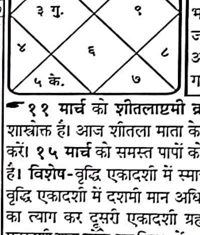
।। दैनिक लग्न सारिणी ।।

तिथि ल.अं.	१बु. घं.मि.	२गु. घं.मि.	३शु. घं.मि.	४श. घं.मि.	५र. घं.मि.	६चं. घं.मि.	७मं. घं.मि.	८बु. घं.मि.	९गु. घं.मि.	१०शु. घं.मि.	११श. घं.मि.	तिथि ल.अं.	११र. घं.मि.	१२चं. घं.मि.	१३मं. घं.मि.	१४बु. घं.मि.	३०गु. घं.मि.
कुम्भ	६ ४६	६ ४२	६ ३८	६ ३४	६ ३०	६ २७	६ २३	६ १९	६ १५	६ ११	६ ८	मीन	७ ३३	७ २९	७ २५	७ २१	७ १८
मीन	८ १४	८ १०	८ ६	८ २	७ ५८	७ ५५	७ ५१	७ ४७	७ ४३	७ ३९	७ ३६	मेष	९ १०	९ ६	९ २	८ ५८	८ ५५
मेष	९ ५१	९ ४७	९ ४३	९ ३९	९ ३५	९ ३२	९ २८	९ २४	९ २०	९ १६	९ १३	वृष	११ ६	११ २	१० ५८	१० ५४	१० ५१
वृष	११ ४७	११ ४३	११ ३९	११ ३५	११ ३१	११ २८	११ २४	११ २०	११ १६	११ १२	११ ९	मिथुन	१ २०	१ १६	१ १२	१ ८	१ ५
मिथुन	२ १	१ ५७	१ ५३	१ ४९	१ ४५	१ ४२	१ ३८	१ ३४	१ ३०	१ २६	१ २३	कर्क	३ ३८	३ ३४	३ ३०	३ २६	३ २३
कर्क	४ १९	४ १५	४ ११	४ ७	४ ३	४ ०	३ ५६	३ ५२	३ ४८	३ ४४	३ ४१	सिंह	५ ५२	५ ४८	५ ४४	५ ४०	५ ३७
ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	ल.अं.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
सिंह	६ ३३	६ २९	६ २५	६ २१	६ १७	६ १४	६ १०	६ ६	६ २	५ ५८	५ ५५	कन्या	८ ५	८ १	७ ५७	७ ५३	७ ५०
कन्या	८ ४६	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ ३०	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ ११	८ ८	तुला	१० २१	१० १७	१० १३	१० ९	१० ६
तुला	११ २	१० ५८	१० ५४	१० ५०	१० ४६	१० ४३	१० ३९	१० ३५	१० ३१	१० २७	१० २४	वृश्चिक	१२ ३८	१२ ३४	१२ ३०	१२ २६	१२ २३
वृश्चिक	१ १९	१ १५	१ ११	१ ७	१ ३	१ ०	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४१	धनु	२ ४४	२ ४०	२ ३६	२ ३२	२ २९
धनु	३ २५	३ २१	३ १७	३ १३	३ ९	३ ६	३ २	२ ५८	२ ५४	२ ५०	२ ४७	मकर	४ ३१	४ २७	४ २३	४ १९	४ १६
मकर	५ १२	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५३	४ ४९	४ ४५	४ ४१	४ ३७	४ ३४	कुम्भ	६ २	५ ५८	५ ५४	५ ५०	५ ४७

पक्ष में विविधमुहूर्त्त। ति.१बुध पू.फा.में केतुयुति। प्रा.७।१२से उ.फा.में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन विपणि मुहूर्त्त। ति.२ गुरु उ.फा.में पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान उपनयन (ल.१२प्रा.६।४२से दि.८।१०तक)विपणि मुहूर्त्त। प्रा.७।५२से हस्त उपनयन (ल.२ दि.९।४७ से) विद्यारंभ (ल.३ दि.११।४३ से) द्विरागमन(ल.२ दि.९।४७ से या ल.३ दि.११।४३ से या ल.६ रा.६।२९से) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा गृहारंभ (ल.२ दि.९।४७ से या ल.३ दि.११।४३ से) हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार मुहूर्त्त। ति.३ शुक्र हस्त में भद्रा दोष। ति.४ शनि चित्रा रिक्तादोष। ति.५ रवि स्वाती शिशुताम्बूलभक्षण विद्यारंभ, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा (ल.२ दि.९।३५ से या ल.३ दि.११।३१ से)बीजोप्ति विपणि वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.६ सोम विशाखा चौपायों का क्रय विक्रय मुहूर्त्त। रा.१०।३ भद्रा पूर्व दि.३।७ से अनुराधा द्विरागमन (ल.६ सा.६।१४ से या ल.७ रा. ८।२७से) मुहूर्त्त। ति.७ मंगल दि.११।७ भद्रा बाद अनुराधा वाहनक्रय शल्यक्रिया मुहूर्त्त। ति.८ बुध ज्येष्ठा शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन चौपायों का क्रय विक्रय मुहूर्त्त। ●

४८पं० चैत्रकृष्ण ३०गुरु सूर्योदय से स्पष्टग्रह द्युगण ३१८२ अयनांश २४।१२।४८

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	१०	१०	२	११	११	१०	४
४	२	१८	१९	२३	२१	६	१३	१३
५	४९	३८	३०	३५	५५	१	४३	४३
२३	३६	५४	०	२८	३२	४८	३९	३९
५९	८११	४६	२२	०	७४	७	३	३
४२	३४	३९	४४	२१ मा	१२	५०	११	११



▲आरोग्यविद्या तिलक व्रत। आज प्रातः काल "सिद्धार्थ" नामाब्द संवत्सर का संकल्पादि विनियोग प्रारम्भ। शैलपुत्रीदर्शन। कल्पादि १। गुडीपडवा। वायु परीक्षण। ⊙उ.भा. के सूर्य १४।२८(ग.११।४८)। सर्वार्थसिद्धियोग ग.शे.४।३५ से।

● रा.८।२० से मूल द्विरागमन (ल.७ रा.८।२० से) मुहूर्त्त। ति.९ गुरु मूल रिक्ता-व्यतिपात। ति.१० शुक्र दि.८।५४ व्यतिपात बाद सा.५।० भद्रापूर्व पू.षा. में नावनिर्माण मुहूर्त्त। ति.११ शनि उ.षा. में सौभाग्यवती विना कालावस्त्रनीलमादि-रत्नधारण मुहूर्त्त। ति.११ रवि श्रवण पुंसवन सीमन्त शिशुताम्बूल-भक्षण वाहनक्रय मुहूर्त्त। ति.१२ सोम धनिष्ठा जातकर्म नामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन चौपायों का क्रय विक्रय हलप्रवहण गजाश्वकृत्य मुहूर्त्त। पश्चात मासान्त दोष है।

☛ ११ मार्च को शीतलाष्टमी व्रत (बसौड़ा) होगा। आज बासी भोजन करना शास्त्रोक्त है। आज शीतला माता के निमित्त जल (पानी) व ठण्डी वस्तुओं का दान करें। १५ मार्च को समस्त पापों को हरने वाली पापमोचिनी एकादशी व्रत सबका है। विशेष-वृद्धि एकादशी में स्मार्त्त तथा वैष्णवों हेतु व्रत तथा पारण का निर्णय। वृद्धि एकादशी में दशमी मान अधिक होने पर वैष्णव दशमी विद्ध प्रथम एकादशी का त्याग कर दूसरी एकादशी ग्रहण करेंगे। स्मार्त्त भी सूर्योदय से स्पर्श द्वितीय एकादशी ग्राह्य करेंगे। इस दिन सूर्योदयस्पर्श एकादशी व्रत हेतु सम्पूर्ण मानी (शेष पृष्ठ ८ पर)

विवाह मुहूर्त्त पञ्चेष्टलग्न विमर्श

ति.१ बुध प्रा.७।१२ से उ.फा. में मृत्युबाण ग.शे.३।५८ मृत्युबाण बाद रात्रि पञ्चेष्ट-लग्नाभाव

ति.२ गुरु प्रा.७।५२ से हस्त शनिवेध रे. दिवा.ल.१ (दि.८।१०) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११ (१२स्थ शनि अशुभ) वा ल.गोधूलि या ल. (रा.६।२९) वा ल.९ (रा.१।१५) इष्ट ग्र.व.वि.१०।। (७मस्थ गुरुदान)।

ति.३ शुक्र दि.९।२ या हस्त दिवा ल. (दि.८।१०) इष्ट ५।११।। हस्त पूर्वदोष।

ति.४ शनि दि.१०।४० से स्वाती में भौमवे रे.५ (अल्परेखा) ल.गोधूलि, ल.६ (ग ६।१७) इष्ट ग्र.व.वि.६।। (७मस्थ शुक्रदान वा.ल.९ (रा.१।७) इष्ट ५ग्र.व.वि.१५।। (मस्थ गुरुदान))।

ति.५ रवि दि.१२।४४ या भौमवेध दिवा ल. (प्रा.७।५८) इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। (१२स्थ शनि अशुभ))।

ति.६ सोम दि.३।७ से अनु.रे.१० ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.६ (सा.६।१४ से) इ ५ ग्र.व.वि.१५(७वां शुक्रदान) या ल. (रा.८।२७ से) इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३(६स्थ शु अशुभ) या ल.१० (रा.३।६ से) इष्ट ५ ग्र वि.१३।। (३स्थ शुक्र अशुभ)।

ति.७ मंगल सा.५।४२ तक अनु. रे.१० दिन पञ्चेष्टलग्न का अभाव है या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

ति.८ बुध ग.८।२० से मूल में रे.९ ल (ग.१२।५२ से) इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.९ गुरु दि.८।३१ व्यतिपात पूर्व मूल में दिन में पञ्चेष्टलग्नाभाव।

ति.१०शुक्र ग.३।३४ मृत्युबाण बाद उ.षा. में पञ्चेष्टलग्नाभाव।

ति.११शनि ग.२।४७तक उ.षा.रे.९दिवाल (प्रा.७।३६ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.११।।(१२स्थ शनि अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) ल.६ (सा.५।५५ से) इष्ट ५ग्र.व.वि.११ (७वां शुक्र दान)।

आगे मीनाऽर्क (खरमासारंभ)।

मूलविचार-ज्येष्ठ/मूल-ति.७ मंगल सा.५।४ से। ति.९ गुरु ग.१०।४७ तक। रेवती अश्विनी-ति.३० गुरु ग.शे.४।३५ से। पञ्चक विचार- ति.१२ सोम सा.४।३४ से।

चौदह मनु एवं मन्वादि तिथियों का बोधक चक्र

क्र०सं०	मनुओं के नाम	मन्वादि तिथियाँ
१	स्वायम्भुव	चैत्र शुक्ल ३
२	स्वारोचिष	चैत्र शुक्ल १५
३	औत्तम	कार्तिक शुक्ल १५
४	तामस	कार्तिक शुक्ल १२
५	रैवत	आषाढ़ शुक्ल १०
६	चाक्षुष	आषाढ़ शुक्ल १५
७	वैवस्वत	ज्येष्ठ शुक्ल १५
८	सावर्णि	फाल्गुन शुक्ल १५
९	दक्षसावर्णि	आश्विन शुक्ल ९
१०	ब्रह्मसावर्णि	माघ शुक्ल ७
११	धर्मसावर्णि	पौष शुक्ल ११
१२	रुद्रसावर्णि	भाद्रपद शुक्ल ३
१३	देवसावर्णि	श्रावण कृष्ण ३०
१४	इन्द्रसावर्णि	श्रावण कृष्ण ८

युगादितिथि-ज्ञानार्थ चक्र

युगनाम	सत्ययुग १	त्रेतायुग २	द्वापर युग ३	कलियुग ४
मास पक्ष तिथि	कार्तिक शुक्ल ९	वैशाख शुक्ल ३	भाद्रपद कृष्ण १३	माघ कृष्ण ३०

मन्वादि, युगादि तिथियों में अनध्याय (पठनावकाश) और श्राद्ध दानादि करना चाहिए। मन्वादि-युगादि तिथियाँ शुभकार्य में त्यागने योग्य है, किन्तु उपरोक्त तिथियों में किये गये दान को अक्षय कहा गया है। अक्षय तृतीया में सभी शुभ कार्य करना चाहिए।

दश अवतारों का मास-पक्ष-तिथ्यादि विवरण

१-मत्स्यावतार-चैत्र शुक्ल ३ अपराह्न में
२-रामावतार- चैत्र शुक्ल ९ मध्याह्न में
३-परशुरामावतार-वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषकाल में
४-नृसिंहावतार- वैशाख शुक्ल १४ सायंकाल में
५-कूर्मावतार - वैशाख शुक्ल १५ मध्याह्न में
६-कल्किअवतार- श्रावण शुक्ल ६ सायं काल में
७-कृष्णावतार- भाद्रपद कृष्ण ८ मध्यरात्रि में
८-वामनावतार- भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्न में
९-बौद्धावतार- आश्विन शुक्ल १० सायंकाल में
१०- वाराहावतार- भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्न में

पर्व-तिथियाँ- चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या तथा पूर्णिमा और सूर्य-संक्रान्ति (सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने) की तिथि इन तिथियों को पर्व-तिथि कहते है।

त्रिविध (नक्षत्र-लग्न-तिथि) गण्डान्त (सन्धि) परिचय

(१) नक्षत्र गण्डान्त	१–रेवती के अंत की २ घटी और अश्विनी के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४घटी (१ घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त (सन्धि) काल होता है। २–श्लेषा के अन्त की २ घटी और मघा के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४घटी (१घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त काल होता है। ३–ज्येष्ठा के अन्त की २ घटी और मूल के आदि की २ घटी अर्थात् कुल ४घटी (१ घंटा ३६ मिनट) गण्डान्त काल होता है। उपरोक्त तीनों को नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं।
(२) लग्न गण्डान्त	१–कर्क के अन्त की आधी घटी (१२मिनट) और सिंह के आदि की आधी घटी (१२मि०) कुल (२४ मि०) =१घटी गण्डान्त काल होता है। २– वृश्चिक के अन्त की आधी घटी (१२मि०) और धनु के आदि की आधी घटी (१२मि०) कुल १ घटी (२४ मि०) गण्डान्त होता है। ३–मीन मेष की क्रमशः अन्त-आदि की आधी-आधी घटी अर्थात् इन दोनों के अन्तराल की १ घटी (२४ मि०) गण्डान्त होता है।
(३) तिथि गण्डान्त	पूर्णा तिथियों (पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या के अंत की तथा नन्दा तिथियों (प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी) के आदि की १-१ घटियाँ अर्थात् पूर्णा और नन्दा तिथियों के बीच अन्तराल की २ घटियाँ (४८ मिनट) तिथि गण्डान्त होता है।

उपरोक्त त्रिविध गण्डान्त (नक्षत्र गण्डान्त, लग्न गण्डान्त और तिथि गण्डान्त) शुभ कार्यों में त्याज्य है।

नक्षत्रों के विविध नामों की सूची

अश्विनी	दस्र, अश्वि, आश्व, अश्व के नाम
भरणी	यम, अन्तक, कृतान्त, याम्य
कृत्तिका	वह्नि तथा अग्नि के अन्य और नाम
रोहिणी	ब्रह्म, ब्राह्म, धाता, शकट
मृगशिरा	मृग, मृगशीर्ष तथा शशि के नाम
आर्द्रा	शिव, रुद्र, ईश्वर, रौद्र, तारका
पुनर्वसु	अदिति, सुरजननी, देवमाता
पुष्य	ईज्य, तिष्य, अमरेज्य, देवेज्य
श्लेषा	सर्प, अहि, उरग, भुजंग
मघा	पितर, पितृ, जनक
पूर्वाफाल्गुनी	भग (सूर्य विशेष), भाग्य
उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा (सूर्यविशेष), उत्तरभग
हस्त	कर,अर्क,पतंग,सूर्य के नाम
चित्रा	त्वाष्ट्र, विश्व, त्वाष्ट्र, सुरवर्द्धकि
स्वाती	वायु,पवन, मारुत तथा वायु के नाम
विशाखा	द्वीश, द्विदैव, इन्द्राग्नि, शूर्पभ
अनुराधा	मैत्र,मित्र
ज्येष्ठा	इन्द्र, शक्र,कुलिशतारा, सुरस्वामी
मूल	क्रव्य,निशाचर,निर्ऋति,राक्षस, क्रतुभुज
पूर्वाषाढ़	जल, सलिल, पय ,तोय, वारि
उत्तराषाढ़	वैश, विश्वेदेव,विश्व
अभिजित्	ब्रह्म, धाता, विधि
श्रवण	श्रुति, कर्ण, विष्णु, हरि, श्रोणा
धनिष्ठा	वसु,वासव, श्रविष्ठा
शतभिषा	वरुण,पाशि,शततारका,जलेश के नाम
पूर्वाभाद्रपद	अजैकपात्, अजपात्, पूर्वप्रोष्ठपद
उत्तरा भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य, उत्तरा प्रोष्ठपात्
रेवती	पूषन्, पौष्ण, अन्त्य, पूषा

टिप्पणी-मुख्य रूप से नक्षत्र संख्या २७ ही है, किन्तु उत्तराषाढ़ के चतुर्थ चरण के मान (घटी,पल) में श्रवण नक्षत्र के मान (घटी पल) के पन्द्रहवें भाग को जोड़ देने पर घटी पल के रूप में अभिजित् नक्षत्र का मान होता है। इस प्रकार २८वीं नक्षत्र हो जाती है, जिसकी अनेक कार्यों में उपयोगिता है।

ध्रुवादि नक्षत्र-वार बोधक चक्र

संज्ञा	नक्षत्र	वार
ध्रुव, स्थिर	रोहिणी, उ० फा०, उ०षा०, उ०भा	रवि
चर, चल	स्वा०,पुन०,श्र०,ध०श०	सोम
उग्र, क्रूर	पू०फा०, पू०षा०, पू०भा०, भ०,म०	भौम
मिश्र, साधारण	विशाखा, कृत्तिका	बुध
क्षिप्र, लघु	हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्	गुरु
मृदु, मैत्र	मृ०, रेवती, चि०, अनु०	शुक्र
तीक्ष्ण, दारुण	मू०, ज्ये०, आर्द्रा, आश्ले०	शनि

तिथि-स्वामी-बोधक चक्र

तिथियाँ	१	२	३	४	५	६	७	८
तिथि स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	नाग	गुह (कार्तिकेय)	सूर्य	शिव
तिथियाँ	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
तिथि स्वामी	दुर्गा	यम	विश्वेदेवा	विष्णु	कामदेव	शिव	चन्द्रमा	पितर

तिथियों की नन्दादिसंज्ञा बोधक चक्र

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दादि संज्ञा
१	२	३	४	५	
६	७	८	९	१०	तिथियाँ
११	१२	१३	१४	१५	
				३०	

तिथियों में त्याज्य विचार

षष्ठी में तैल, अष्टमी में मांस, चतुर्दशी में क्षौर (बाल कटाना) और अमावस्या में स्त्री-प्रसंग नहीं करना चाहिए। २,१०,१३ तिथियों में उबटन तथा ३०,७,९ इन तिथियों में आँवला लगाकर स्नान नहीं करना चाहिए। परन्तु शनिवार की षष्ठी में तैल लगाना, महाष्टमी (आश्विन शुक्ल अष्टमी) में मांस, शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में क्षौर तथा दीपावली (३०) में स्त्री-प्रसंग प्रशस्त है।

भूहास्य और भूरुदन विचार

पूर्णा (५।१०।१५) तिथि, पुष्य, गुरुवार, श्रवण के चन्द्र और हस्त के सूर्य में भू-हास्य होता है; जो शुभ है। मासान्त, संक्रान्ति का दिन, वर्षान्त, अमावस्या, होलिका, मङ्गलवार को भूरुदन होता है। भू-रुदन में यात्रा करने से यात्राभंग होती है, कृषि कार्य प्रारंभ करने से कृषिभंग होती है, गृहारम्भ करने से और व्यापार (वाणिज्य) का आरंभ करने से निष्फल होता है। विवाह करने से मृत्यु तथा क्षौर कराने से रोग होता है।

भू-शयन और भू-रजस्वला का विचार

संक्रान्ति के दिन से १।५।१०।११।१६।१८। १९वें दिन भूरजस्वला रहती है। इसमें यज्ञ, हवन, हलप्रवहण और बीज बोना वर्जित है। सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६वें चन्द्रनक्षत्रों में भू शयन करती है।

हलप्रवहण (हल चलाने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की १ शुभ है।
वार	सू०,चं०,बु०,बृ०,शु० शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रो०, मृ०, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उ०फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उ०षा०, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ है।

२।३।६।९।१२ लग्न में। पापग्रह निर्बल हों। चन्द्रमा जलचर राशि के नवांश में हो। चं० शु० बली हों। युति या दृष्टि द्वारा लग्न पर बृहस्पति का प्रभाव हो तथा हलचक्र बनता हो और भूशयन एवं भूरजस्वला का दिन न हो तो हल चलाना शुभ होता है। हल चक्र का विचार सूर्य नक्षत्र से अभिजित् सहित चन्द्रनक्षत्र तक की संख्या से किया जाता है। ३ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ३ शुभ होते हैं। यह मुहूर्त मार्तण्डोक्त है। मुहूर्त चिन्तामणि और मुहूर्त गणपति के मतानुसार सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रर्क्ष तक गिनने पर ३ अशुभ, ८ शुभ, ९ अशुभ, ८ शुभ होते हैं।

राहु के नक्षत्र से बीज बोने का चक्र व मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा शुभ है।
वार	सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
नक्षत्र	अश्विनी, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, म०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, मू०, ध०, रेवती।
लग्न	२।३।६।९।१२ श्रेष्ठ है।

राहुस्थित नक्षत्र से गिनने पर दिन नक्षत्र तक क्रमशः ८ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, ४ अशुभ होते है। बीज बोने (बीजोप्ति) में भू-रजस्वला और भूरुदन दोनों वर्जित है।

धान्यच्छेदन (फसल काटने) का मुहूर्त

तीनों पूर्वा,तीनों उत्तरा,मघा, श्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों में मङ्गलवार और शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में धान्यच्छेदन (फसल की कटाई) का कार्य शुभ होता है।

कणमर्दन (दँवाई या मड़ाई) का मुहूर्त

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, ज्येष्ठा, रोहिणी नक्षत्रों में कणमर्दन का कार्य शुभ होता है।

कोठी, खात, बखारी, आदि में अन्न रखने का मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों-उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों तथा रवि-सोम-गुरु-शुक्र वारों में कोठी-बखारी तथा खात आदि में अन्न का रखना शुभ होता है।

बीज संग्रह करने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों, स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) लग्नों, बुध-गुरु और शुक्रवारों में बीज का संग्रह करना शुभ होता है।

नवान्नभक्षण का मुहूर्त-विचार

चैत्र और पौष मासों को छोड़ अन्य १० मासों में मङ्गल-शनि को छोड़ अन्य वारों में। दोनों पक्ष की २।३।५।७।१०।१३ तथा पूर्णिमा तिथियों में। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में। विष घटिकाओं को छोड़ अन्य घटियों में तथा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट शुभ ग्रहों के लग्नों में नवीन अन्न भक्षण शुभ होता है।

वाणिज्यकर्म (दूकान प्रारम्भ करने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ एवं १५ तथा कृष्ण १ श्रेष्ठ है।
वार	सू०,चं०,बु०,बृ०,शुक्र और शनि।
नक्षत्र	अश्विनी,रो०,मृ०,पुष्य,उ०फा०, हस्त, चित्रा,अनु०, मूल, उ०षा०, श्रवण, अभि०, ध०, पू० भा०, उ० भा०, रेवती।
लग्नशुद्धि	लग्न से केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) स्थानों में शुभग्रह तथा त्रिषडाय (३।६।११) स्थानों में पापग्रह हों। लग्न में चन्द्रमा और शुक्र हों। २।१०।११ भावों में शुभग्रह हों। ८।१२ भावों में पापग्रह न हों तो वाणिज्यकर्म (विपणि) करना शुभ होता है। इसके लिए रिक्ता तिथियाँ, मङ्गलवार, कुम्भ लग्न और भूरुदन दिन अप्रशस्त होने से वर्जित है, अतः मुहूर्त-विचार के समय ध्यान देते हुए इनका परित्याग किया जाय।

सामान्यतया सुभिक्ष आदि का ज्ञान

प्रभव सम्वत्सर से प्रारम्भकर वर्तमान सम्वत्सर तक की संख्या को दूना करके उसमें से तीन घटाकर सात से भाग देने पर शेष संख्या के अनुसार शुभाशुभ फल जाने। १ और ४ शेष रहने पर दुर्भिक्ष। २ और ५ शेष में सुभिक्ष, ३ और ६ शेष में सम और शून्य शेष में पीड़ा जानना चाहिए।

विषघटीज्ञानदायक तालिका

मृ०, पुन०, मघा, रेवती	की ३० घटी के उपरान्त ४ घटी
रोहिणी	की ४० घटी के उपरान्त ४ घटी
आश्लेषा	की ३२ घटी के उपरान्त ४ घटी
अश्विनी	की ५० घटी के उपरान्त ४ घटी
उत्तरा फा०,शतभिषा	की १८ घटी के उपरान्त ४ घटी
पुष्य, पू०फा०, चित्रा, उ०षा०	की २० घटी के उपरान्त ४ घटी
आर्द्रा, हस्त	की २१ घटी के उपरान्त ४ घटी
पूर्वाभाद्रपद	की १६ घटी के उपरान्त ४ घटी
भरणी, पूर्वाषाढ़, उ०भाद्र०	की २४ घटी के उपरान्त ४ घटी
अनुराधा,श्रवण,धनिष्ठा	की १० घटी के उपरान्त ४ घटी
मूल	की ५६ घटी के उपरान्त ४ घटी
कृत्ति०,स्वा०,वि०,ज्येष्ठा	की १४ घटी के उपरान्त ४ घटी

टिप्पणी- उपरोक्त तालिका में अङ्कित घटी नक्षत्रमान ६०घटी मानकर दर्शाया गया है यदि नक्षत्र मान ६०घटी में न्यूनाधिक होगा तो उक्त मान (घटी) के समय में न्यूनाधिक्य करना होगा, जो त्रैराशिक क्रिया से आ जाएगा।

विषघटी-परिहार–चन्द्रमा लग्न के अतिरिक्त केन्द्र-त्रिकोण में हो, अथवा शुभग्रहों से दृष्ट होते हुए लग्नेश केन्द्र में हो तो विषघटी दोष नहीं होता है।

दीक्षाग्रहण के मुहूर्त का विचार

मास	चैत्र, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन शुभ है।
नक्षत्र	अश्विनी,रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, एवं शततारका शुभ है।
वार	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार, भद्रा आदि दोष से रहित होने पर शुभ होते है।
तिथि	शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१२ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१२ संख्यक लग्न, चन्द्र-तारा की अनुकूलता होने पर शुभ होती है।
लग्न शुद्धि	लग्न से ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रहों और १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रहों की स्थिति उत्तम होती है। गुरु-शुक्र का उदय होना आवश्यक है। अष्टमी, संक्रान्ति तथा सूर्य-चन्द्रग्रहण का समय दीक्षा लेने हेतु उत्तम होता है।

होमाहुति का मुहूर्त

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गणना करने से ३-३ नक्षत्रों के क्रमशः ९ भाग ९ ग्रहों के होंगे। पाप ग्रहों के भाग (नक्षत्रों) में हवन नहीं होना चाहिए। ग्रहों के उक्त ३-३ नक्षत्र को उनका मुख कहा है। पापग्रहों के मुख में पड़ी आहुति अशुभ होती है। ग्रहों के नक्षत्र विभाग, क्रम तथा शुभाशुभ फल निम्न लिखित चक्र से स्पष्ट ज्ञात होगा।

सूर्य न०से इष्ट न०सं०	३	३	३	३	३	३	३	३	३
ग्रहों के मुख	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	भौम	गुरु	राहु	केतु
शुभाशुभ फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

अग्निवास और शुभाशुभ फल

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि की संख्या में १ जोड़कर रवि आदि वार की संख्या को जोड़कर उसमें ४ का भाग देने से १ शेष रहने पर स्वर्ग में, २ शेष रहने पर पाताल में तथा ३ या शून्य शेष रहने पर भूमि में अग्नि का वास होता है। भूमि में अग्नि का वास रहने पर उस दिन किया गया हवन सुखद-शुभद होता है। स्वर्ग में अग्निवास के दिन किया गया होम प्राणनाशक तथा पाताल में अग्नि वास होने पर किया गया होम धन का नाशक होता है। अतः पृथ्वी में अग्निवास वाले दिन ही हवन किया जाना चाहिए।

विशेष--विवाह में, व्रतबन्ध में, नवरात्र में, नित्य-नैमित्तिक कार्य में, कुलदेवता के पूजन में, विष्णु के हवन में, दुर्गा के हवन में, ग्रहण में, शांतिकर्म में, पुत्रजन्म में, उत्पात शान्ति में, युगादि तिथियों में, ग्रहशान्ति में, गण्डान्त में अग्निचक्र विचारणीय नहीं होता।

वस्त्र-निर्माण (क्लाथमिल) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण प्रतिपदा (१) शुभ हैं।
वार	सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती प्रशस्त हैं।

नवीन वस्त्र की रँगाई-छपाई का मुहूर्त

तिथि	शुक्ल पूर्णिमा (१५) तथा कृष्ण प्रतिपदा (१) और दोनों पक्षों की २।३।५। ६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रवि, भौम, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र शुभप्रद हैं।

सूचीकर्म (सिलाई कार्य-टेलरिंगशॉप) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा तथा कृष्ण प्रतिपदा एवं दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ शुभ हैं।
वार	रवि, सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और रेवती नक्षत्र प्रशस्त हैं।

रजक-कार्य (क्लाथ वाशिंग, लाण्ड्री) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्ष की २।३।५।७।८।१०।११ तिथियाँ और कृष्ण १(प्रतिपदा) शुभ हैं।
वार	सोमवार, मङ्गलवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और धनिष्ठा प्रशस्त हैं।
त्याज्य	श्राद्धपक्ष, नवरात्र, व्रत का दिन, संक्रान्ति का दिन और पर्वदिन त्याज्य है।

चर्मोद्योग (चमड़े की वस्तुओं के निर्माण) का मुहूर्त

तिथि	पूर्णिमा, कृष्ण प्रतिपदा (१) तथा दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार और शनिवार।
नक्षत्र	कृत्तिका, मृगशिरा, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती प्रशस्त हैं।

सर्ववस्तु विक्रय (बेची हुई वस्तु मात्र लेने-देने) का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३ तिथियाँ पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (१) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार।
नक्षत्र	भरणी, कृत्तिका, श्लेषा, तीनों पूर्वा और विशाखा प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	स्थिर (२।५।८) लग्नों में, केन्द्र त्रिकोण और द्वितीय में शुभग्रह एवं ३।६।११वें स्थानों में पापग्रहों की स्थिति शुभ होती है।

सर्ववस्तु क्रय (खरीदी) हुई वस्तु के मूल्य मात्र लेने-देने का मुहूर्त

तिथि	कृष्ण प्रतिपदा, शुक्ल पूर्णिमा तथा दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ तिथियाँ प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शततारका और रेवती शुभ हैं।

टिप्पणी- यद्यपि क्रय-विक्रय (खरीदने-बेचने) का मुहूर्त एक सा होना चाहिए; क्योंकि एक ही दिन (समय) में किसी वस्तु को एक व्यक्ति बेंचता है और दूसरा व्यक्ति उसी वस्तु को खरीदता है। परन्तु वस्तु के लेने-देने में विक्रय मुहूर्त तथा मूल्य के लेने-देने में क्रय मुहूर्त देखना चाहिए। (ऐसा प्रयोग व्यापारियों के लिए हो सकता है)

गृह, खेत आदि भूसम्पत्ति के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

गुरु, शुक्रवारों में नन्दा (१।६।११) और पूर्णा (५।१०।१५) तिथियों में तथा मृगशिरा, पुनर्वसु, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, अनुराधा मूल, विशाखा, रेवती नक्षत्रों में गृह-क्षेत्रादि भूसम्पत्ति का क्रय-विक्रय करना प्रशस्त कहा है।

शत्रु से सन्धि (सुलह) करने का मुहूर्त

८।१२ तिथियों में बु०, चं०, गु०, शु० वारों में पुष्य, मघा, अनुराधा नक्षत्रों में तैतिल करण में, शुभग्रह से युक्त दृष्ट लग्न में शुभ कहा है।

दुकान खोलने में शुभाशुभ ज्ञानार्थ हट्टचक्र

सूर्य के नक्षत्र से गिनना प्रारम्भ कर दुकान खोलने के दिन के नक्षत्र तक गिनकर संख्यानुसार शुभ या अशुभ फल चक्र के अनुसार ज्ञात करें।

नक्षत्र संख्या	स्थान	फल
१,२	आसन	सौख्य
३,४,५	मुख	विक्रय नाश
६,७,८,९	अग्नि	अर्थनाश
१०,११,१२,१३	नैर्ऋत्य	सुख
१४,१५,१६	सम्मुख	अतिश्रेष्ठ
१७,१८,१९,२०	वायव्य	चोरभय
२१,२२,२३,२४	ईशान	सर्वप्रकार हानि
२५,२६,२७,२८	मध्य	शुभप्रद

वाद प्रस्तुत (मुकदमा दाखिल) करने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की ३।५।८।१०।१३ तिथियाँ और पूर्णिमा प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार, गुरुवारऔर शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्लेषा और भरणी प्रशस्त हैं।
लग्न	३।६।७।८।१२ शुभ हैं।
लग्न शुद्धि	सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानों में हों ३।६।११ स्थानों में पापग्रह हों। अष्टम भाव में शुभ या पाप कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए।
विशेष	यदि लग्न में कोई बलवान् पापग्रह बैठा हो तो ऐसे लग्न में वाद प्रस्तुत करना (मुकदमा दाखिल करना) अत्यन्त शुभ होगा।

आय-व्यय फलादेश जानने की विधि

विधि– लाभ-हानि को जोड़ दीजिए। जमा में से १ घटा दें। तदुपरान्त उसमें ८ से भाग दें। शेष को इसप्रकार से जानिए— १. धन-लाभ, उत्तम-सिद्धि, २. धन-लाभ, मध्यम, शुभ कार्य में व्यय, ३. लाभ कम, खर्च अधिक, उलझन, ४. मानसिक तनाव, रोग, कष्ट, ५. अपव्यय, ६. भाग्य की उन्नति, ७. अकस्मात् लाभ, तथा थोड़ी सी परेशानी।

सेवाकार्य (नौकरी) करने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १ (प्रतिपदा) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित् और रेवती नक्षत्र प्रशस्त हैं।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।२।४।७।१०।११वें भावों में शुभग्रहों की स्थिति शुभद कही है तथा १०।११वें भावों में सूर्य मङ्गल भी शुभप्रद होते हैं।
त्याज्य	राज-पंचक, नृप-बाण और नृदूर त्याज्य हैं।
१	राज-पञ्चक ज्ञान-शुक्लादिगततिथि में लग्न-संख्या जोड़कर ९ से भाग देने पर शेष ४ बचे तो राज-पञ्चक होता है। यह नर्मदा नदी के दक्षिण में प्रसिद्ध है।
२	नृप - बाण - गोचर भ्रमणवश जब - जब प्रत्येक राशि के ५वें १४वें और २३वें अंशों पर सूर्य रहता है, तब-तब नृप-बाण होता है।
३	नृदूर-सेवक के नाम के नक्षत्र से स्वामी का नाम नक्षत्र दूसरा हो तो नृदूर दोष होता है। इससे स्वामी को हानि पहुँचती है।

विशेष--सेव्य (स्वामी) सेवक (नौकर) के मेलापक (योनि, राशिमैत्री, नाड़ी इत्यादि) के विचार के लिए जन्मराशि का ग्रहण न कर पुकार के नाम के नक्षत्र और राशि आदि के अनुसार विचार करना चाहिए। इसमें योनि की शुभता राशि मैत्री तो आवश्यक है ही यदि सेव्य सेवक की एक ही नाड़ी हो तो अति प्रशस्त कहा गया है।

नारायणबलि कर्म का मुहूर्त

श्रेणी	उत्तम	मध्यम
तिथि	कृष्णपक्ष की २।३।५।७।८। १०।१२।३०	कृष्णपक्ष की ४।९
वार	रविवार, सोमवार, तथा गुरुवार।	बुधवार
नक्षत्र	अश्विनी, पुष्य, हस्त, स्वाती और श्रवण।	रोहिणी, पुनर्वसु, पूर्वा फाल्गुनी, तीनों उत्तरा, विशाखा का पूर्वार्द्ध तथा अनुराधा।

शेष में नारायण बलि करना अशुभ है।

त्रिपुष्कर योग, न्यूनाधिमास, १ वर्ष के बाद, दक्षिणायन, व्यतीपातपरिघ-वैधृतियोग, गुरु शुक्र का अस्त समय, भद्रा, शुक्लपक्ष, जन्मतारा और प्रत्यरितारा तथा कर्ता की राशि से ४।८।१२वाँ चन्द्र त्याज्य है।

नोट-अशौच के पश्चात् मुहूर्त देखा जाता है। अशौच में तो यथासम्भव करना चाहिए।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिये-

पत्नीं मनोरमां देहि
मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार-
सागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

इस मन्त्र का का जप अथवा दुर्गा सप्तशती का सम्पुट युक्त पाठ करने या ब्राह्मण द्वारा कराने से शीघ्र विवाह की बाधाएँ दूर होती हैं तथा सुन्दर-गुण सम्पन्न पत्नी की प्राप्ति होती है।

गोद लेने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०। ११।१२।१३ पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष की १ (प्रतिपदा) प्रशस्त हैं।
वार	रविवार, मङ्गलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा तथा धनिष्ठा शुभ है।
लग्न	वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ (अर्थात् स्थिर लग्न ही) प्रशस्त हैं।

विशेष– गोद लेने वाले व्यक्ति और गोद जाने वाले बालक की जन्मराशि और नाम राशि दोनों तरह से परस्पर राशि-मैत्री होनी चाहिए तथा उस बालक के भाग्य की प्रबलता होनी चाहिए।

नौका आदि जलयान-निर्माण जलावतरण, संचालन का मुहूर्त

रिक्ता और अमा (४।९।१४।३०) तिथियों के अतिरिक्त तिथियों में, रवि-गुरु-शुक्रवारों में, अश्विनी, मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य, तीनों पूर्वा-तीनों उत्तरा-हस्त-चित्रा-स्वाती-अनुराधा, मूल, श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा और रेवती नक्षत्रों में शुभयुतदृष्ट मिथुन-सिंह-कन्या कुम्भ लग्नों में नौका (स्टीमर-जहाज) आदि जलयान का निर्माण शुभ होता है।

शुभग्रहों के लग्नों और वारों में श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, अश्विनी, हस्त नक्षत्रों में निर्माण स्थान से चलाकर जलावतरण कराना शुभ है। नौकादि जलयान को (यथार्थ) संचालन के लिए, शुभतिथि-वार-योग-लग्न तथा अश्विनी, हस्त, मृगशिरा, धनिष्ठा, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, अनुराधा एवं श्रवण नक्षत्र शुभद कही गई है। ज्योतिर्विदाभरण ग्रन्थ के अनुसार रोहिणी से दिन-नक्षत्र तक गिनने पर १ से ६ तक संख्या हो तो शुभ, उसके पश्चात् ७ से १५ तक संख्या हो तो अशुभ उसके पश्चात् १६ से १८ तक संख्या हो शुभ, तत्पश्चात् १९ से २१ तक अशुभ, तत्पश्चात् ६ नक्षत्र संख्या अर्थात् २२ से २७ तक शुभ होती है।

उत्तराधिकार (वसीयत) का मुहूर्त

मास	चैत्र को छोड़कर उत्तरायन के अन्य मास प्रशस्त हैं। चंद्र गुरु, शुक्र उदय और बली हों।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०। ११।१२।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा (१५) और कृष्ण १ (प्रतिपदा) प्रशस्त है।
वार	रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार शुक्रवार तथा शनिवार ग्राह्य हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण और रेवती शुभ है।
लग्न	३।५।६।७।८।११ लग्नों में से जो लग्न उत्तराधिकार ग्रहण करने वाले की जन्मराशि से ३।६।१०। ११वीं हों उनमें शुभ कहा है।
शुद्धि लग्न	लग्न से १।२।४।५।७।९।१०।११ में शुभ ग्रह तथा ३।६।११वें में पापग्रह प्रशस्त हैं। लग्न से ३में शनि, ११ में सूर्य ६ में मङ्गल, १।४।५।९।१० में गुरु तथा १० में शुक्र शुभ है।
	सूर्य, मंगल, लग्नेश, दशमेश, जन्मलग्नेश का बलवान् होना विशेष शुभद होता है।
त्याज्य	अमावस्या (३०) और रिक्ता (४।९। १४) तिथियाँ रात्रि का समय, मङ्गलवार त्याज्य हैं। लग्न से १।२।४।५।७।८।१०।१२वें में पापग्रहों का होना अशुभ होता है।

मंत्र-यंत्रादिसाधन-मुहूर्त

अश्विनी, मृगशिरा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, विशाखा और श्रवण नक्षत्रों में, रविवार और शुभ ग्रहों के वारों में मंत्र-यंत्रादि का साधन करना प्रशस्त कहा है।

वीर (वेताल) साधन मुहूर्त

भरणी, मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में तथा कुम्भ लग्न में बुध स्थित हो, लग्न से चतुर्थ भाव में शुक्र बैठा हो, अष्टम भाव शुद्ध (ग्रहरहित) हो तब ऐसे समय में वीर वेताल साधना सिद्धिप्रद होती है।

संन्यास ग्रहण करने का मुहूर्त

तिथि	रिक्ता (४।९।१४) के अतिरिक्त अन्य तिथियाँ शुभ हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा प्रशस्त हैं।
लग्न	स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) की लग्न शुभ कही गई है।

विवरण-पापग्रह निर्बल हों, चन्द्रमा अष्टम में न हो, बृहस्पति भाग्य अथवा केन्द्र में हो, शुक्र ६वें या बारहवें स्थान में हो तथा शनि तृतीय या षष्ठ अथवा एकादश स्थान में हो तो मुमुक्षु व्यक्ति को संन्यास ग्रहण करना चाहिए।

ऋण (कर्ज) लेने-देने का मुहूर्त

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३ तिथियाँ एवं पूर्णिमा प्रशस्त है।
वार	सोम, गुरु, शुक्र, शनिवार ।
नक्षत्र	स्वाती, पुनर्वसु, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और अश्विनी नक्षत्र प्रशस्त हैं ।
लग्न शुद्धि	चर (१।४।७।१०) लग्नों में, लग्न से त्रिकोण (५।९) तथा ८वें स्थान में कोई भी ग्रह न रहने पर शुभद होगा।
त्याज्य	हस्त नक्षत्र युक्त रविवार, संक्रान्ति, वृद्धि योग तथा मङ्गलवार को भूल कर भी ऋण नहीं लेना चाहिए, क्योंकि उक्त समय में लिया गया ऋण लेने वाले के वंश में पुत्र-पौत्र तक चला जाता है। अर्थात् दीर्घकाल तक उससे मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण लेने का तथा बुधवार को ऋण देने का दोनों का निषेध है।

विशेष- भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, मूल, ३ उत्तरा, ३ पूर्वा, हस्त, ज्येष्ठा, भद्रा, व्यतीपात (नक्षत्रों, करण, योग) में द्रव्य चुरा जाना, व्यापार में लगाना, किसी को ऋण या उधार देना, द्रव्य का गाड़ना अथवा किसी प्रकार के कार्य में द्रव्य लगाने से वह धन पुनः प्राप्त (वापस) नहीं होता।

॥शुभाशुभ ग्राम वास विचार॥

किसी ग्राम या नगर में (नए स्थान में) बसने हेतु ग्राम के या नगर के नाम के आदि के अक्षर से जो नक्षत्र हो उससे बसने वाले व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर से जो नक्षत्र आये, वहाँ तक (अभिजित् सहित) नक्षत्रों की संख्या ज्ञातकर निम्न प्रकार फल जानें।

स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तक पर	७	धन तथा मान का लाभ
पीठ पर	७	हानि तथा निर्धनता
हृदय पर	७	सुख, सम्पत्ति लाभ
पैरों पर	७	पर्यटन (यात्रा)

चैत्रादि मासों में गृह बनाने में फल का ज्ञान

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
फल	शोक	धान्य-वृद्धि	मृत्यु	पशुहानि	द्रव्य-वृद्धि	नाश
मास	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
फल	विवाद	सेवक हानि	धनाप्ति	श्रीप्राप्ति	अग्निभय	लक्ष्मी प्राप्ति

वास्तुभूमि का प्लव (ढलान) के अनुसार फल

भूमि के ढलान की दिशा	फल
पूर्व	धनैश्वर्यवर्द्धक
अग्निकोण	अग्निभय कारिणी
नैर्ऋत्यकोण	धनहानि कराने वाली
पश्चिम	सुतक्षय कारिणी
वायव्य कोण	प्रवास एवं उद्वेगप्रदायिनी
उत्तर	श्री, सुख, विद्याप्रदायिनी
ईशानकोण	धन, विद्या और यशप्रदा

मध्यप्लवा (बीच में नीची और चारों ओर ऊँची) भूमि नेष्ट तथा अशुभ फल देने वाली होती है। गृह निर्माण के लिए समतल, पूर्व प्लवा, उत्तर-प्लवा एवं ईशान प्लवा भूमि ही श्रेष्ठ होती है।

वृक्ष-चक्र (सूर्य नक्षत्र से चन्द्रर्क्ष तक)

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे दिन के नक्षत्र तक गिनकर निम्नलिखित चक्र के अनुसार फल समझना चाहिए।

मूल में	त्वचा में	शाखा में	पत्तों में	शीर्ष पर	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोगप्रद	धनप्रद	नाशकारक	दारिद्रता कारक	शुभप्रद	मृत्युप्रद	हानिप्रद	धनागम	लाभप्रद	फल

वाटिका (बाग) लगाने का मुहूर्त चक्र

मास	वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, और फाल्गुन मास सामान्यतया शुभ कहे हैं।
तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तथा पूर्णिमा और कृष्ण १ भी प्रशस्त हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों-उत्तरा हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, अभिजित, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
विशेष	लग्न में चन्द्रमा या जलचर राशि होना चाहिए। उत्तरायण और गुरु-शुक्र के उदय समय में शुभ होता है।

वृक्षरोपण (लगाने) का मन्त्र– ॐ वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते शुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते॥

वास्तुप्रदीप के अनुसार द्वार की विधि

जिस दिशा में द्वार बनाना हो, विस्तार या दीर्घ में उसके नौ भाग करें। पाँच भाग को दक्षिण की तरफ और तीन भाग को उत्तर भाग में छोड़कर शेष भागमें द्वार बनाना चाहिए।

दक्षिण और वाम का विचार—घर से निकलते समय जो दाहिनी ओर पड़े वह दक्षिण तथा जो बाँयी तरफ पड़े वह वाम है। ऐसा वास्तु राजवल्लभ का मत है।

वाराहमिहिर के अनुसार चारों दिशा में द्वार का चक्र और फल

पूर्व: अग्निभय, स्त्रीजन्म, धनवृद्धि, नृपलाभ, क्रोधपरता, असत्य, क्रूरत्व, चौरभय

दक्षिण: अल्पसुत, प्रेष्यत्व, नीचत्व, भक्ष्यपानसुतवृद्धि, रौद्र, कृतघ्नता, निर्धनता, पुत्रबलनाश

पश्चिम: [illegible], सुतकुलदोष, [illegible], पुत्रधनप्राप्ति, सर्वगुणलाभ, धन पुत्र लाभ, शत्रु वृद्धि, वध बन्धन

उत्तर: रोगवृद्धि, धनक्षय, नृपतिभय, धनलाभ, महदैश्वर्य, पुत्रार्थलाभ, रिपुवृद्धि, पुत्रादिपीड़ा

ई.	पू.	अ.
उ.		द.
वा.	प.	नै.

चौकोर घर के भीतर विविध कार्यों-सामग्रियों के स्थान का चक्र

देवता	स.धा.	स्नान	दधिमंथन	रसोई
औष.	ईशान पूर्व के मध्य में अन्य सभी वस्तुओं का स्थान बनाना चाहिए।			घृत
भण्डार				शयन
रति				पाखाना
धान्य	रोदन	भोजन	विद्या भ्यास	अस्त्रादि

॥भूमि में शल्य (हड्डी आदि) ज्ञानविधि॥

वर्तमान समय में प्रायः व्यक्ति वर्णव्यवस्थानुसार कहे हुए कार्यों को ही न कर के सभी वर्णों के कार्यों को न्यूनाधिक मात्रा में कर रहा है। अतः पूछने वाले व्यक्ति से फल, फूल, नदी और देवता, इन चारों के एक-एक नामों को उच्चारण कराकर उनके प्रथमाक्षरों के द्वारा निम्न लिखित चक्र से शल्यादि की स्थिति, प्रकार और गहराई आदि का बोध करें।

अ	क	च	ट	त	प	य	श	ह,प,य	वर्ण अक्षर
पूर्व में	अग्नि कोण में	दक्षिण में	नैर्ऋत्य कोण में	पश्चिम में	वायव्य कोण में	उत्तर में	ईशान कोण में	मध्य में	दिशा
मनुष्य की हड्डी	गधे की हड्डी	मनुष्य की हड्डी	कुत्ते की हड्डी	बच्चे की हड्डी	भूसी, राख कोयला	ब्राह्मण की हड्डी	गौ की हड्डी	मनुष्य के कपाल की हड्डी	शल्य प्रकार
१॥हाथ नीचे	२हाथ नीचे	२हाथ नीचे	१॥हाथ नीचे	१॥हाथ नीचे	४ हाथ नीचे	२ हाथ नीचे	१ हाथ नीचे	३॥हाथ नीचे	हस्त प्रमाण
मृत्यु-प्रद	राजभय-प्रद	स्वामी को मृत्युदायी	बाल मृत्यु दायी	गृह विनाश-कारी	दुःस्व-प्नदायी	दरिद्रता-कारी	गो नाश-कारी	कुलनाश-कारी	फल

ध्वजादि आयों के नाम एवं फलबोधक चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	संख्या
ध्वज	धूम	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ऊष्ट्र	आय-नाम
कीर्ति	शोक	जय	शत्रुता	धन	दरिद्रता	सुख	रोग	फल

ब्राह्मण राशि (४।८।१२) वालों को ध्वज आय, क्षत्रिय (१।५।९) राशिवालों को वृष आय, वैश्य (२।६।१०) राशिवालों को सिंह आय तथा शूद्र (३।७।११) राशिवालों को गज आय शुभदायक होता है।

विशेष- ध्वज आय में पूर्ण सिद्धि, वृष आय वाले मकान में पशुओं की वृद्धि, गज आय वाले गृह में विविध प्रकार की सम्पत्ति का लाभ तथा सिंह आय वाले गृह में क्रूरता तथा सन्तान की कमी होती है। शेष समसंख्यक आयों वाले मकान अनेक प्रकार के शोक, दुःख देने वाले होते हैं।

सूर्य चन्द्रवेध निर्णय तथा इनका प्रयोग

चन्द्रवेध उसे कहते हैं, जिसकी लम्बाई उत्तर-दक्षिण की हो और पूर्व-पश्चिम जिसकी लम्बाई हो उसे सूर्य वेध कहते हैं।

१- ग्राम में, क्षेत्र में, गृह में, बावली (वापी) में, तालाब (तड़ाग) और बगीचा (वाटिका) में चन्द्रवेध तथा अग्निकार्य से आजीविका चलाने वालों के लिए उनके कक्ष (कार्य स्थल) में सूर्यवेध अच्छा कहा है।

२- दूसरा मत है, कि गृह में चन्द्रवेध, जलाशय में सूर्यवेध तथा वाटिका में सूर्यवेध और चन्द्रवेध दोनों ही शुभप्रद होते हैं।

॥देवालयारंम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशयारंभ में राहुमुख तथा खाते की दिशा बोधक चक्र॥

आरम्भ में	राहु का मुख-पुष्ट में	ईशान कोण में	वायव्य में	नैर्ऋत्य में	अग्निकोण में
देवालय के आरम्भ में	राहुमुख राशियाँ	१२।१।२ के सूर्य में	३।४।५ के सूर्य में	६।७।८ के सूर्य में	९।१०।११ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्नि कोण में	ईशान में	वायव्य में	नैर्ऋत्य में
गृहारम्भ में	राशियाँ	५।६।७ के सूर्य में	८।९।१० के सूर्य में	११।१२।१ के सूर्य में	२।३।४ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्निकोण में	ईशान में	वायव्य में	नैर्ऋत्य में
जलाशयारम्भ में	राहुमुख-राशियाँ	१०।११।१२ के सूर्य में	१।२।३ के सूर्य में	४।५।६ के सूर्य में	७।८।९ के सूर्य में
	खात की दिशा	अग्निकोण में	ईशान में	वायव्य में	नैर्ऋत्य में

वास्तुभूमि शुभाशुभ ज्ञान विधि– सायं काल में हाथ भर गहरा गड्ढा खोदकर उस जल से भर दें। प्रातःकाल यदि उसमें जल रहे तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम तथा यदि उसमें दरारें पड़ गई हों तो अशुभ समझना चाहिए।

भूमि की आकृतियाँ (आकार) और उनके फल– समकोण आयताकार भूमि सभी प्रकार सिद्धिप्रद होती है। चतुष्कोण समचतुर्भुज भूमि धनागम की द्योतक होती है। वृत्ताकार भूमि बुद्धिवर्धक होती है। भद्राकार भूमि भद्रदायिनी (मङ्गल करने वाली) होती है। चक्राकार (कुम्हार के चाक के आकार वाली) भूमि दरिद्रता देने वाली होती है। विषम भुजाओं वाली भूमि शोकप्रदा, त्रिकोण भूमि राजभय करने वाली होती है। बैलगाड़ी के आकार की भूमि धननाशक, दण्डाकार पशुनाशक, सूर्पाकार भूमि गोनाशक, कूर्माकार बन्धन (जेल) भय, धनुपाकार बहुत भय उत्पादक, कुम्भाकार कुष्टरोग करने वाली, पवनाकार (पूर्व-पश्चिम आयत) भूमि नेत्रदोष करने वाली मृदङ्गाकार भूमि बन्धु विनाश करने वाली होती है।

पिण्ड (क्षेत्रफल) के अनुसार आय-वार अंशादि ज्ञान विधि

१-पिण्ड को ९ से गुणाकर उसमें ८ से भाग देने पर शेष तुल्य संख्यक आय होगी। २-पिण्ड को ९ से गुणाकर उसमें ७ से भाग देने पर शेष तुल्य संख्यक वार होगा। ३-पिण्ड को ६ से गुणाकर उसमें ९ से भागदेने पर शेष तुल्य अंश की संख्या होगी। ४-पिण्ड में ८ से गुणाकर गुणनफल में १२ से भागदेने पर शेष तुल्य द्रव्य होगा।
५-पिण्ड को ३ से गुणाकर उसमें ८ से भाग देने पर शेष तुल्य ऋण होगा।
६-पिण्ड को ८ से गुणाकर २७ से भाग देने पर शेष नक्षत्र की संख्या होगी।
७-पिण्ड को ८ से गुणाकर १५ से भाग देने पर शेष तुल्य तिथि होगी।
८-पिण्ड को ४ से गुणाकर उसमें २७ से भाग देने पर शेष संख्या तुल्य योग होगा।
९-पिण्ड में ८ से गुणाकर गुणनफल में १२० का भाग देने पर शेष संख्या तुल्य आयु होगी।

टिप्पणी– आय से तात्पर्य ध्वजादि से है। वारों की गणना रविवारादि से होगी। अंशों के स्वामी क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र एकादि शेष में समझना चाहिए। द्रव्य-संख्या अधिक और ऋण संख्या अल्प होना चाहिए। नक्षत्र संख्या अश्विन्यादि से समझना चाहिए। गृहस्वामी के नामनक्षत्र से गृहपिण्ड की नक्षत्र संख्या (इस गणनानुसार) ३।५।७ नहीं होनी चाहिए क्यों कि तीन (३) निरंतर दुःखसूचक, ५ वीं यशक्षय करने वाली, तथा ७ वीं आयु क्षीण करने वाली होती है।

॥गृहारम्भ में वृषवास्तु चक्र ज्ञान॥

गृह आदि के आरम्भ में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से गणना आरम्भ कर अभिजित सहित गृहारम्भ के दिन तक गणना करें। प्रथम ३ नक्षत्र वृष के शिर पर रखें उस में गृहारम्भ करने से अग्निभय, तत्पश्चात ४ नक्षत्र आगे के पैर पर रखें उसमें गृहारंभ करने से उद्वेग फिर ४ नक्षत्र पिछले पैर पर रखें उसके गृहारंभ करने से स्थिरता, तत्पश्चात ३ नक्षत्र पीठ पर रखें उस में गृहारंभ करने से श्री (लक्ष्मी) प्राप्ति, फिर ४ नक्षत्र दाहिने कोख में रखें, उसमें गृहारंभ करने से लाभ, तत्पश्चात् ३ नक्षत्र पूँछ पर रखें उसमें गृहारंभ करने से जय गृहस्वामी का नाश, तत्पश्चात ४ नक्षत्र बायीं कोख में रखें उसमें गृहारम्भ करने से निर्धनता तथा मुख वाले ३ अंत के नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से गृहस्वामी को सदा पीड़ा होती है। स्पष्टता के लिए वृषवास्तु चक्र देखिए।

॥स्पष्टता के लिए वृषवास्तु चक्र॥

स्थान	नक्षत्र सं०	फल	शुभाशुभ
शिर पर	३ (१ से ३ तक)	अग्निभय	अशुभ
आगे के पैर पर	४ (४ से ७ तक)	उद्वेग	अशुभ
पीछे के पैर	४ (८ से ११ तक)	स्थिरता	शुभ
पीठ पर	३ (१२ से १४ तक)	लक्ष्मी प्राप्ति	शुभ
दाहिनी कोख पर	४ (१५ से १८ तक)	जय, लाभ	शुभ
पूँछ पर	३ (१९ से २१ तक)	गृहस्वामीकानाश	अशुभ
बायीं कोख पर	४ (२२ से २५ तक)	निर्धनता	अशुभ
मुख पर	३ (२६ से २८ तक)	सतत पीड़ा	अशुभ

॥द्वारचक्र॥

सूर्यस्थित नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नक्षत्र संख्यानुसार फल जानना चाहिए। जो निम्न चक्र में स्पष्ट है।

नक्षत्र सं०	फल
४	राज्यलाभ
२	हानि
४	धनप्राप्ति
२	भय
४	मृत्युभय
२	मृत्यु
४	द्रव्यलाभ
२	शोक, भय
३	धनलाभ

॥द्वारशाखा चक्र॥

सूर्य स्थित नक्षत्र से आरम्भकर दिन के नक्षत्र तक गिनकर निम्न लिखित चक्र से फल का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करें।

स्थान	नक्षत्र सं.	फल
शिर पर	४	श्रीप्राप्ति
कोण में	८	उद्वसन
शाखा में	८	सौख्य
देहली में	३	गृहस्वामी का नाश
मध्य में	४	सौख्य

गृहारम्भ मुहूर्त बोधक चक्र

शुभ मास	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुनमास शुभ है।
शुभ सौर मास	मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर और कुम्भस्थ सूर्य के मास।
शुभ तिथियाँ	२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ शुभ हैं।
शुभवार	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनिवार।
शुभ नक्षत्र	तीनों उत्तरा, मृगशिरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।
शुभलग्न	२।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ है।
लग्न-शुद्धि	लग्न से केन्द्र त्रिकोण (१।४।७।१०।५।९) स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह स्थित हों। लग्न से ८।१२ स्थानों में शुभ या पाप कोई भी ग्रह न हो। लग्न अपने स्वामी और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो श्रेष्ठ होता है।
त्याज्य	भद्रा, कुयोग, अष्टमस्थ चन्द्रमा, चक्र-शुद्धि का अभाव, गुरु-शुक्र का बालत्व-वृद्धत्व तथा अस्तादि समय त्याज्य है। प्रातः सायं संध्या मध्याह्न और मध्य रात्रि भी त्याज्य है।

॥गृह-प्रवेशार्थ वामरवि विचार॥

पूर्व आदि दिशाओं में द्वार (मुख्य द्वार) वाले गृहों में प्रवेश करने के लिए क्रमशः आठवें, पाँचवें, दूसरे और ग्यारहवें स्थानों से ५ स्थानों में सूर्य हो तो वाम रवि होता है। अर्थात् पूर्वद्वार वाले गृह में प्रवेश करने के लिए प्रवेश लग्न से आठवें स्थानों से ५ स्थानों में सूर्य के रहने से वाम रवि होता है। दक्षिण ओर द्वार वाले गृह में प्रवेश के लिए प्रवेश लग्न से ५वें स्थान से ५ स्थानों में सूर्य रहे तो वाम रवि होता है। पश्चिम द्वार वाले भवन में प्रवेश लग्न से २ (दूसरे) स्थान से ५ स्थान में सूर्य हो तो वाम रवि होता है। उत्तर दिशा में द्वार वाले गृह में प्रवेश लग्न से ११वें स्थान में सूर्य के रहने से वाम रवि होता है। वाम रवि में ही प्रवेश करना उत्तम होता है। वाम रवि के स्पष्ट ज्ञान के लिए आगे दिया चक्र द्रष्टव्य है।

वाम रवि बोधक चक्र

पूर्वद्वार	दक्षिणद्वार	पश्चिमद्वार	उत्तरद्वार	द्वार की दिशा
८।९।१०।११।१२	५।६।७।८।९	२।३।४।५।६	११।१२।१।२।३	प्रवेश लग्न से प्रति दिशा में ५-५ स्थानों में स्थित सूर्य वाम रवि होता है।

कुम्भचक्र शुद्धि विचार

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से १ नक्षत्र कलश के मुख में स्थापित करें, उसका फल अग्निदाह है। तत्पश्चात् ४ नक्षत्र पूर्व में उद्वास कारक, ४ नक्षत्र दक्षिण में लाभप्रद, ४ नक्षत्र पश्चिम में श्रीप्रद, ४ नक्षत्र उत्तर में कलह कारक, ४ नक्षत्र गर्भ में विनाश कारक, ३ नक्षत्र गुदा में स्थिरता कारक, और ३ नक्षत्र कण्ठ में भी स्थिरता कारक कहा है, यह गणना सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से प्रवेश के दिन तक के नक्षत्र तक गिनकर उपरोक्त क्रम से, स्थापित करने पर जिस स्थान पर प्रवेश नक्षत्र पड़े तदनुरूप फल जानना चाहिए। स्पष्टता के लिए नीचे चक्र देखें।

सूर्य के नक्षत्र से २७ न०	१	४	४	४	४	४	३	३
स्थान	मुख में	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में	गर्भ में	गुदा में	कण्ठ में
फल	अग्निदाह	उद्वास	लाभ	श्रीप्राप्ति	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता
विशेष फल	अशुभ		शुभ		अशुभ		शुभ	

चुल्ही चक्र

सूर्य स्थित राशि से दिन के नक्षत्र तक गणना करने पर प्रथम ६ नक्षत्र पीठ पर रखे जिस का फल श्रीलाभ, ४ नक्षत्र शिर पर जिसका फल मृत्युभय, ८ नक्षत्र बाहों में सुखद, ५ गर्भ में फल विनाश कारक, २ हाथ में सुभोजनप्रद, २ नक्षत्र पैरों पर, स्त्री नाशक है। स्पष्टता के लिए चक्र द्रष्टव्य है।

स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल
पीठ पर	६	श्री लाभ	गर्भ में	५	विनाश
शिरपर	४	मृत्युभय	हाथों में	२	सुभोजन
वाहुओं पर	८	सुखप्रद	पैरों में	२	स्त्रीमरण

गृह के लिए इष्ट नक्षत्र कल्पना एवं गणना विचार

आर्द्रा से ६ नक्षत्र तथा शतभिषा से तीन नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी और शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा एवं उत्तराभाद्रपदा (उ.भा.) यह ९ नक्षत्र गृह की हों तो श्रेष्ठ हैं। गृह और गृह स्वामी दोनों का राशि कूट आदि (मेलापक) उसी प्रकार विचार करना चाहिए जिस प्रकार विवाहार्थ वर कन्या का मेलापक देखा जाता है। वर-कन्या के विवाहार्थ मेलापक में एक नाड़ी होना वर्जित हैं, परन्तु गृह और गृहस्वामी की एक नाड़ी हो तो अति प्रशस्त कहा है और यह भी कहा है, कि गृह और गृहेश की यदि एक नाड़ी हो तो अन्य बातों का विचार गौड़ हो जाता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त

मास	वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन। जीर्णादि, प्राचीन क्रीत गृहो में प्रवेश के लिए श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ है।
तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियाँ उत्तम हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, और शनिवार
नक्षत्र	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुन०. पुष्य, उ०फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु० मूल, उ० षा०, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ०भा० एवं रेवती प्रशस्त हैं।
लग्न	२।५।८।११ उत्तम तथा ३।६।९।१२ मध्यम कही हैं।
लग्न-शुद्धि	लग्न से केन्द्र-त्रिकोण (१।४।५।७। ९।१०) स्थानों और २।११ स्थानों में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थानों में पापग्रह श्रेष्ठ होते हैं। प्रवेश लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध अर्थात् ग्रहरहित होना चाहिए। जन्म लग्न जन्मराशि से उपचय राशि अंश तथा स्थिर राशि की लग्न और वामार्क होना उत्तम कहा है।
त्याज्य	गुरु-शुक्र का बालत्व-बृद्धत्व तथा अस्त का समय, भद्रा, कुयोगादि, चर (१।४।७।१०) लग्न, क्षीण चन्द्रमा का पापयुत-दुष्ट होकर प्रवेश लग्न से ६।८।१२ स्थानों में स्थित होना उक्त सभी त्याज्य हैं।

भौमस्थ नक्षत्र से कूप चक्र विचार

मङ्गल जिस नक्षत्र पर हो उससे गणना प्रारम्भकर कूपारम्भ के दिन तक चन्द्र नक्षत्र की जो संख्या हो उसका फल नीचे दिये जा रहे चक्र से समझना चाहिए।

नक्षत्र	३	३	३	३	४	३	३	४	१
फल	सुन्दर पूर्णजल	क्षारजल	शुष्कजल	शुद्धजल	अमृतजल	खण्डजल	स्वादुजल	निर्जल	सजल

सूर्यस्थ नक्षत्र से कूपचक्र विचार

सूर्य स्थित नक्षत्र से कूपारम्भ के दिन पर्यन्त नक्षत्रों की गणना कर नीचे दिये चक्र से फल जानें।

स्थान	नक्षत्र सं.	फल
मध्य में	३	स्वादिष्ट जल
पूर्व में	३	खण्डित जल
अग्निकोण में	३	स्वादिष्ट जल
दक्षिण में	३	जलहानि
नैऋत्य में	३	स्वादिष्ट जल
पश्चिम में	३	दुग्धवत् जल
वायव्य में	३	मिश्रित जल
उत्तर में	३	मीठाजल
ईशान में	३	खारा जल

रोहिणी नक्षत्र से कूपचक्र विचार

रोहिणी नक्षत्र से गणना प्रारंभ कर कूपारम्भ के दिन तक जो संख्या हो उसका फल निम्न चक्र से जाने।

स्थान	नक्षत्र सं.	फल
मध्य में	३	शीघ्र स्वादिष्टजल
पूर्व में	३	निर्जल
अग्निकोण में	३	शीघ्रजल
दक्षिण में	३	निर्जल
नैऋत्य में	३	अमृतजल
पश्चिम में	३	निर्मल जल
वायव्य में	३	जलहानि
उत्तर में	३	मीठाजल
ईशान में	३	खारा जल

बृहस्पति स्थित नक्षत्र से कूपचक्र विचार

बृहस्पति स्थित नक्षत्र से कूपारम्भ के दिन तक नक्षत्रों की गणना करने से जो संख्या प्राप्त हो उसके अनुसार निम्नलिखित चक्र-द्वारा फल जानना चाहिए।

५	५	५	७	५	नक्षत्र संख्या
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभाशुभ-फल

राहु स्थित नक्षत्र से कूपचक्र विचार

राहु स्थित नक्षत्र से गणना प्रारंभ कर कूपारम्भ के दिन तक जो नक्षत्र संख्या प्राप्त हो उसका शुभा-शुभ फल नीचे दिये हुए चक्र के अनुसार समझना चाहिए।

५	३	३	३	४	४	२	३	नक्षत्र-संख्या
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

रोहिणी नक्षत्र से वापी (बावली) चक्र विचार

कोष्ठ में	नाभि में	हृदय में	मध्य में	नेत्रों में	पैरों में	स्थान
४	४	४	४	४	८	नक्षत्र २८
शुभ	बुद्धिनाश	स्थिरता	कलह	धनप्राप्ति	अनर्थ	फल

सूर्यस्थित नक्षत्रानुसार तडाग (तालाब) चक्र

सूर्यस्थित नक्षत्र से प्रारम्भ कर दिन (तडागारम्भ के दिन) के नक्षत्र तक गिनकर २-२ नक्षत्र आठों दिशाओं में ५ नक्षत्र मध्य में तथा ६ नक्षत्र वारिवाह में स्थापन करके फल का विचार करना चाहिए। स्पष्टता एवं फलज्ञान के लिए नीचे दिया हुआ चक्र देखना अपेक्षित है।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	वारिवाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्षत्र २७
शोक	जलाधिक्य	जलक्षय	अमृतजल	स्वादिष्टजल	जलशोष	स्थिरजल	नष्टजल	जलपूर्णता	पूर्णजल	फल

तडागारम्भ हेतु शुभनक्षत्रों के नाम एवं शुभ वारों के नाम– रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, रेवती तथा शतभिषा नक्षत्रों में और सोमवार, शुक्रवारों में अच्छे योग एवं शुभ लग्न में तडागारम्भ करना चाहिए। वापी के आरम्भ में अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, शततारका और रेवती शुभप्रद हैं।

कूपारम्भ मुहूर्त

मास	वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन) माघ और फाल्गुन मास श्रेष्ठ कहे हैं।
तिथि	३।५।७।८।१०।११।१३ श्रेष्ठ हैं। ४।९।१४।३० तथा शुक्ल १ नेष्ट शेष तिथियाँ मध्यम हैं।
वार	सोमवार,बुधवार,गुरुवार, श्रेष्ठ हैं। शुक्रवार क्षार-जलका द्योतक कहा है, शेष वार नेष्ट कहे हैं।
नक्षत्र	हस्त, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, मृगशिरा और रेवती नक्षत्र उत्तम हैं। चित्रा, स्वाती, मूल, पुनर्वसु, अश्विनी और श्रवण मध्यम हैं, आवश्यक होने पर इन्हें ग्रहण किया जा सकता है। ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। शेष त्याज्य हैं।
लग्न	सिंह, वृश्चिक और धनु लग्नों के अतिरिक्त शेष सभी लग्नों में कूपारम्भ (खनन) शुभ है। सिंह, वृश्चिक और धनु त्याज्य हैं।
विशेष	(१) केन्द्र १।४।७।१०, त्रिकोण ५।९ और ८ (अष्टम) में शुभग्रह व्यवस्थित हों। पापग्रह केन्द्र और अष्टम के अतिरिक्त स्थानों में स्थित हों तो प्रासाद (राजगृह), कुआँ, तालाव, बावली आदि कार्यो को आरम्भ करना शुभ होता है। (२) चन्द्रमा लग्न में हो, सोमवार हो, बृहस्पति केन्द्र में हो, पापग्रह उपचय (३।६।१०।११) स्थानों में हों, तो उद्यान (बाग), कुआँ, तालाब, बावली आदि जलाशयों का आरम्भ करना शुभप्रद होता है।

नेवार (जमुअट) स्थापन चक्र

नेवार (जमुअट या नीचक) देने के लिए राहु स्थित नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ३-३ नक्षत्र पूर्वादि ८ दिशाओं में तथा ४नक्षत्र मध्य में स्थापित करना चाहिए, इसमें अभिजित सहित २८ नक्षत्र ली गई हैं। दिन नक्षत्र (चन्द्रनक्षत्र) का पूर्व और मध्य में पड़ना शुभप्रद, उत्तर में पड़ना धनवर्धक होता है, इन तीन के अतिरिक्त अन्य किसी दिशा में पड़ना शुभद नहीं है। स्पष्टता के लिए निम्न चक्र देखें।

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
२८ नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	४
फल	शुभद	महद्भय	महादुःख	महादुःख	महद्भय	महद्भय	धनवर्धक	महद्भय	सुखद

कूपादि के जीर्णोद्धार करने का मुहूर्त

तीनों उत्तरा, रोहिणी, मघा, धनिष्ठा, रेवती, पूर्वाषाढ़, पुष्य, अनुराधा और, मृगशिरा नक्षत्रों में जलचर राशिस्थ चन्द्रमा में या जलचर राशि के नवांश में चन्द्रमा के रहने पर शुभवारों में तथा शुभ तिथियों में कूप-बावली-तालाबादि जलाशयों का जीर्णोद्धार किया जाना चाहिए।

॥दीर्घविस्तारदि शुद्धि सहित सिद्ध पिण्ड सारिणी॥

दीर्घ	विस्तार	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्ष	तिथि	योग	आयु	दीर्घ	विस्तार	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	नक्ष	तिथि	योग	[illegible]
१७	१५	७	६	१	१२	५	१५	१५	२१	१२०	४९	४५	५	७	१	१२	७	१	१५	१८	[illegible]
१९	१५	५	३	१	१२	७	१२	१५	६	१२०	५१	३५	१	७	१	१२	३	२४	१५	१२	[illegible]
२१	१५	३	७	१	१२	१	१	१५	१८	१२०	५१	३७	७	१	१	१२	५	३	६	१५	[illegible]
२१	१७	५	७	१	१२	७	२१	६	२४	९६	५१	४५	७	५	१	१२	५	२७	१५	२०	[illegible]
२१	१९	७	७	१	१२	५	६	१२	३	७२	५१	४७	५	६	१	१२	७	६	६	३	[illegible]
२५	१५	७	२	१	१२	५	३	१५	१५	१२०	५१	४१	३	७	१	१२	१	१२	१२	६	[illegible]
२५	१९	३	५	६	८	१	२०	५	१०	८०	५३	४५	१	३	१	१२	३	१८	१५	१	[illegible]
२५	२१	५	७	१	१२	७	१५	१५	२२	१२०	५५	४५	३	१	१	१२	१	१	१५	१८	[illegible]
२७	१५	५	५	१	१२	७	२७	१५	२७	१२०	५५	५१	५	३	१	१२	७	३	१५	१५	[illegible]
२७	२१	७	७	१	१२	५	२७	६	२७	९६	५७	५१	३	४	१	१२	१	१	६	१८	[illegible]
२७	२५	३	६	१	१२	१	२७	१५	२७	१२०	५७	५५	७	५	१	१२	५	२४	१५	१२	[illegible]
२९	२१	१	७	१	१२	३	१२	१२	६	७२	५९	४१	३	७	३	४	१	१६	१३	८	[illegible]
३१	२७	५	१	१	१२	७	२७	६	२७	९६	५९	५१	१	५	१	१२	३	१५	१२	२१	[illegible]
३१	२९	३	६	३	४	१	१०	७	५	११२	६१	५५	३	४	६	८	१	२	५	१	[illegible]
३३	२५	१	५	१	१२	३	१२	१५	६	१२०	६१	५७	५	३	१	१२	७	६	६	३	[illegible]
३३	२९	५	३	१	१२	७	१५	६	२२	९६	६३	५५	१	७	१	१२	३	१८	१५	१	[illegible]
३५	२७	१	७	१	१२	३	२७	१५	२७	१२०	६३	५९	५	७	१	१२	७	१	६	१८	[illegible]
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	६५	५१	३	१	१	१२	१	६	१५	३	[illegible]
३५	३३	३	७	१	१२	१	६	१५	३	१२०	६५	५३	५	२	६	८	७	२०	५	१२	[illegible]
३७	२९	१	४	३	४	३	२५	४	२६	६४	६५	५७	१	४	१	१२	३	२१	१५	२१	[illegible]
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	११	२५	५६	६५	५९	३	५	६	८	१	८	५	४	[illegible]
३७	३३	५	६	१	१२	७	२१	३	२४	४८	६५	६३	७	७	१	१२	५	१	१५	१८	[illegible]
३९	३१	१	३	१	१२	३	६	१२	३	७२	६७	५५	५	६	६	८	७	२३	५	२५	[illegible]
३९	३३	७	५	१	१२	५	१	६	१८	९६	६७	५७	३	१	१	१२	१	१५	१२	२१	[illegible]
३९	३५	५	७	१	१२	७	१२	१५	६	१२०	६९	६१	१	४	१	१२	३	३	१२	१५	[illegible]
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१६	८०	६९	६३	३	७	१	१२	१	२७	६	२२	[illegible]
४१	३९	७	६	१	१२	५	२१	१२	२४	७२	६९	६५	५	३	१	१२	७	२४	१५	१२	[illegible]
४३	३३	३	३	१	१२	१	१२	१२	६	७२	७१	५७	७	२	१	१२	५	३	६	१५	[illegible]
४३	३९	५	२	१	१२	७	२४	६	१२	९६	७१	६५	७	४	६	८	५	११	५	११	[illegible]
४३	४१	३	५	३	४	१	१०	४	५	६४	७१	६९	३	५	१	१२	१	१५	१२	२१	[illegible]
४५	३५	७	७	१	१२	५	१८	१५	१	१२०	७३	६१	५	२	६	८	७	११	२४	११	[illegible]
४५	३७	१	५	१	१२	३	१	१५	१८	१२०	७३	६३	७	७	१	१२	५	१८	१२	१	[illegible]
४५	३९	३	३	१	१२	१	२७	१५	२७	१२०	७३	६९	५	१	१	१२	७	८	६	६	[illegible]
४५	४१	५	१	१	१२	७	१८	१५	१	१२०	७५	६३	५	७	१	१२	७	२०	१५	२०	[illegible]
४५	४३	७	६	१	१२	५	१	१५	१८	१२०	७५	६५	३	७	१	१२	१	१२	१५	६	[illegible]
४७	३५	५	७	६	८	७	११	५	१९	८०	७५	६७	१	५	१	१२	३	२४	१५	१२	[illegible]
४७	३७	३	६	३	४	१	७	७	१७	११२	७५	६९	७	४	१	१२	५	१	१५	१८	[illegible]
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७५	७३	३	२	१	१२	१	६	१५	३	[illegible]
४७	४५	३	२	१	१२	१	१८	१५	१	१२०	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	५	१३	[illegible]
४९	३७	५	७	६	८	३	५	२४	१६	१०४	७७	७१	३	७	६	८	१	२३	११	२५	[illegible]
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७७	७५	७	७	१	१२	५	३	१५	१५	[illegible]

॥यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्रों की तालिका॥

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा और रेवती	यह ९ नक्षत्र यात्रा में शुभ होती हैं।
रोहिणी, पू.फा., उ.फा.,मूल,पू.षा.,उ.षा. शतभिषा, पू.भा.उ.भा. और ज्येष्ठा	यह १०नक्षत्र यात्रा में मध्यम होती है।
भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाती एवं विशाखा	यह ८ नक्षत्रयात्रा में अशुभ (निन्दित) हैं।
अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा और श्रवण	इन ७ नक्षत्रों में रिक्ता (४।९।१४) तिथियों और दिशामूल से रहित होनेपर सभी दिशाओं में सर्वदा यात्रा शुभ होती है।

नोट- अति आवश्यक होने पर तीनों पूर्वा की आरम्भ से १६ घटियाँ, कृत्तिका की आदि की २१ घटियाँ मघा की आदि की ११ घटियाँ, भरणी की पूर्व की, ७ घटियाँ तथा स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन ४ नक्षत्रों की १४-१४ घटियाँ तथा चित्रा की आदिकी ३० घटियाँ यात्रा में निषिद्ध हैं। इनके पश्चात् की घटियों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में तिथि-नक्ष की शुद्धि- दोनों पक्षों की ४,६, ८, ९ १२, १४ तिथियाँ तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (१) पूर्णिमा और अमावस्या इन तिथियों में यात्रा शुभ नहीं कही गई है। अश्विनी पुनर्वसु पुष्य मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती इन ९ नक्षत्रों में यात्रा अत्युत्तम (प्रशस्त) होती है।

दिशाओं में तिथि-वार-नत्रक्षशूलबोधक चक्र

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
तिथि	१।९	५।१३	६।१४	२।१०
वार	सोम शनि	गुरु	रवि शुक्र	मङ्गल बुध
नक्षत्र	ज्येष्ठा	पूर्वाभाद्र०	रोहिणी	उ० फाल्गु०

दिशाशूल निवारण हेतु वारक्रम से धारण-भक्षण अथवा दानार्थ वस्तुओं और वारदोहद के ज्ञानार्थ चक्र

वार	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
भक्षण, प्राशन, धारण एवं दान की वस्तुयें	घी	दूध	गुड़	तिल	दही	जव	उड़द
	ताम्बुल	चन्दन	मिट्टी	पुष्प	दही	घी	तिल
वार-दोहद	रसाला (श्रीखण्ड)	पायस (खीर)	कांजी (लपसी)	पकाया हुआ दूध (रबड़ी)	दही	कच्चा दूध	तिल युक्त भात

टिप्पणी- रसाला. (जिसे श्रीखण्ड भी कहते हैं) दही, शक्कर, मिर्च, इलायची मिलाकर बनती है।

दोहद में भक्ष्याभक्ष्य का विचार- ऊपर चक्र में उल्लिखित दोहद-वस्तुओं का शास्त्र की दृष्टि एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से, भक्ष्याभक्ष्य को विचार कर भक्षण करना चाहिए। अभक्ष्य होने पर दोहद-वस्तु को देखकर और यदि वह अप्राप्य हो तो मात्र उस वस्तु का ध्यान (स्मरण) कर यात्रा आरम्भ करनी चाहिए।

॥दिग्लग्न चक्र॥

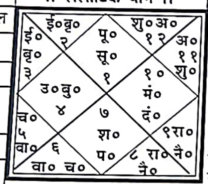
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा/फल
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	श्रेष्ठ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
३।७।११ ४।८।१२	४।८।१२ १।५।९	१।५।९ २।६।१०	२।६।१० ३।७।११	नेष्ट

॥समयशूल चक्र॥

दिशा में	पूर्व में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में
समय	प्रातः	मध्याह्न	सन्ध्या	अर्धरात्रि

दिगीश-पूर्व के सूर्य,अग्निकोण के शुक्र,दक्षिण के मङ्गल,नैर्ऋत्य के राहु,पश्चिम के शनि, वायव्य के चन्द्रमा, उत्तर के बुध, और ईशान के बृहस्पति दिक्पति हैं।

॥ ललाटिक योग ॥



लालाटिक योग विचार लग्न में सूर्य हो तो पूर्व में ११।१२ भागों में शुक्र हो तो अग्नि कोण में १० वें मङ्गल हो तो दक्षिण में, ८।९ में राहु हो तो नैर्ऋत्य कोण में ७ वें मं. शनि हो तो पश्चिम में, ५।६ वें में चन्द्रमा हो तो वायव्य में, ४वें में बुध हो तो उत्तर में, २।३ में गुरु हो तो ईशान कोण में लालाटिक योग होता है। दिक्पति से ही लालाटिक योग बनता है। जो ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, वह यदि तात्कालिक लग्न से भी उसी दिशा में पड़ जाय तो सम्मुख ललाट के सामने होने के कारण लालाटिक कहलाता है, अतः उस दिशा में यात्रा नहीं होनी चाहिए। दिगीश के केन्द्र में होने पर यात्रा कही गई है। इससे यह सिद्ध हुआ कि कोई भी दिगीश अपनी दिशा वाले केन्द्र के अतिरिक्त ३ केन्द्रो में किसी में हो तो यात्रा करें।

॥वारोमेदिग्विदिक्शूल अवबोधक सारिणी॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
चं०श०	चं०बृ०	बृ०	सू०शु०	सू०शु०	मं०	मं०बु०	बु०श०	वार

॥यात्रा में दिशा दोष परिहारक वस्तुज्ञापक चक्र॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	चावल	तिल	सत्तू	मछली	गेहूँ	दूध	खीर	वस्तु

॥वार के क्रम से कालचक्र॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मङ्गक	चन्द्र	सूर्य	०	वार

॥वार के क्रम से पाशचक्र॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
मंगल	चन्द्रमा	सूर्य	०	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	वार

काल और पाशकी स्थिति एवं उनके फल- काल और पाश सदा एक दूसरेके सम्मुख रहते हैं। दिन में जहाँ काल होता है, रात में वहीं पाश होता है,और दिन में जहाँ पाश होता है रात में वहीं काल रहता है। यात्रा और युद्ध में दाँयी ओर काल तथा बाँयीं ओर पाश रहे तो शुभद अन्यथा अशुभ होता है। काल और पाश दोनों का यात्रा में सम्मुख रहना वर्जित है।

फल सहित अकुल, कुल और कुलाकुल बोधक चक्र

संज्ञायें	नक्षत्र	तिथियाँ	वार	यात्राफल
अकुल	भरणी, रोहिणी श्लेषा, उ० ३, हस्त, स्वाती, अनुराधा,घनिष्ठा, पुनर्वसु और रेवती	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	रवि, चन्द्र, गुरु,शनि	यायी की विजय
कुल	अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वा३, चित्रा, विशाखा ज्येष्ठा एवं श्रवण	४।८।१२।१४	मङ्गल, शुक्र	स्थायी की विजय
कुलाकुल	आर्द्रा, अभिजित् मूल तथा शततारको	२।६।१०	बुध	यायी-स्थायी दोनो में सन्धि

॥पथिराहु चक्र॥

धर्ममार्गर्क्ष	अश्विनी पुष्य, श्लेषा, विशाखा अनुराधा, घनिष्ठा और शततारका।
अर्थमार्गर्क्ष	भरणी, पुनर्वसु, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा।
काममार्गर्क्ष	कृतिका, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी चित्रा मूल अभिजित्, उत्तराभाद्रपदा।
मोक्षमार्गर्क्ष	रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी,हस्त, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, रेवती।

यात्रा में समय बल- १- ऊषाकाल में पूर्व छोड़ कर अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। २- गोधूली में पश्चिम के अतिरिक्त अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। ३- निशीथ (अर्धरात्रि) में उत्तर छोड़ कर अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। ४- अभिजित् मुहूर्त (मध्याह्न) में दक्षिण दिशा को छोड़ कर अन्य दिशाओंकी यात्रा शुभ होती है। तात्पर्य यह है कि उषाकाल (सूर्योदय से पूर्व के समय) में पूर्व की गोधूली में पश्चिम की, आधीरात में उत्तर की और मध्याह्न में दक्षिण की यात्रा नहीं करनी चाहिए।

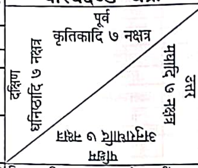
॥पथिराहुचक्र का फल॥

१- यदि सूर्य धर्मनक्षत्र में और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष नक्षत्र में हो, अथवा २-सूर्य अर्थनक्षत्र में और चन्द्रमा धर्म या मोक्ष नक्षत्र में हो, अथवा ३-सूर्य कामनक्षत्र में हो और चन्द्रमा धर्मार्थ या मोक्षर्क्ष या अर्थर्क्ष में हो, अथवा ४- सूर्य मोक्षर्क्ष में और चन्द्रमा केवल धर्मर्क्ष में हो तो शुभ होता है। इनसे विपरीत स्थिति रहने पर अशुभ होता है।

द्वादशस्थ चन्द्रमाका शुभत्व- आधान, सम्प्रदान, विवाद राज-विग्रह, पणिग्रहण, यात्रा, अभिषेक निषेक, गृह, पुंसवनादि संस्कार, युद्ध-यात्रा में द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। चन्द्रमा और योगिनी के वास और फल पृष्ठ संख्या १० पर दिया गया है, आवश्यकतानुसार वहीं पर देखें।

यात्रा में विलम्ब के कारण प्रस्थान स्थापन काल एवं वस्तुयें- राजाको दश, सामन्तको सात, तथा सामान्य लोगों को पाँच दिन पूर्व प्रस्थान स्थापित करना चाहिए। ब्राह्मण को यज्ञोपवीत, क्षत्रीय को शस्त्र, वैश्य को शहद एवं शुद्र को आँवला-फल प्रस्थान में चला देना चाहिए अथवा जिसे जो वस्तु अत्यन्त प्रिय हो वहीं प्रस्थानमें रखें किसी के मत से पूर्व दिशा की यात्रा में सात, दक्षिण की यात्रा में पाँच, पश्चिम की यात्रा में तीन और उत्तरको यात्रामें दो दिन पूर्व प्रस्थान रखना चाहिए।

परिघदण्ड चक्र



नियम- परिघ दण्ड का उल्लंघन नहीं करना चाहिए,तथा दिग्द्वार नक्षत्रों को सम्मुख या दाहिने रखकर यात्रा, करना शुभ होता है। पू०-आ०। द०-नै०। प०-वा०। उ०-ई० दिशा द्वार के नक्षत्र एक समान समझना चाहिए। वही विदिशा की यात्रा के लिए भी शुभ है। अर्थात् पूर्व दिशा के कृ० से श्ले० तक नक्षत्रों में पूर्व दिशा की भाँति आग्नेय दिशा की भी यात्रा की जा सकती है। **परिघ-दण्ड का परिहार-** आवश्यक में वारशूल नक्षत्रशूल तथा वारादि का दोषा न हो और दिग्लग्न शुद्धि हो तो परिघदण्ड का उल्लंघन करके भी यात्रा की जा सकती है।

॥यात्रा में तिथि जनित दोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र॥

तिथि	१	२	३	४	५	६	७
वस्तु	अर्कपत्र	तंडुलोदक	घी	हल्वा	हविष्य	स्वर्णजल	पूआ

तिथि	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वस्तु	बीजपूरक का फल	जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	रक्त	मुंग

॥एक दिन में भी आवश्यकतावश योगिनी भोग बोधक चक्र॥

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४२	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४५	५२	५६	६०	घटी
५५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

योगिनी फल

द्युतक्रिया, गमन एवं युद्ध में सम्मुख योगिनी मृत्यु-कारक तथा वाम भागांमें अशुभ तथा पृष्ट एवं दक्षिण में जय प्रदान करने वाली होती है।

॥यात्रा में छिक्काफल चक्र॥

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
अशुभ	दुखी	अनिष्ट	शुभ	शुभोज्य	धनाप्ति	कलह	शुभ	भय

पथिक राहु के शुभ-अशुभ फलज्ञान के लिए धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष नक्षत्रों की सूची

अश्विन	पुष्य	श्लेषा	विशाखा	अनुराग	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मनक्षत्र
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थनक्षत्र
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	ऽभि	उ.भा.	कामनक्षत्र
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षनक्षत्र

॥ यात्रा में दिन-रात मान के अष्टमांश से वेला का फल ॥

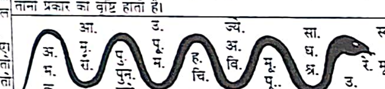
घं.	सू.दि.	सू. रा.	चं.दि.	चं.रा.	भौ.दि.	भौ.रा.	बु.दि.	बु.रा.	बृ.दि.	बृ.रा.	शु.दि.	शु.रा.	श.दि.	श.रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	रोग
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

यात्रा में विशेष विचार। यात्रा में दक्षिण राहु, वायें योगिनी, पीछे ये दोनों तथा सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है। **उत्सवादि में गमनागमन विचार।** आरम्भ होने के वाद विवाह, यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा ताय मरणाशौच की समाप्ति के बिना यात्रा नहीं करनी चाहिए। **गर्गादि ऋषियों के मत से प्रयाण मुहूर्त्त विचार।** यात्रा में ऊषाकाल को गर्ग,शकुन को बृहस्पति,मन के उत्साह को अंगिरा तथा ब्राह्मण की आज्ञा को जनार्दन प्रशस्त मानते हैं। घात चन्द्र दोष। यात्रा,कृषिकार्य,व्यापार,संग्रह,वाद-विवाद,तथा गृहारम्भमें घात चन्द्रमाका त्याग कर देना चाहिए। **विजय योग।** युद्ध सम्बन्धी यात्राकाल में गुरु एवं चन्द्रमा लग्न में तथा मंगल एवं शनि षष्ठ स्थान में गये हो तो जय प्राप्त होता है। उसी प्रकार लाभ स्थान में बुध, शुक्र एवं बृहस्पति तथा दशम स्थान में सूर्य स्थित हो तो अभीष्ट सिद्धि होती है।

सर्वघात चक्र- केवल यात्रा-युद्ध-रोगर्तता में ही विचारणी है

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सू०घा०	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं०घा०	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ०घा०	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु०घा०	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
बृ०घा०	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु०घा०	७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श०घा०	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा०घा०	८	३	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के०घा०	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा०घा०	का०	मार्ग०	पौष	माघ	फा०	चैत्र	वै०	ज्ये०	आ०	श्रा०	भाद्र०	आश्वि०
तिथि घात	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा०घा०	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	बृ०	शु०	शु०	मं०	बृ०	शु०
न०घा०	मघा	हस्त	स्वाती	अनु०	मूल	श्रवण	शत०	रेवती	भरणी	रोहि०	आर्द्रा	श्लेषा
यो०घा०	विष्कु०	शूल	परिघ	धृति	प्रीति	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	वैधृति	गण्ड	व्याघात	वज्र
क०घा०	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	वणिज	विष्टि
प्र०घा०	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
ल०घा०	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्र०घा०	मं०	शु०	बृ०	चं०	सू०	बृ०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०
धा०घा०	पि०	वा०	मि०	क०	पि०	वा०	मि०	क०	पि०	वा०	मि०	क०
व०घा०	क्ष०	वै०	शू०	वि०	क्ष०	वै०	शू०	वि०	क्ष०	वै०	शू०	वि०
संज्ञा	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पु०	स्त्री	पु०	स्त्री
संज्ञा	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
संज्ञा	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०
व०घा०	रक्त	श्वेत	हरित	पाटल	धूम्र	चित्र	श्याम	शुभ	पीत	कृष्ण	धूम्र	श्वेत
स्त्री चं०	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घा०	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

वर्षा ज्ञानार्थ सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र- अश्विनी आदि नक्षत्रों के द्वारा सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र लिखना चाहिए। इस चक्र में स्वर्ग, पाताल एवं भूमि के नवों-नवों नक्षत्र होते है। **फल-** समस्त शुभ एवं क्रूर ग्रह यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो शीघ्र ही अधिक जल देने वाली वृष्टि होती है। यदि क्रूर ग्रह स्वर्ग तथा शुभ ग्रह पाताल नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित हों तो वृष्टिजल समुद्र में चला जाता है। नपुंसक एवं स्त्रीग्रहों के योग से वायु तथा पुरुष एवं स्त्री संयोग हो और ग्रह निर्बल हों तो वृष्टि होती है, नपुंसक एवं स्त्री योग से जल तथा क्लीव एवं पुरुष योग से वायु से भय होता है। वातनाड़ी के अन्तर्गत ग्रह नाड़ी से उत्पन्न फल देते हैं। एक भी ग्रह शुभ नाड़ी में स्थित हो तो वह उस नाड़ीजन्य शुभ फल को देता है। मंगल सभी नाड़ियों में उनके फलों को देता है। बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो निश्चित ही उस समय में वृष्टि होती है। लग्नस्थ मंगल एवं गुरु से चल वृष्टि, शुक्र से सामान्य वृष्टि तथा शनि से तीनों प्रकार की वृष्टि होती है।



सम्मुख-दक्षिण शुक्र का अपवाद

(१) यदि स्त्री को पिता के घर में रहते ही स्तन चिन्ह उत्पन्न हो और रजोदर्शन हो जाय तो पति के घर जाने के लिए सम्मुख-दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता। (२) अपने नगर या ग्राम और स्वगृह के प्रवेश में, किसी विषय (बीमारी या उत्पात आदि) के उपद्रव में, विवाह में, देवतीर्थ की यात्रा में, राजपीड़ित होकर स्थान परिवर्तन की स्थिति में तथा नववधू के प्रथम पतिगृह प्रवेश में सम्मुख-दक्षिण शुक्र दोष-कारक नहीं होता। (३) कश्यप, वशिष्ठ, भृगु, अत्रि, अङ्गिरा, वत्स और भरद्वाज गोत्र वालों को सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। (४) गोचर-भ्रमणवश चन्द्रमा जब तक रेवती नक्षत्र से मृगशिरा नक्षत्र तक रहता है तबतक शुक्र अन्धा रहता है। इस अवधि में शुक्र के सामने-दाहिने रहने का दोष नहीं होता। (५) गुरु-शुक्र अस्त हों या सिंह राशिस्थ वृहस्पति हो या अधिमास हो, चन्द्र-तारा की शुद्धि भी नहीं हो तो भी किसी प्रकार का कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता यदि स्त्री दीपावली के दिन अपने पति के गृह में जाय। दीपावली अति प्रशस्त कहा है।

त्रिरागमन (द्वयंग) मुहूर्त

विवाह के पश्चात् पिता के घर से पतिगृह के लिए की जाने वाली तीसरी यात्रा को द्वयंग यात्रा या त्रिरागमन कहते हैं। इसमें मुख्य रूप से राहु का विचार किया जाता है, साथ ही योगिनी और दिशाशूल भी विचारणीय होता है। त्रिरागमन में मासिक राहु ग्रहण करना चाहिए। त्रैमासिक राहु देवालय-गृह आदि में तथा यामार्द्ध राहु युद्ध-यात्रा में विचारणीय होता है। सम्मुख और दाहिने का राहु, क्रमशः वैधव्य और संतान हानि का द्योतक कहा है। पीछे और बायें का राहु शुभप्रद होता है। योगिनी भी पीछे और बायें होने पर शुभ फल देती है। राहु-वास तथा योगिनीवास का चक्र आगे दिया जा रहा है। चन्द्रवास देखकर, सम्मुख और दाहिने का चन्द्रमा लेना चाहिए।

तिथि	दोनों पक्षों की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियाँ तथा पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की १ (प्रतिपदा) प्रशस्त हैं।
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।
नक्षत्र	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती शुभद हैं।
त्याज्य	४।६।८।९।१२।१४ (दोनों पक्षों की) तथा ३० (अमावस्या) और शुक्ल १ (प्रतिपदा) तिथियाँ, रविवार एवं मङ्गलवार, भद्रा, दिशाशूल, सामने-दाहिने का राहु, सामने-दाहिने की योगिनी, पीछे और बायें का चन्द्रमा, कर्क-सिंह-कन्या-धनु और मीन राशिस्थ सूर्य तथा उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त शेष नक्षत्र त्रिरागमन (द्वयंग) में त्याज्य हैं।

मासिक राहुबोधक चक्र

राहु के निवास की दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
गोचर-भ्रमण वश सूर्य-स्थित राशियाँ	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन

योगिनीवास चक्र

तिथियाँ	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
योगिनीवास की दिशा	पूर्व	अग्नि कोण	दक्षिण	नैर्ऋत्य-कोण	पश्चिम	वायव्य कोण	उत्तर	ईशान कोण

चन्द्रवास चक्र

गोचर भ्रमणवश राशियों में चन्द्रमा की स्थिति	मेष, सिंह, धनु	वृषभ, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन
	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर

चन्द्रमा सम्मुख होने पर आर्थिक लाभ कराता है। दाहिने रहने पर सुख और सम्पत्ति देता है। पीछे रहने से मृत्युतुल्य कष्ट देता है तथा बायें होने पर धनहानि कराता है। योगिनी का फल इसके विपरीत होता है।

शिववास-विचार–वर्तमान तिथि संख्या को दो से गुणा करके उसमें पाँच जोड़ देने से जो संख्या प्राप्त हो उसमें ७ से भाग देने पर १ शेष रहने पर कैलाश, पर २ शेष में गौरी के समीप, ३ शेष में बैल (नन्दी) पर, ४ शेष में सभा में, ५ शेष में भोजन में, ६ शेष में क्रीडा में, ७ शेष अर्थात् ० शेष में श्मशान में शिववास होता है। तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा (१) से करनी चाहिए। शिववास का फल नीचे चक्र में देखिए।

शिववास बोधक-चक्र

शुक्लपक्ष की तिथियाँ	कृष्णपक्ष की तिथियाँ	शिववास	फल
१।८।१५	७।१४	श्मशान में	मृत्युप्रद
२।९	१।८।३०	गौरी के पास	सुख-समृद्धिप्रद
३।१०	२।९	सभा में	तापकारक
४।११	३।१०	क्रीड़ा में	कष्टप्रद
५।१२	४।११	कैलाश पर	सुखद
६।१३	५।१२	बैल (नन्दी) पर	अभीष्टसिद्धिदायक
७।१४	६।१३	भोजन में	

ग्रहों का स्वगृह-उच्च-नीच-मूलत्रिकोण, जाति, रंग अवस्था, भाग्योदय वर्ष आदि बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह-विवरण
सिंह	कर्क	मेष, वृश्चिक	मिथुन, कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	मकर, कुम्भ	कन्या	मीन	गृहराशियाँ
मेष, १० अंश	वृष ३ अंश	मकर २८ अंश	कन्या १५अंश	कर्क ५ अंश	मीन २७ अंश	तुला २० अंश	वृष	वृश्चिक	उच्च राशियाँ
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	मिथुन	धनु	मूलत्रिकोण राशियाँ
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	सन्ध्या	सन्ध्या	सन्ध्या	कालबल
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्व/दीर्घ
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातियाँ
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	वश्यादि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुन्सक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुषादि सं०
क्रूर	सौम्य	पाप	सौम्य/पाप	सौम्य	सौम्य	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि सं०
रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	रंगविरंगा	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	रक्तादि रंग
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	वनचारादि सं०
नृलोक	नृलोक	नागलोक	स्वर्गलोक	स्वर्गलोक	नागलोक	नागलोक	नागलोक	नागलोक	नृलोकादि
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि
पित्तप्रकृति	कफप्रकृति	पित्तप्रकृति	सम	सम	कफप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	वातप्रकृति	पित्तादिप्रकृति
कटु	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	खारा-खट्टा	तिक्त	तिक्त	तिक्त	कटुवादिरस
व्योमदृष्टि	समदृष्टि	व्योमदृष्टि	तिर्यक दृष्टि (तिरछी दृष्टि)	समदृष्टि	तीक्ष्णदृष्टि	नीचीदृष्टि	नीचीदृष्टि	नीचीदृष्टि	दृष्टियाँ
पूर्वमुख	पश्चिममुख	दक्षिणमुख	उत्तरमुख	उत्तरमुख	पूर्वमुख	पश्चिममुख	दक्षिणमुख	दक्षिणमुख	गृहके द्वारोंकी दिशायें
मोती	चाँदी	राँगा	स्वर्ण	रत्न	चाँदी	लोहा	अस्थि	अस्थि	पदार्थ
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पशुस्थान	जलगृह	दग्धभूमि	गोशाला	देवस्थान	जलस्थान	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	निवास स्थान
हरिवंश-श्रवण	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	आमान्नदान	गो-प्रतिमादान	मृत्युञ्जय-जप	सोने के सर्प का दान	ध्वजादान	क्षेमार्थ दानपदार्थ
२२ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष	भाग्योदय वर्ष
अग्नि	जल	पृथ्वी	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा	प्रत्यधि दे०
शुष्क	सजल	शुष्क	सजल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि सं०	सभी ग्रह अपनी उच्च राशियों से सप्तम राशि में नीचस्थ होते हैं।	
अयन	मुहूर्त	दिवस	ऋतु १	मास	पक्ष १	वर्ष	समय प०		
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण		

ग्रहों के भाग्योदय वर्षों का प्रयोजन-- जो ग्रह स्वगृह में हो, उच्च में हो, षड्वर्ग शुद्ध हो तो उक्त वर्ष में सुख तथा भाग्योन्नति होती है।

तिथिवारों के संयोग से मृत्युयोग सूचकतालिका

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	वार
१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५	तिथियाँ

अन्तरिक्ष जन्मज्ञान-मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्नों में जन्म लेने वाले का अन्तरिक्ष में जन्म होना तथा अन्य लग्नों में उत्पन्नों का भूमि में जन्म होना कहा गया है। अन्तरिक्ष का तात्पर्य भूमि से ऊपर समझना चाहिए।

जन्मलग्न द्वारा बालक का मस्तक ज्ञान-यदि जन्म लग्न मेष, सिंह और धनु में से कोई हो तो जातक का जन्म के समय पूर्व में शिर जाने। यदि जन्म लग्न वृषभ, कन्या और मकर में से कोई हो तो दक्षिण में शिर होता है। यदि मिथुन, तुला और कुम्भ में से कोई जन्मलग्न हो बालक पश्चिम शिर उत्पन्न होता है। यदि कर्क, वृश्चिक और मीन में से किसी लग्न में जन्म हो तो बालक के जन्म के समय उत्तर में शिर होता है।

दिनमान के १६ कालांशों के अनुसार दुर्मुहूर्तादि ज्ञान

रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वासर	दोष-ज्ञान
१४	९।१२	२।४	८	६।१२	४।६	१।२	दुष्टक्षण	प्रहरार्ध मृत्युकारक यमघण्ट निर्धनता-कारक तथा कुलिक सर्वनाश कारक होता है। रात्रि में इनका दोष नहीं होता ऐसा वशिष्ठ का मत है।
१४	१२	१०	८	६	४	२	दिन में कुलिक	
१३	११	९	७	५	३	१	रात्रि में कुलिक	
६	४	२	१४	१२	१०	८	कण्टक क्षण	
८	६	४	२	१४	१२	११	काल वेला	
७।८	१०।१४	२।४	९।१०	१५।१६	५।६	११।१२	अर्धयाम	
१०	८	६	४	२	१४	१०	यमघण्ट	

।। मेषादि राशियों के स्वामी, वर्ण, धातु संज्ञा आदि का बोधक चक्र ।।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशियाँ
मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्रमा	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	राशिस्वामी
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेतारुण	पाण्डुर	विचित्र	कृष्ण	स्वर्णिम	पिंगल	कर्बुर	वभ्रुवः	स्वच्छ	राशियों के रङ्ग
क्षत्री	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	विप्र	राशियों की जाति
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	समान	कफ	पित्तादि धातु
चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चरादि संज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री पुरुषादि संज्ञा
पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	पृष्ठोदयादि संज्ञा
रात्रिबली	रात्रिबली	रात्रिबली	रात्रिबली	दिवसबली	दिवसबली	दिवसबली	दिवसबली	रात्रिबली	रात्रिबली	दिवसबली	समान	दिन/रात्रि बली
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अर्ध द्विपद अर्ध चतुष्पद	अर्ध चतुष्पद अर्ध द्विपद	जलचर	जलचर	चतुष्पदादि संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानुद्वय	जंघाद्वय	पादद्वय	कालपुरुष के अंग में वि०
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लव दिशा
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	ह्रस्वादि
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर/सौ० संज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशियों की दिशा
धातु युक्त तथा रत्न युक्त भूमि	वन पर्वत की चोटी, कृषि भूमि तथा गौशाला	जुआ, रति और विहार भूमि	बावली तालाब आदि का तट	सघन पर्वत, गुफा तथा वन	हरित भूमि शिल्पभूमि तथा स्त्री पुरुषों की क्रीड़ा भूमि	नगरीय व्यवसायिक, भूमि	पत्थर, विष तथा कृमियों का वि०	रथ, हाथी, घोड़ा की निवासभूमि	पूर्वार्ध वन में परार्ध नदी के जल में	घड़ा और जलपात्र रखने की भूमि	जलाशय, नदी तथा समुद्र	राशियों के निवास स्थान

।। चैत्रादि मासों में शून्य तिथि नक्षत्र राशि बोधक चक्र।।

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	मास
८/९	१२	१३	७	२/३	१/२	१०/११	१४	७/८	४/५	६	३	शून्यतिथि शु०प०
८/९	१२	१४	६	२/३	१/२	१०/११	५	७/८	४/५	५	४	शून्यतिथि कृ०प०
अश्विनी रोहिणी	चित्रा स्वाती	उत्तरा षा० पुष्य	पू० फा० धनिष्ठा	श्रवण उ० षा०	शतभि० रेवती	पूर्वा भाद्रपदा	मघा कृत्तिका	चित्रा विशाखा	आर्द्रा, हस्त अश्विनी	मूल श्रवण	भरणी ज्येष्ठा	शून्य नक्षत्र
कुम्भ	मीन	वृष	मिथुन	मेष	कन्या	वृश्चिक	तुला	धनु	कर्क	मकर	सिंह	शून्य राशि

।।जन्मराशि और नामराशि की प्रधानता।।

नामराशि की प्रधानता–किसी देश, ग्राम, नगर, (अर्थात नये स्थान) में वास करने, गृह बनाने, युद्ध में, नौकरी करने में, व्यवहार में, व्यापार में, राजसेवा में, पुकारनाम के अनुसार जो राशि हो उसी राशि की उपरोक्त कार्यों हेतु प्रधानता शास्त्रोक्त हैं इन कार्योंमें जन्मराशि से विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

जन्मराशि की प्रधानता– व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) में विवाह में, यात्रा में, मुण्डन में, सब प्रकार के माङ्गलिक कार्यों में तथा ग्रह गोचर में जन्मराशि ही ग्रहण करना चाहिए।

विशेष–यदि किसी की जन्मराशि ज्ञात न हो तो सब विचार नामराशि से ही करना चाहिए तथा पुनर्विवाह में भी नामराशि का ग्रहण करना प्रशस्त कहा है । विवाह मेलापक के विचार के लिए वर-कन्या दोनों की जन्मराशि लेनी चाहिए। यदि एक की जन्मराशि हो और दूसरे की न हो तो दोनों की नामराशि से ही विचार किया जाना चाहिए। एक की जन्मराशि तथा दूसरे की नामराशि से मेलापक का विचार करना अनिष्टकर होता है।

अक्षांश तथा काशी से देशान्तर सारिणी

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अकबरपुर (फैजाबाद)	२६।२६	८२।३३	-०।४।३०
अकबरपुर (औरैया)	२६।२४	७९।५२	-०।३१।२०
अमेठी	२६।१०	८१।५०	-०।११।४०
अमरोहा	२८।५४	७८।३१	-०।४४।५०
अलीगढ़	२७।५४	७८।६	-०।४९।०
अलमोड़ा (उत्तराचंल)	२९।३७	७९।४०	-०।३३।२०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	-०।७।४०
अहरौरा	२४।५९	८३।२	+०।०।२०
आगरा	२७।१०	७८।५	-०।४९।१०
आजमगढ़	२६।३	८३।१३	+०।२।१०
इटावा	२६।४७	७९।२	-०।३९।४०
इलाहाबाद (प्रयागराज)	२५।२८	८१।५४	-०।११।०
उत्तरकाशी (उत्तरांचल)	३०।४५	७८।२४	-०।४६।०
उन्नाव	२६।३२	८०।३२	-०।२४।१०
उरई	२६।०	७९।२८	-०।३५।२०
एटा	२७।३५	७८।४०	-०।४३।२०
ओबरा	२४।२९	८३।३	+०।०।३०
ओरछा (झांसी)	२५।२१	७८।४०	-०।४३।२०
औरइया (औरैया)	२६।२७	७९।३३	-०।३४।३०
कन्नौज	२७।३	७९।५८	-०।३०।२०
कर्वी	२५।७	८०।५२	-०।२१।२०
काठगोदाम (उत्तरांचल)	२९।५	७९।५२	-०।३१।२०
कानपुर	२६।२८	८०।२०	-०।२६।४०
कालपी	२६।१०	७९।४८	-०।३२।०
कासगंज (एटा)	२७।४८	७८।४२	-०।४३।०
कुण्डा	२५।४२	८१।३६	-०।१४।०
केदारनाथ (उत्तरांचल)	३०।४५	७९।३	-०।३९।३०
कोंच (जालौन)	२६।०	७९।१३	-०।३७।५०
कौशाम्बी	२५।३३	८१।३०	-०।१५।०
खलीलाबाद	२६।५१	८३।७	+०।१।१०
खागा	२७।५४	८०।४८	-०।२२।०
खुर्जा	२८।१५	७७।५०	-०।५१।४०
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।३	-०।४९।३०
गढ़वाल (उत्तरांचल)	३०।१५	७९।३०	-०।३५।०
गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+०।५।५०
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२८	-०।५५।२०
गोण्डा	२७।२८	८२।१	-०।९।५०
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+०।४।०
गोलागोकर्णनाथ	२८।१०	८०।३६	-०।२४।०
चकिया	२५।३	८३।३	+०।०।३०
चन्दौसी	२८।२७	७८।४९	-०।४१।५०
चन्दौली	२५।१५	८३।१७	+०।२।५०
चम्पावत (उत्तरांचल)	२९।२१	८०।१०	-०।२८।२०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
चित्रकूट	२५।१२	८०।५२	-०।२१।२०
चुर्क	२४।३३	८३।१०	+०।१।४०
चुनार	२५।८	८२।५६	-०।०।४०
जरवा (श्रावस्ती)	२७।४०	८२।३०	-०।५।०
जलालपुर	२६।१८	८२।४४	-०।२।४०
जालौन	२६।८	७९।२३	-०।३६।१०
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	-०।२।४०
झाँसी	२५।२७	७८।३७	-०।४३।५०
टनकपुर (उत्तरांचल)	२९।१०	८०।१८	-०।२७।०
टेहरी (उत्तरांचल)	३१।३०	७८।५०	-०।४१।४०
दुद्धी (उ०प्र०)	२४।१५	८३।१३	+०।२।१०
देवरिया	२६।३३	८३।४७	+०।७।५०
देहरादून	३०।१९	७८।४	-०।४९।२०
दोहरीघाट	२६।८	८३।२७	+०।४।३०
नरेन्द्रनगर (उत्तरांचल)	३०।१२	७८।१७	-०।४७।१०
नानपारा	२७।५२	८१।३३	-०।१४।३०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-०।३५।०
नोएडा	२८।३३	७७।२३	-०।५६।१०
नौगढ़ (महराजगंज)	२७।६	८३।१३	+०।२।१०
पडरौना	२६।५४	८४।१	+०।१०।१०
प्रतापगढ़	२५।५४	८२।०	-०।१०।०
पिथौराणढ़ (उत्तरांचल)	२९।३९	८०।१०	-०।२८।२०
पीलीभीत	२८।३८	७९।५१	-०।३१।३०
पौड़ी (उत्तरांचल)	३०।८	७८।५२	-०।४१।२०
फतेहगढ़	२७।२३	७९।४०	-०।३३।२०
फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	-०।२१।२०
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	-०।३३।५०
फिरोजाबाद	२७।९	७८।२४	-०।४६।०
फैजाबाद	२६।४७	८२।१२	-०।८।०
बदायूँ	२८।२	७९।१०	-०।३८।२०
बद्रीनाथ (उत्तरांचल)	३०।४४	७९।३२	-०।३४।४०
बरेली	२८।२२	७९।२७	-०।३५।३०
बलिया	२५।४४	८४।११	+०।११।५०
बलरामपुर	२७।२५	८२।१५	-०।७।३०
बहराइच	२७।३६	८१।३७	-०।१३।५०
बस्ती	२६।४८	८२।४६	-०।२।२०
बागपत	२९।३	७७।४३	-०।५२।५०
बाँदा	२५।२८	८०।२२	-०।२६।२०
बाराबंकी	२६।५६	८१।१३	-०।१७।५०
बिजनौर	२९।२३	७८।१०	-०।४८।२०
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५४	-०।५१।०
बेला	२५।५६	८२।०	-०।१०।०
भदोही	२५।२४	८२।३८	-०।३।४०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
मऊ	२५।५७	८३।३६	+०।६।०
मथुरा	२७।२८	७७।४१	-०।५३।१०
महोबा	२५।१८	७९।५५	-०।३०।५०
मछलीशहर	२५।४१	८२।२७	-०।५।३०
मलीहाबाद	२७।१०	८०।३०	-०।२५।०
महराजगंज	२७।९	८३।३३	+०।५।३०
मसूरी (उत्तरांचल)	३०।२७	७८।६	-०।४९।०
मिरजापुर (मीरजापुर)	२५।१०	८२।३७	-०।३।५०
मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४४	-०।५२।४०
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	-०।४१।५०
मुगलसराय (पं.दीनदयाल उपाध्याय नगर)	२५।१७	८३।११	+०।१।५०
मेरठ	२९।१	७७।४५	-०।५२।३०
मैनपुरी	२७।१३	७९।२	-०।३९।४०
राठ	२५।३८	७९।३६	-०।३४।०
रानीखेत (उत्तरांचल)	२९।४०	७९।३३	-०।३४।३०
रामनगर (उत्तरांचल)	२९।३०	७९।१०	-०।३८।२०
रामपुर (उ० प्र०)	२८।४८	७९।१	-०।३९।५०
रायबरेली	२६।१४	८१।१६	-०।१७।२०
रावर्ट्सगंज	२४।४१	८३।५	+०।०।५०
रेनुकूट	२४।१५	८३।५	+०।०।५०
रुद्रप्रयाग (उत्तरांचल)	३०।१८	७८।५६	-०।४०।४०
रुद्रपुर (उत्तरांचल)	२९।२७	७९।१२	-०।३८।०
रुड़की (उ० प्र०)	२९।५२	७७।५३	-०।५१।१०
लखनऊ	२६।५५	८१।०	-०।२०।०
लखीमपुर	२७।५७	८०।४९	-०।२१।५०
ललितपुर	२४।२२	७८।२८	-०।४५।२०
बटेश्वर	२६।४८	७८।२४	-०।४६।०
विन्ध्याचल स्टेशन	२५।१०	८२।३०	-०।५।०
वाराणसी	२५।१८	८३।०	-०।०।०
वृन्दावन	२७।३३	७७।४४	-०।५२।४०
शाहगंज	२६।१	८२।४५	-०।२।३०
शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	-०।३०।३०
शाहदरा	२८।४०	७७।२०	-०।५६।४०
शाहाबाद	२७।३०	८०।५	-०।२९।१०
शिकोहाबाद	२७।०	७९।०	-०।४०।०
सम्भल	२८।३५	७८।३७	-०।४३।५०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	-०।५६।१०
सीतापुर	२७।३२	८०।४३	-०।२२।५०
सुलतानपुर	२६।१६	८२।७	-०।८।५०
सैदपुर	२५।३२	८३।१६	+०।२।४०
सोरों, (शूकरक्षेत्र)	२७।५२	७८।४८	-०।४२।०
हमीरपुर	२५।५८	८०।१२	-०।२८।०
हरदोई	२७।२३	८०।१०	-०।२८।२०

उत्तर प्रदेश व उत्तरांचल के स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	-०।४७।५०
हलद्वानी	२९।१३	७९।३६	-०।३४।०
हाथरस	२७।३६	७८।६	-०।४९।०
हापुड़	२८।४३	७७।५०	-०।५१।४०

बिहार-झारखण्ड और उड़ीसा के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अमावाँ (टिकरी) बिहार	२५।९	८५।५०	+०।२८।२०
अलीगंज(हथुआ)(बिहार)	२६।१२	८४।२४	+०।१४।०
अरवल (बिहार)	२५।१८	८४।४७	+०।१७।५०
आरा (बिहार)	२५।३२	८४।३२	+०।१५।२०
अंगुल (अनुगूल) उड़ीसा	२०।४५	८५।३	+०।२०।३०
औरंगाबाद (बिहार)	२४।४५	८४।२५	+०।१४।१०
कटक (उड़ीसा)	२०।२८	८५।५४	+०।२९।०
कटिहार (बिहार)	२५।३०	८७।२०	+०।४३।२०
कालाहाँडी (उड़ीसा)	१९।४०	८३।०	+०।०।०
किशनगंज (बिहार)	२६।१०	८८।०	+०।५०।०
कोडरमा (बिहार)	२४।३०	८५।३४	+०।२५।४०
कोणार्क (उड़ीसा)	१९।५१	८६।१०	+०।३१।४०
कोरापुट (उड़ीसा)	१८।५३	८२।४३	-०।२।५०
कोसी (बिहार)	२६।३	८७।२	+०।४०।२०
खगड़िया (बिहार)	२५।२७	८६।४२	+०।३७।०
खरीयार (उड़ीसा)	२०।१८	८२।२९	-०।५।१०
खोर्घा (उड़ीसा)	२०।१२	८५।३८	+०।२६।२०
गढ़वा (झारखण्ड)	२४।१०	८३।५२	+०।८।४०
गया (बिहार)	२४।४९	८५।०	+०।२०।०
गिरीडीह (झारखण्ड)	२४।१०	८६।२१	+०।३३।३०
गोपालगंज (बिहार)	२६।३०	८४।२५	+०।१४।१०
चतरा (झारखण्ड)	२४।१२	८४।३६	+०।१६।०
चाईवासा (झारखण्ड)	२२।२६	८५।५०	+०।२८।२०
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४७	+०।१७।५०
छोटा नागपुर (झारखण्ड)	२३।०	८५।०	+०।२०।०
जमालपुर (बिहार)	२५।१९	८६।३२	+०।३५।२०
जमशेदपुर(टाटा)(झार०)	२२।५०	८६।१०	+०।३१।४०
जयनगर (बिहार)	२६।३५	८६।०९	+०।३१।३०
जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)	१९।५१	८५।५२	+०।२८।४०
जयपुर (उड़ीसा)	१८।५२	८२।३८	-०।३।४०
जाजपुर (उड़ीसा)	२०।५६	८६।३०	+०।३५।०
जोगवनी (बिहार)	२६।२५	८७।१०	+०।४१।४०
झरिया (झारखण्ड)	२३।५०	८६।३३	+०।३५।३०
झारसुगड़ा (उड़ीसा)	२१।५५	८४।०	+०।१०।०
टिहरिया (उड़ीसा)	२०।२८	८४।३४	+०।१५।४०
डाल्टनगंज (झारखण्ड)	२४।२	८४।४	+०।१०।४०
डुमरिया (बिहार)	२७।८	८४।३१	+०।१५।१०

बिहार-झारखण्ड और उड़िसा के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
डुमरांव (बिहार)	२५।३३	८४।२१	+०।१३।३०
ढेंकनाल (उड़ीसा)	२०।४०	८५।३८	+०।२६।२०
तालचर (उड़ीसा)	२०।५७	८५।१६	+०।२२।४०
दुमका (झारखण्ड)	२४।१०	८७।१५	+०।४२।३०
दरभंगा (बिहार)	२६।१०	८५।५७	+०।२९।३०
दास पल्ला (उड़ीसा)	२०।१९	८४।५६	+०।१९।२०
दासपुर (उड़ीसा)	२१।५८	८६।७	+०।३१।१०
देवगढ़ (उड़ीसा)	२१।३२	८४।४६	+०।१७।४०
देवघर(वैद्यनाथ) (झार०)	२४।३०	८६।४५	+०।३७।३०
दोरण्डा (झारखण्ड)	२३।२२	८५।२२	+०।२३।४०
पटना (बिहार)	२५।३५	८५।१३	+०।२२।१०
पारसनाथ (झारखण्ड)	२३।५५	८६।२०	+०।३३।२०
पालामऊ(पलामू)(झार०)	२३।५२	८४।१७	+०।१२।५०
पालकोट (बिहार)	२२।५२	८४।४१	+०।१६।५०
पूर्णिया (बिहार)	२५।४९	८७।३१	+०।४५।१०
बुद्ध गया (बिहार)	२४।४१	८५।२	+०।२०।२०
बेतिया (बिहार)	२६।४८	८४।३३	+०।१५।३०
बक्सर (बिहार)	२५।३४	८४।१०	+०।११।४०
भागलपुर (बिहार)	२५।१५	८७।२	+०।४०।२०
भुवनेश्वर (उड़ीसा)	२०।१७	८५।५२	+०।२८।४०
मधेपुर (बिहार)	२५।५७	८६।५१	+०।३८।३०
मयूरभंज (उड़ीसा)	२१।५६	८६।४६	+०।३७।४०
रक्सौल (बिहार)	२७।०	८५।०	+०।२०।०
रामगढ़ (झारखण्ड)	२३।३८	८५।३४	+०।२५।४०
रायदा (उड़ीसा)	१९।९	८३।२७	+०।४।३०
रोहतासगढ़ (बिहार)	२४।४०	८३।५९	+०।९।५०
राउरकेला (उड़ीसा)	२२।१२	८४।५४	+०।१९।०
लक्खीसराय (बिहार)	२५।१०	८६।५	+०।३०।५०
लोहारदग्गा (झारखण्ड)	२३।२६	८४।४२	+०।१७।०
सगौली (बिहार)	२६।४७	८४।४८	+०।१८।०
समस्तीपुर (बिहार)	२५।५५	८५।५०	+०।२८।२०
सम्भलपुर (उड़ीसा)	२१।२८	८४।०	+०।१०।०
सासाराम (बिहार)	२४।५७	८४।३	+०।१०।३०
सहरसा (बिहार)	२५।५६	८६।५०	+०।३८।२०
सोरदा (उड़ीसा)	१९।४५	८४।२९	+०।१४।५०
सोनपुर (उड़ीसा)	२०।५१	८३।५५	+०।९।१०
सोहेला (उड़ीसा)	२१।१८	८३।२६	+०।४।२०
साहाबाद (बिहार)	२५।६	८४।५६	+०।१९।२०
शेखूपुरा (बिहार)	२५।९	८५।५३	+०।२८।५०
हजारीबाग (झारखण्ड)	२४।०	८५।२५	+०।२४।१०
हरिहर क्षेत्र (बिहार)	२५।४०	८५।१५	+०।२२।३०
हाजीपुर (बिहार)	२५।४१	८५।१४	+०।२२।२०
हिण्डोला (उड़ीसा)	२०।३६	८५।१४	+०।२२।२०
हिंगीर (उड़ीसा)	२१।५८	८३।४३	+०।७।१०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
अकलकोट (महाराष्ट्र)	१७।३१	७६।१५	-१।७।३०
अकोला (महाराष्ट्र)	२०।२४	७७।२	-०।५९।४०
उ० अर्काट (तमिलनाडु)	१२।५६	७९।२४	-०।३६।०
अंकिलेश्वर (गुजरात)	२१।३८	७३।३	-१।३९।३०
अंगोल (आन्ध्र)	१५।३०	८०।६	-०।२९।०
अगरतल्ला (त्रिपुरा)	२३।५०	९१।२३	+१।२३।५०
अजमेर (राजस्थान)	२६।२७	७४।४२	-१।२३।०
अजयगढ़ (म०प्र०)	२४।५३	८०।१३	-०।२७।५०
अंजार (गुजरात)	२३।१०	७०।६	-२।९।०
अजन्ता (महाराष्ट्र)	२०।३३	७५।४८	-१।१२।०
अंजन गाँव (केरल)	८।४०	७६।४८	-१।२।०
अट्टूर (तमिलनाडु)	१०।१६	७७।५३	-०।५१।१०
अडोनी (आन्ध्र)	१५।३८	७७।१९	-०।५६।५०
अण्डमान (पूर्वाद्वीप)	१२।०	९२।४०	+१।३६।४०
अथनी, अठनी (कर्नाटक)	१६।४४	७५।६	-१।१९।०
अदीलाबाद (आन्ध्र)	१९।४०	७८।३०	-०।४५।०
अनाइमुडी (केरल)	१०।२४	७६।५०	-१।१।४०
अनाकपल्ली (आन्ध्र)	१७।४१	८३।३	+०।०।३०
अलवर (राजस्थान)	२७।३४	७६।३८	-१।३।४०
अलीराजपुर (म.प्र.)	२२।११	७४।२४	-१।२६।०
अलेप्पी (केरल)	९।३०	७६।२३	-१।६।१०
अल्लीखेर (कर्नाटक)	१८।१०	७७।१३	-०।५७।५०
अल्लूर (आन्ध्र)	१४।४१	८०।५	-०।२९।१०
उदमालपेठ (तमिलनाडु)	१०।३६	७७।१७	-०।५७।१०
उदयगिरि (आन्ध्र)	१४।५२	७९।११	-०।३६।५०
उदगिरि (महाराष्ट्र)	१८।२५	७७।१०	-०।५८।२०
ऊँझा (गुजरात)	२३।४६	७२।२४	-१।४६।०
ऊना (हिमाचल प्र०)	३१।३२	७६।१९	-१।६।५०
उस्मानाबाद (महा०)	१८।८	७६।६	-१।९।०
एकलिंग जी (राज०)	२४।४३	७३।५०	-१।३२।४०
औरंगाबाद (महा०)	१९।५३	७५।१३	-१।१७।५०
कच्छ (गुजरात)	२३।१५	७२।२५	-१।४५।५०
कटनी (म०प्र०)	२३।४७	८०।२७	-०।२५।३०
कडप्पा (आन्ध्र)	१४।२८	७८।५०	-०।४२।४०
कन्नानूर (केरल)	११।५२	७५।२५	-१।१५।५०
कनकनाड़ी (केरल)	१२।४८	७४।५०	-१।२२।४०
कपूरथला (पंजाब)	३१।२३	७५।२५	-१।१५।५०
कोप्पल (कर्नाटक)	१५।२५	७६।३९	-१।३।३०
कयालपत्तनम् (तमिलनाडु)	८।३४	७८।२०	-०।४८।२०
करनाल (हरियाणा)	२९।४२	७७।०	-१।०।०
करतारपुर (पंजाब)	३१।२७	७५।३२	-१।१४।४०
करुर (तमिलनाडु)	१०।५८	७८।३	-०।४९।३०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
कर्दमान (केरल)	९।२७	७६।५२	-१।१।२०
कोलकाता (प० बंगाल)	२२।३४	८८।२४	+०।५४।०
कलिंगपत्तन (आन्ध्र)	१८।२०	८४।५	+०।१०।५०
कालिम्पोंग (प० बंगाल)	२७।६	८८।३०	+०।५५।०
काम्बे (खम्भात) (गुजरात)	२२।१९	७२।३८	-१।४३।४०
कांगड़ा (हिमाचल)	३२।५	७६।२८	-१।५।२०
काञ्ची (कोचीन) (केरल)	९।५८	७६।१७	-१।७।१०
काञ्चीपुरम् (तमिलनाडु)	१२।५०	७९।४८	-०।३२।०
काटवा (बंगाल)	२३।३९	८८।११	+०।५१।५०
कारगिल (काश्मीर)	३४।३६	७६।३	-१।९।३०
कालका (पंजाब)	३०।४५	७६।५८	-१।०।२०
कालीकट (केरल)	११।१२	७५।५०	-१।११।४०
कालीमेर (तमिलनाडु)	१०।१८	७९।५२	-०।३१।२०
किशनगढ़ (राजस्थान)	२६।३५	७४।५६	-१।२०।४०
कूचबिहार (प० बं०)	२६।२०	८९।२९	+१।४।५०
कुर्ग (कर्नाटक)	१२।२०	७६।१०	-१।८।२०
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)	२९।५६	७६।५६	-१।०।४०
कोल्लम (केरल)	८।५४	७६।३९	-१।३।३०
कोकनद (आन्ध्र)	१६।५०	८२।१२	-०।८।०
कोकोचान (अण्डमान)	१३।५६	९२।५०	+१।३८।२०
कोचीन (केरल)	९।५८	७६।१७	-१।७।१०
कोटा (राजस्थान)	२५।१८	७२।१६	-१।५७।२०
कोटली (कश्मीर)	३३।३०	७३।५७	-१।३०।३०
कोटरा (राजस्थान)	२४।२२	७३।१५	-१।३७।३०
कोट्टयम (केरल)	९।३६	७६।३४	-१।४।२०
कोरंगल (आन्ध्र)	१७।८	७७।३६	-०।५४।०
कोडाईकनाल (मद्रास)	१०।१३	७७।३२	-०।५४।४०
कोपड़गंज (महाराष्ट्र)	२२।४५	७२।३८	-१।४३।४०
कोयम्बटूर (तमिलनडु)	११।०	७७।०	-१।०।०
कोलार (कर्नाटक)	१३।९	७८।११	-०।४८।१०
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)	१६।४२	७४।१६	-१।२७।२०
कोहिमा (नागालैण्ड)	२५।४०	९४।५	+१।५०।५०
कृष्णानगर (प० बंगाल)	२३।२४	८८।२३	+०।५३।५०
कृष्णगिरि (तमिलनाडु)	१२।३५	७८।३	-०।४९।३०
खण्डवा (मध्यप्रदेश)	२१।५०	७६।२३	-१।६।१०
खण्डेला (राजस्थान)	२७।३६	७५।३२	-१।१४।४०
खापर खेड़ा (महाराष्ट्र)	२१।१५	७९।१०	-०।३८।२०
खेरवाड़ा (राजस्थान)	२३।५९	७३।४०	-१।३३।२०
खासी जयन्तिया (असम)	२५।३४	९१।५६	+१।२९।२०
खिरकिया (म०प्रदेश)	२२।१८	७७।०	-१।०।०
खुलदाबाद (महा०)	२०।१	७५।१५	-१।१७।३०
खोपोली (महाराष्ट्र)	१८।४	७३।२०	-१।३८।२०

अक्षांश तथा काशी से देशान्तर सारिणी

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
खेतड़ी (राजस्थान)	२७।५९	७५।५०	-१।११।४०
खैरागढ़ (म०प्र०)	२१।२६	८०।५९	-०।२०।१०
गुडूर (आन्ध्र)	१४।९	७९।५४	-०।३१।०
गढ़शंकर (पंजाब)	३१।५	७६।१३	-१।७।५०
गरसोप्पा फाल (कर्नाटक)	१४।१८	७४।५५	-१।२०।५०
गंगटोक (सिक्किम)	२७।१०	८८।३०	+०।५५।१०
ग्वालियर (म० प्र०)	२६।१४	७८।१०	-०।४८।२०
गोलपाड़ा(असम)	२६।११	९०।४१	+१।१६।५०
गुण्टूर (आन्ध्र)	१४।१८	८०।९	-०।२८।३०
गंगापुर (राजस्थान)	२६।२९	७६।४६	-१।२।२०
गंगावती (कर्नाटक)	१५।३०	७६।३६	-१।४।०
गंगानगर (राजस्थान)	२९।५६	७३।५४	-१।३१।१६
गिरनार (गुजरात)	२१।४०	७१।०	-२।०।०
गिलगिट (कश्मीर)	३५।५५	७४।२२	-१।२६।२०
गुड़गाँव (हरियाणा)	२८।२७	७७।१	-०।५९।५०
गुना (म० प्र०)	२४।४०	७७।२०	-०।५६।४०
गुरयास (कश्मीर)	३४।३८	७४।५६	-१।२०।४०
गुरुदासपुर (पंजाब)	३२।२	७५।२७	-१।१५।३०
गुलमर्ग (कश्मीर)	३४।१०	७४।२०	-१।२६।४०
गोकर्ण (कर्नाटक)	१४।३२	७४।२०	-१।२६।४०
गोंदिया (महाराष्ट्र)	२१।२८	८०।२९	-०।२५।१०
गोधरा (गुजरात)	२२।४५	७३।४०	-१।३३।२०
गोलकुण्डा (आन्ध्रप्रदेश)	१७।४१	८२।३१	-०।४।५०
गोवा	१५।३०	७३।५७	-१।३०।३०
चालीसगाँव (महाराष्ट्र)	२०।३३	७५।०	-१।२०।०
चम्बा (हिमाचल)	३२।३९	७६।१०	-१।८।२०
चन्द्रनगर (प० बं०)	२२।५२	८८।२५	+०।५४।१०
चिकमंगलूर (कर्नाटक)	१३।१८	७५।४९	-१।११।५०
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	२४।५४	७४।४२	-१।२३।०
चित्तूर (आन्ध्र)	१३।१३	७९।८	-०।३८।४०
चित्तूर (केरल)	१०।४२	७६।४७	-१।२।१०
चिदम्बरम् (तमिलनाडु)	११।२४	७९।४४	-०।३२।४०
चेन्नई (तमिलनाडु)	१३।४	८०।१७	-०।२७।१०
चुरु (राजस्थान)	२८।१९	७५।०	-१।२०।०
चेरापूंजी (मेघालय)	२५।१७	९१।४७	+१।२७।५०
चण्डीगढ़ (पंजाब)	३०।४४	७६।५२	-१।१।२०
छतरपुर (मध्यप्रदेश)	२४।५४	७९।३८	-०।३३।४०
छावड़ा (राजस्थान)	२४।४०	७६।५४	-१।१।०
छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)	२२।३	७८।५९	-०।४०।१०
जगदलपुर (छत्तीसगढ़)	१९।२	८२।५	-०।९।१०
जबलपुर (म०प्र०)	२३।१०	८०।०	-०।३०।०
जम्मू (कश्मीर)	३२।४२	७४।५४	-१।२१।०
जयपुर (असम)	२७।१५	९५।२६	+२।४।२०
जयपुर (राजस्थान)	२६।५५	७५।५२	-१।११।२०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
जोरहाट (असम)	२६।४६	९४।१६	+१।५२।४०
जलगाँव (महाराष्ट्र)	२१।०	७५।४०	-१।१३।२०
जलपाईगुड़ी (प०बं०)	२६।३२	८८।४६	+०।५७।४०
जवहार (महा०)	१९।५७	७३।१६	-१।३७।२०
जामनगर (गुजरात)	२२।२७	७०।७	-२।८।५०
जिन्द (पंजाब)	२९।१९	७६।२३	-१।६।१०
जूनागढ़ (गुजरात)	२१।३१	७०।२६	-२।५।४०
जैसलमेर (राजस्थान)	२६।५५	७०।५७	-२।०।३०
जोधपुर (राजस्थान)	२६।२०	७३।४	-१।३९।२०
झाबुआ (म०प्र०)	२२।४५	७४।३८	-१।२३।४०
झालावाड़ (राजस्थान)	२४।३८	७६।१०	-१।८।२०
झुनझुनू (राजस्थान)	२८।६	७५।२६	-१।१५।४०
टीकमगढ़ (म.प्र०)	२४।४५	७८।५७	-०।४०।३०
टोंक (राजस्थान)	२६।११	७५।५०	-१।११।४०
डभोई (गुजरात)	२२।११	७३।२५	-१।३५।५०
डमडम, दमदम (प०बं०)	२२।३८	८८।२८	+०।५४।४०
डिब्रूगढ़ (असम)	२७।३०	९५।०	+२।०।०
डींघ (राजस्थान)	२७।२८	७७।२०	-०।५६।४०
डांडा (कश्मीर)	३३।१०	७५।३५	-१।१४।१०
तंजौर (तमिलनाडु)	१०।४७	७९।१०	-०।३८।२०
तुमकुर (कर्नाटक)	१३।२०	७७।८	-०।५८।४०
तेजपुर (असम)	२६।३७	९२।५०	+१।३८।२०
तिरुपति (आन्ध्र)	१३।४०	७९।२०	-०।३६।४०
तिरुच्चिरापल्ली (कर्नाटक)	१०।५०	७८।४६	-०।४२।२०
त्रिपुरा	२३।४५	९१।३०	+१।२५।०
त्रिवेन्द्रम (केरल)	८।२९	७६।५७	-१।०।३०
थाणे (महाराष्ट्र)	१९।१२	७३।०	-१।४०।०
दतिया (म०प्र०)	२५।३९	७८।२७	-१।४१।१०
दमन (गुजरात)	२०।२५	७२।५३	-०।३५।१०
दमोह (म०प्र०)	२३।५०	७९।२९	-०।३५।१०
दार्जिलिंग (प० बं०)	२७।३	८८।१८	+०।५३।०
द्वारिका पुरी (गुजरात)	२२।१४	६९।१	-२।१९।५०
दीमापुर (असम)	२५।५१	९३।४८	+१।४८।०
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	-०।५८।०
देवरी (म० प्र०)	२३।२३	७९।४	-०।३९।२०
देवली (महाराष्ट्र)	२०।३९	७८।३२	-०।४४।४०
देवली (राजस्थान)	२५।४६	७५।२५	-१।१५।५०
देवास (म०प्र०)	२२।५८	७६।६	-१।९।०
देवांगिरी (असम)	२६।५१	९१।२६	+१।२४।२०
देवीकोट (राजस्थान)	२६।३८	७१।७	-१।५८।५०
दौलताबाद (महाराष्ट्र)	१९।५७	७५।१५	-१।१७।३०
धनुषकोटि (तमिलनाडु)	९।१०	७९।२८	-०।३५।२०
धमतरी (छत्तीसगढ़)	२०।४२	८१।३४	-०।१४।२०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
धर्मजयगढ़ (छत्तीसगढ़)	२२।२८	८३।१५	+०।२।३०
धर्मपुरी (तमिलनाडु)	१२।८	७८।१३	-०।४७।५०
धार (म०प्र०)	२२।३५	७५।२०	-१।१६।४०
धौलपुर (राजस्थान)	२६।४१	७७।५३	-०।५१।१०
नान्देड (महाराष्ट्र)	१९।१०	७७।२२	-०।५६।२०
नन्दिग्राम (आन्ध्र)	१६।४६	८०।२०	-०।२६।४०
नन्दीराज (म०प्र०)	२०।४५	८०।५०	-०।२१।४०
नन्दयाल (आन्ध्र)	१५।२९	७८।३२	-०।४४।४०
नदिया (बंगाल)	२३।२४	८८।५६	+०।५९।२०
नरसिंहगढ़ (म०प्र०)	२३।४४	७७।८	-०।५८।४०
नरसिंहपुर (म०प्र०)	२२।५७	७९।१५	-०।३७।३०
नलगोंडा (आन्ध्र)	१७।३	७९।२०	-०।३६।४०
नवाब बासौदा (म०प्र०)	२३।५७	७८।५४	-०।४१।०
नसीराबाद (राजस्थान)	२६।२०	७४।४६	-१।२२।२०
नागौर (राजस्थान)	२७।११	७३।४६	-१।३२।२०
नागौद (म०प्र०)	२४।३३	८०।३७	-०।२३।५०
नागपुर (महाराष्ट्र)	२१।९	७९।६	-०।३९।०
नाथद्वारा (राजस्थान)	२४।५६	७३।५२	-१।३१।२०
नरवरगढ़ (म०प्र०)	२५।३९	७७।५३	-०।५१।१०
नासिक (महाराष्ट्र)	२०।०	७३।५२	-१।३१।२०
निजामाबाद (आन्ध्र)	१८।४०	७८।२०	-०।४८।२०
नीमच (म०प्र०)	२४।२७	७४।५२	-१।२१।२०
नेल्लूरु (आन्ध्र)	१४।२७	८०।०	-०।३०।०
नेमावार (म०प्र०)	२२।३०	७७।०	-१।०।०
नैनपुर (म०प्र०)	२२।२८	८०।८	-०।२८।४०
नैनवा (राजस्थान)	२५।४५	७५।५७	-१।१०।३०
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	२१।११	८१।२१	-०।१६।३०
दुर्गापुर (प०बंगाल)	२३।३०	८७।२०	+०।४३।२०
देवदुर्ग (कर्नाटक)	१६।२५	७७।०	-१।०।०
देवभोग (छत्तीसगढ़)	१९।५८	८२।४५	-०।२।३०
नौशेरा (कश्मीर)	३३।७	७४।१०	-१।२८।२०
पचमढ़ी (म०प्र०)	२२।३०	७८।३२	-०।४४।४०
पटियाला (पंजाब)	३०।२०	७६।३५	-१।४।१०
पट्टीकुण्डा (आन्ध्र)	१५।२४	७७।४	-०।५९।२०
पठानकोट (पंजाब)	३२।१५	७५।३३	-१।१४।३०
पद्मनाभपुरम् (केरल)	९।६	७६।५०	-१।१।४०
पड़रिया (म०प्र०)	२२।१५	८१।२७	-०।१५।३०
पंढरपुर (महाराष्ट्र)	१७।४१	७५।२३	-१।१६।१०
प्रतावगढ़ (राजस्थान)	२४।१	७४।४०	-१।२३।२०
प्रतावपुर (म०प्र०)	२०।०	८०।५०	-०।२१।४०
पथरी (म०प्र०)	२३।५६	७८।१५	-०।४७।३०
पन्ना (म०प्र०)	२४।४४	८०।१४	-०।२७।४०
परभनी (महाराष्ट्र)	१९।१६	७६।५०	-१।१।४०
परमगुड़ी (तमिलनाडु)	९।३१	७८।३९	-०।४३।३०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
पालनपुर (गुजरात)	२४।१२	७२।२४	-१।४६।०
पल्लाडम (तमिलनाडु)	१०।५९	७७।२०	-०।५६।४०
पाटन, सोमनाथ (गुज०)	२०।५४	७०।२६	-२।५।४०
पाटन (राजस्थान)	२७।४९	७६।२	-१।९।४०
पांडिचेरी (तमिलनाडु)	११।५६	७९।५३	-०।३१।१०
पानीपत (पंजाब)	२९।२३	७६।५८	-१।०।२०
पारलाकोट (म०प्र०)	१९।४५	८०।४८	-०।२२।०
पालमकोटा (तमिलनाडु)	८।४३	७७।४६	-०।५२।२०
पालघाट (केरल)	१०।४६	७६।४२	-१।३।०
पाली (राजस्थान)	२५।४६	७३।२५	-१।३५।५०
पार्वतीपुरम् (आन्ध्र)	१८।४७	८३।२८	+०।४।४०
पिटिहरा, पेटहरा (म.प्र.)	२३।४	७९।२०	-०।३६।४०
पिरामिड (तमिलनाडु)	९।३०	७७।२	-०।५९।४०
पीर (कश्मीर)	३३।३०	७४।३०	-१।२५।०
पुरलिया(मानभूमि)(प०बं)	२३।२०	८६।२५	+०।३४।१०
पुष्कर क्षेत्र (राजस्थान)	२६।२९	७४।३७	-१।२३।५०
पूँछ, पूंच (कश्मीर)	३३।५१	७४।८	-१।२८।४०
पूना (महाराष्ट्र)	१८।३०	७३।५८	-१।३०।२०
पेरियाकुलम् (तमिलनाडु)	१०।७	७७।३५	-०।५४।१०
पोखरन (राजस्थान)	२६।५५	७१।५८	-१।५०।२०
पोरबन्दर (गुजरात)	२१।३७	६९।४९	-२।११।५०
पौनी (महाराष्ट्र)	२०।४८	७९।४०	-०।३३।२०
फतहपुर (राजस्थान)	२८।०	७५।०	-१।२०।०
फतेहाबाद (पंजाब)	२९।३१	७५।३०	-१।१५।०
फरीदकोट (पंजाब)	३०।४०	७४।४७	-१।२२।१०
फाजिल्का (पंजाब)	३०।२५	७४।०	-१।३०।०
फिरोजपुर (पंजाब)	३०।५५	७४।४८	-१।२२।०
फोर्टजार्ज (तमिलनाडु)	१३।४	८०।१७	-०।२७।१०
फोर्ट डेविड (तमिलनाडु)	११।४५	७९।५०	-०।३१।४०
बदनावर (म०प्र०)	२३।५	७५।१८	-१।१७।०
बड़ौदा शहर (गुज०)	२२।१५	७३।११	-१।३८।१०
बड़वानी (म०प्र०)	२२।३	७४।५७	-१।२०।३०
बड़वाहा (म०प्र०)	२२।२५	७५।५८	-१।१०।२०
बदनूर (म०प्र०)	२१।२५	७७।५७	-०।५०।३०
बंगलुरु, बंगलौर (कर्नाटक)	१२।५८	७७।३८	-०।५३।४०
बम्बई, मुम्बई (महाराष्ट्र)	१८।५५	७२।५४	-१।४१।०
बर्दवान (प० बं)	२३।१६	८७।५४	+०।४९।०
ब्रह्मपुरी (महाराष्ट्र)	२०।४०	७९।५६	-०।३०।४०
बहरामपुर, ब्रह्मपुर (प.बं.)	२४।६	८८।१९	+०।५३।१०
बरडी, बर्डी (म०प्र०)	२४।३०	८२।२६	-०।५।४०
बराण्डा (म०प्र०)	२५।३	८०।४०	-०।२३।२०
बस्तर (छत्तीसगढ़)	१९।१०	८१।५८	-०।१०।२०
बनासकंठ (गुजरात)	२४।२३	७१।३७	-१।५३।५०
बंडा (म०प्र०)	२४।३	७८।५५	-०।४०।५०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
बाँकुड़ा (प०बं०)	२३।१४	८७।७	+०।४१।१०
बेलारी (म०प्र०)	२२।१४	७६।४८	-१।२।०
बाँदरा (महाराष्ट्र)	१९।३	७२।५२	-१।४१।२०
बारामती (महाराष्ट्र)	१८।६	७४।३६	-१।२४।०
बेरछा (म०प्र०)	२३।१६	७६।१२	-१।८।०
बारसी (महाराष्ट्र)	१८।१०	७५।५०	-१।११।४०
बेमेतरा (छत्तीसगढ़)	२१।३८	८१।३७	-०।१३।५०
बारपेट (असम)	२६।२०	९१।३	+१।२०।३०
बारमूला (कश्मीर)	३४।१२	७४।३०	-१।२५।०
बालाघाट (म०प्र०)	२१।५५	८०।१५	-०।२७।३०
बालकुण्ड (आन्ध्र)	१९।५	७८।२०	-०।४६।४०
बालमेर, बाड़मेर (राज०)	२५।४५	७१।२५	-१।५५।५०
बान्धवगढ़ (म०प्र०)	२३।२६	८०।५३	-०।२१।१०
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)	२२।५	८२।१०	-०।८।२०
बिलासपुर (हिमाचल)	३१।१९	७६।५०	-१।१।४०
बिश्रामपुर (छत्तीसगढ़)	२३।१६	८३।१६	+०।२।४०
विष्णुपुर (प०बं०)	२३।२५	८७।२३	+०।४३।५०
बीकानेर (राजस्थान)	२८।१	७३।१२	-१।३८।०
बीजापुर (कर्नाटक)	१६।५०	७५।४९	-१।११।५०
बीदर (कर्नाटक)	१७।५७	७७।३९	-०।५३।३०
बीना (म०प्र०)	२४।८	७८।५	-०।४९।१०
बीरभूम (सिउरी) (प०बं०)	२३।५४	८७।३४	+०।४५।४०
बुरहानपुर (महाराष्ट्र)	२१।२५	७६।१६	-१।७।२०
बुलसर, वलसर (गुज०)	२०।३६	७२।५७	-१।४०।३०
बूँदी (राजस्थान)	२५।२७	७५।४६	-१।१२।२०
बेजवाड़ा,विजयवाड़ा(आन्ध्र)	१६।३१	८०।३९	-०।२३।३०
बेलग्राम (कर्नाटक)	१५।५२	७४।३५	-१।२४।१०
बेगमगंज (म०प्र०)	२३।२८	७८।२०	-०।४६।४०
बैतूल (म०प्र०)	२१।५१	७७।५८	-०।५०।२०
बैरकपुर (प०बं०)	२२।४६	८८।२४	+०।५४।०
भाखरा नांगल (पंजाब)	३१।३८	७६।६	-१।९।०
भटिंडा (पंजाब)	३०।११	७४।५९	-१।२०।१०
भरतपुर (राजस्थान)	२७।१५	७७।३०	-०।५५।०
भरतपुर (छत्तीसगढ़)	२३।४२	८१।५०	-०।११।४०
भड़ौच (गुजरात)	२१।४०	७३।१	-१।३९।५०
भदरवाह (कश्मीर)	३२।५८	७५।५०	-१।११।४०
भद्राचलम् (आन्ध्र)	१७।४०	८०।५६	-०।२०।४०
भद्रावती (कर्नाटक)	१३।५२	७५।४०	-१।१३।२०
भाटपारा (प०बं०)	२२।५४	८८।२५	+०।५४।१०
भांडेर (म०प्र०)	२५।५८	७७।५८	-०।५०।२०
भानपुर (म०प्र०)	२४।३२	७५।५१	-१।११।३०
भावनगर (गुजरात)	२१।४६	७२।११	-१।४८।१०
भिण्ड (म०प्र०)	२६।२५	७८।५६	-०।४०।४०
भिलाई (छत्तीसगढ़)	२१।१८	८१।४५	-०।१२।३०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
भिनख गाँव (म०प्र०)	२१।५३	७५।५८	-१।१०।२०
भिवानी (पंजाब)	२८।५०	७६।६	-१।९।०
भीलवाड़ा (राजस्थान)	२५।२१	७४।४०	-१।२३।२०
भुज (गुजरात)	२३।१५	६९।४९	-०।३१।५०
भुसावल (महाराष्ट्र)	२१।२	७५।४९	-१।११।५०
भानुप्रतापपुर (छत्तीसगढ़)	२०।२२	८१।८	-०।१८।४०
भोपाल (म०प्र०)	२३।१६	७७।२८	-०।५७।०
भण्डारा (महाराष्ट्र)	२२।९	७९।४२	-०।३३।०
महू (छावनी) (म०प्र०)	२२।३४	७५।४९	-१।११।५०
मऊगंज (म० प्र०)	२४।४०	८१।५६	-०।१०।४०
मकड़ी (छत्तीसगढ़)	१९।४५	८१।५८	-०।१०।२०
मदुराई (मदुरा) तमिलनाडु	९।५८	७८।१०	-०।४८।२०
मल्हारगढ़ (म०प्र०)	२४।२५	७५।३	-१।१९।३०
महासमुद्र (छत्तीसगढ़)	२१।६	८२।१४	-०।९।२०
मनमाड (महाराष्ट्र))	२०।१५	७४।२९	-१।२५।१०
मालापुरम् (केरल)	११।०	७६।२	-१।९।४०
मलकापुर (महाराष्ट्र)	२०।५३	७६।१५	-१।७।३०
मालवान (महाराष्ट्र)	१६।३	७३।३०	-१।३५।०
महाबलेश्वर (महाराष्ट्र)	१७।५८	७३।४३	-१।३२।५०
महबूबनगर (आन्ध्र)	१६।४२	७७।५८	-०।५०।२०
महेसाणा (गुजरात)	२३।४२	७२।३७	-१।४३।५०
माण्डवी (गुजरात)	२२।५१	६९।३२	-२।१४।४०
मालदा (प०बं०)	२५।३	८८।९	+०।५१।३०
मिदनापुर (प०बं०)	२२।२५	८७।२१	+०।४३।३०
मुरैना (म०प्र०)	२६।३०	७८।५	-०।४९।१०
मैनपुर (छत्तीसगढ़)	२०।१८	८२।१५	-०।७।३०
मुर्शिदाबाद (प० ब०)	२४।११	८८।१९	+०।५३।१०
मुहम्मदगढ़ (म०प्र०)	२३।३९	७७।५३	-०।५१।१०
मेडक (आन्ध्र)	१८।३	७८।१८	-०।४७।०
मैसूर (कर्नाटक)	१२।१८	७६।४२	-१।३।०
मैहर (म०प्र०)	२४।१६	८०।४९	-०।२१।५०
मोरवी (गुजरात)	२२।४९	७०।५४	-२।१।०
महेश्वर (म०प्र०)	२२।९	७५।३९	-१।१३।३०
मुंगेली (छत्तीसगढ़)	२२	८१।४०	-०।१३।२०
मण्डला (म०प्र०)	२२।४३	८०।३५	-०।२४।१०
मण्डी (हिमाचल)	३१।४३	७६।५८	-१।०।२०
मन्दसोर (म०प्र०)	२४।६	७५।८	-१।१८।४०
यवतमाल (महाराष्ट्र)	२०।२३	७८।११	-०।४८।१०
रघूगढ़ (म०प्र०)	२४।२६	७७।१५	-०।५७।३०
रतनगढ़ (राजस्थान)	२८।५	७४।२९	-१।२५।१०
रतनपुर (छत्तीसगढ़)	२२।१७	८२।११	-०।८।१०
रतलाम (म०प्र०)	२३।२१	७५।७	-१।१८।५०
रनिया (पंजाब)	२९।२८	७५।५४	-१।११।०
राजकोट (गुजरात)	२२।१८	७०।५६	-२।०।४०

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
राजगढ़ (रनी) राजस्थान	२८।३९	७५।२६	-१।१५।[illegible]
राजगढ़ (म०प्र०)	२४।१	७६।४०	-१।३।२०
राजम (आन्ध्र)	१८।१९	८३।४८	+०।८।०
राजनाँद गाँव (म०प्र०)	२१।६	८१।६	-०।१९।[illegible]
रानीगंज (प०बं०)	२३।३०	८७।५	+०।४०।५०
रामकोला (छत्तीसगढ़)	२३।४०	८३।८	+०।१।२०
रामगढ़ (राजस्थान)	२८।१०	७५।०	-१।२०।०
रामगढ़ (छत्तीसगढ़)	२३।०	८१।०	-०।२०।०
राम टेक (महाराष्ट्र)	२१।२४	७९।२०	-०।३६।४०
रामदुर्ग (कर्नाटक)	१५।५८	७५।२२	-१।१६।२०
रामनगर (म०प्र०)	२४।११	८१।११	-०।१८।१०
राहतगढ़ (म०प्र०)	२३।४२	७८।२२	-०।४६।२०
रामनाथपुरम् (तमिलनाडु)	९।२२	७८।५२	-०।४१।२०
रामपुर (हिमाचल)	३१।२०	७७।४०	-०।५३।२०
रामपुर (म०प्र०)	२३।२८	७५।३०	-१।१५।०
रामेश्वरम् (तमिलनाडु)	९।१७	७९।२२	-०।३६।२०
रायगढ़ (छत्तीसगढ़)	२१।५४	८३।२६	+०।४।२०
रायदुर्ग (आन्ध्र)	१४।४२	७६।५३	-१।१।१०
रायपुर (छत्तीसगढ़)	२१।१५	८१।४१	-०।१३।१०
रायचोटी (आन्ध्र)	१४।४	७८।५०	-०।४०।२०
रायसेन (म०प्र०)	२३।२२	७७।४५	-०।५२।३०
रामाकोना (म०प्र०)	२१।३०	७८।५०	-०।४०।२०
रीवाँ (म०प्र०)	२४।३१	८१।१९	-०।१६।५०
रूपनगर (राजस्थान)	२६।४८	७४।५४	-१।२१।०
रेपल्ली (आन्ध्र०)	१६।२	८०।५३	-०।२१।१०
रेवाड़ी (हरियाणा)	२८।१२	७६।३६	-१।४।०
रोहतक (हरियाणा)	२८।५४	७६।३८	-१।३।४०
लखनादौन (म०प्र०)	२२।३६	७९।३९	-०।३३।३०
लातूर (महाराष्ट्र)	१८।२४	७६।३६	-१।४।०
लुधियाना (पंजाब)	३०।५५	७५।५४	-१।११।०
वारंगल (आन्ध्र)	१८।०	७९।४०	-०।३३।२०
विऔरा (म०प्र०)	२३।५५	७६।५३	-१।१।१०
विजयानगरम् (आन्ध्र)	१८।७	८३।२७	+०।४।३०
विशाखापट्टनम् (आन्ध्र)	१७।४२	८३।२०	+०।३।२०
विदिशा (म०प्र०)	२३।३२	७७।५१	-०।५१।३०
वीजापुर (महाराष्ट्र)	१९।५८	७४।४८	-१।२२।०
वेल्लोर (तमिलनाडु)	१२।५५	७९।११	-०।३८।१०
विल्लूपुरम् (तमिलनाडु)	११।५७	७९।३२	-०।३४।४०
सिल्चर (असम)	२४।५०	९२।५१	+१।३८।[illegible]
सतारा (महाराष्ट्र)	१७।४२	७४।०	-१।५०।०
सतना (म०प्र०)	२४।३४	८०।५५	-०।२०।५०
सरायपाली (छत्तीसगढ़)	२१।१८	८३।०	-०।०।०
सरगूजा (छत्तीसगढ़)	२२।३१	८३।५	+०।०।५०
सरहिन्द (पंजाब)	३०।३८	७६।२९	-१।५।१०

अक्षांश-तथा काशी से देशान्तर सारिणी

भारत के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू. प. घ. प. विपल
[illegible] (म०प्र०)	२३।२३	७७।३२	-०।५४।४०
सवाई माधोपुर (राज०)	२५।५९	७६।२०	-१।६।४०
[illegible] (गुजरात)	२२।३२	७१।२१	-१।५६।३०
सागर (म०प्र०)	२३।५०	७८।५०	-०।४१।४०
संगरूर (पंजाब)	३०।१२	७५।५३	-१।११।१०
सांगारेड्डीपेठ (आन्ध्र)	१७।३५	७८।२	-०।४९।४०
सांगली (महाराष्ट्र)	१६।५२	७४।३६	-१।२४।०
सादरा (गुजरात)	२३।२०	७२।४७	-१।४२।१०
साँभरझील (राजस्थान)	२६।५४	७५।१३	-१।१७।५०
सारंगगढ़ (छत्तीसगढ़)	२१।३६	८३।७	+०।१।१०
सीधी (म०प्र०)	२४।२५	८१।५५	-०।१०।५०
सीकर (राजस्थान)	२७।३६	७५।१५	-१।१७।३०
सिरमौर (म०प्र०)	२४।४६	८१।३०	-०।१५।०
सिरोंज (म०प्र०)	२४।६	७७।४४	-०।५२।४०
सिलचर (असम)	२४।५०	९२।५१	+१।३८।३०
सिलीगुड़ी(प०बं०)	२६।४२	८८।२५	+०।५४।१०
सिवनी (म०प्र०)	२२।६	७९।३५	-०।३४।१०
सीतामऊ (म०प्र०)	२४।१	७५।२३	-१।१६।१०
सुजानगढ़ (राजस्थान)	२७।४२	७४।३१	-१।२४।५०
सूरत (गुजरात)	२१।१२	७२।५२	-१।४१।२०
सूरतगढ़ (राजस्थान)	२९।१९	७३।५७	-१।३०।३०
सेलम (तमिलनाडु)	११।३९	७८।१२	-०।४८।०
सोनाखान (छत्तीसगढ़)	२१।३६	८२।३६	-०।४।०
सोमनाथ (गुजरात)	२०।५४	७०।२६	-२।५।४०
सोलन हिमा०)	३०।५५	७७।९	-०।५८।३०
सोहागपुर- (पिपरिया) (म०प्र०)	२२।४२	७८।१७	-०।४७।१०
शहडोल (म०प्र०)	२३।१५	८१।२०	-०।१६।४०
शाजापुर (म०प्र०)	२३।२६	७६।२३	-१।६।१०
शोरनूर (केरल)	१०।५०	७६।९	-१।८।३०
शिकारपुर (कर्नाटक)	१४।१६	७५।२४	-१।१६।०
शिवकाशी (तमिलनाडु)	९।८	७७।५१	-०।५१।३०
शिलांग (असम)	२५।३४	९१।५६	+१।२९।२०
शिवगंगा (तमिलनाडु)	९।५१	७८।३२	-१।४४।४०
शिवपुर (म०प्र०)	२५।२०	७७।३४	-०।५२।२०
शिवसागर (असम)	२७।०	९४।४१	+१।५६।५०
शोलापुर (महाराष्ट्र)	१७।४०	७५।५२	-१।११।२०
शृंगेरी (कर्नाटक)	१२।२६	७६।४३	-१।२।५०
श्रीनगर (कश्मीर)	३४।६	७४।५५	-१।२०।५०
श्रीरंगपत्तन (कर्नाटक)	१२।२६	७६।४२	-१।३।०
श्री हरिकोटा (आन्ध्र०)	१३।४५	८०।१५	-०।२७।३०
हसन (कर्नाटक)	१३।१	७६।१०	-१।८।२०
हासी (हरियाणा)	२९।६	७६।०	-१।११।०
हावड़ा (प०बं०)	२२।३५	८८।२३	+०।५३।५०
हिंगोली (महाराष्ट्र)	१९।४३	७७।११	-०।५८।१०
हिम्मत नगर (गुजरात)	२३।३५	७२।५८	-१।४०।२०
हिसार (हरियाणा)	२९।८	७५।४८	-१।१२।०
हुगली (प०बं०)	२२।५५	८८।२६	+०।५४।२०
हुबली (कर्नाटक)	१५।२०	७५।१३	-१।१७।५०
हैदराबाद (आन्ध्र)	१७।२४	७८।३०	-०।४५।०
होशंगाबाद (म०प्र०)	२२।४६	७७।४५	-०।५२।३०
होशियारपुर (पंजाब)	३१।३२	७५।५७	-१।१०।३०

विश्व के प्रमुख स्थान

स्थान के नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	काशी से पू.प. घ. प. विपल
अटक (पाक)	३३।५३	७२।१७	-१।४७।१०
अनुराधापुर (श्रीलंका)	८।२२	८०।२३	-०।२६।१०
अबादान (ईरान)	३०।२७	४८।२५	-५।४५।५०
अमलेखगंज (नेपाल)	२७।१५	८५।०	+०।२०।०
अराकान (म्यामार)	२०।२८	९३।२७	+१।४४।३०
अहमदपुर (पाक)	२९।६	७१।१६	-१।५७।२०
इस्लामाबाद (पाक)	३३।४७	७५।१०	-१।१८।२०
अखड़ा (पाक)	३०।५०	७३।३०	-१।३५।०
कनलन (म्यामार)	२३।४	९८।७	+२।३१।१०
कराची (पाक)	२४।५१	६७।४	-२।३९।२०
करीमगंज (बांग्लादेश)	२४।३१	९०।५५	+१।१९।१०
काठमाण्डू (नेपाल)	२७।४२	८५।१२	+०।२२।०
कावुल (अफगानिस्तान)	३४।३०	६९।१८	-२।१७।०
कुरुगंल (श्रीलंका)	७।३१	८०।१६	-०।२७।२०
क्वेटा (पाक)	३०।१२	६७।०	-२।४०।०
कोटचाँदपुर (बांग्लादेश)	२३।८५	८९।५७	+१।९।३०
कोलम्वो (श्रीलंका)	६।५६	७९।५६	-०।३०।४०
खुलना (बांग्लादेश)	२२।४९	८९।३७	+१।६।१०
खुशालगढ़ (पाक)	३३।२८	७१।५९	-१।५०।१०
खैरागढ़ (पाक)	२९।५५	७१।१२	-१।५८।०
गजनी (अफगानिस्तान)	३३।३४	६८।१७	-२।२७।१०
ग्रीनविच (लन्दन)	५१।३०	०।०	-१३।५०।०
गुजरानवाला (पाक)	३२।१०	७४।१४	-१।२७।४०
चटगाँव (बांग्लादेश)	२२।२१	९१।५०	-१।२८।२०
चुंगकिंग (चीन)	२९।३०	१०६।५०	+३।५८।२०
जनकपुर (नेपाल)	२६।५०	८६।०	+०।३०।०
जलालावाद (पाक)	३४।२४	७०।२६	-२।५।४०
जार्जटाउन (गुयाना)	६।५८	५०।६	-५।२९।०
टोकियो (जापान)	३५।४०	१३८।४५	+९।१७।३०
डायमंड (म्यामार)	१५।५२	९४।१९	+१।५३।१०
ढाका (बाँग्लादेश)	२३।४३	९०।२६	+१।१४।२०
तक्षशिला (पाक)	३३।४०	७२।५०	-१।४१।४०
थिम्फू (भूटान)	२७।३३	८९।५३	+१।८।५०
त्रिकोन्माली (श्रीलंका)	८।३१	८१।१५	-०।१७।३०
दिनाजपुर (बांग्लादेश)	२५।३७	८८।४०	+०।५६।४०
पोर्ट ओखा (गुजरात)	२२।२५	६९।५०	-२।१९।१०
पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान)	११।३०	९२।५०	+१।३८।२०
न्यूयार्क (उ०अमेरिका)	४०।४३	७४।१०	-२६।११।४०
नैरोवी, केन्या	१।१८	३६।५२	-७।४१।२०
पीकिंग, (बीजींग) (चीन)	३९।५५	११६।२४	+५।३४।०
पेरिस (फ्रांस)	४८।५०	२।२०	-१३।२६।४०
पेशावर (पाक)	३४।२	७१।३७	-१।५३।५०
बट्टीकलोआ (श्रीलंका)	७।८	८१।७	-०।१८।५०
बन्दरशाहपुर (ईरान)	३०।०	४९।२०	-५।३६।४०
बर्लिन (जर्मनी)	५२।३२	१३।२५	-११।३५।५०
बहावलपुर (पाक)	२८।२४	७१।४७	-१।५२।१०
बेलग्रेड (रुस)	४४।४८	२०।३७	-१२३।५०
बोर्नियो	०।०	११५।०	+५।२०।०
मक्का (अरब)	२१।२५	३९।५४	-७।११।०
मानसरोवर (नेपाल)	३०।४५	८१।२०	-०।१६।४०
मास्को (रुस)	५५।४५	८१।२०	-०।१६।४०
मुल्तान (पाक)	३०।१२	७१।३१	-१।५४।५०
मैक्सिको (उ०अमेरिका)	१९।२६	९९।१	-३०।२०।१०
रावलपिण्डी (पाक)	३३।३७	७३।६	-१।३९।०
रोम (इटली)	४१।५५	१२।२८	-१।१५।२०
रंगून (म्यामार)	१६।४५	९६।१३	+२।१२।१०
लरकाना (पाक)	२७।३३	६८।१५	-२।२७।३०
लेनिनग्राड (रुस)	५९।५७	७७।४१	-२।२७।३०
वाशिंगटन (उ०अमेरिका)	३८।५५	७७।४१	-२६।४६।५०
समरकंद (रुस)	३९।३०	६९।५०	-२।११।४०
स्यालकोट (पाक)	३२।३१	७४।३६	-१।२४।०
सिंगापुर (मलेशिया)	२।०	१०३।५१	-३।२८।३०
शेरपुर (बांग्लादेश)	२४।४०	८९।२८	+१।४।४०
हनोंई (वियतनाम)	२१।२	१०५।५२	+३।४८।४०
हाँगकाँग (चीन)	२२।१६	११४।९	+५।११।३०
हिरोशिमा (जापान)	३४।३८	१३२।३५	+८।१५।५०
हैदरावाद (पाक)	२५।२५	६८।३८	-२।२३।४०
लाहौर (पाक)	३१।३७	७४।३६	-१।२४।०
लंदन (इग्लैण्ड)	५१।३०	०।५	-१३।५०।५०

चरसारिणी (क्रान्त्यंश)

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
७	० २९	० ५९	१ २८	१ ५८	२ २९	२ ५७	३ २७	३ ५७	४ २७	४ ५८	५ २८	५ ५९	६ ३०	७ १	७ ३२	८ ४	८ ३६	९ ९	९ ४२	१० १५	१० ४८	११ २२	११ ५७	१२ ३२
८	० ३४	१ ७	१ ४१	२ १५	२ ४९	३ २३	३ ५६	४ ३१	५ ६	५ ४१	६ १६	६ ५१	७ २६	८ २	८ ३८	९ १४	९ ५१	१० २८	११ ६	११ ४४	१२ २२	१३ १	१३ ४१	१४ २१
९	० ३८	१ १६	१ ५४	२ ३३	३ ११	३ ४९	४ २७	५ ६	५ ४५	६ २४	७ ४	७ ४३	८ २३	९ ३	९ ४४	१० २५	११ ६	११ ४८	१२ ३०	१३ १३	१३ ५६	१४ ४१	१५ २५	१६ ११
१०	० ४२	१ २५	२ ७	२ ५०	३ ३२	४ १५	४ ५८	५ ४१	६ २४	७ ८	७ ५१	८ ३६	९ २०	१० ५	१० ५०	११ ३६	१२ २३	१३ ८	१३ ५५	१४ ४३	१५ ३१	१६ २०	१७ १०	१८ १
११	० ४७	१ ३४	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४०	५ २८	६ १६	७ ३	७ ५१	८ ४०	९ २९	१० १७	११ ७	११ ५६	१२ ४७	१३ ३८	१४ २९	१५ २७	१६ १४	१७ ७	१८ १	१८ ५६	१९ ५२
१२	० ५१	१ ४२	२ ३३	३ २४	४ १६	५ ९	५ ५९	६ ५०	७ ४३	८ ३६	९ २८	१० २७	११ १५	१२ ९	१३ ३	१३ ५९	१४ ५४	१५ २०	१६ ४७	१७ ४५	१८ ४३	१९ ४२	२० ४२	२१ ४३
१३	० ५५	१ ५१	२ ४६	३ ४२	४ ३८	५ ३४	६ ३०	७ २७	८ २३	९ २०	१० १७	११ १५	१२ १३	१३ १२	१४ ११	१५ ११	१६ ११	१७ १२	१८ १४	१९ १७	२० २०	२१ २५	२२ ३०	२३ ३६
१४	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	६ ०	७ १	८ २	९ ३	१० ५	११ ७	१२ ९	१३ १२	१४ १५	१५ १९	१६ २४	१७ २९	१८ ३४	१९ ४२	२० २०	२१ ५८	२३ ८	२४ १८	२५ ३०
१५	१ ४	२ ९	३ १३	४ १७	५ २१	६ २७	७ ३१	८ ३८	९ ४४	१० ५०	११ ५७	१३ ४	१४ १०	१५ १९	१६ २८	१७ ३८	१८ ४८	१९ ५९	२१ १०	२२ २४	२३ ३५	२४ ५२	२६ ७	२७ २४
१६	१ ९	२ १८	३ २७	४ ३६	५ ४५	६ ५४	८ ४	९ १४	१० २५	११ ३६	१२ ४७	१३ ५९	१५ १०	१६ २४	१७ ३६	१८ ५२	२० ७	२१ २३	२२ ४०	२३ ५७	२५ १७	२६ ३७	२७ ५८	२९ २०
१७	१ १३	२ २७	३ ४०	४ ५४	६ ८	७ २२	८ ३६	९ ५१	११ ६	१२ २०	१३ ३८	१४ ५४	१६ ११	१७ २९	१८ ४८	२० ७	२१ २७	२२ ४८	२४ १०	२५ ३३	२६ ५८	२८ २३	२९ ५०	३१ १८
१८	१ १८	२ ३६	३ ५१	५ १२	६ ३१	७ ५०	९ ९	१० २८	११ ४८	१३ ८	१४ २९	१५ ५०	१७ २२	१८ ३४	१९ ५९	२१ २३	२२ ४८	२४ १४	२५ ४३	२७ १०	२८ ४१	३० १०	३१ ४३	३३ १६
१९	१ २३	२ ४५	४ ८	५ ३१	६ ५४	८ १८	९ ३७	११ ६	१२ ३०	१३ ५५	१५ २१	१६ ४५	१८ १४	१९ ४२	२१ ११	२२ ४०	२४ १०	२५ ४२	२७ १४	२८ ४८	३० २३	३१ ५९	३३ ३७	३५ १६
२०	१ २७	२ ५५	४ २२	५ ५०	७ १६	८ ४६	१० १५	११ ४४	१३ १३	१४ ४३	१६ १४	१७ ४५	१९ १७	२० ५०	२२ २३	२३ ५७	२५ ३३	२७ १०	२८ ४१	३० २७	३२ ८	३३ ४९	३५ ३३	३७ १८
२१	१ ३२	३ ४	४ ३६	६ ९	७ ४२	९ १५	१० ४८	१२ २२	१३ ५७	१५ ३२	१७ ७	१८ ४३	२० २०	२१ ५८	२३ ३७	२५ १७	२६ ५८	२८ १४	३० २३	३२ ८	३३ ५४	३५ ४१	३७ ३१	४९ २२
२२	१ ३७	३ १४	४ ५१	६ २८	८ ६	९ ४४	११ २२	१३ १	१४ ४०	१६ २०	१८ १	१९ ४२	२१ २५	२३ ८	२४ ५२	२६ ३७	२८ २३	३० ११	३१ ५९	३३ ४९	३५ ४२	३७ ३५	३९ ३०	४१ २७

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२३	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३२	१० १४	११ ५७	१३ ४१	१५ २५	१७ १०	१८ ५६	२० ४२	२२ ३०	२४ १८	२६ ६	२७ ५६	२९ ५०	३१ ४२	३३ ३७	३५ ३३	३७ ३१	३९ ३०	४१ ४१	४३ ३४
२४	१ ४७	३ ३४	५ २१	७ ८	८ ५६	१० ४४	१२ ३२	१४ २१	१६ ११	१८ १	१९ ५२	२१ ४३	२३ ३६	२५ ३०	२७ २४	२९ २०	३१ १८	३३ १५	३५ १५	३७ १८	३९ २२	४१ २७	४३ ३५	४५ ४४
२५	१ ५२	३ ४४	५ ३६	७ २८	९ २१	११ १४	१३ ८	१४ ५९	१६ ५७	१८ ५२	२० ४८	२२ ४५	२४ ४३	२६ ४२	२८ ४३	३० ४४	३२ ४७	३४ ५२	३६ ५७	३९ ५	४१ १५	४३ २६	४५ ४०	४७ ५६
२६	१ ५७	३ ५४	५ ५२	७ ४९	९ ४७	११ ४५	१३ ४४	१५ ४३	१७ ४३	१९ ४४	२१ ४६	२३ ४८	२५ ५२	२७ ५६	३० २	३२ ९	३४ १८	३६ २८	३८ ४०	४० ५४	४३ १३	४५ २८	४७ ४८	५० १०
२७	२ २	४ ५	६ ७	८ १०	१० १३	१२ १७	१४ २१	१६ २६	१८ ३१	२० ३७	२२ ४४	२४ ५२	२७ २	२९ ११	३१ २३	३३ ३६	३५ ५२	३८ ६	४० २५	४२ ४५	४५ ७	४७ ३२	४९ ५८	५२ २७
२८	२ ७	४ १५	६ २३	८ ३१	१० ४०	१२ ४९	१४ ५९	१७ ८	१९ १९	२१ ३१	२३ ४४	२५ ५७	२८ १२	३० २८	३२ ४६	३५ ५	३७ २५	३९ ४८	४२ १२	४४ ३८	४७ ६	४९ ३८	५२ ११	५४ ४७
२९	२ १३	४ २६	६ ४०	८ ५३	११ ७	१३ २२	१५ ३७	१७ ५२	२० ९	२२ २६	२४ ४४	२७ ४	२९ २५	३१ ४८	३४ १०	३६ ३५	३९ २	४१ २७	४४ १	४६ ३३	४९ ८	५१ ४६	५४ २७	५७ ९
३०	२ १९	४ ३७	६ ५६	९ १५	११ ३५	१३ ५५	१६ १६	१८ ३७	२१ ०	२३ २२	२५ ४६	२८ १२	३० ३९	३३ ६	३५ ३६	३८ ७	४० ४०	४३ १५	४५ ५२	४७ ३१	५१ १३	५३ ५७	५६ ४५	५९ ३५
३१	२ २४	४ ४९	७ १३	९ ३७	१२ २	१४ २७	१६ ५३	१९ २२	२१ ५०	२४ २१	२६ ५०	२९ २१	३१ ५४	३४ २७	३७ ४	३९ ४२	४२ २१	४५ २	४७ ४६	५० ३२	५३ २०	५६ १२	५९ ६	६२ ४
३२	२ ३०	५ ०	७ ३०	१० १	१२ ३२	१५ ४	१७ ३६	२० ७	२२ ४३	२५ १८	२७ ५४	३० ३२	३३ १०	३५ ४७	३८ ३३	४१ १६	४४ ३	४६ ५१	४९ ४२	५२ ३५	५५ ३१	५८ ३०	६१ ३१	६४ ३७
३३	२ ३६	५ १२	७ ४६	१० २५	१३ २	१५ ३९	१८ १६	२० ५७	२३ ३७	२६ १८	२९ ०	३१ ४४	३४ ३०	३७ १५	४० ५	४२ ५६	४५ ४८	४८ ४४	५१ ४०	५४ ४१	५७ ४४	६० ५१	६३ ५७	६७ १३
३४	२ ४२	५ २४	८ ५	१० ४२	१३ ३२	१६ १६	१९ ०	२१ ४५	२४ ३२	२७ १९	३० ६	३२ ५८	३५ ४९	३८ ४४	४१ ३९	४४ ३६	४७ ३६	५० ३७	५३ ४३	५६ ५१	६० १	६३ १५	६६ ३३	६९ ५४
३५	२ ४८	५ ३६	८ २५	११ १४	१४ ३	१६ ५३	१९ ४४	२२ ३५	२५ २६	२८ २२	३१ १७	३४ १४	३७ १३	४० १३	४३ १५	४६ १९	४९ २७	५२ ३६	५५ ४५	५९ ४	६२ २२	६५ ४४	६९ १०	७२ ४०
३६	२ ५४	५ ४९	८ ४४	११ ३९	१४ ३४	१७ ३१	२० २८	२३ २७	२६ २६	२९ २७	३२ २९	३५ ३२	३८ ३७	४१ ४५	४४ ५२	४८ ६	५१ २०	५४ ३७	५७ ५७	६१ २०	६४ ४६	६८ १७	७१ ५१	७५ ३०
३७	३ १	६ २	९ ३	१२ ५	१५ ७	१८ १०	२१ १४	२४ १९	२७ २५	३० ३३	३३ ४१	३६ ५२	४० ५	४३ १९	४६ ३६	४९ ५५	५३ १७	५६ ४१	६० ७	६३ ४०	६७ १५	७० ५४	७४ ३७	७८ २४
३८	३ ८	६ १५	९ २३	१२ ३२	१५ ४२	१८ ५०	२२ १	२५ १३	२८ २६	३१ ४१	३४ ५६	३८ १४	४१ ३४	४४ ५४	४८ २०	५१ ४७	५५ १७	५८ ४१	६२ २५	६६ ५	६९ ४८	७३ ३६	७७ २८	८१ २५

सारणी द्वारा चर बनाने का उदाहरण– काशी का अक्षांश २५°।१८ (उत्तर) अभीष्ट दिन की रविक्रान्ति (उत्तरा) २१°।४० सारिणी में ऊपर क्रान्त्यंश और बायीं ओर अक्षांश दिये गये हैं। चर सारिणी में ऊपर २२ अंक के नीचे तथा बायीं ओर के २५ अंक के सामने ४३।२६ तथा ऊपर के २१ अंक के नीचे तथा बायीं ओर २५ अंक के सामने ४१।१५ मिले, दोनों का अन्तर करने पर (४३।२६-४१।१५) मिनटादि २।११ अर्थात् १३१ सेकेण्ड हुए। अब यहाँ अनुपात किया कि ६० कला में १३१ सेकेण्ड प्राप्त होते हैं तो ४० कला में कितने सेकेण्ड प्राप्त होंगे। फलस्वरूप ८७ सेकेण्ड अर्थात् १ मिनट २७ सेकेण्ड मिले, इन्हें ४१।१५ में युक्त किया तो ४२।४२ मिनटादि हुए। अब ऊपर के २२ अंक के नीचे एवं बायीं ओर के २६ अंक के सामने ४५।२८ तथा २१ अंक के नीचे २६ अंक के सामने ४३।१० मिले। दोनों का अन्तर करने पर (४५।२८-४३।१०) मिनटादि २।१८ अर्थात् १३८ सेकेण्ड मिले। पूर्व की भाँति अनुपात किया कि ६० कला में १३८ सेकेण्ड तो ४० कला में क्या? फलस्वरूप ९२ सेकेण्ड अर्थात् १ मिनट ३२ सेकेण्ड मिले। इन्हें ४३।१० में युक्त किया तो ४४।४२ मिनटादि हुए। ४४।४२ में से ४२।४२ को घटाने पर २ मिनट अर्थात् १२० सेकेण्ड अन्तर आया, फिर पूर्ववत् अनुपात किया कि ६० कला में १२० सेकेण्ड में तो १८ कला में क्या ? फलस्वरूप ३६ सेकेण्ड मिले इन्हें ४२।४२ में जोड़ने पर ४३ मिनट १८ सेकेण्ड चर के रूप में २५।१८ अक्षांश और २१।४० क्रान्त्यंश से प्राप्त हुए।

रविक्रान्ति उत्तरा होने से चरमिनटादि ४३।१८ को ६ घण्टे में युक्त किया तो अभीष्ट दिन का सूर्यास्त का स्थानिक समय ६ घण्टा ४३ मिनट १८ सेकेण्ड तथा इसे १२ घण्टे में घटाने से ५ घण्टा १६ मिनट ४२ सेकेण्ड सूर्योदय का समय हुआ। सूर्यास्त घण्टादि का ढाई गुना करने पर १६-४८-१५घट्यादि दिनार्ध हुआ, दिनार्ध को दूना करने पर घट्यादि ३३।३६।३० दिनमान हुआ जो स्वलपान्तर से ३३ घटी ३७ पल मानने योग्य है। इस (दिनमान) को ६० घटी में से घटाने पर २६ घटी २३ पल रात्रिमान हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र का चर सूर्योदयास्त दिन-रात्रिमान ज्ञात किया जाना चाहिए।

होरालग्न के आनयन की विधि– इष्टकाल की घटियों को २ से गुणा कर उसमें ५ से भाग देने पर जो शेष बचे उसे पलात्मक बना कर १० से विभक्त करें, इस प्रकार घटी-पल में जो भजनफल प्राप्त हो उसे जन्मसमय के स्पष्ट सूर्य में युक्त करने पर स्पष्ट होरा लग्न होता है।

जन्मसमय के अनुसार दीर्घादिभेद से तीन प्रकार आयुबोधकचक्र

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चरराशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश	चरराशि में लग्नेश स्थिरराशि में अष्टमेश	चरराशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश
स्थिरराशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश	स्थिरराशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश	स्थिरराशि में लग्नेश स्थिरराशि में अष्टमेश
द्विस्वभाव राशि में लग्नेश स्थिरराशि में अष्टमेश	द्विस्वभाव राशि में लग्नेश द्विस्वभाव राशि में अष्टमेश	द्विस्वभाव राशि में लग्नेश चरराशि में अष्टमेश

रोग में विचार के लिए त्रिनाड़ी चक्र– यदि सूर्य और चन्द्रमा इस त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी के नक्षत्र में हो तो रोग उत्पन्न होने पर मृत्यु की सम्भावना रहती है।

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	श्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.
धनिष्ठा	श्रवण	उ.षा.
शतभिषा	पू.भा	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

चक्र द्वारा आयुर्निर्णय की विधि– १- जन्मलग्नेश तथा अष्टमेश की स्थिति के द्वारा, २-जन्म-लग्न और चन्द्रमा की स्थितियों द्वारा, ३-जन्मलग्न एवं होरा लग्न की स्थितियो द्वारा, तीनों प्रकार से विचार करते हुए आयु का निर्णय करना चाहिए। तीनों प्रकार से यदि एकरूपता हो तो उसी आयु को ग्रहण करना चाहिए। यदि दो प्रकार एकरूपता और एक प्रकार भिन्नता हो तो दो प्रकार एकरूपता वाली आयु ग्रहण करना चाहिए तथा यदि तीनों प्रकार भिन्न-भिन्न आयु आती हो तो जन्मलग्न और होरालग्न द्वारा आयी हुई आयु ग्रहण करना चाहिए, किन्तु तीनों प्रकार भिन्न-भिन्न आयु आती हो और यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तमभाव में हो तो जन्मलग्न और होरालग्न से आने वाली आयु न ग्रहण कर जन्मलग्न और चन्द्रमा द्वारा आयी हुई को ही ग्रहण करना चाहिए। यदि शनि योगकारक हो तो कक्ष्याह्रास होता है अर्थात् दीर्घायु में मध्यमायु, मध्यमायु में अल्पायु और अल्पायु में बहुत स्वल्पायु होती है। किन्तु शनि स्वराशि या अपने उच्च में स्थित हो तो कक्ष्या ह्रास नहीं होता है। लग्न और सप्तम के अष्टमेशों में जो बली हो, वह केन्द्र में स्थित हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यमायु, आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है।

सारिणी द्वारा आयु स्पष्ट करने हेतु उदाहरण– जन्मलग्न ६/१२/१५/२०, होरालग्न ७/२/८/१०, चन्द्रमा ३/५/१०/८, लग्नेश और अष्टमेश शुक्र ७/१४/२०/८ है। यहाँ लग्नेश और अष्टमेश दोनों शुक्र ही है। शुक्र स्थिर राशि में है इस कारण अल्पायुयोग हुआ। जन्मलग्न और चन्द्रमा दोनों चर राशियों में है। इस कारण दीर्घायु योग हुआ। चर राशि में जन्मलग्न है और स्थिर राशि होरालग्न होने से मध्यम आयु योग हुआ यहाँ तीनों तरह से भिन्न-भिन्न आयु आने से तथा लग्न अथवा सप्तम में चन्द्रमा के न रहने से जन्मलग्न और होरालग्न से प्राप्त मध्यमायु ही ग्राह्य है। क्रमशः जन्मलग्न और होरालग्न के अंशादिकों का योग=१२।१५।२०+२।८।१०=१४°।२३'।३०" हुआ। दो योग कारक होने से उक्त अंशादिकों के योग में दो से भाग दिया तो ७°।११'।४५" आया। ७° से प्राप्त ७ वर्ष ५ मास १८ दिन, ११' से प्राप्त २ मास १० दिन २४ घटी तथा ४५" से ४ दिन ४८घटी ० पल प्राप्त हुआ इन सभी का योग करने पर ७वर्ष ८मास ३दिन १२घटी योग हुआ। इन वर्षादिकों को मध्यमायु के ६४ वर्षों में से घटाने पर ५६ वर्ष ३ मास २६ दिन ४८ पल स्पष्ट प्रमाण सिद्ध आयु हुई।

॥ निधनार्क-निधनेन्दु-निधनलग्न विचार ॥

निधनार्क ज्ञान– जातक की मृत्यु का सौर-मास निश्चय करने के लिए निधनार्क की आवश्यकता होती है। अष्टमेश जिस द्वादशांश में हो उस राशि से त्रिकोण (५,९ स्थान) में गोचर भ्रमणवश जब राहु हो तथा अष्टमेश से जब सूर्य त्रिकोण (५,९) राशि में गोचर भ्रमणवश रहे तब मृत्यु होती है। इस प्रकार मृत्यु के मास का ज्ञान होगा। दिन और समय के ज्ञान के लिए स्पष्टसूर्य की राशि, अंश, कला को कलात्मक बनाकर दो स्थानों में लिखें, तथा स्पष्ट राहु की राशि अंश, कला को कलात्मक बनाकर कलात्मक सूर्य से गुणा करके उसमें २१६०० का भाग देने पर लब्ध घट्यादि को द्वितीय स्थान पर स्थापित कलात्मक सूर्य पिण्ड में जोड़ने पर जो कलात्मसंख्या प्राप्त हो उसको राश्यादि बनाने पर जो राश्यादि स्पष्ट सूर्य प्राप्त हो वही निधनार्क होता है। इस निधनार्क के राशि, अंश जिस मास में जिस दिन मिले उस दिन सूर्य की कला-विकला से इष्ट समय निकाल कर मृत्यु समय जाने।

उपरोक्त राहु और सूर्य द्वारा की गई क्रिया की भाँति मङ्गल और सूर्य द्वारा क्रिया करने से जो राश्यादि सूर्य प्राप्त हो वह तथा उससे नवम-पंचम में स्थित गोचर का सूर्य भी क्लेश कष्ट या मृत्युकारक होता है।

निधनचन्द्रज्ञान- अष्टमेश-स्थित राशि से त्रिकोण (५,९) राशि में अथवा अष्टमेशस्थ नवांश से ५।९ नवांशराशि में जब चन्द्रमा गोचर भ्रमणवश संचार करे तथा चन्द्रराशि की रेखासंख्या (समुदायाष्टक वर्ग में) स्वल्प हो तो निश्चय मृत्यु कहना चाहिए। समय-ज्ञान की विधि पूर्ववत् जाने।

निधनलग्नज्ञान-१- जन्मलग्न अथवा जन्म कालीन चन्द्रमा जिस नवांश में हो, उससे ६४ वीं- नवांश राशि की लग्न में मृत्यु जानना। अथवा

२- लग्न या अष्टमभाव के त्रिकोण (५,९) राशि की लग्न में से जिस राशि में (समुदायाष्टकवर्ग में) अल्प रेखा हो उस राशि के स्वामी की दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु जानना चाहिए।

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु अंशफल बोधक सारिणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु कलाफल बोधक सारिणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनिसूत्र के अनुसार आयुसाधन हेतु विकलाफल बोधक सारिणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	६
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जातक परिजात ग्रन्थ के अनुसार आयु विचार– अष्टमेश व्यय अथवा षष्ठ भाव में पाप ग्रह से युक्त होकर बैठा हो तो जातक अल्पायु होता है। या द्वादश में अष्टमेश निर्बल होकर लग्नेश के साथ हो तो जातक अल्पायु होता है। दशमेश अष्टमेश तथा लग्नेश बली हो इनसे शनि का योग न हो तो जातक दीर्घायु होता है। उक्त दशमेश, अष्टमेश तथा लग्नेश में दो बली हो और शनि का योग न हो तो मध्यमायु होता है तथा एक बली हो तो अल्पायु यदि तीनों निर्बल हो तो अनायु होता है। अष्टमेश यदि पाप गृह में होते हुए दुःस्थान मे होकर पाप ग्रह से युक्त होता अल्पायु होता हैं। वही अष्टमेश यदि शुभग्रह से युक्त तथा शुभ राशि में हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट होकर अष्टमस्थ हो तो दीर्घायु होता हैं। लग्नेश अष्टमस्थ हो या अष्टमेश पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर अस्तंगत हो अथवा शत्रुगृही हो तो जातक आयु हीन होता है। अष्टमेश अपनी उच्च राशि में शुभ ग्रह से युक्त हो, केन्द्र-त्रिकोण में हो तो दीर्घायु होता है अथवा अष्टमेश अष्टमस्थ लग्नेश लग्नस्थ हो तो जातक दीर्घायु होता है। लग्न से द्वादशेश अपनी राशि में बलवान हो तो जातक दीर्घायु तथा सुखी होता है। लग्नेश व अष्टमेश बलवान हो, केन्द्र में हो तो भी जातक दीर्घायु होता हैं। अष्टमेश अपने स्थान में हो तो जातक दीर्घायु होता है। लग्नेश व अष्टमेश दोनों षष्ठस्थ या द्वादशस्थ हों तो जातक दीर्घायु होता है।

॥ योगिनियों की दशा-अन्तर्दशा ज्ञानार्थचक्र ॥

मङ्गला १			पिङ्गला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
आर्द्रा चित्रा श्रवण			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य विशा. शत.			अश्वि.श्ले.अ. पू.भा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	वृ०	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			सङ्कटा ८		
भर.मघा.ज्ये. उ.भा.			कृत्ति.पू.फा. मू. रेव.			रोहि. उ.फा. पू.षा.			मृग. हस्त उ.षा.		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	२०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि	१८	२०

।। ग्रहों की विंशोत्तरीया महादशा-अन्तर्दशाबोधक चक्र ।।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ., उ.फा. उ.षा अन्तर्दशा				रोहि.,हस्त,श्रवण अन्तर्दशा				मृ.,चित्रा,ध. अन्तर्दशा २१			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	च	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा,स्वा.,शत. अन्तर्दशा				पुन.,वि.,पू.भा. अन्तर्दशा				पुष्य,अनु.,उ.भा. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्र दशावर्ष २०			
श्ले.ज्ये. रेवती अन्तर्दशा				मघा.,मू.,अश्वि. अन्तर्दशा				पू.फा. पू.षा. भर. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

।।ग्रहों के अष्टकवर्गज्ञानार्थ सारिणी।।

सूर्याष्टकवर्गाङ्क ४८								चन्द्राष्टकवर्गाङ्क ४९							
सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३	१	२	१	१	३	३	३	३
२	६	२	५	६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	६
४	१०	४	६	९	१२	४	६	६	५	४	७	५	६	७	१०
७	११	७	९	११		७	१०	७	६	५	८	७	११	८	११
८		८	१०			८	११	१०	९	७	१०	९		१०	
९		९	११			९	१२	११	१०	८	११	१०		११	
१०		१०	१२			१०			११	१०	१२	११			
११		११				११				११					

भौमाष्टकवर्गाङ्क ३९								बुधाष्टकवर्गाङ्क ५४							
मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१	१	६	१	१	५	२	१	१
२	५	१०	८	४	५	६	३	३	८	२	२	६	४	२	२
४	६	११	११	७	६	११	६	५	११	३	४	९	६	४	४
७	११	१२	१२	८	१०		१०	६	१२	४	७	११	८	७	६
८				९	११		११	९		५	८	१२	१०	८	८
१०				१०				१०		८	९		११	९	१०
११				११				११		९	१०			१०	११
								१२		११	११			११	

गुर्वष्टकवर्गाङ्क ५६								शुक्राष्टकवर्गाङ्क ५२							
वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१	१	३	८	१	३	३	५	१
२	५	५	२	५	२	२	२	२	४	११	२	५	५	८	२
३	६	६	३	७	४	४	४	३	५	१२	३	६	६	९	३
४	९	१२	४	९	७	५	५	४	८		४	९	९	१०	४
७	१०		७	११	८	६	६	५	९		५	११	११	११	५
८	११		८		१०	९	७	८	१०		८	१२			८
१०			९		११	१०	९	९	११		९				९
११			१०			११	१०	१०			११				११
			११				११	११			१२				

शन्याष्टकवर्गाङ्क ३९								लग्नाष्टकवर्गाङ्क ४९							
श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	ल.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
३	१	३	३	६	५	६	१	३	३	३	१	१	१	१	१
५	२	६	५	८	६	११	३	६	४	६	३	२	२	२	३
६	४	११	६	९	११	१२	४	१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	७		१०	१०	१२		६	११	१०	११	१०	६	५	४	६
	८		११	११			१०		११		११	८	६	५	१०
	१०		१२	१२			११		१२			१०	७	८	११
	११											११	९	९	
													१०	११	
													११		

ग्रहों के गुणक अङ्क :- सू. ५, चं. ५, मं. ८, बु. ५, वृ. १०, शु. ७, श. ५,
राशियों के गुणक अङ्क :- मे. ७ वृ. १०, मि. ८, क. ४, सिं. १०, क. ५, तु. ७, वृ. ८, ध. ९, म. ५, कु. ११, मी. १२,
रेखाओं के फल :- १ क्लेश , २ धनहानि, ३ प्रवास-कष्ट, ४ समता, ५ सुख, ६ धनप्राप्ति , ७ परम आनन्द, ८ कार्यसिद्धि व समृद्धि सुख।

।।नवीन (वेध सिद्ध) वर्षमान के अनुसार वर्ष प्रवेशसारिणी।।

गतवर्ष सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०
गतवर्ष सं०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गतवर्ष सं०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५२	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०

।।प्राचीन वर्षमान के अनुसार वर्ष प्रवेशसारिणी।।

गतवर्ष सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	२८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गतवर्ष सं०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गतवर्ष सं०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	१६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ताजिकमतानुसार ग्रहों के दृग्बल आनयन की सारिणी

रा०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
० मे	६० ०	५८ ०	५६ ०	५४ ०	५२ ०	५० ०	४८ ०	४६ ०	४४ ०	४२ ०	४० ०	३८ ०	३६ ०	३४ ०	३२ ०	३० ०	२८ ०	२६ ०	२४ ०	२२ ०	२० ०	१८ ०	१६ ०	१४ ०	१२ ०	१० ०	८ ०	६ ०	४ ०	२ ०	गु०२ ह०१ ऋ०
१ वृ०	० ०	१ २०	२ ४०	४ ०	५ २०	६ ४०	८ ०	९ २०	१० ४०	१२ ०	१३ ०	१४ ०	१६ ०	१७ २०	१८ ४०	२० ०	२१ २०	२२ ४०	२४ ०	२५ २०	२६ ४०	२८ ०	२९ २०	३० ४०	३२ ०	३३ २०	३४ ४०	३६ ०	३७ २०	३८ ४०	गु०४ ह०३ घ०
२ मि०	४० ०	३९ १०	३८ २०	३६ ३०	३६ ४०	३५ ५०	३५ ०	३४ १०	३३ २०	३२ ३०	३१ ४०	३० ५०	३० ०	२९ १०	२८ २०	२७ ३०	२६ ४०	२५ ५०	२५ ०	२४ १०	२३ २०	२२ ३०	२१ ४०	२० ५०	२० ०	१९ १०	१८ २०	१७ ३०	१६ ४०	१५ ५०	गु०५ ह०६ ऋ०
३ क०	१५ ०	१६ ०	१७ ०	१८ ०	१९ ०	२० ०	२१ ०	२२ ०	२३ ०	२४ ०	२५ ०	२६ ०	२७ ०	२८ ०	२९ ०	३० ०	३१ ०	३२ ०	३३ ०	३४ ०	३५ ०	३६ ०	३७ ०	३८ ०	३९ ०	४० ०	४१ ०	४२ ०	४३ ०	४४ ०	गु०१ ह०१ घ०
४ सिं०	४५ ०	४३ ३०	४२ ०	४० ३०	३९ ०	३७ ३०	३६ ०	३४ ३०	३३ ०	३१ ३०	३० ०	२८ ३०	२७ ०	२५ ३०	२४ ०	२२ ३०	२१ ०	१९ ३०	१८ ०	१६ ३०	१५ ०	१३ ३०	१२ ०	१० ३०	९ ०	७ ३०	६ ०	४ ३०	३ ०	१ ३०	गु०३ ह०२ ऋ०
५ क०	० ०	२ ०	४ ०	६ ०	८ ०	१० ०	१२ ०	१४ ०	१६ ०	१८ ०	२० ०	२२ ०	२४ ०	२६ ०	२८ ०	३० ०	३२ ०	३४ ०	३६ ०	३८ ०	४० ०	४२ ०	४४ ०	४६ ०	४८ ०	५० ०	५२ ०	५४ ०	५६ ०	५८ ०	गु०२ ह०१ घ०
६ तु०	६० ०	५८ ०	५६ ०	५४ ०	५२ ०	५० ०	४८ ०	४६ ०	४४ ०	४२ ०	४० ०	३८ ०	३६ ०	३४ ०	३२ ०	३० ०	२८ ०	२६ ०	२४ ०	२२ ०	२० ०	१८ ०	१६ ०	१४ ०	१२ ०	१० ०	८ ०	६ ०	४ ०	२ ०	गु०२ ह०१ ऋ०
७ वृ०	० ०	१ ३०	३ ०	४ ३०	६ ०	७	९ ०	१० ३०	१२ ०	१३ ३०	१५ ०	१६ ३०	१८ ०	१९ ३०	२१ ०	२२ ३०	२४ ०	२५ ३०	२७ ०	२८ ३०	३० ०	३१ ३०	३३ ०	३४ ३०	३६ ०	३७ ३०	३९ ०	४० ३०	४२ ०	४३ ३०	गु०३ ह०२ घ०
८ ध०	४५ ०	४४ ०	४३ ०	४२ ०	४१ ०	४० ०	३९ ०	३८ ०	३७ ०	३६ ०	३५ ०	३४ ०	३३ ०	३२ ०	३१ ०	३० ०	२९ ०	२८ ०	२७ ०	२६ ०	२५ ०	२४ ०	२३ ०	२२ ०	२१ ०	२० ०	१९ ०	१८ ०	१७ ०	१६ ०	गु०१ ह०१ ऋ०
९ म०	१५ ०	१४ ५०	१४ ४०	१४ ३०	१४ २०	१४ १०	१४ ०	१३ ५०	१३ ४०	१३ ३०	१३ २०	१३ १०	१३ ०	१२ ५०	१२ ४०	१२ ३०	१२ २०	१२ १०	१२ ०	११ ५०	११ ४०	११ ३०	११ २०	११ १०	११ ०	१० ५०	१० ४०	१० ३०	१० २०	१० १०	गु०१ ह०६ ऋ०
१० कुं०	१० ०	९ ४०	९ २०	९ ०	८ ४०	८ २०	८ ०	७ ४०	७ २०	७ ०	६ ४०	६ २०	६ ०	५ ४०	५ २०	५ ०	४ ४०	४ २०	४ ०	३ ४०	३ २०	३ ०	२ ४०	२ २०	२ ०	१ ४०	१ २०	१ ०	० ४०	० २०	गु०१ ह०३ ऋ०
११ मी०	० ०	२ ०	४ ०	६ ०	८ ०	१० ०	१२ ०	१४ ०	१६ ०	१८ ०	२० ०	२२ ०	२४ ०	२६ ०	२८ ०	३० ०	३२ ०	३४ ०	३६ ०	३८ ०	४० ०	४२ ०	४४ ०	४६ ०	४८ ०	५० ०	५२ ०	५४ ०	५६ ०	५८ ०	गु०२ ह०१ घ०

दृश्यग्रह में से द्रष्टा ग्रह को हीन कर शेष राश्यादि का कला-विकला करके उसमें गुणक से गुणा कर हर से भाग देने से धन, ऋण रूप में जो प्राप्त हो उसका संस्कार करने पर जो स्पष्ट फल प्राप्त हो वही ग्रह का दृक्फल होता है।

वर्षेश निर्णय के लिए पञ्चाधिकारी

१	जन्मलग्नपति।	४	मुंथहापति।
२	वर्षलग्नपति।	५	दिनमें सूर्य राशीश
३	त्रिराशिपति।	६	रात्रिमें सूर्य राशीश

वर्षमुद्दा दशा का बारहवाँ भाग मासदशामान होता है।

।। अथ त्रिराशिपति चक्र ।।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु	मं.	श.	मं.	वृ.	चं.	दिवा
वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श	शु.	श.	मं.	वृ.	च.	रात्रौ

वर्षेशनिर्णय– ऊपर सारिणी में दर्शाये हुए वर्षेश के पञ्चाधिकारी गणों में जो सबसे अधिक बलवान होकर लग्न को देखता है वही वर्षेश होता है। यदि कोई ग्रह बलवान होता हुआ भी लग्न को न देखता हो तो वह वर्षेश नहीं होता है। यदि पञ्चाधिकारी ग्रह बलवान होकर लग्न को देख रहे हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि होती है वही वर्षेश होता है। यदि सबकी समान दृष्टि हो व सभी निर्बल हों तो मुन्थहालग्न का स्वामी वर्षेश होता है। पाँचो अधिकारियों में अगर कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो सबसे अधिक बलवान ग्रह ही वर्षेश हो जाता है। कुछ आचार्यों के अनुसार बलादि साम्य रहने पर रात्रि के वर्ष प्रवेश में चन्द्र राशिपति वर्षेश होता है। अथवा— यदि कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो वर्ष लग्नेश ही वर्षेश हो जाता है।

वर्ष में अरिष्टज्ञानार्थ त्रिपताकी चक्र– वर्षप्रवेश काल में गत वर्ष की संख्या में एक जोड़कर ९ से भाग देने पर प्राप्त शेष राशि तुल्य स्थान अपनी राशि से चन्द्र को आगे बढ़ाकर त्रिपताकी चक्र में रखना चाहिए। इसी तरह गत वर्ष की संख्या में ४ का भाग देने से शेष संख्या तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्मकालिक ग्रह आगे हो जाते हैं। इस चक्र में लग्न एवं चन्द्र अशुभग्रह से विद्ध हों तो अशुभ फल होता है। **मुंथहानयन-** जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष में एक-एक राशियों की वृद्धि से मुंथहा भ्रमण करती है।

वर्ष-कुण्डली में तन्वादिद्वादश भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	क्लेश, चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रम और धन का लाभ	हानि, [illegible]	रोगभय, पुत्रनाश	शत्रुनाश सुख	संकट, [illegible]	रोग, भय, कष्ट	धर्मवृद्धि, [illegible]	सुखाप्ति, [illegible]	सुखार्थ, लाभ	उद्वेग, पीड़ा
चन्द्र	कफज्वर, पीड़ा	नेत्र कष्ट, धनाप्ति	हर्ष, धन प्राप्ति	शत्रुनाश, सुख	सुख, मदवृद्धि	[illegible]	ज्वर, भय	[illegible] भय	[illegible]	सुकर्म, [illegible]	यशलाभ, धनलाभ	व्यय, [illegible] कष्ट
मंगल	वातव्याधि, फोड़ाफुंसी	नेत्र रोग धनहानि	नीरुज्य, धनलाभ	व्यसन, रोगभय	[illegible] दुर्बुद्धि	सुख, शत्रुनाश	[illegible] कष्ट	पीड़ा, [illegible]	[illegible]	[illegible] लाभ	धनादि लाभ	[illegible]
बुध	धनलाभ सुख	सुख, द्रव्य प्राप्ति	सुख, सम्मान	सुख, द्रव्य लाभ	[illegible] की प्राप्ति	रोगभय, कलह	धनागम, सुख	[illegible]	[illegible] की प्राप्ति	[illegible]	सुख, [illegible] प्राप्ति	[illegible]
गुरु	सुख-यश अर्थ लाभ	कीर्ति तथा धनलाभ	विजय, सुख	वाहन, [illegible]	पुत्र-प्राप्ति सुख	[illegible] भय	सुख धनागम	[illegible] का भय	सुख, [illegible]	[illegible] का लाभ	पुत्र-अर्थ लाभ	शोक, रोग [illegible]
शुक्र	सम्मान, धनलाभ	धनप्राप्ति राज्यसुख	कीर्तिवृद्धि, अर्थागम	सुख, द्रव्यलाभ	धनागम, सुख	कष्ट, शत्रुभय	स्त्री-सुख	[illegible] भय	[illegible]	[illegible]	शान्ति, अर्थागम	व्यय [illegible]
शनि	रिपुभय, वातरोग	पीड़ा, भय विरोध	धनप्राप्ति, विजय	[illegible]	पुत्र-हानि, पीड़ा	[illegible] रोगनाश	[illegible] कलह	[illegible] भय	[illegible] शत्रुनाश	[illegible] भय	धन लाभ	क्लेश, चिन्ता
राहु	शिरोरोग, कलह	राजभय, पीड़ा	शत्रुनाश, शुभ	वातरोग, दुःख	[illegible] बुद्धिनाश	[illegible]	[illegible] धन हानि	[illegible] रोगभय	धन, धर्म वृद्धि	[illegible] भय	अनुकूल, सुलाभ	व्याधि, भय
केतु	पीड़ा, भय, चिन्ता	क्लेश, धन-क्षय	धर्मलाभ, आरोग्य	कष्ट, राजभय	पीड़ा, भय, दुर्बुद्धि	सुख, धनागम	[illegible] रोग	[illegible] कष्ट	[illegible] अर्थ-लाभ	[illegible] धनलाभ	[illegible] लाभ	[illegible] भय
मुंथा	सुख, शत्रुनाश	सुयश, अर्थागम	कार्यपुष्टि, धनादि	[illegible] दुःख	सुबुद्धि, [illegible]	[illegible] धननाश	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] लाभ	[illegible]

।। वर्ष मुद्दादशाचक्र ।।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	चं	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिवस	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्ष सं० में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर योग में २ घटाकर ९ से भाग देने पर शेष संख्यक विंशोत्तरी क्रम में सूर्यादिग्रहों की दशा होगी। वर्षारम्भकालिक भयात भभोग के द्वारा दशा का भुक्त भोग्य निकालकर जन्म की विंशोत्तरी दशा की भाँति इनका भी दशा चक्र बनाकर फल को समझना चाहिए।

हद्दाचक्र

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२
स्वामी	वृ०	शु०	बु०	मं०	वृ०.	बु०	श०	मं.	वृ०	बु०	शु०	शु.
अंश	६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४
स्वामी	शु०	बु०	शु०	शु०	शु.	शु.	बु०	शु०	शु०	वृ०	बु०	वृ०
अंश	८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३
स्वामी	बु०	वृ०	वृ०	बु०	श०	वृ०	वृ०	बु०	बु०	शु०	बु०	बु०
अंश	५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९
स्वामी	मं०	श०	मं०	वृ०	बु०	मं०	शु.	वृ०	मं.	श०	मं०	मं०
अंश	५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२
स्वामी	श.	मं०	श०	श०	मं०	श०	मं०	श०	श०	मं०	श०	श.

।।अथ द्रेष्काण चक्र।।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अंश
मं.	बु	वृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	१०
र.	मं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	वृ.	२०
शु.	श.	र.	च.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	र.	च.	मं.	३०

।।स्वगृहादिबलविभाग चक्र।।

०	स्व०	मित्र	सम	शत्रु
ग्रह	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काण	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवांश	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५

उत्तर अक्षांश २५°/१८'. अयनांश २४°/००

काशी की लग्न सारिणी

यह लग्नसारिणी इलाहाबाद, चित्रकूट, गाजीपुर, छपरा, झरिया, प्रतापगढ़, पुर्णिया, भागलपुर, मिर्जापुर, बलिया, बाँदा, बूँदी, कुदरा, जहानाबाद, पन्ना, मुंगेर, डुमराव, नालंदा, शाहाबाद, सहसराम, आदि स्थानों के लिए भी उपयोगी है।

न०	श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७		५१	५९	६	[illegible]	२१	२८	३६	४२	५१	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८
२२	०	४१	११	३३	५५	१७	३९	१	२३	४५	१५	४१	७	३३	५९	२५	५१	१७	४३	९	३५	१	२७	५३	१९	४५	११	३७	३	२९	५५
०	वृ०	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८		५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५६	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९
२६	१	२१	४७	१३	३९	५	३१	५७	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९
०	मि०	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०		४९	५९	९	१९	४०	११	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११
८	२	२७	३५	४३	५१	७	४७	१५	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११
०	क०	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११		२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५
२४	३	२५	५१	२३	४७	११	३५	५९	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३
०	सिं०	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११		६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	०	१२	२३	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३३
३०	४	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३
०	क०	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११		४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४५	५६	८
१०	५	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३
०	तु०	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११		१९	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०
१०	६	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३
०	वृ	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११		१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३
३०	७	५३	२३	५३	२३	५३	२३	५३	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४७	११
०	ध०	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११		४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१४	२४	३४	४४	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७
२४	८	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	११	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९
०	म०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०		५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८	६	१४	२३	३१	४०	४८	५७	५	१३
८	९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४१	७	३३	५९	२५	५१	१७	४३	९	३५	१	२७	५३	१९	४५	११	३७	३	२९	५५
०	कुं०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८		२२	३०	३९	४७	५६	४	१२	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१२	२०	२७	३५	४२	४९	५७	४	११	१९	२६	३३	४१	४८	५६	३
२६	१०	२१	४७	१३	३९	५	३१	५७	२३	४५	७	२९	५१	१३	३५	५७	१९	४१	३	२५	४७	९	३१	५३	१५	३७	५९	२१	४३	५	२७
०	मी०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
७		१०	१८	२५	३२	४०	४७	५५	२	९	१७	२४	३१	३९	४६	५३	१	८	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३७	४४
२२	११	४१	११	३३	५५	१७	३९	१	२३	४५	७	२९	५१	१३	३५	५७	१९	४१	३	२५	४७	९	३१	५३	१५	३७	५९	२१	४३	५	२७

लग्न स्पष्ट करने की विधि– जन्मकालिक सूर्य के राश्यंश के समान वाले कोष्ठक के घटी, पलादि में इष्टकाल के घटी-पल को जोड़ने से प्राप्त संख्या को लग्नसारिणी में देखने पर जहाँ भी उस संख्या अथवा उसके निकट की संख्या है। उसकी बाईं ओर लग्न की राशि और ऊपर लग्न के अंश होंगे। अनुपात से कला-विकला भी निकाला जा सकता है।

।। दिन-रात्रि में वर्ष-प्रवेश होने के कारण साधन की गणित-क्रिया में भिन्नता वाले सहमों की सरिणी ।।

सहमों के नाम	दिन में वर्षप्रवेश होने पर की जाने वाली सहमस्पष्ट हेतु गणित क्रिया	रात्रि में वर्षप्रवेश होने पर सहम स्पष्ट करने हेतु गणित क्रिया
पुण्य सहम	चन्द्रमा में सूर्य हीन कर शेष में लग्नयुक्त करना चाहिए।	सूर्य में चन्द्रमा हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गुरु-विद्यासहम, ज्ञानसहम	सूर्य मे चन्द्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	चन्द्र में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
यश सहम, बल सहम तथा देह सहम	वृहस्पति मे पुण्य सहम हीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	पुण्य सहम में वृहस्पति हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
मित्र सहम	गुरुसहम में पुण्यसहम हीन कर शेष में शुक्र युक्त करना चाहिए।	पुण्यसहम में गुरुसहम हीन कर शेष में शुक्र जोड़ना चाहिए।
माहात्म्य सहम, शौर्य सहम	पुण्यसहम मे मङ्गल हीन कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	मङ्गल में पुण्यसहम हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
आशा सहम	शनि में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शुक्र में शनि हीनकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गौरव सहम	गुरु में चन्द्रमा हीनकर शेष में सूर्य युक्त करना चाहिए।	गुरु में सूर्य हीनकर चन्द्रमा को शेष में युक्त करना चाहिए।
राज सहम, पिता सहम	शनि में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सूर्य में शनि हीनकर लग्न को शेष में युक्त चाहिए।
मातृ सहम, अंबुसहम, कान्ति सहम	चन्द्रमा में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शुक्र में चन्द्रमा घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
प्रसूति सहम	गुरु मे वुध हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	वुध मे गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
शत्रुसहम	मङ्गल में शनि हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि मे मङ्गल घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
उपाय सहम, ऐश्वर्य सहम, जीविका सहम	शनि में गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	गुरु मे शनि हीन कर शेष मे लग्न युक्त करना चाहिए।
दरिन्द्र सहम	पुण्यसहम मे वुध हीन कर शेष में वुध युक्त करना चाहिए।	वुध में पुण्यसहम हीनकर शेष में वुध युक्त करना चाहिए।
गुरुता सहम	सूर्योच्च (०।१०) में सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	चन्द्रोच्च (१।३) में चन्द्र हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
जलपथ सहम	कर्कार्द्ध (३।१५) में शनि को घटा कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में कर्कार्द्ध (३।१५) हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
वन्धन सहम	पुण्यसहम में शनि को घटा कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में पुण्यहम हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
अश्व सहम	पुण्यसहम मे सूर्य हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सूर्य में पुण्यसहम घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
कर्म सहम	मङ्गल में वुध हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	वुध में मङ्गल घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
सैन्य सहम	गुरु में पुण्य सहमहीन करके शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	पुण्यसहम में गुरु हीन करके शेष मे लग्न युक्त करना चाहिए।
जीवन सहम	शनि में गुरु हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	गुरु में शनि हीन कर शेष मे लग्न जोड़ना चाहिए।
क्षमा, कलह सहम	वृहस्पति मे मङ्गल घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	मङ्गल में वृहस्पति हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
शास्त्र सहम	वृहस्पति में शनि हीन कर शेष में वुध युक्त करना चाहिए।	शनि में वृहस्पति हीन कर शेष में वुध युक्त करना चाहिए।
अन्यकर्म सहम	चन्द्रमा में शनि हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	शनि में चन्द्रमा हीन कर शेष मे लग्न जोड़ना चाहिए।
कार्यसिद्धि सहम	शनि में सूर्य हीन कर शेष में सूर्यस्थ राशि का स्वामी जोड़ना चाहिए।	शनि मे चन्द्र हीन कर शेष में चन्द्रस्थ राशीश युक्त करना चाहिए।
वन्दक सहम	चन्द्रमा मे वुध घटाकर शेष मे लग्न जोड़ना चाहिए।	वुध में चन्द्र को घटा कर शेष मे लग्न युक्त करना चाहिए।
जाड्य सहम	मङ्गल में शनि हीन कर शेष में वुध युक्त करना चाहिए।	शनि मे मङ्गल हीन कर शेष मे वुध युक्त करना चाहिए।
सामर्थ्य सहम •	मङ्गल में लग्नेश घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	लग्नेश में मंगल हीन करके शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
मन्मय सहम ♓	चन्द्र में लग्नेश हीन करके शेष मे लग्न युक्त करना चाहिए।	लग्नेश में चन्द्रमा हीनकर शेष मे लग्न युक्त करना चाहिए।

• यदि मङ्गल ही लग्नेश होतो दिन या रात्रि किसी में वर्ष प्रवेश हो सर्वदा वृहस्पति में से मङ्गल (लग्नेश) घटा कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

♓ यदि चन्द्रमा ही लग्नेश हो तो दिन या रात्रि किसी भी समय वर्ष प्रवेश हो सदैव सूर्य में लग्नेश (चन्द्रमा) घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

दिन-रत्रि में साधन की समान गणित-क्रिया वाले सहमों की सारिणी

भातृ सहम	वृहस्पति में शनि हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	रोग सहम	लग्न में चन्द्रमा हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
पुत्र सहम	वृहस्पति में चन्द्रमा को घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	मृत्यु सहम	अष्टमभाव में चन्द्रमा हीन कर शेष में शनि युक्त करना चाहिए।
वन्धु सहम	वुध में चन्द्रमा को हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	देशान्तर सहम	नवमभाव में नवमेश को हीनकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
अन्यदारा सहम	सूर्य में शुक्र हीन कर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	अर्थ सहम	धनभाव में द्वितीयेश को घटा कर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
विवाह सहम	शुक्र में शनि घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	सन्तापसहम	शनि में चन्द्रमा को घटा कर शेष में षष्ठभाव जोड़ना चाहिए।
श्रद्धा सहम	शुक्र में मङ्गल को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिए।	प्रीति सहम	विद्यासहम(गुरुसहम) में पुण्यसहम घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिये।
व्यापार सहम	मङ्गल में वुध घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।	कन्या सहम	शुक्र में चन्द्रमा को घटाकर शेष में लग्न युक्त करना चाहिए।
स्त्री सहम	सप्तमेश में शुक्र को घटाकर शेष में सप्तमभाव जोड़ना चाहिए।	गज सहम	चन्द्रमा में गुरू को हीन कर शेष में आयभाव जोड़ना चाहिए।
वणिक्सहम	चन्द्रमा में वुध घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	प्रभाव सहम	शुक्र में पुण्य सहम घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।
गर्भ सहम	ज्ञानसहम (गुरूसहम) में शनि घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।	यात्रा सहम	नवमभाव में नवमेश को घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए।

विशेष— सहमों के स्पष्ट करते समय जो घटाया जाता है, उसे शोध्य तथा जिसमें घटाया जाता है उसे शुद्ध्याश्रय कहते हैं। जोड़ा जाने वाला भाव (लग्नादि) या ग्रह शोध्य और शुद्ध्याश्रय के अन्तर्गत न हो तो सहम में एक राशि युक्त करना चाहिए और यदि शोध्य (घटानेवाले) से शुद्ध्याश्रय (जिसमें घटाया गया हो) के अन्तर्गत आता हो तो एक राशि युक्त नहीं करना चाहिए।

चैत्र में अयनांश साधनार्थ गुणक

एकादि १ गुणोत्तर			दशादि १० गुणोत्तर		
१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

वर्तमान वर्ष के अयनांश में वार्षिक अयनांश गति जोड़ने से अग्रिम वर्ष के आदि का अयनांश होगा। शाके १८०० में अयनांश-२२।८।३३ था। उससे आगे या पीछे का अयनांश जानने के लिए उतने वर्ष के फल का योग-अन्तर कर लेने से अभीष्ट अयनांश होगा।

काशी में राशियों का उदयमान एवं लंकोदयमान

राशियाँ	काश्युदय (पलात्मक)	लंकोदय (पलात्मक)
मेष	२२१	२७८
वृष	२५३	२९९
मिथुन	३०४	३२३
कर्क	३४२	३२३
सिंह	३४५	२९९
कन्या	३३५	२७८
तुला	३३५	२७८
वृश्चिक	३४५	२९९
धनु	३४२	३२३
मकर	३०४	३२३
कुम्भ	२५३	२९९
मीन	२२१	२७८

पलमाशान सारिणी

१	०	१२	३४	३३	७	४७	३२
२	०	२५	९	३४	८	५	३८
३	०	३७	४४	३५	८	२४	७
४	०	५०	२१	३६	८	४३	५
५	१	३	०	३७	९	२	३५
६	१	१५	४०	३८	९	२२	३०
७	१	२८	२३	३९	९	४३	२
८	१	४१	१०	४०	१०	४	९
९	१	५४	०	४१	१०	२५	५३
१०	२	६	५०	४२	१०	४८	१८
११	२	१९	५५	४३	११	११	२४
१२	२	३३	०	४४	११	३५	१८
१३	२	४६	१२	४५	१२	०	०
१४	२	५९	२८	४६	१२	२५	३४
१५	३	१२	५४	४७	१२	५२	७
१६	३	२६	२४	४८	१३	१९	३७
१७	३	४०	५	४९	१३	४८	१७
१८	३	५३	५६	५०	१४	१८	५
१९	४	७	५५	५१	१४	४९	८
२०	४	२२	१	५२	१५	२१	३२
२१	४	३६	२२	५३	१५	५५	३
२२	४	५०	५३	५४	१६	३१	२
२३	५	५	३८	५५	१७	८	१४
२४	५	२०	३	५६	१७	४७	२८
२५	५	३५	४२	५७	१८	२८	४४
२६	५	५१	७	५८	१९	१२	१३
२७	६	६	५२	५९	१९	५८	१८
२८	६	२२	४८	६०	२०	४७	७
२९	६	३९	४	६१	२१	३८	५३
३०	६	५५	४१	६२	२२	३४	६
३१	७	१२	२८	६३	२३	३३	४
३२	७	२९	५३	६४	२४	३६	१३

पलभासाधन – बस्ती का अक्षांश २६।४८। पलभाचक्र में २६ अंश का फल=५।५१।७ तथा अग्रिम २७ अशंका फल=६।६।५२। दोनों फलोंका अन्तर=०।१५।४५।× शेष (अक्षांश का कलामान) ४८= ७२०।२१६०में ६०से भाग देने पर १२।३६। हुआ। इसफल को २६अंशवाले फल में जोड़ देने से २६।४८ अक्षांश की स्फुट पलभा ६।३।४३ हुई। इसी तरह सभी स्थानों की पलभासिद्ध हो जायेगी।

दशम सारिणी

(सर्वत्र के लिए उपयोगी)

म०	श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे०	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
९		४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	[illegible]
१६	०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	[illegible]
०	वृष	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	[illegible]
९		३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	[illegible]
५८	१	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	[illegible]
०	मि०	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	[illegible]
१०		५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	[illegible]
४६	२	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	[illegible]
०	क०	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	[illegible]
१०		१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	[illegible]	[illegible]
४६	३	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	[illegible]
०	सिं०	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	[illegible]
९		१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२५	३४	४३	[illegible]
५८	४	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	[illegible]
०	क०	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	[illegible]
९		२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४४	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	३	१२	३१	[illegible]
१६	५	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	[illegible]
०	तु०	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	[illegible]
९		४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	[illegible]
१६	६	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	[illegible]
०	वृ०	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	[illegible]
९		३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	[illegible]
५८	७	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४०	[illegible]
०	ध०	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	[illegible]
१०		५१	२	१३	२३	३४	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	[illegible]
४६	८	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	[illegible]
०	म०	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५२	५३	[illegible]
१०		१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	[illegible]
४६	९	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	[illegible]
०	कु०	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	[illegible]
९		१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२८	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	६	१५	२५	३४	४३	[illegible]
५८	१०	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	[illegible]
०	मी०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	[illegible]
९		२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४४	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५८	७	१६	२५	३५	४४	५३	३	१२	२१	[illegible]
१६	११	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	[illegible]

इस सारिणी से दशम लग्न साधन विधि– लग्न सारिणी से सूर्य के राशि-अंश से प्राप्त फल (घट्यादि) में इष्टकाल को जोड़ने पर प्राप्त घट्यादि में से १५ घटी घटा कर शेष घट्यादि फल को इस दशम सारिणी में देखें, जिस, कोष्ठक में उक्त घट्यादि अथवा उसके समीप की घट्यादि प्राप्त हो, उसकी बाईं ओर राशि और ऊपर अंश के तुल्य दशमलग्न राशि अंश होंगे। अनुपात से कला-विकला का आनयन करना चाहिए।

(१) राहुकाल वास

राहुकाल दो प्रकार का होता है।

वार	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि
दिशा	पूर्व	अग्निकोण	दक्षिण	नैर्ऋत्यकोण	पश्चिम	वायुकोण	उत्तर

१- वार (दिन) अनुसार पूर्वादि क्रम से

२- राहुकाल को (यामार्ध) भी कहते हैं।

इसमें विवाह, गृहप्रवेश, युद्ध, यात्रा का निषेध है, अन्य कार्य में नहीं।

राहुकाल जानने की विधि– वार की संख्या में ३ से गुणा कर ८ का भाग देने पर यामार्ध (राहुकाल) होता है।

जैसे रविवार - १

वार १ × ३ = ३

८) ३ (०

३ शेष में १ जोड़ने से ४ यह राहुकाल हुआ।

राहुकाल चक्र

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिशा	४	७	२	५	८	३	६

दिनमान में १६ का भाग देने पर जो लब्धि आयेगी उसको घंटा मिनट बनाकर सूर्योदय में जोड़ने पर राहुकाल का समय होगा। जिसको द्विमुहूर्त भी कहते हैं।

रविवार को ७-८। सोमवार को १३-१४ मुहूर्त। मंगलवार को ३-४ मुहूर्त। बुधवार को ९-१० मुहूर्त। गुरुवार को १५-१६ मुहूर्त। शुक्रवार को ५-६ मुहूर्त तथा शनिवार को ११-१२ मुहूर्त का राहुकाल होता है। राहुकाल– १।३० घंटा का होता है।

दिनमान– ÷१६=१ मुहूर्त होता है। २ मुहूर्त का एक राहुकाल होता है। जैसे दिनमान ३० घटी है। तो १६) ३० (१।५ २४ मिनट=४५

श्री प्रश्न द्वारा कार्यसिद्धि

अ, क, च इत्यादि वर्गों द्वारा कार्यसिद्धि, नष्ट वस्तु की प्राप्ति तथा चोर की जाति ज्ञान कोई प्रश्नकर्ता ज्योतिषी से प्रश्न करता है कि मेरा कार्य होगा कि नहीं ?

दैवज्ञ (ज्योतिषी) को चाहिए कि अपने इष्ट का ध्यान करके प्रश्नकर्ता से फल, पुष्प या देवता इत्यादि में किसी एक का नाम लें। प्रश्नकर्ता के मुख से निकला शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण करें।

जैसे- दैवज्ञ प्रश्नकर्ता से पूछे कि फल या पुष्प का नाम ले। उसने फल में अमरूद कहा। अतः प्रथम अक्षर अ हुआ। इसी प्रकार अन्य में समझें। आम कहा तो भी अ वर्ग में हुआ।

अ, इ, उ, ए, ओ यह अ वर्ग का हुआ।

क, ख, ग, घ, ङ यह क वर्ग का हुआ।

च, छ, ज, झ, ञ यह च वर्ग का हुआ।

ट, ठ, ड, ढ, ण यह ट वर्ग का हुआ।

त, थ, द, ध, न यह त वर्ग का हुआ।

प, फ, ब, भ, म यह प वर्ग का हुआ।

य, र, ल, व यह य वर्ग का हुआ।

श, ष, स, ह यह श वर्ग का हुआ।

किसी व्यक्ति ने पूछा कि मेरा कार्य होगा कि नहीं। इस व्यक्ति से फलादि में से किसी एक का नाम पूछें तथा प्रथम अक्षर ग्रहण करें तथा इसके द्वारा उत्तर दें। प्रातःकाल में फूल, मध्याह्न में फल, अपराह्न में देवता तथा सायंकाल में पहाड़ या नदी का नाम पूछें।

अ,च,त,य वर्ग हो तो कहें कार्य की सिद्धि होगी।

क,ट,प,श वर्ग हो तो कहें कि सिद्धि नहीं होगी।

इसी प्रकार लाभालाभ के प्रश्न में भी। अ इत्यादि वर्ग में लाभ तथा क इत्यादि में नहीं होगी।

चोरी गई वस्तु प्राप्त होगी या नहीं।

अ,च,त,य वर्ग में प्राप्त होगी। क, ट, प, श, में नहीं होगी।

दिशा ज्ञान

अ, क, च, ट, इत्यादि वर्ग क्रम से दिशा जाने। अ पूर्व दिशा, क अग्निकोण, च दक्षिण, ट नैर्ऋत्य कोण, त पश्चिम, प वायव्य कोण, य उत्तर तथा श वर्ग से ईशान कोण जाने। चोरी गई वस्तु उन दिशा में कहें। **जाति ज्ञान तथा स्थान से दूरी–** अ से ब्राह्मण जाति ऊसर भूमि में, क वर्ग से क्षत्रिय यज्ञशाला, भोजनालय में। च वर्ग से वैश्य जाति वन या झाड़ी में। ट वर्ग से सेवक (विश्वासी नौकर), शूद्र जाति। ट वर्ग दास-दासी आधा मील की दूरी पर खर्च करने से प्राप्त। प वर्ग मालिक के पास। य वर्ग शूद्र जाति का, नहीं प्राप्त होगा। श वर्ग वैश्यजाति सिर पर बाल कम होगा उम्र ३५-४० वर्ष।

अंक द्वारा प्रश्न- प्रश्नकर्ता से १ से १०८ के अंदर किसी एक अंक को पूछें। जो अंक प्रश्नकर्ता के मुख से निकले उसको १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल कहें। १,७,९ से कार्य में विलम्ब। ८,४,१०,५ से कार्य नहीं होगा। ३,६,११,१२ से कार्य शीघ्र होगा। तथा २ से कार्य में वृद्धि होगी।

अंकचक्र द्वारा कार्यसिद्धि

१	२	३
६	५	४
७	८	९

प्रश्नकर्ता से कहें अपने इष्ट को ध्यान करके कोष्ठक में अँगुली रखें। अँगुली रखने पर कोष्ठक में जो अंक प्राप्त होगा, उसके द्वारा कार्य की सिद्धि जानें। इसका फल—२, ८ पर कार्य नहीं होगा।

४, ६, कार्य में द्विविधा है, अर्थात् होगा-नहीं भी।

३, ७ पर कार्य विलम्ब से होगा।

१, ५, ९ पर अँगुली पड़े तो कार्य शीघ्र होगा ऐसा दैवज्ञ कहें।

काल होरा मुहूर्त चक्र

घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
घ.प.	२।३०	५	७।३०	१०	१२।३०	१५	१७।३०	२०	२२।३०	२५	२७।३०	३०
रवि	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
सोम	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
मंगल	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
बुध	बुध	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	श.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.
गुरु	गुरु	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
शुक्र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
शनि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.

घंटा	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
घ.प.	३२।३०	३५	३७।३०	४०	४२।३०	४५	४७।३०	५०	५२।३०	५५	५७।३०	६०
रवि	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
सोम	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंगल	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बुध	सू.	श.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	श.	बु.	चं.	श.
गुरु	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शुक्र	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
शनि	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

काल होरा का प्रयोजन– निषेध दिन (वार) में कार्य करना हो तो काल होरा में कार्य किया जा सकता है। शुभवार के होरा में शुभ कार्य होता है। विशेषकर दिग्शूल में निषेधवार में यात्रा कालहोरा में की जा सकती है। पूर्व दिशा सोम तथा शनिवार को दिग्शूल है। अन्य वार में यात्रा हो सकती है। आगे इसी प्रकार अन्य वार तथा दिशा में यात्रा होगी।

काल होरा निकालने की विधि– इष्ट घटी को २ से गुणा कर ५ से भाग देने पर जो शेष बचे, उसे द्विगुणित इष्ट में घटाकर १ जोड़ कर सात से भाग देने पर जो शेष बचे वही क्रम से वार होगा। जैसे- १ रविवार २ सोमवार इसी क्रम में आगे समझें।

जैसे–४ घटी पर वार जानना है। ४×२=८। ५) ८ (१ = ८-३=५ + १=६। ७) ६ (० शुक्रवार –२ होरा।

(भाग की शेष संख्याएँ: ३ ; ६ शेष।)

दूसरी विधि– जिस दिन का होरा जानना है। १ घंटा पहले वही दिन होगा। जैसे- रविवार को प्रथम रविवार दूसरा, छठवाँ दिन शुक्रवार होगा। इसी प्रकार आगे समझें।

प्रसूती लग्न फल

मेष–जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व अथवा पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या ३, प्रसव में माता को अधिक कष्ट, पैर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ। बालक जन्म के बाद तेज शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन था ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक को कष्ट होवे। इन वर्षों के आरम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीये।

वृष–माता का शिर दक्षिण में, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आयीं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण अधोमुख, पैर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।१८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक को कष्ट। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीये।

मिथुन–माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा अथवा जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही तेज शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त विचित्र अल्प भोजन किया। दूध कम उतरे। ४।१०।१३।३८।४८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इससे बचे तो १०० वर्ष जीये। कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ समय तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करवाना कल्याणप्रद रहेगा।

कर्क–माता का शिर उत्तर में, उपसूतिका ४ या ५ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, वाम भाग में चिन्ह, पैर के बल जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मधुर एवं शीतल भोजन किया था। दीपक उठाया गया। बालक के वामांग में लहसन का चिन्ह, बालक जन्म के बाद देर से रोया। ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवित रहे। कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ-समय में तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करवाना कल्याणप्रद होगा।

सिंह–माता का शिर पश्चिम या पूर्व में, मलिन सा लाल वस्त्र, शुष्क-कसैला या खट्टा भोजन किया था। जन्म समय स्त्री ३ बाद में १ आई। दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही रोया। दक्षिण भाग में प्रसव स्थान ५।१२।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मंत्र का जप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या– माता का शिर दक्षिण में, लाल जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न, बासी भोजन या दही आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५। दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मते ही अल्प रोया। नैर्ऋत्य कोण में प्रसव स्थान। ४।१५।२३।३५।४५ इन वर्षों में गोदान, मृत्युञ्जय जपादि और मूँग के लड्डू भोजन कराना श्रेयस्कर है। यदि इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवित रहे।

तुला–माता का शिर पश्चिम या पूर्व में श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जला या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या कहीं एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया। बालक जन्मसमय कुछ रुक कर तेज स्वर करके रोया। घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान। ८।१५।३६।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप करना श्रेष्ठ है।

यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीये।

वृश्चिक–माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, रक्त या सफेद वस्त्र, अधिक अमधुर क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। घर के पश्चिमी भाग में प्रसव स्थान, ११।२८।५८।६१ इन कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीये।

धनु–माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पकवान भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान १।१०।१८।२१।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७१ वर्ष जीये।

मकर–माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय १ स्त्री पीछे आई। दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में रुद्राभिषेक, स्वर्णदान, अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीये।

कुम्भ–माता का शिर पश्चिम में, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या मलिन वस्त्र-मधुर शीत शाकादि भोजन, कष्ट अधिक, जन्म के समय पास में स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई इनमें से एक भी गर्भिणी थी। दीपक स्थानान्तर में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर तेज शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीये।

मीन– माता का सिर उत्तर, श्वेत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण में सूतिका स्थान २।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन, मृतसंजीवनी मंत्र का जप करना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवित रहे।

ध्यान रहे कि अधिकांश जिस लग्न में लक्षण मिलें वही बालक का जन्मलग्न मानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

राशियों का वर्ण–मेष लाल, वृष सफेद, मिथुन हरा, कर्क पाटल (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल), सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर धूम्र, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण- सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरु पीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते हैं।

राशियों की दिशा–मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष, कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर दिशा के स्वामी होते हैं।

ग्रह दिशा–सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैर्ऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान के स्वामी हैं। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि में और उच्च में रहता है एवं शुभ ग्रह और मित्र के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है तथा जो ग्रह शत्रु के गृह में, नीच ग्रह से, पाप ग्रह से अथवा शत्रु से युक्त होता है वह दुर्बल माना जाता है। जो राशि अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रह युक्त राशि दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छठे, आठवें और बारहवें भाग में पड़े अथवा षष्टाष्टक, द्वादशांश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

विक्रम संवत् २०८२, सन् २०२५-२६ के व्रत-पर्व-त्यौहार

सन् २०२५ ई०

ता. वार — विवरण

मार्च व्रत-त्यौहार

३०.रवि-वासंतीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, हिन्दू नववर्ष आरम्भ, वि.सं.२०८२, बैठकी, गुड़ी-पड़वा, उगादि द.भा., चैती चाँद, चन्द्रदर्शन।

३१.सोम-सिन्धौरा दूज, रेवती के सूर्य सायं ४:८, मु. सव्वाल हि.१४४६, ईदउल फितर (ईद)।

मार्च जयन्ती

३०.रवि-शैलपुत्री देवी दर्शन, सिन्धी नववर्ष दिवस, गौतम ऋषी जयंती, श्रीकुंजबिहारी मेला टिहरी, सुरकण्डा देवी मेला-उ.काशी, झूलेलाल जयंती।

३१.सोम-ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन, मत्स्यावतार।

अप्रैल व्रत-त्यौहार

१.मंगल-सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत, गणगौरी व्रत-राजस्थान, वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रीगणेश दमनकोत्सव, सरहुल-बिहार।

२.बुध-श्रीरामराज्य महोत्सव, श्रीलक्ष्मी पंचमी।

३.गुरु-स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत-बिहार।

४.शुक्र-अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ रात १:२१ से।

५.शनि-दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा रा.१२:५ तक, अशोकाष्टमी-बंगाल।

६.रवि-महानवमी व्रत, दुर्गानवमी, श्रीरामनवमी व्रत।

७.सोम-नवरात्र व्रत पारण, जवारे विसर्जन।

८.मंगल-कामदा एकादशी व्रत-सबका।

९.बुध-मदन द्वादशी, वामन द्वादशी।

१०.गुरु-प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी-जैन ।

१२.शनि-स्नान-दान-व्रत की चैत्र पूर्णिमा।

१३.रवि-वैशाख-स्नान-दान आरम्भ, अश्विनी-मेष संक्रांति रा.शे.५:२९।

१४.सोम-मेष-सतुआ संक्रांति पुण्य काल, खरमास समाप्त, बंगला नववर्ष वैशाख सं.१४३२ आरम्भ, वैशाखी पर्व, चण्डक पूजा।

१६.बुध-सं.गणेश चतुर्थी व्रत च.उ.रा.९:२८।

२०.रवि-भानु सप्तमी पर्व।

२१.सोम-शीतलाष्टमी व्रत।

२४.गुरु-वरूथिनी एकादशी व्रत-सबका।

२५.शुक्र-प्रदोष व्रत।

२६.शनि-मास शिवरात्रि, शिव चतुर्दशी व्रत।

ता. वार — विवरण

२७.रवि-स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या, भरणी के सूर्य रात ९:४५।

२९. मंगल-चन्द्रदर्शन।

३०.बुध-अक्षय तृतीया व्रत, मु.जिल्काद हि.१४४६।

अप्रैल जयन्ती

१.मंगल-मूर्ख दिवस, चित्रघंटा देवी दर्शन।

२.बुध-कुष्माण्डा देवी दर्शन, स्कन्द माता देवी दर्शन।

३.गुरु-कात्यायनी देवी दर्शन।

४.शुक्र-कालरात्रि देवी दर्शन।

५.शनि-महागौरी देवी दर्शन, मेला-बहुकोर्ट-ज.क., मेला-मनसा देवी-हरिद्वार।

६.रवि-सिद्धिदात्री देवी दर्शन, अयोध्या परिक्रमा, श्रीरामचरित मानस जयंती, स्वामी नारायण जयंती, साई बाबा उत्सव प्रारम्भ, श्रीराज-राजेश्वरी मेला-तालतोली-गुप्तकाशी।

८.मंगल-विश्व बंजारा दिवस।

१०.गुरु-महावीर जयंती-जैन।

१२.शनि-हनुमान प्राकट्योत्सव, अग्रोहा मेला, धरती पूजा, खद्दी पर्व-छत्तीसगढ़, मेला-सालासर बालाजी महाराज।

१४.सोम-अम्बेडकर जयंती।

१७.गुरु-सती अनसूईया जयंती।

१८.शुक्र-गुड फ्राइडे, गुरु तेग बहादुर जयंती।

१९.शनि-इस्टर सटरडे, गुरु अर्जुनदेव जयंती।

२०.रवि-इस्टर सण्डे।

२३.बुध-बाबू कुँवर सिंह जयंती-बिहार।

२४.गुरु-श्रीवल्लभाचार्य जयंती।

२५.शुक्र-विश्व मलेरिया दिवस।

२८.सोम-देव दामोदर तिथि-असम, महर्षि पराशर जयंती।

२९.मंगल-परशुराम जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती-तिथि मत।

३०.बुध-चन्दन यात्रा, चार धाम यात्रा।

मई व्रत-त्यौहार

१.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।

३.शनि-स्कन्द षष्ठी व्रत, चन्दन षष्ठी-बंगाल, गंगा सप्तमी, कमला सप्तमी।

४.रवि-भानुसप्तमी पर्व।

६.मंगल-सीता नवमी व्रत।

८.गुरु-मोहिनी एकादशी व्रत-सबका।

ता. वार — विवरण

९.शुक्र-प्रदोष व्रत, रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी।

११.रवि-श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत,कृत्तिका के सूर्य सा.४:४३।

१२.सोम-स्नान-दान-व्रत की वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गन्धेश्वरी पूजा-बंगाल, वैशाख व्रत-नियम समाप्त।

१३.मंगल-ज्येष्ठ-बड़का मंगल।

१४.बुध-वृष संक्रांति रात ३:५२।

१६.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रा.१०:६।

२०.मंगल-श्रीशीतलाष्टमी व्रत, त्रिलोचनाष्टमी-बं., ज्येष्ठ-बड़का मंगल।

२३.शुक्र-अचला एकादशी व्रत-सबका, भद्रकाली ग्यारस-पंजाब, जलक्रीड़ा एकादशी-उड़ीसा।

२४.शनि-शनि प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ-उ.भा., रोहिणी के सूर्य दिन २:६।

२५.रवि-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।

२६.सोम-श्राद्ध की अमावस्या, वटसावित्री व्रत-उ.भा., सावित्री अमावस्या-उड़ीसा।

२७.मंगल-स्नान-दान की भौमवती अमावस्या, भउका अमावस्या, ज्येष्ठ-बड़का मंगल।

२८.बुध-करवीर व्रत, चन्द्रदर्शन।

२९.गुरु-रम्भा तीज व्रत, मु.म. जिलहिज हि.१४४६।

३०.शुक्र-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, उमा चतुर्थी-बं.।

मई-जयन्ती

१.गुरु-श्रमिक दिवस, महाराष्ट्र-गुजरात स्थापना दिवस।

२.शुक्र-आद्य शंकराचार्य जयंती, संत सूरदास जयंती।

३.शनि-श्रीरामानुजाचार्य जयंती, प्रेस स्वतंत्रता दिवस।

५.सोम-बगलामुखी देवी प्राकट्योत्सव।

६.मंगल-श्रीजानकीजी प्राकट्योत्सव (वैष्णव मतानुसार)।

७.बुध-रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।

८.गुरु-विश्व रेडक्रास दिवस।

११.रवि-श्रीनृसिंह प्राकट्योत्सव, छिन्नमस्ता देवी प्राकट्योत्सव, मातृ-दिवस (मदर्स-डे)।

१२.सोम-बुद्ध जयंती, पुष्करा देवी प्राकट्योत्सव, कूर्म प्राकट्योत्सव, अग्रोहा मेला, अवार माता मेला।

ता. वार — विवरण

१४.बुध-देवर्षि नारद जयंती।

२७.मंगल-शनिदेव प्राकट्योत्सव।

२९.गुरु-महाराणा प्रताप जयंती।

३०.शुक्र-गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस।

३१.शनि-धूम्रपान निषेध दिवस।

जून व्रत-त्यौहार

१.रवि-श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत, अरण्य षष्ठी, शीतला षष्ठी-उड़ीसा, जमाई षष्ठी-बंगाल।

३.मंगल-ज्येष्ठ-बड़का मंगल।

५.गुरु-गंगा दशहरा, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस।

६.शुक्र-भीमसेनी-निर्जला एकादशी व्रत-स्मार्त।

७.शनि-निर्जला एकादशी व्रत-वैष्णव।

८.रवि-प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ-द.भा. मृगशिरा के सूर्य दि.१:२५।

१०.मंगल-व्रत की पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत-द.भा., ज्येष्ठ-बड़का मंगल।

११.बुध-स्नान-दान की पूर्णिमा, जलयात्रा, गुरु अस्त पश्चिम में सायं ६:५४।

१४.शनि-सं.गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय रात ९:३७।

१५.रवि-मिथुन सं. दिन १:३९, राजस संक्रान्ति।

१९.गुरु-शीतलाष्टमी व्रत, इन्द्राणी पूजा, त्रिलोचन पूजा।

२१.शनि-योगिनी एकादशी व्रत-स्मार्त।

२२.रवि-योगिनी एकादशी व्रत-वैष्णव, आर्द्रा के सूर्य दिन २:१२।

२३.सोम-सोमप्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।

२५.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।

२६.गुरु-गुप्त नवरात्रारम्भ, मनोरथ द्वितीया-बंगाल, चन्द्रदर्शन।

२७.शुक्र-रथयात्रा, मु.नववर्ष मुहर्रम हि.१४४७ शुरू।

२९-रवि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।

जून जयन्ती

१.रवि-बाल सुरक्षा दिवस।

३.मंगल-धूमावती देवी प्राकट्योत्सव, मेला क्षीर भवानी-क.।

५.गुरु-श्रीबटुकभैरव प्राकट्योत्सव, विश्व पर्यावरण दिवस।

६.शुक्र-रुक्मिणी विवाह-उड़ीसा, गायत्री माता प्राकट्योत्सव, मेला-खाटू श्यामजी-राजस्थान,

ता. वार — विवरण

काशी विश्वेश्वर कलश यात्रा।

७.शनि-मु. बकरीद (ईद-उल-अजहा)।

११.बुध-संत कबीरदास जयंती।

१२.गुरु- गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती।

१४.शनि-रक्तदान दिवस।

१५.रवि-पिता दिवस।

२१.शनि-देवराहा बाबा पु.ति.,अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस।

२२.रवि-अम्बुवाची पर्व-श्रीकामाख्या देवी महोत्सव ३ दिनात्मक प्रारम्भ-असम।

२६.गुरु-नशा निरोधक दिवस।

२७.शुक्र-श्रीराम-बलराम रथोत्सव, मधुमेह दिवस (डायबीटिज-डे)।

जुलाई व्रत-त्यौहार

१.मंगल-स्कन्द-षष्ठी व्रत, कुमार षठी व्रत।

३.गुरु-परशुरामाष्टमी-उड़ीसा, खर्ची पूजा-त्रिपुरा।

४.शुक्र-गुप्त नवरात्र समाप्त।

५.शनि-गिरिजा पूजा, पुनर्यात्रा-उल्टा रथ।

६.रवि-हरिशयनी एकादशी व्रत-सबका, रवि नारायण एकादशी-उड़ीसा, पुनर्वसु के सूर्य दि.३:४७।

७.सोम- वामन द्वादशी, श्रीकृष्ण द्वादशी, चातुर्मास आरम्भ, गुरु उदय पूर्व में दिन ३:३।

८.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।

९.बुध-चौमासी चौदस-जैन।

१०.गुरु-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा।

११.शुक्र-पार्थिव पूजन व काशी विश्वनाथ दर्शन पूजन आरम्भ, मैथिल नववर्ष आरम्भ।

१२.शनि-अशून्य शयन व्रत।

१४.सोम-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा. ९:२९, श्रावण सोमवार व्रत।

१५.मंगल-नागपंचमी-बंगाल, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।

१६.बुध-कर्क संक्रांति रा.शे.४:५५।

१७.गुरु-शीतला सप्तमी-उड़ीसा।

१८.शुक्र-शीतलाष्टमी व्रत।

२०.रवि-पुष्य के सूर्य सायं ५:१३।

२१.सोम-कामदा एकादशी व्रत-सबका, श्रावण सोमवार व्रत।

ता. वार — विवरण

२२.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।

२३.बुध-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत।

२४.गुरु-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, हरियाली अमावस।

२६.शनि-चन्द्रदर्शन।

२७.रवि-हरियाली तीज व्रत, मधुश्रवा तीज व्रत, स्वर्ण गौरी व्रत, मु.सफर हिजरी १४४७।

२८.सोम-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्वा-गणपति व्रत, श्रावण सोमवार व्रत।

२९.मंगल-नाग पंचमी, तक्षक पूजा, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।

३०.बुध-लुण्ठन षष्ठी-बंगाल।

जुलाई जयन्ती

१.मंगल-डॉक्टर्स-डे।

४.शुक्र-मेला शरीक भगवती-कश्मीर।

६.रवि-मुहर्रम (ताजिया)।

८.मंगल-मेला ज्वालामुखी देवी कश्मीर।

१०.गुरु-श्री साईं बाबा उत्सव-शिरडी, ओशो पूर्णिमा।

११.शुक्र-विश्व जनसंख्या दिवस।

२३.बुध-बाल गंगाधर जयंती।

२६.शनि-धर्मसम्राट् स्वामी करपात्रीजी जयंती।

२७.रवि-ठकुराईन जयंती।

३०.बुध-कल्कि अवतार।

३१.गुरु-गो.तुलसीदास जयंती, मुन्शी प्रेमचन्द जयंती।

अगस्त व्रत-त्यौहार

३.रवि-श्लेषा के सूर्य सायं ५:३४।

४.सोम-श्रावण सोमवार व्रत।

५.मंगल-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।

६.बुध-प्रदोष व्रत, दामोदर द्वादशी।

७.गुरु-आखेटक त्रयोदशी-उड़ीसा।

८.शुक्र-व्रत की पूर्णिमा, नारोली पूर्णिमा।

९.शनि-स्नान-दान की पूर्णिमा, रक्षाबंधन. श्रावणी उपाकर्म।

१०.रवि-अशून्य शयन व्रत।

११.सोम-रतजग्गा, कजलियाँ-मध्य प्रदेश।

१२.मंगल-संकष्टी बहुला गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा. ८:३७, कजली तीज व्रत, सतुआ तीज, तिजड़ी-सिन्धी।

ता. वार — विवरण

१३.बुध-रक्षा पंचमी-उड़ीसा, कोकिला पंचमी, भातृभगिनी पंचमी।

१४.गुरु-हलषष्ठी-ललही छठ व्रत, श्रीचन्द षष्ठी।

१५.शुक्र-शीतला सप्तमी पूजा।

१६.शनि-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत-सबका, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)।

१७.रवि-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (रोहिणी मत), मनसा पूजा समापन-बं., गुग्गा नवमी, मघा-सिंह संक्रांति सा.४:२२।

१९.मंगल-जया एकादशी व्रत-सबका।

२०.बुध-प्रदोष व्रत।

२१.गुरु-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत, अघोर चतुर्दशी।

२२.शुक्र-श्राद्ध की अमावस्या, पिठौरी अमावस।

२३.शनि-स्नान-दान की अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या।

२४.रवि-चन्द्रदर्शन।

२५.सोम-मु.रविउल अव्वल हि.१४४७।

२६.मंगल-हरितालिका तीज व्रत, ढेला चौथ-चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात ८:६)।

२७.बुध-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारंभ।

२८.गुरु-ऋषि पंचमी व्रत, अरुन्धती-सहित सप्तऋषि पूजन, रक्षा पंचमी-बंगाल।

२९.शुक्र-सूर्य षष्ठी व्रत, लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व, भदैनी-वाराणसी।

३०.शनि-मुक्ताभरण संतान सप्तमी व्रत, अपराजिता सप्तमी।

३१.रवि-महालक्ष्मी व्रतारम्भ च.उ.रा.१०:२१, सोरहिया मेला-१६ दिन प्रारम्भ। महारविवार व्रत, राधाष्टमी व्रत, दुर्गाष्टमी व्रत, पू.फा. के सूर्य दि.१:२।

अगस्त जयन्ती

१.शुक्र-मेला-नैनादेवी-चिन्तापूर्णी देवी-हि.प्र., लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि।

३.रवि-मैथिलीशरण गुप्त जयंती।

४.सोम-झूलन यात्रा आरम्भ।

८.शुक्र-हयग्रीव प्राकट्योत्सव, झूलन यात्रा समाप्त।

९.शनि-युवक दिवस, संस्कृत दिवस, अमरनाथ यात्रा।

११.सोम-विध्यांचल-भीमचण्डी देवी प्राकट्योत्सव, विशालाक्षी देवी यात्रा।

ता. वार — विवरण

१४.गुरु-मु.पर्व चेहल्लुम, माधवदेव तिथि-असम।

१५.शुक्र-स्वतन्त्रता दिवस।

१९.मंगल-विश्व छायाकंन दिवस।

२०.बुध-सद्भावना दिवस, विश्व मच्छर दिवस, मु.पर्व आखिरी चहार शम्बा।

२३.शनि-मु.शहादते इमाम हसन।

२५.सोम-वाराह प्राकट्योत्सव, शंकर देव तिथि-असम।

२८.गुरु-मेला पाट प्रात: ३ दिन।

३०.शनि-भारतेन्दु जयन्ती।

सितम्बर व्रत-त्यौहार

१.सोम-महानन्दा नवमी।

२.मंगल-दशावतार व्रत।

३.बुध-पद्मा-कर्मा एकादशी व्रत-सबका, डोल ग्यारस, जलझूलनी एकादशी-राजस्थान।

४.गुरु-वामन द्वादशी व्रत, श्रवण द्वादशी।

५.शुक्र-प्रदोष व्रत।

६.शनि-अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणपति विसर्जन।

७.रवि-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, उमा महेश्वर व्रत, लोकपाल पूजा, नान्दी मातामह श्राद्ध, खग्रास-चन्द्रग्रहण।

८.सोम-फसली नववर्षारम्भ असौज सन् १४३३ प्रारम्भ, महालया-पितृपक्ष आरम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध।

९.मंगल-अशून्यशयन व्रत, द्वितीया श्राद्ध।

१०.बुध-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ७:४७, तृतीया श्राद्ध।

११.गुरु-चतुर्थी श्राद्ध।

१२.शुक्र-भरणी श्राद्ध, पंचमी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी श्राद्ध।

१३.शनि-सप्तमी श्राद्ध।

१४.रवि-जीवित्पुत्रिका-जीउतिया व्रत, महालक्ष्मी व्रत चं.उ.रा.११:४ अष्टमी श्राद्ध, अष्टका श्राद्ध, उ.फा. के सूर्य प्रा.७:१३।

१५.सोम-मातृनवमी, मातामह श्राद्ध, नवमी श्राद्ध, जीउतिया व्रत पारण।

१६.मंगल-दशमी श्राद्ध।

१७.बुध-इन्दिरा एकादशी व्रत-सवका, एकादशी श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा, कन्या संक्रांति सायं ५:१९।

१८.गुरु-यती-संन्यासी श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध।

१९.शुक्र-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, मघा श्राद्ध, त्रयोदशी श्राद्ध।

ता. वार — विवरण

२०.शनि-चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रादि से मृतक का श्राद्ध।
२१.रवि-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, पितृ-विसर्जन, महालया समाप्त।
२२.सोम-शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलश स्थापन, दौहित्र द्वारा मातामह श्राद्ध।
२३.मंगल-चन्द्रदर्शन।
२४.बुध-मु.म. रवि उस्सानी हि.१४४७।
२५.गुरु-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, मान चतुर्थी।
२६.शुक्र-उपांग ललिता व्रत।
२७.शनि-हस्त के सूर्य रात १०:३६।
२८.रवि-बिल्व आमन्त्रण।
२९.सोम-महानिशा पूजा, सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा दि.१२:२५ से।
३०.मंगल-महाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत, सरस्वती पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन १:४४ तक।

सितम्बर जयन्ती

१.सोम-श्री चन्द्र जयन्ती।
४.गुरु-श्रीवामन प्राकट्योत्सव।
५.शुक्र-शिक्षक दिवस, डॉ.राधाकृष्णन् जयन्ती, मदर टेरेसा पुण्य तिथि, मु.पर्व बारावफात।
८.सोम-विश्व साक्षरता दिवस।
१०.बुध-मु.पर्व ईदे मिलाद।
११.गुरु-सन्त विनोब्बा भावे जयंती।
१४.रवि-हिन्दी दिवस।
१५.सोम-इन्जीनियर्स-डे।
१७.बुध-विश्वकर्माजी प्राकट्योत्सव।
२२.सोम-श्रीशैलपुत्री देवी दर्शन,महाराज अग्रसेन जयंती।
२३.मंगल-श्रीब्रह्मचारिणी देवी दर्शन।
२४.बुध-श्रीचित्रघण्टा देवी दर्शन।
२५.गुरु-श्रीकूष्माण्डा (दुर्गा) देवी दर्शन।
२७.शनि-श्रीस्कन्दमाता देवी दर्शन।
२८.रवि-श्रीकात्यायनी देवी दर्शन।
२९.सोम-श्रीकालरात्रि देवी दर्शन, विश्व हृदय दिवस।
३०.मंगल-महाष्टमी, महानवमी, श्रीमहागौरी देवी दर्शन, बैंक अर्धवार्षिक लेखा बन्दी।

अक्टूबर व्रत-त्यौहार

१.बुध-नवरात्र हवन, कन्या पूजन, विजया-दशमी, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, शमीपूजन, शस्त्रपूजा, अष्टमी व्रत पारण।
२.गुरु-विजयादशमी, दुर्गा मूर्ति विसर्जन, नवरात्र व्रत पारण।

ता. वार — विवरण

३.शुक्र-पापांकुशा एकादशी व्रत-सबका।
४.शनि-शनि प्रदोष व्रत, पद्मनाभ द्वादशी व्रत।
६.सोम-व्रत की पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, शरद पूर्णिमा।
७.मंगल-स्नान-दान की पूर्णिमा।
८.बुध-कार्तिक मास का यम-नियम-व्रतारंभ, अशून्यशयन व्रत।
१०.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत चं.उ. रात ७:५८ पर, ललिता चतुर्थी, दशरथ चतुर्थी-बंगाल।
११.शनि-चित्रा के सूर्य दिन ११:८।
१३.सोम-अहोई अष्टमी व्रत चन्द्रोदय रात ११:५।
१४.मंगल- राधाष्टमी व्रत, राधा कुण्ड स्नान पर्व, कराष्टमी-महाराष्ट्र।
१७.शुक्र-रम्भा एकादशी व्रत-सबका, गोवत्स द्वादशी, तुला संक्रांति रात ४:१५।
१८.शनि-शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस।
१९.रवि-नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, हनुमज्जन्म सायं।
२०.-सोम-दीपावली, गणेश-लक्ष्मी-महाकाली पूजा, प्रातः हनुमद् दर्शन।
२१.मंगल-स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या।
२२.बुध-अन्नकूट, गोवर्धन पूजा काशी से अन्यत्र, बलिपूजा, नेपाली नववर्ष संवत् ११४६ आरम्भ।
२३.गुरु- गोवर्धन पूजा काशी में, भैयादूज, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, दावात पूजा, चन्द्रदर्शन।
२४.शुक्र-मु.म.जमादि उल अव्वल हि.१४४७, स्वाती के सूर्य रात ७:४६ ।
२५.शनि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत ३ दिन प्रारम्भ।
२६.रवि-ज्ञान पंचमी जैन।
२७.सोम-सूर्यषष्ठी (डालाछठ) व्रत सायं अर्घ्य।
२८.मंगल-डाला छठ प्रातः अर्घ्य, व्रत का पारण।
२९.बुध-गोपाष्टमी, गो पूजन, बुधाष्टमी।
३०.गुरु-अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आँवला नवमी, दुर्गा नवमी, जगद्धात्री पूजा-बंगाल।

अक्टूबर जयन्ती

१.बुध-श्री सिद्धिदात्री देवी दर्शन, बौद्धावतार।
२.गुरु-गाँधी-शास्त्री जयंती, अहिंसा दिवस, साईं बाबा पुण्यतिथि, माधवाचार्य जयंती।
३.शुक्र-भरतमिलाप-नाटी इमली, वाराणसी।
४.शनि-मु.पर्व ग्यारहवीं शरीफ।

ता. वार — विवरण

७.मंगल-महर्षि वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयंती।
८.बुध-वायु सेना दिवस।
९.गुरु-विश्व दृष्टि दिवस, उर्स हजरत निजामुद्दीन औलिया-दिल्ली।
१०.शुक्र-नक्कटैया चेतगंज, वाराणसी, राष्ट्रीय डाक दिवस, चरखा जयन्ती।
१४.मंगल-श्री राधा प्राकट्योत्सव।
१९.रवि-धन्वन्तरी प्राकट्योत्सव, श्रीकामेश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, श्रीहनुमान प्राकट्योत्सव, मु.शबे मिराज।
२१.मंगल-महावीर निर्वाण दिवस, पुलिस स्मृति दिवस।
२४.शुक्र-विश्वामित्र जयंती।
३०.गुरु-अयोध्या-मथुरा परिक्रमा।
३१.शुक्र-सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती, एकता दिवस।

नवम्बर व्रत त्यौहार

१.शनि-हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत-सबका, भीष्म पंचक प्रारम्भ।
२.रवि-तुलसी विवाह, चातुर्मास व्रत समाप्त।
३.सोम-सोमप्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत।
४.मंगल-श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस-जैन।
५.बुध-स्नान-दान की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, रास पूर्णिमा, त्रिपुरोत्सव, देव दीपावली, श्रीकार्तिकेय दर्शन, भीष्मपंचक समाप्त।
६.गुरु-विशाखा के सूर्य रात ३:५५।
८.शनि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ७:४५।
१०.सोम-श्रीअन्नपूर्णा देवी व्रतारम्भ १६ दिनात्मक, श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन।
१२.बुध-भैरव अष्टमी व्रत, अष्टभैरव दर्शन, कालाष्टमी।
१५.शनि-उत्पन्ना एकादशी व्रत।
१६.रवि-वृश्चिक संक्रांति रात १:४७।
१७.सोम-सोम प्रदोष व्रत।
१८.मंगल-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१९.बुध-श्राद्ध की अमावस्या।
२०.गुरु-स्नान-दान की अमावस्या, रुद्र व्रत पीड़िया (प्रदोष काल), अनुराधा के सूर्य दिन ८:५०।
२१.शुक्र-चन्द्रदर्शन।

ता. वार — विवरण

२२.शनि-मु.म. जमादि उस्सानी हि.१४४७।
२४-सोम-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
२५.मंगल-द्वितीय नागपंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव।
२६.बुध-स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी-महाराष्ट्र, मूलकरूपिणी षष्ठी व्रत, गुहषष्ठी।
२७.गुरु-मित्र (सूर्य) सप्तमी व्रत।
२९.शनि-महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी।

नवम्बर जयन्ती

२. रवि-कालीदास जयन्ती।
५.बुध-गुरुनानक जयंती, पुष्कर मेला-अजमेर, हरिहर क्षेत्र मेला-सोनपुर, गढ़ मुक्तेश्वर-पुष्कर मेला, महावीर-रथोत्सव जैन, भृगु आश्रम मेला ददरी-बलिया।
१०.सोम-लोटा भंटा मेला-रामेश्वर-वाराणसी।
१२.बुध-कालभैरव प्राकट्योत्सव।
१४.शुक्र-बाल दिवस, पण्डित जवाहर लाल नेहरू जयन्ती।
२४.सोम-गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस।

दिसम्बर व्रत त्यौहार

१.सोम-मोक्षदा एकादशी व्रत-सबका, मौनी एकादशी-जैन।
२.मंगल-भौमप्रदोष व्रत, मत्स्य द्वादशी व्रत।
३.बुध-पिशाचमोचन श्राद्ध, कपर्दीश्वर महादेव दर्शन, ज्येष्ठा के सूर्य दिन १२:१।
४.गुरु-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा।
८.सोम-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात ८:४८।
१२.शुक्र-कालाष्टमी, शुक्रास्त पश्चिम में रात १२:७।
१४.रवि-पौष दशमी-जैन।
१५.सोम-सफला एकादशी व्रत सबका।
१६.मंगल-मूल-धनु संक्रांति दि.१:५०, खरमास प्रारम्भ।
१७.बुध-प्रदोष व्रत।
१८.गुरु-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१९.शुक्र-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, बकुल अमावस्या (उड़ीसा), कपिल धारा तीर्थ श्राद्ध।
२१.रवि-चन्द्रदर्शन।
२२.सोम-मु. रज्जब हि. १४४७।
२३.मंगल-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
२५.गुरु-बड़ा दिन (क्रिसमस डे)।
२६.शुक्र-अन्नरूपा षष्ठी-बंगाल।

ता. वार — विवरण

२९.सोम-शाम्ब दशमी-उड़ीसा, पू.षा. के सूर्य दिन ११:४१।
३०.मंगल-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, वैकुण्ठ एकादशी-द.भा.।
३१.बुध-कूर्म द्वादशी।

दिसम्बर जयन्ती

१.सोम-गीता जयंती, विश्व एड्स दिवस।
३.बुध-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, किसान दिवस, भोपाल गैस त्रासदी दिवस।
४.गुरु-श्रीदत्तात्रेय प्राकट्योत्सव, अन्तर्गृही यात्रा काशी, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी देवी प्राकट्योत्सव, नौसेना दिवस।
६.शनि-डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्य तिथि।
७.रवि-झण्डा दिवस।
१०.बुध-मानवाधिकार दिवस।
१४.रवि-ऊर्जा बचत दिवस।
१५.सोम-पार्श्वनाथ जयंती।
२५.गुरु-ईसा मसीह जयंती, पं. मदनमोहन मालवीय जयंती (अं.मत)।
२६.शुक्र-जोर मेला पंजाब ३ दिन।
२७.शनि-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्रा.मत)।
२८.रवि-जोर मेला समाप्त।
३०.मंगल-तैलंग स्वामी जयंती।
३१.बुध-नववर्ष की पूर्व सन्ध्या।

सन् २०२६ ई.

जनवरी-व्रत त्यौहार

१.गुरु-ईसाई नववर्ष आरम्भ, प्रदोष व्रत।
२.शुक्र-व्रत की पूर्णिमा।
३.शनि-स्नान दान की पूर्णिमा।
४.रवि-माघ मास का व्रत-यम-नियम प्रारंभ, प्रयाग मेला प्रारम्भ।
६.मंगल-अंगारकी संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात ८:३५।
११.रवि-उ.षा. के सूर्य दिन ३:२५।
१३.मंगल-लोहड़ी-पंजाब, भोगी (द.भा.)।
१४. बुध-षट्तिला एकादशी व्रत सबका, मकर संक्रांति रात ९:३८।
१५.गुरु-खिचड़ी पर्व पुण्यकाल, खरमास समाप्त, बिहु (असम), पोंगल (द.भा.)।
१६.शुक्र-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, मेरु त्रयोदशी-जैन।

ता. वार — विवरण

१७.शनि-रटन्ती कालिका पूजा-बंगाल।
१८.रवि-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या, त्रिवेणी अमावस्या, मकर वातु-केरल।
१९.सोम-गुप्त नवरात्रारम्भ।
२०.मंगल-चन्द्रदर्शन।
२१.बुध-अभिजित के सूर्य दिन १०:१२ मे, मु.म.सावान हि.१४४७।
२२.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, कुन्द चतुर्थी व्रत, वरद चतुर्थी, तिल चौथ।
२३.शुक्र-वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, श्रीपंचमी, लेखनी पूजा-बंगाल।
२४.शनि-स्कन्द षष्ठी व्रत, शीतला षष्ठी-बंगाल, श्रवण के सूर्य सायं ४:३४।
२५.रवि-अचला सप्तमी व्रत, आरोग्य सप्तमी, रथसप्तमी, सूर्य पूजा, अभिजित के सूर्य दिन १२:२ तक।
२६.सोम-भीष्माष्टमी पर्व।
२७.मंगल-महानन्दा नवमी।
२९.गुरु-जया एकादशी व्रत-सबका, भैमी एकादशी-बंगाल।
३०.शुक्र-प्रदोष व्रत, आमलकी द्वादशी, भीष्म द्वादशी, वाराह द्वादशी, तिल द्वादशी।

जनवरी जयन्ती

३.शनि-शाकम्भरी प्राकट्योत्सव, मु.हजरत अली जयंती।
४.रवि-लुई ब्रेल जयन्ती।
५.सोम-गुरु गोविन्द सिंह जयंती (नवीन मत)।
७.बुध-राजिम भक्तिन माता जयंती।
१०.शनि-स्वामी विवेकानन्द जयंती (तिथि मत), तैलंग स्वामी जयन्ती (काशी)।
१२.सोम-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (नवीन मत), राष्ट्रीय युवा दिवस ।
१५.गुरु-गिन्दीमेला-गवाकोट, डाडामंडी-नयाघाटी, माघ मेला-काशी, रुद्रमहादेव मेला (कालीमठ), उत्तरायणी मेला-गंगोली रामेश्वर, बागेश्वर, थल सेना दिवस।
१७.शनि-मु.पर्व शबे मिराज।
१९.सोम-वल्लभ जयंती, ओशो महोत्सव।
२१.बुध-स्वामी विवेकानन्द जयंती (प्रा.मत.), श्रीरामानंदाचार्य जयंती, वीर हेमू कालाणी शहीद दिवस।

ता. वार — विवरण

२३.शुक्र-वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
२६.सोम-गणतन्त्र दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय कस्टम दिवस।
२७.मंगल-हरमू ब्रह्मदेव जयंती नैनपुर-बिहार।
२८.बुध-लाला लाजपतराय जयन्ती।
३०.गुरु-गाँधी स्मृति दिवस, शहीद दिवस।
३१.शनि-स्वामी करपात्री जी पुण्य तिथि, गुरु गोरखनाथ जयंती, मरुस्थल मेला ३ दिन-राजस्थान।

फरवरी-व्रत त्यौहार

१.रवि-स्नान दान व्रत की माघी पूर्णिमा, माघ मासीय यम-नियम समापन, शुक्रोदय पश्चिम में सा.६:४।
५.गुरु-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात ९:१०।
६.शुक्र-धनिष्ठा के सूर्य सायं ६:४६।
८.रवि-भानुसप्तमी पर्व।
९.सोम-कालाष्टमी, सीताष्टमी व्रत, अष्टका श्राद्ध।
१३.शुक्र-विजया एकादशी व्रत-सबका, कुंभ संक्रांति दिन ८:२२।
१४.शनि- शनिप्रदोष व्रत, वंजुली द्वादशी।
१५.रवि-महाशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
१७.मंगल-स्नान दान श्राद्ध की भौमवती अमावस्या।
१८.बुध-चन्द्रदर्शन।
१९.गुरु-फुलेरा दूज, शतभिषा के सूर्य रात १०:२४, मु.म.रमजान हि.१४४७, रोजा शुरू।
२१.शनि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, मत चतुर्थी-उड़ीसा, मनोरथ चतुर्थी।
२३.सोम-स्कन्द षष्ठी व्रत, गोरूपणी षष्ठी-बंगाल।
२४.मंगल-कामदा सप्तमी व्रत, होलाष्टक आरम्भ।
२५.बुध-आनन्द नवमी।
२६.गुरु-फगुदशमी (उड़ीसा)।
२७.शुक्र-आमलकी रंगभरी एकादशी व्रत-सबका, श्रीकाशी विश्वनाथ शृंगार दिवस।
२८.शनि-गोविन्द द्वादशी, श्रीनृसिंह द्वादशी।

फरवरी जयन्ती

१.रवि-श्री ललिता देवी प्राकट्योत्सव, सन्त रविदास जयंती।
४.बुध-मु.पर्व शबेबरात।
९.सोम-जानकी प्राकट्योत्सव।
११.बुध-पं.दीनदयाल उपाध्याय पुण्य तिथि।
१२.गुरु-स्वा.दयानन्द सरस्वती जयंती, सर्वोदय दिवस।

ता. वार — विवरण

१५.रवि-वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव, कृत्तिवासेश्वर व काशी विश्वनाथ पूजन दर्शन।
१९.गुरु-रामकृष्ण परमहंस जयंती, शिवाजी जयंती (नवीन मत)।
२५.बुध-लट्ठमार होली (बरसाना)।
२६.गुरु-लट्ठमार होली (नन्दगाँव)।
२७.शुक्र-लट्ठमार होली-जन्मस्थान (मथुरा)।
२८.शनि-मेला-खाटू श्यामदेव-राजस्थान, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस।

मार्च व्रत-त्यौहार

१.रवि-प्रदोष व्रत।
२.सोम-व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन रा. शे.४:५६, चौमासी चौदस-जैन।
३.मंगल-स्नान दान की पूर्णिमा, खग्रास चन्द्रग्रहण।
४.बुध-होली सर्वत्र, वसन्तोत्सव, रंगोत्सव महोत्सव, पूर्वा भाद्रपद के सूर्य रात ३:५७।
६.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा.८:४६।
८.रवि-रंग पंचमी।
१०.मंगल-शीतला सप्तमी व्रत।
११.बुध-शीतलाष्टमी व्रत (बसिअउरा)।
१४.शनि-मीन संक्रांति रा.३:३७।
१५.रवि-पापमोचिनी एकादशी व्रत-सबका।
१६.सोम-सोम प्रदोष व्रत।
१७.मंगल-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, महावारुणी पर्व, वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्व।
१८.बुध-श्राद्ध की अमावस्या।
१९.गुरु-स्नान-दान की अमावस्या, चान्द्रवर्ष सं. २०८२ समाप्त, वासन्तीय नवरात्र सं०२०८३ प्रा.,कलश स्थापन, उ.भा. के सूर्य रात ११।४८।

मार्च जयन्ती

२.सोम-डोलयात्रा।
३.मंगल-चतुःषष्ठीदेवी दर्शन-पूजन सायं, चैतन्य महाप्रभु जयंती।
४.बुध-होला मेला-पंजाब।
५.गुरु- संत तुकाराम जयंती।
६.शुक्र-छत्रपति शिवाजी जयंती (प्रा.म.), मु.पर्व शहादते हजरत अली।
८.शनि-विजय गोविन्द हलंकार जयंती (मणिपुर)।
१५.रवि-उपभोक्ता दिवस।

तात्कालिक करणवश संक्रान्तियों के वाहनवस्त्रायुधादि ज्ञानार्थ चक्र

करण	वव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पाद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निविष्ट	उपविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फल	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	स्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गदर्भ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फल	भीति	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पाण्डु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कम्बल	नग्न	घनाभ
उपवस्त्र	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कम्बल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुध	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भैक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्तिका	गोरोचन	महावर	ओस्तुमह	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जाति	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	वर्णसंकर
पुष्प	पुन्नाग	जाति	वकुल	केतकी	बिल्व	मंदार	दूर्वा	कमल	बेला	पाटल	जपा
भोजन पात्र	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लौह	खर्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	हीरा	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	हरित	भूर्जप	सित	पाण्डु	नील	कृष्ण	चर्म	धूम्र
स्नान	गङ्गा	यमुना	सरस्वती	मंदाकिनी	नर्मदा	कृष्णा	गोदावरी	भागीरथी	तुंगभद्रा	कावेरी	कृष्णा
वय	बाला	कुमारी	गतालका	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	वन्ध्या	पुत्रार्थिनी	प्रव्राजिका

छिक्का का शुभाशुभ बोधक चक्र

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	वार
विघ्न	विलम्ब	उत्तम	मृत्यु	शुभ	आगमन	लाभ	विलम्ब	रवि
लाभ	विलम्ब	मृत्यु	लाभ	शुभ	उत्तम	अल्पलाभ	विलम्ब	चन्द्र
मित्र आगमन	लाभ	विलम्ब	मृत्यु	लाभ	विदेश यात्रा	सुख	लाभ	मंगल
सिद्धि	शारीरिक कष्ट	अरिष्ट	विलम्ब	मृत्यु	धनक्षय	चोर भय	शारीरिक कष्ट	बुध
चिन्ता	वार्ता	विलम्ब	उत्तम	चोरभय	मृत्यु	कष्ट	वार्ता	गुरु
धन प्राप्ति	कलह	मित्र मिलन	अर्थलाभ	उत्तम	विलम्ब	मरण	कलह	शुक्र
अर्थक्षय	कष्टनाश	वार्ता	मित्र मिलन	उत्तम	शुभ	विलम्ब	कष्टनाश	शनि

रोगार्त का इष्टकालवश बाधाज्ञान विधि– प्रश्नसमय के तिथि वार, नक्षत्र, लग्न और याम (प्रहर) का योग कर उसमें ८ का भाग दे, यदि शेष ७ या ३ बचे तो देवबाधा, शेष१ या ५ बचे तो ग्रहबाधा, २ या ८ शेष में पितर सम्बन्धी दोष और ६ या ४ शेष बचे तो भूतबाधा जानना चाहिए। उक्त तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और याम के १२ से भाग देने पर यदि ३।५।६।८।९।११ शेष बचे तो जीवित रहेगा तथा १।२।४।७।१०।१२ शेष बचे योग में जीवित नहीं रहेगा। **राजमार्तण्ड के अनुसार–** वार, नक्षत्र, तिथि, दिशा का योग कर उसमें ८ से भाग देवे, यदि लब्धांक २या ८ हो तो पितरों का दोष, ७।३ बचे तो देवबाधा, ६।४ में प्रेतबाधा तथा १।५ में ग्रहबाधा जाने। उपरोक्त लब्धांक को ३से गुणाकर उसमें ८ जोड़कर ४ से गुणा करे और गुणनफल में ७ से भाग देने पर १ शेष में कुलजन्यदोष, २ शेष में ग्राम्यदेव का दोष, ३ शेष में वनदेवता का दोष,४ शेष में-राजपक्षीय दोष,५शेष में शत्रुकृत दोष,६ शेष में पंक्तिज दोष तथा शून्य (०) शेष में आकाश देवता का दोष जाने।। कौल्य (पितृ) दोष में हवन और द्विजार्चन। ग्राम्य दोष में ग्राम के चारों कोण में हवन, वनदेवता के दोष में अतिथि और ब्राह्मण भोजन तथा वस्त्रदान, राजपक्षीय दोष में तीर्थ यात्रा और तीर्थ में दान, शत्रुकृत दोष में दुर्गार्चन और दान तथा पंक्तिज दोष में गायत्री जप और आकाश देवता का दोष होने पर दीपदान करना कल्याणकारी होगा।

नवग्रह पीड़ा (रोग) निवारणार्थ यन्त्र मन्त्र रत्न एवं जड़ी धारण तथा व्यवसायिक वस्तुएँ

सूर्य की पीड़ा से – बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बिमारियाँ, आँखों की बिमारी, चर्मरोग, घाव लगना, दौरे पड़ना तथा हिस्टीरिया आदि।
वैदिक जप मन्त्र– ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

तांत्रिक मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।
अधि देवता–ईश्वर। **प्रत्यधि देवता–**अग्नि।
जप संख्या– ७ हजार।
कलियुग में जप संख्या–२८ हजार।
मध्य भाग्य, वर्तुल मण्डल, अंगुल १२, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण। **सिंह** राशि का स्वामी।
वाहन– सप्ताश्व। **समिधा–** मदार।
दान-द्रव्य–माणिक्य, सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूँगा लाल, गौ लाल तथा चन्दन लाल।
दान का समय– रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल।
धारण रत्न– माणिक्य ३ या ४ रत्ती।
उपरत्न– तामड़ा या कण्टकिज धारण करें। इसके अभाव में सूर्य का यन्त्र अथवा विल्व वृक्ष की जड़ गले या बाहु में धारण करें।
व्यवसायिक पदार्थ–राज्य प्रशासनिक कार्य, इमारती लकड़ी, सोना, रूई, अनाज।
व्रत उपवास– सूर्यदेव की प्रसन्नता हेतु रविवार का व्रत करें तथा इसमें लाल फूल अर्पित करना चाहिए। श्रीसूर्य सहस्रनाम का पाठ करें व श्रीसूर्यार्घ्य प्रदान करें।

चन्द्र की पीड़ा से–अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंढक, बुखार, गठिया, मानसिक असन्तुलन, पेट की बिमारियाँ, जलघात तथा जानवरों का हमला इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र–ॐ इमं देवा ऽअसपत्नर्ठ. सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।इमममुष्यै पुत्रममुस्यै विष एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकंब्राह्मणानार्ठ.राजा।।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

तांत्रिक मन्त्र–ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।
अधि देवता–उमा। **प्रत्यधि देवता–**अप्।
जप संख्या– ११ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ४४ हजार।
अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल ४, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण। **कर्क** राशि का स्वामी।
वाहन–हरिण। **समिधा-**पलास।
दान-द्रव्य–मोती, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, वांस की डलिया, सफेद बैल तथा सफेद चन्दन।
दान का समय– सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल।
धारण रत्न– मोती ४-५ रत्ती।
अभाव में उपरत्न– गोदन्ती या चन्द्रकान्त मणि धारण करें अथवा चन्द्रमा का यन्त्र तथा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बाँधकर बाहु या गले में धारण करें।
व्यवसायिक पदार्थ– जल से सम्बन्धित व्यवसाय, कांच के बने सामान।
व्रत-उपवास– चन्द्र पीड़ा निवृत्ति हेतु सोमवार व्रत या बत्तीस पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। श्वेत पदार्थ, श्वेत पुष्प चढ़ावें।

मंगल की पीड़ा से– गले की बिमारी, कण्ठ रोग, फोड़ा, फुन्सी, रक्त विकार, गठिया के बुखार, आँखों की बिमारी, दौरे पड़ना, सिर दर्द तथा रक्त सम्बन्धी रोग एवं गर्भपात इत्यादि।
वैदिक जप मंत्र– ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव: ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपार्ठ. रेतार्ठ.सि जिन्वति।।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

तांत्रिक मन्त्र– ॐ ह्रीं श्री मङ्गलाय नमः।
अधिदेवता–स्कन्द। **प्रत्यधिदेवता–**पृथ्वी।
जप संख्या– १० हजार।
कलियुग में जप संख्या– ४० हजार।
दक्षिण दिशा, त्रिकोण मण्डल, अंगुल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण। **मेष-वृश्चिक** राशि का स्वामी।
वाहन– भेंड़ा। **समिधा–**खदिर (खैर)।
दान-द्रव्य– मूँगा, सोना, ताँबा, भूमि, मसूर, गुड़, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल बैल तथा लाल चन्दन।
दान का समय– मंगलवार को सवेरे २ घटी तक।
धारण रत्न– मूँगा ६-७ रत्ती।
उपरत्न– विद्रुम मणि या संगमूँगी अथवा अकीक एवं मंगल का यंत्र या अनन्तमूल वृक्ष की जड़ को लाल कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यवसायिक पदार्थ– औषधि, घड़ी, ईंट, गेहूँ, भूमि।
व्रत उपवास– मंगल देवता अथवा हनुमान्जी का व्रत करना शुभप्रद है। लाल फूल अर्पण करें।

बुध की पीड़ा से– दिमागी फितूर, नाक-कान की बिमारी, वात सम्बन्धी बिमारी, पित्तभेद, चर्म रोग, कोढ़, विष तथा ऊँचाइयों से गिरना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र– ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सर्ठ. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्। विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

तांत्रिक मन्त्र–ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
अधिदेवता–विष्णु। **प्रत्यधिदेवता–**विष्णु।
जप संख्या– ९ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ३६ हजार।
ईशान कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल ४, मगध देश, अत्रि गोत्र, हरित वर्ण। **मिथुन-कन्या** राशि का स्वामी।
वाहन– सिंह। **समिधा–** अपामार्ग।
दान-द्रव्य– पन्ना, सोना, काँसे का वर्तन, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र तथा फल।
दान का समय– बुधवार को सवेरे ५ घटी तक।
धारण रत्न– पन्ना ३ या ४ रत्ती।
उपरत्न– हरा मरगज अथवा बुध-यन्त्र या विधारा की जड़ हरे डोरे या कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यवसायिक वस्तुएँ– मूँग, रेशम, सूत, कापी, लेखन सामग्री (स्टेशनरी)।
व्रत उपवास– बुध देव की पीड़ा निवृत्ति हेतु २७ या १०८ बुधवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प में हरा फूल ग्रहण करें। गौमाता की सेवा, हरा चारा (दूब, पालक आदि) खिलाना लाभदायक होता है।

गुरु की पीड़ा से– पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना तथा वायुयान दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र– ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छ वस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

तांत्रिक मन्त्र–ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।
अधिदेवता–ब्रह्मा। **प्रत्यधिदेवता–**इन्द्र।
जप संख्या– १९ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ७६ हजार।
उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मणडल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण। **धनु-मीन** राशि का स्वामी।
वाहन– हाथी। **समिधा–**पीपल।
दान-द्रव्य– पुखराज, सोना, काँसा, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, भूमि तथा पीला फल।
दान का समय– बृहस्पतिवार को संध्या काल।
धारण रत्न– पुखराज ५-६ रत्ती।
उपरत्न– सुनेहला धारण करें अथवा बृहस्पति का यन्त्र या बमनेठी (भारंगी) की जड़ पीले कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक सामग्री– किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा।
व्रत-उपवास– गुरु (बृहस्पति) की पीड़ा निवृत्ति हेतु गुरुवार का व्रत करना चाहिए। इसमें पीली वस्तु, पीला पुष्प से पूजन-अर्चन करना लाभदयक होता है।

शुक्र की पीड़ा– कोढ़, वात-पित्त-कफ सम्बन्धी, वीर्य विकार, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द तथा अण्डकोश की सूजन इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र– ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पय: सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ. शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

तांत्रिक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।
अधिदेवता–इन्द्र। **प्रत्यधिदेवता–**इन्द्राणी।
जप संख्या–१६ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ६४ हजार।
पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अंगुल ९, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण। **वृष-तुला** राशि का स्वामी।
वाहन– अश्व। **समिधा–** उदुम्बर (गूलर)।
दान-द्रव्य– हीरा, सोना, चाँदी, मिश्री, दूध, चावल, सफेद एवं चित्रित कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, भूमि तथा सफेद चन्दन।
दान का समय–शुक्रवार को (सूर्योदयकाल)।
धारण रत्न– हीरा ४-५ रत्ती।
उपरत्न–सफेद पुखराज, स्फटिक या जरकन धारण करें। अथवा शुक्र का यन्त्र या मजीठ की जड़ को सफेद कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यवसायिक सामग्री–प्रसाधन सामग्री, फूल, वाहनों की खरीद-विक्री।
व्रत उपवास– शुक्र ग्रह पीड़ा निवारणार्थ शुक्रवार को व्रत रहना शुभ है। सफेद वस्तुएँ तथा सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिए।

शनि की पीड़ा से– पेट और पैरों की बिमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट लगना, वाहन दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र–ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः।।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

तांत्रिक मन्त्र–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
अधिदेवता–यम। **प्रत्यधिदेवता–**प्रजापति।
जप संख्या– २३ हजार।
कलियुग में जप संख्या–९२ हजार। पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अंगुल २, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण। **मकर-कुम्भ** राशि का स्वामी।
वाहन– गीध। **समिधा-**शमी।
दान-द्रव्य–नीलम, सोना, लोहा, काला उड़द, काली तिल, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, कस्तूरी, महिषी, काली गौ तथा काला खड़ाऊ (जूता-चप्पल इत्यादि)।
दान का समय– शनिवार को मध्याह्नकाल।
धारण रत्न– नीलम ४-५ रत्ती।
उपरत्न–कटैला, काले घोड़े के नाल या नाव के कांटे की अंगूठी, शनि यंत्र काले कपड़े या धागे में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यवसायिक वस्तुएँ– लकड़ी, लोहा, जूते, कोयला।
व्रत-उपवास– शनि की पीड़ा निवृत्ति हेतु ३३ तैंतीस शनिवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प काला अर्पण करें। नैवेद्य (प्रसाद) में काले तिल के लड्डू, उरद के बड़े आदि अर्पित करना चाहिए।

राहु की पीड़ा से– दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर (विष) देना व लेना, आत्म-हत्या, पाचन संस्थान के रोग इत्यादि।
वैदिक मंत्र– ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृध: सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

तांत्रिक मन्त्र– ॐ ह्रीं राहवे नमः।
अधिदेवता–काल। **प्रत्यधिदेवता–**सर्प।
जप संख्या– १८ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ७२ हजार।
नैर्ऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अंगुल १२, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण। **कन्या** राशि का स्वामी।
वाहन– व्याघ्र। **समिधा–** दूर्वा।
दान-द्रव्य–गोमेद, सोना, रत्न, सीसा, तिल, सरसों का तेल, सप्त धान्य, उरद, कम्बल, नीला कपड़ा, तलवार, कम्बल, घोड़ा एवं सूप, काला फूल, लौह उपकरण, तिल भरा ताम्रपत्र।
दान-समय– रात्रि में।
धारण रत्न– गोमेद ६-७ रत्ती।
उपरत्न– तुरसावा धारण करें अथवा राहु का यन्त्र या सफेद चन्दन की जड़ काले कपड़े में बाँधकर धारण करें।
व्यवसायिक वस्तु– तेल, अलसी, चना, हड्डी के सामान।
व्रत उपवास– शनिवार को व्रत में नीला पुष्प अर्पण करना चाहिए।

केतु की पीड़ा से– घाव होना, दाँत का सड़ जाना, जल जाना और पसदायक सारी बिमारियाँ एवं गर्भपात केतु से ही होता है।
वैदिक जप मंत्र– ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

तांत्रिक में– ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः।
अधिदेवता–चित्रगुप्त। **प्रत्यधिदेवता–**ब्रह्मा।
जप संख्या– १७ हजार।
कलियुग में जप संख्या– ६८ हजार।
वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल ६, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण। **मीन** राशि का स्वामी।
वाहन– कबूतर। **समिधा-**शमी या दूर्वा।
दान-द्रव्य– लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, काला कपड़ा, धूमिल तेल, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा।
दान का समय– रात्रि में।
धारण रत्न– लहसुनिया ७,९ रत्ती।
उपरत्न– गोदन्ती या लाजावर्त धारण करें अथवा केतु का यन्त्र या असगन्ध वृक्ष की जड़ को काले कपड़े में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें।
व्यवसायिक वस्तुएँ– अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति।
व्रत उपवास– राहु के समान व्रत-पूजनादि करें।